मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.

भूमिका ।

वाचकवृंद ! भारतवर्षकी इस गिरी हुई दशामें भी यदि ऋषियोंकी भविष्यवाणीके यथार्थ होनेमें कुछ प्रत्यक्ष प्रमाण है तो वह ज्योतिष शास्त्र है, यद्यपि इस शास्त्रमें कहे हुए प्रत्येक विषय सत्य हैं; परन्तु ग्रहण, वृष्टि इत्यादिका निर्दिष्ट समयमें होना इत्यादि मुख्य मुख्य बात जिस प्रकार लोगोंके विश्वासको इस शास्त्रकी सत्यतामें दृढ करती हैं, अन्य विषय वैसे नहीं । जो कुछ हो, अभी भारतवर्षमें अनेक मनुष्य इस बातको निर्विवाद स्वीकार करते हैं कि–उक्त शास्त्रकी भूत, भविष्य और वर्तमान किसी भी बातमें सन्देह नहीं है । शास्त्रोंमें लिखी हुई सभी बातें सत्य हैं । उनमें साम्प्रतमें जो कुछ दोष लोग लगाते हैं वे मनुष्योंके आलस्य, कम परिश्रम करना इत्यादि दोषोंके कारणसे हैं । अब भी कितने ही गणक अपने शास्त्रमें इतने निष्णात मिल सकते हैं कि, वे इस विद्याके मर्मको जानते और सन्दिग्धोंके संशयोंको निर्मूल करते हैं । यहां हमको संक्षिप्त सूचना "जातकाभरण" के विषयमें देनी है । गोदावरी नदीके समीप पार्थनगरके निवासी गणकवर श्रीढुण्ढिराजका बनाया हुआ यह ग्रन्थ जन्मपत्रीके लिखने अथवा उसके फल कहनेमें अत्युपयोगी है । जातकादि अनेक ग्रंथोंको देखनेका कुछ भी परिश्रम उस मनुष्यको न करना पड़ेगा जो केवल इस ग्रन्थको भलीभाँति पढ़कर कण्ठस्थ कर ले । एक ही ग्रन्थसे जन्मपत्री लिखने या फल कहनेमें परम सुभीता हो इस आशयसे हमने इस

ग्रन्थकी वांसवरेलीस्थ पण्डित श्यामलालजीसे भाषाटीका बनवाकर इसे सुपुष्ट चिक्कण कागजोंपर अपने "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रित किया है, साथ ही मनोहर दृढ जिल्द बँधवाकर पुस्तककी पुष्टि करनेमें त्रुटि नहीं रखी है और ग्राहकोंके सुभीतेके लिये ऐसी उपयोगी और मनोरम पुस्तकका मूल्य अल्प रखा है। आशा है कि विद्यानुरागी तथा ज्योतिर्विद् लोग इस पुस्तकको मँगाकर लाभ उठावेंगे, और दृढ परिश्रमपूर्वक इस शास्त्रके फलादेशको ऐसा यथार्थ बतावेंगे कि लोगोंका विश्वास हमारे ज्योतिष शास्त्रमें नित नया बढ़ता रहे और सदा बना रहे।

आपका कृपाकांक्षी–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष–"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्–प्रेस, बम्बई.

श्रीः।

भाषाटीकासहित जातकाभरणकी

विषयानुक्रमणिका।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता।

॥ श्रीहरिः ॥

जातकाभरणं

श्यामसुंदरी-भापाटीकासहितम् ।

अथ भाषाकारकृतं मंगलाचरणम् ।

नत्वा गणेशमथ पूपणमंबिकां च
मोमाधवौ च कृतसूरिनतिः प्रयत्नात् ।
श्रीढुण्ढिराजमुखनिर्गतजातकस्य
श्रीश्यामलाल उचितां वितनोति भापाम् ॥ १ ॥

अथ भाषाकार पंच देवकी स्तुति करता है-श्रीगणेशजी और सूर्य और दुर्गा और लक्ष्मी और शिवजीको नमस्कार करके और वसिष्ठ गर्गादि पूर्वाचार्योंको यत्नसे नमस्कार करके श्रीढुंढिराजके मुखसे निकले हुए जातकाभरण नाम ग्रंथकी श्रीश्यामलाल योग्य भाषाको विस्तार करता है ॥ १ ॥

अथ ग्रंथकारकृतमङ्गलाचरणम् ।

श्रीदं सदाहं हृदयारविंदे पादारविंदं वरदस्य वन्दे ।
मंदोऽपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणवंद्योपमतां समेति ॥ १ ॥
उदारधीमन्दरभूधरेण प्रमथ्य होरागमसिंधुराजम् ।
श्रीढुंढिराजः कुरुते किलार्यां मार्यासपर्याममलोक्तिरत्नैः ॥२॥

अब ग्रंथकर्त्ता गणेशजीकी वंदना करते हैं-हमेशा ऋद्धिसिद्धिके दाता ऐसे श्रीगणेशजीके चरणकमलको हृदयमें धारण करके वंदना करता हूं,जिन गणेशजीका स्मरण करके मूर्ख भी बहुत जल्दी बृहस्पतिके समान हो जाता है ॥ १ ॥ उत्तम बुद्धिरूप मंदराचलपर्वतसे इस होराशास्त्ररूपी समुद्रको मथ कर श्रीढुण्ढिराज महर्षिप्रणीत ग्रन्थोंको देखकर इस जातकाभरण नामक ग्रन्थको करते हैं ॥ २ ॥

ज्ञानराजगुरुपादपङ्कजं मानसे खलु विचिंत्य भक्तितः ।
जातकाभरणनाम जातकं जातकज्ञसुखदं विधीयते ॥ ३ ॥

तूर्णं यच्चरणाम्बुजस्मरणतः संपूर्णकामः पुमान्।
सोऽयं वोऽभिमतं ददातु सततं हेरम्बकल्पद्रुमः ॥ ८ ॥

वारंवार श्रीगणेशजीको स्मरण करनेसे विघ्नोंके समूह निवारण करनेको और भी श्लोक जानो—अनेक दान और यज्ञ विधान करनेसे और बड़े तप बहुत काल करनेसे और कल्पवृक्षकी प्राप्ति होनेसे मनोवांछित फल कभी प्राप्त हो जाते हैं, जिन गणेशजीके कमलरूपी चरणारविंदोंके स्मरण करनेसे शीघ्र ही मनुष्य सम्पूर्ण कामनाओंको प्राप्त होजाते हैं सो श्रीगणेशजी मनोवांछित फल निरंतर कल्पवृक्षके तुल्य दें ॥ ८ ॥

सन्मानसावासविलासहंसी कर्णावतंसीकृतपद्मकोशा ।
तोषादशेषाभिमतं विशेषादेषापि भाषा भवतां ददातु ॥ ९ ॥

श्रेष्ठोंके मनरूप मानसमें वास करके विलास करनेवाली हंसी, कानोंमें कमलकोशरूप गहने पहिरे, ऐसी सरस्वती सन्तोष और विशेष रूपसे सब मनोरथोंकी सिद्धि आपको दें ॥ ९ ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कांतिं कलानां निधि-
र्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरंजीविताम्।
साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतां राहुर्बलोत्कर्षतां
केतुर्यच्छतु तस्य वांछितमियं पत्री यदीयोत्तमा ॥ १० ॥

अब और आशीर्वादात्मक श्लोक लिखते हैं—सूर्य आपको कल्याण दे और चंद्रमा लालित्य और कांतिको दें, मंगल लक्ष्मीको दें, बुध बुद्धिको दें और बृहस्पति दीर्घायु करें और शुक्र साम्राज्यको दें, शनैश्चर विजयको दें, राहु बलकी वृद्धि करे और केतु मनवांछित फल दें, जिसकी उत्तम पत्री मैं करता हूँ ॥ १० ॥

ननु पूर्वजन्मोपार्जितानां सदसत्कर्मणां परिपाकोऽस्मिञ्ज-न्मनि शुभाशुभफलावाप्तिकालादेव व्यक्तोऽस्तीति जातका-गमोक्तप्रपञ्चेन किं प्रयोजनमिति चेत्सत्यम्। पूर्वोपार्जित-कर्मपरिपाकः शुभाशुभफलोपलब्धिदर्शनादेव ज्ञायते परम-भीष्टकाले ज्ञातुं न शक्यते तथा च भाग्यमखण्डितं खण्डितं रिष्टभंगोऽप्यायुर्मानमित्यादिज्ञानार्थं जातकागम एवात्यर्थं समर्थस्तदेककारणत्वात्। तथाहि दिनरात्रिवि-

अथ ज्योतिषशास्त्रप्रशंसामाह-

साक्षाद्भवेद्भाग्यनिरीक्षणाय सुनिर्मलादर्शतलं किलेदम्।
शास्त्रं विपद्वारिनिधिश्च ततुं तरिस्तथार्थार्जनचारुमित्रम् ॥१३॥
आधानकाले कमलोद्भवेन वर्णावली भालतलांतराले।
या कल्पिता पश्यति दैववेत्ता होरागमज्ञानविलोचनेन ॥१४॥
होरागमव्योमचरानुसारस्तेषां विचारः सुतरामुदारः।
सिद्धान्तवादाकलनं तदास्यान्न्यासो यदास्याद्गणितद्वयस्य १५॥

मनुष्यके भाग्य देखनेके लिये यह होराशास्त्ररूपी निर्मल आईना साक्षात् है और यह होराशास्त्र आपत्तिरूपी समुद्रसे पार उतरनेकी नौका है और धन पैदा करनेमें सुंदर मित्र है ॥ १३ ॥ मनुष्यके गर्भाधानके समय अथवा माताओंके गर्भसे पैदा हो करके सुखदुःखके अक्षरोंकी माला जो भालके बीचमें ब्रह्माने लिख दी है उसको ज्योतिष शास्त्रका ज्ञाता होराशास्त्ररूपी ज्ञाननेत्रोंमे देखता है ॥ १४ ॥ ज्योतिषशास्त्र ग्रहोंके अनुसार है, उसका विचार निरंतर उदार है, वह ज्योतिषशास्त्र सिद्धांत ग्रंथोंके पढ़नेसे और गणित जाननेमे होता है ॥ १५ ॥

अथ दैवज्ञलक्षणम्।

अपारहोरागमपारगामी पाट्यां च बीजे सुतरां प्रगल्भः।
सद्गोलविद्याकुशलः स एव भवेत्फलादेशविधौ समर्थः ॥१६॥

जिस शास्त्रका आदि अंत नहीं ऐसे ज्योतिश्शास्त्रके आदिसे अंततकके जानने वाला, पाटी और बीजगणितमें अत्यंत प्रगल्भ और श्रेष्ठ गोलगणितमें कुशल इस प्रकारका ज्योतिषी फलादेश कहनेमें समर्थ होता है ॥ १६ ॥

अथ जन्मपत्रप्रशंसामाह-

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भावि फलं समस्तम्।
क्षपाप्रदीपेन यथालयस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ १७ ॥

जो सब होनहार फल होनेवाले हैं सो संपूर्ण जन्मपत्ररूपी दीपकसे जान पड़ते हैं जैसे मकानमें दीपक करके रात्रिमें घटादिक सब पदार्थ जान पड़ते हैं ॥ १७ ॥

सा जन्मपत्री विमला न यस्य तज्जीवितं संततमंधकं स्यात्।
अनल्पमल्पं च ततोऽल्पकं वा न कल्पते भाग्यमतीव हेतोः १८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विभवनाम संवत्सर हो वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंको भोगनेवाला, प्यारा है दर्शन जिसका, अधिक बलवान, चतुर, कलाओंका जाननेवाला, अपने कुलमें राजा शीलवान और पंडित होता है ॥ २ ॥

अथ शुक्लसंवत्सरजातफलम्।

सदा सहर्षोऽतितरामुदारः सत्पुत्रदारैर्विभवैः समेतः।
सद्भाग्यविद्याविनयोपपन्नो नूनं पुमाञ्छुक्लसमुद्भवः स्यात्॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लसंवत्सर हो वह मनुष्य हमेशा हर्षयुक्त, निरंतर उदार, श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री तथा वैभवसहित, श्रेष्ठ भाग्य, विद्या और नम्रता सहित होता है ॥ ३ ॥

अथ प्रमोदसंवत्सरजातफलम्।

दाता सुतानंदयुतोऽभिकान्तः सत्येन नित्यं सहितो गुणी स्यात्।
दक्षश्च धूर्तः परकार्यकर्त्ता प्रमोदजन्मा मनुजोऽभिमानी ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रमोद संवत्सर हो वह मनुष्य दाता, पुत्रके आनंदसहित, सत्य करके युक्त, गुणवान, चतुर, धूर्त, पराया कार्य करनेवाला, अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ प्रजापतिसंवत्सरजातफलम्।

दाराभिमानः सुतरां दयालुः कुलानुवृत्तः किल चारुशीलः।
देवद्विजार्चाभिरतो विनीतो मर्त्यः प्रजाधीशसमुद्भवः स्यात्॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रजापति संवत्सर होता है वह मनुष्य स्त्रीका अभिमानी, निरंतर दयावान, अपने कुलके समान चले, सुन्दर शीलवाला, देवता और ब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथाङ्गिरसंवत्सरजातफलम्।

कांतः सुखी भोगयुतश्च मानी प्रियप्रवक्ता बहुपुत्रयुक्तः।
सुगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी नरोऽङ्गिरोवत्सरसंभवः स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अंगिरा संवत्सर हो वह मनुष्य स्त्री करके सुखी, भोगसहित, मानी, प्यारी वाणी बोलनेवाला, बहुत पुत्रोंवाला, छिपी हुई बुद्धि और बडी उमरवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ श्रीमुखसंवत्सरजातफलम्।

श्रीमान्प्रतापी बहुशास्त्रवेत्ता सुधर्मप्रियश्चारुमतिर्बलीयान्।
सत्कीर्तियुक्तो नितरामुदारो भवेन्नरः श्रीमुखसंभवोऽसौ ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रीमुख संवत्सर होता है वह मनुष्य लक्ष्मीवान, बड़ा प्रतापी, बहुत शास्त्रोंको जाननेवाला, मित्रोंको प्यारा, सुंदर मति, बलवान्, श्रेष्ठ कीर्तिसहित और निरंतर उदार होता है ॥ ७ ॥

अथ भावसंवत्सरजातफलम् ।

प्रशस्तचेताः सुतरां यशस्वी गुणान्वितो दानरतो विनीतः ।
सदा सहर्षोऽभिमतो बहूनां भावाभिधानोद्भवमानवः स्यात् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भाव संवत्सर होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ चित्त, निरंतर यशस्वी, गुणोंसहित, दान करनेमें तत्पर, नम्रतासहित, हमेशा आनंदसहित और बहुत जनोंका प्यारा होता है ॥ ८ ॥

अथ युवसंवत्सरजातफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिर्गुणवान्विनीतः शांतश्च दानाभिरतो नितान्तम् ।
सुधीश्चिरायुर्दृढदेहशाली जातो युवाब्दे पुरुषः सतोषः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें युवनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति, गुणवान्, नम्रतासहित, शांतचित्त, दान करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, दीर्घ उमर मजबूत देहवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ धातृसंवत्सरजातफलम् ।

मनोज्ञोऽत्र गुणगौरवयुक्तः सुन्दरोऽप्यतितरां गुरुभक्तः ।
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवो हि नरः स्यात् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धातृनाम संवत्सर होता है वह सब मनुष्योंमें गुण और गौरवसहित, सुंदर स्वरूप, निरंतर गुरुका भक्त, शिल्पशास्त्रमें चतुर और श्रेष्ठ स्वभाववाला होता है ॥ १० ॥

अथ ईश्वरसंवत्सरजातफलम् ।

तन्त्रकलाज्ञानमहाप्रकोपी दर्पाभियुक्तो गुणवान्प्रतापी ।
दक्षः कलाकौशलभक्तिशाली मर्त्यो भवेदीश्वरजातजन्मा ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ईश्वरनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य तीव्र क्रोधी और [illegible], हर्षसहित, गुणवान, प्रतापी, चतुर और कलाओंमें कुशल [illegible] होता है ॥ ११ ॥

अथ बहुधान्यसंवत्सरजातफलम् ।

[illegible]ः शिल्पिकलाभिमानी दानाभिमानी ननु शास्त्रवेत्ता ।
[illegible] स्यान्मानवो वै बहुधान्यजन्मा ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बहुधान्यसंवत्सर हो वह मनुष्य व्यापारमें चतुर, राजा करके मान पानेवाला, दानी, अभिमानी, शास्त्रका जाननेवाला, अनेक प्रकार करके बहुत अन्न और धनवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ प्रमाथिसंवत्सरजातफलम्।

रथध्वजच्छत्रतुरङ्गमाद्यैर्युतश्च शास्त्राभिरतोऽरिहंता।
मन्त्री नरेन्द्रस्य नरः श्रुतिज्ञः प्रमाथिसंवत्सरसंभवः स्यात् ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रमाथी संवत्सर होता है वह मनुष्य रथ, ध्वजा, छत्र, घोड़े आदिकरके सहित, शास्त्रमें तत्पर, शत्रुओंका नाश करनेवाला, राजाका मंत्री और वेदका जाननेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ विक्रमसंवत्सरजातफलम्।

अत्युग्रकर्माभिरतो नितांतमरातिचक्रक्रमणेऽतिदक्षः।
शूरश्च धीरोऽतितरामुदारः पराक्रमी विक्रमवर्षजातः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विक्रमसंवत्सर होता है वह अत्यन्त उग्र कर्मोंमें तत्पर शत्रु दलका नाश करनेवाला, चतुर, वीर, धैर्यवान्, अत्यन्त उदार और बड़ा बलवान् होता है ॥ १४ ॥

अथ वृषसंवत्सरजातफलम्।

कार्यप्रलापी किल निंद्यशीलः खलानुयातः परकर्मकर्ता।
भर्ता बहूनां मलिनोऽलसश्च जातो वृषाब्दे मनुजोऽतिलुब्धः १५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषसंवत्सर होता है वह मनुष्य कार्यमें बोलनेवाला, निंद्यशील, दुष्ट जनों सहित, पराये कामको करनेवाला, बहुत जनोंका स्वामी, मलिन, आलसी और लोभी होता है ॥ १५ ॥

अथ चित्रभानुसंवत्सरजातफलम्।

चित्रवस्त्रकुसुमैकमानसो मानसोद्भवचयान्वितः सदा।
चारुशीलविलसत्कलान्वितश्चित्रभानुजननो हि पूरुषः ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चित्रभानु संवत्सर होता है वह मनुष्य विचित्रवस्त्र, और पुष्पोंको धारण करनेवाला, मानसी चिन्ताके समूह करके सहित, सुंदर शील और प्रकाशवान् कलाकरके सहित होता है ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्वजित् संवत्सर होता है वह मनुष्य राजा करके गौरवको प्राप्त, बड़े उत्सव सहित, पवित्र, मोटी देहवाला, राजा और शत्रुओंका जीतनेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ सर्वधारिसंवत्सरजातफलम् ।

भूरिभृत्यबहुभोगसंयुतः सुन्दरश्च मधुरान्नभुक्सदा ।
धीरतागुणयुतोऽतिधारणः सर्वधारिणि च यस्य संभवः ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्वधारी संवत्सर होता है वह मनुष्य बहुतसे नौकर और बहुत भोगसहित, सुन्दर, मीठा अन्न खानेवाला, धीरतासहित और गुणों करके युक्त होता है ॥ २२ ॥

अथ विरोधिसंवत्सरजातफलम् ।

वक्ता विदेशाटनतां प्रपन्नः कुटुंबसौख्याय च योऽतिधूर्तः ।
जनेन साकं गतसख्यवृत्तिर्विरोधिवर्षप्रभवो नरः स्यात् ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विरोधी संवत्सर होता है वह मनुष्य बड़ा बोलनेवाला परदेश घूमनेवाला, कुटुम्बके समूहसे युक्त, गौरवके वास्ते बड़ा धूर्त और मनुष्यके साथ मित्रतारहित होता है ॥ २३ ॥

अथ विकृतिसंवत्सरजातफलम् ।

निर्धनः किल करालतां गतो दीर्घपूर्वबहुगर्वसंयुतः ।
चारुबुद्धिरहितोऽप्यसौहृदो मानवो विकृतिवर्षसंभवः॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विकृतिनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य धनहीन, विकरालताको प्राप्त, पहिलेसे बड़े अभिमानसहित, सुन्दर बुद्धि रहित और मित्रतारहित होता है ॥ २४ ॥

अथ खरसंवत्सरजातफलम् ।

[illegible]
[illegible] २५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें खरनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य [illegible] मलिन देहकी कांतिवाला, कठोर, दीर्घ, असार वाणी बोलनेवाला, [illegible] करके रहित और अत्यन्त दीर्घ होता है ॥ २५ ॥

अथ नन्दनसंवत्सरजातफलम् ।

तडागवापीगृहकूपकर्ता सदान्नदानाभिरुचिः शुचिः स्यात् ।
विलासिनीनंदनजातदर्पो नरो भवेन्नंदनवर्षजातः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नंदननाम संवत्सर होता है वह मनुष्य तालाब बावड़ी, मकान, कुआँ बनानेवाला और हमेशा अन्नदानमें प्रीति करनेवाला, पति और स्त्रियोंके साथ आनन्दको प्राप्त होता है ॥ २६ ॥

अथ विजयसंवत्सरजातफलम् ।

संग्रामधीरः सुतरां सुशीलो भूपालमान्यो वदतां वरेण्यः ।
दाता दयालुः किल वैरिहंता यस्य प्रसूतिर्विजयाभिधाने ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विजयनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य युद्धमें धीर, निरंतर श्रेष्ठ शीलवाला, राजा करके माननीय, बोलनेमें श्रेष्ठ, दाता, दयावान् और शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ २७ ॥

अथ जयसंवत्सरजातफलम् ।

शास्त्रप्रसंगे विदुषां विवादी मान्यो वदान्यो रिपुवर्गहंता ।
जयाभिलाषी विषयानुरक्तो जातो जयाब्दे मनुजो महौजाः॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जयनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य शास्त्रके प्रसंगमें विद्वानोंसे विवाद करनेवाला, माननीय, शत्रुओंको मारनेवाला, जयकी इच्छा रखनेवाला, विषयोंमें आसक्त और बड़ा पराक्रमी होता है ॥ २८ ॥

अथ मन्मथसंवत्सरजातफलम् ।

भूषाविशेषैः सहितश्च योषाविलासशीलोऽमृतवाक्कलाज्ञः ।
सद्गीतनृत्याभिरतश्च भोक्ता यो मन्मथाब्दे जननं प्रपन्नः ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मन्मथनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य विशेष आभूषणोंसहित, स्त्रीके साथ विलास करनेवाला, मीठी वाणी बोलनेवाला, कलाओंका जाननेवाला, श्रेष्ठ गीत नृत्योंमें तत्पर और भोगोंका भोगनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ दुर्मुखसंवत्सरजातफलम् ।

क्रूरोद्धतो निंद्यमतिश्च लुब्धो वक्रास्यबाह्वङ्घ्रिरघप्रियः स्यात् ।
विरुद्धभावो बहुदुष्टचेष्टो यो हायने दुर्मुखनाम्नि जातः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुर्मुखनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य क्रूरतासहित, दुष्ट बुद्धिवाला, लोभी और जिसके मुख, बाहें और पैर टेढे, विरुद्ध शील और बड़ी दुष्ट चेष्टावाला होता है ॥ ३० ॥

अथ हेमलंबसंवत्सरजातफलम्।

तुरंगहेमाम्बरधान्यरत्नैर्युतो नितांतं सुतदारसौख्यः।
समस्तवस्तुग्रहणैकबुद्धियों हेमलंबे पुरुषोऽभिजातः॥ ३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हेमलंबनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य घोड़े और सोना, वस्त्र, धान्य और रत्नोंसहित, निरंतर पुत्र और स्त्रीके सौख्यसे प्राप्त सब चीजोंके ग्रहणमें एकबुद्धिवाला होता है॥ ३१॥

अथ विलम्बसंवत्सरजातफलम्।

धूर्तोऽतिलुब्धोऽलसतां प्रपन्नः श्लेष्माधिकः सत्त्वविवर्जितश्च।
प्रारब्धकार्ये नितरां प्रलापी विलंबसंवत्सरसंभवः स्यात्॥३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विलंबनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य धूर्त, बड़ा लोभी, आलस्यसहित, कफप्रकृतिवाला, बलहीन और प्रारब्ध कार्योंमें निरंतर प्रलाप करनेवाला होता है॥ ३२॥

अथ विकारिसंवत्सरजातफलम्।

दुराग्रही सर्वकलाप्रवीणः सुसंग्रही चञ्चलधीश्च धूर्तः।
अनल्पजल्पस्सुहृद्विकल्पो विकारिसंवत्सरजो नरः स्यात्३३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विकारिसंवत्सर हो वह मनुष्य खोटा हठ करनेवाला, सब कलाओंमें प्रवीण, सब चीजोंका संग्रह करनेवाला, चञ्चलबुद्धि, धूर्त, बहुत बोलनेवाला और मित्रोंसे कल्पना करनेवाला होता है॥ ३३॥

अथ शार्वरीसंवत्सरजातफलम्।

वणिक्क्रियायां कुशलो विलासी नैवानुकूलश्च सुहृज्जनानाम्।
अनेकविद्याभ्यसनानुरक्तः संवत्सरे शार्वरिनाम्नि जातः॥३४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शार्वरी संवत्सर होता है वह मनुष्य व्यापारके काममें चतुर, विलास करनेवाला, मित्रोंका विरोधी और अनेक प्रकारकी विद्याओंका अभ्यास करनेवाला होता है॥ ३४॥

अथ प्लवसंवत्सरजातफलम्।

कामी प्रकामं धनधांश्च शश्वत्सेवादरो दारहतार्थततः।
सुगुप्तबुद्धिश्चपलस्वभावः प्लवाभिधानाद्भवो नरः स्यात्॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्लवनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य कामी, धनवान्, निरंतर सेवा करके आदर पानेवाला, स्त्रियोंसे संतापको प्र शुभबुद्धि और चपलस्वभाव होता है ॥ ३५ ॥

अथ शुभकृत्संवत्सरजातफलम् ।

सौभाग्यविद्याविनयैः समेतः पुण्यैरगण्यैरपि दीर्घजीवी ।
स्यान्मानवः सूनुधनोरुसंपद्यस्य प्रसूतिः शुभकृत्समासु ॥३६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभकृत् संवत्सर हो वह मनुष्य सौभाग्य विद्या नम्रता करके सहित, बहुत पुण्यों करके युक्त, बड़ी उमरवाला और पुत्र, धन और संपदासे सौख्य पाता है ॥ ३६ ॥

अथ शोभनसंवत्सरजातफलम् ।

सर्वोन्नतश्चारुगुणो दयालुः सत्कर्मकर्ता विजयी विशेषात् ।
कांतो विनीतः शुभदृक्प्रवीणो यः शोभने वत्सरके हि जातः॥३७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम संवत्सर होता है वह मनुष्य ऊंचे शरीरवाला, सुंदर गुणोंसहित, दयावान्, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, विजयको प्राप्त, सुंदर, नम्रतासहित, श्रेष्ठ नेत्रोंवाला और प्रवीण होता है ॥ ३७ ॥

अथ क्रोधिसंवत्सरजातफलम् ।

क्रूरेक्षणः क्रूरतरस्वभावः स्त्रीवल्लभः पर्वततुल्यगर्वः ।
स्यादन्तरायः परकार्यकाले क्रोधी भवेत्क्रोधिशरत्प्रसूतः ३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्रोधी संवत्सर हो वह मनुष्य क्रूर दृष्टिवाला, दुष्टस्वभाववाला, स्त्रीका प्यारा, पहाडके समान अभिमानी, पराये कार्यमें विघ्न करनेवाला और क्रोधी होता है ॥ ३८ ॥

अथ विश्वावसुसंवत्सरजातफलम् ।

मृदुरुदारः सुभगः सुदान्तो नरः सदाचाररतोऽतिधीरः ।
नितान्तकान्तः सकलगुणाभिरामो विश्वावसौ यस्य भवेत्प्रसूतिः३९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विश्वावसु संवत्सर होता है वह मनुष्य मृदु और [illegible], निरंतर उदार, हमेशा आचारमें तत्पर, अतिधीरजवाला, नितान्त मनोहर और सम्पूर्ण गुणोंकरके युक्त होता है ॥ ३९ ॥

अथ पराभवसंवत्सरजातफलम्।

धनस्य धान्यस्य च नैव किंचित्सुसंग्रहोऽत्यंतकठोरवाक्यः।
आचारतात्पत्वशठत्वयुक्तो पराभवे यस्य भवेत्प्रसूतिः ॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पराभव संवत्सर होता है वह मनुष्य धन धान्य रके रहित चाहे कितना संग्रह करे, कठोर वाक्य बोलनेवाला, आचारता और ड़ी शठता सहित होता है ॥ ४० ॥

अथ प्लवङ्गसंवत्सरजातफलम्।

भवेदलं चंचलचित्तवृत्तिर्न स्यात्प्रवृत्तः खलु साधुकार्ये।
धूर्तः सदाचारविचारहीनः प्लवङ्गजो वै मनुजः कृशाङ्गः॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्लवङ्ग संवत्सर होता है वह मनुष्य परिपूर्णतासहित चंचल चित्तवृत्तिवाला, श्रेष्ठ कार्यमें प्रवृत्ति नहीं करे, धूर्त, हमेशा आचार विचार हित और दुर्बलदेह होता है ॥ ४१ ॥

अथ कीलकसंवत्सरजातफलम्।

रूपेण मध्यः प्रियवाग्दयालुर्जलाभिलाषी त्वनुवेलमेव।
स्थूलाङ्घ्रिसन्मौलिरलंबलीयान्किलारिकीलः किलके प्रसूतः ४२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कीलक संवत्सर होता है वह मनुष्य स्वरूपमें मध्यम, प्यारी वाणी बोलनेवाला, दयावान्, वारंवार जलकी इच्छा करनेवाला, स्थूलदेह, श्रेष्ठशिर और बल करके पूर्ण होता है ॥ ४२ ॥

अथ सौम्यसंवत्सरजातफलम्।

पण्डितो हि धनवान्बहुभोगी देवतातिथिरुचिः शुचिरुच्चैः।
सात्त्विकः कृशकलेवरयष्टिः सौम्यवत्सरभवो हि नरः स्यात् ४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौम्य संवत्सर होता है वह मनुष्य पंडित, धनवान्, बड़ा भोगी, देवता और अतिथिमें प्रीति करनेवाला, बड़ा पवित्र, सात्त्विक स्वभाव और दुर्बल देहवाला होता है ॥ ४३ ॥

अथ साधारणसंवत्सरजातफलम्।

इतस्ततः संचलनानुरक्तो लिपिक्रियायां कुशलो विवेकी।
क्रोधी शुचिर्भोगनिवृत्तचेताःप्राणीति साधारणजःप्रगीतः॥४४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राक्षसनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य क्रूर खोटे कर्म करनेवाला, कलहमें तत्पर, श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ विचारोंको त्यागनेवाला, दयारहित और साहसी होता है ॥ ४९ ॥

अथ नलसंवत्सरजातफलम् ।

समृद्धिशाली जलसस्यसंपद्वैश्यानुवृत्तौ कुशलः सुशीलः ।
स्यादल्पवित्तो बहुपालकश्च जातो नलाब्दे चपलो मनुष्यः॥५०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नलनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला, खेती करके धन पैदा करनेवाला, वैश्यवृत्ति करनेमें चतुर, श्रेष्ठ, सुशील, थोड़े धनवाला, बहुत जनोंका पालन करनेवाला और चपल होता है ॥ ५० ॥

अथ पिंगलसंवत्सरजातफलम् ।

पिङ्गेक्षणो गर्हितकर्मकर्ता स्यादुद्धतश्चंचलवैभवाढ्यः ।
त्यागी शठोऽत्यंतकठोरवाक्यो जातो नरः पिंगलनामधेये॥५१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पिंगलनाम संवत्सर हो वह मनुष्य पीले नेत्रोंवाला, निषिद्ध कर्म करनेवाला, उद्धत, चंचल, वैभव करके गर्हित, त्यागी, शठ और अत्यन्त कठोर वाक्यवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ कालयुक्तसंवत्सरजातफलम् ।

अनल्पजल्पः प्रियतामुपेतस्त्वसाधुबुद्धिर्विधिना वियुक्तः ।
कलिप्रसंगे किल कालरूपो यः कालयुक्तप्रभवः कृशांगः॥५२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कालयुक्त संवत्सर होता है वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, प्रीतिसहित खोटी बुद्धिवाला, विधियों करके वियुक्त, कलह करनेवाला और विकरालरूप होता है ॥ ५२ ॥

अथ सिद्धार्थिसंवत्सरजातफलम् ।

उदारचेता विलसत्प्रसादो रणाङ्गणप्राप्तयशाः सुवेषः ।
नरेंद्रमंत्री बहुपूजितार्थी सिद्धार्थिजातो मनुजः समर्थः ॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धार्थी संवत्सर हो वह मनुष्य उदारचित्त, दयावान, संग्राममें यशको प्राप्त, सुन्दर वेषवाला, राजाका मंत्री और बहुत जनोंकरके पूजनीय होता है ॥ ५३ ॥

अथ रौद्रसंवत्सरजातफलम् ।

भयंकरः पालयिता पशूनां शश्वत्परीवादपरोऽतिधूर्तः ।
जातापकीर्तिःखलचित्तवृत्तिर्नरोऽतिरौद्रः खलु रौद्रजन्मा॥५४॥

अथ क्रोधनसंवत्सरजातफलम् ।

स्यादंतरायो हि परस्य कार्ये तमोगुणाधिक्यभयंकरश्च ।
परस्य बुद्धिं प्रहरेत्प्रकामं यो हायने क्रोधननाम्नि जातः॥५९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्रोधननाम संवत्सर हो वह मनुष्य पराये कार्यमें विघ्न करनेवाला, अधिक क्रोधी, भयंकर स्वरूप और परायी बुद्धिका अत्यन्त हरनेवाला होता है ॥ ५९ ॥

अथ क्षयसंवत्सरजातफलम् ।

उपार्जितार्थव्ययकृन्नितान्तं सेवारतो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ।
सत्कर्ममार्गेऽल्पमनःप्रवृत्तिः क्षयाभिधाने जननं हि यस्य॥६०॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे संवत्सरजातफलाध्यायः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षयनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य पैदा किये धनको व्यय करनेवाला, निरंतर सेवामें तत्पर, कठोरचित्त और श्रेष्ठ कर्म करनेमें थोड़ी मनकी वृत्तिवाला होता है ॥ ६० ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुरराजज्योतिषिक-पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां षष्टिसंवत्सरजातफलवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ अयनजातफलमाह तत्र उत्तरायणजातफलम् ।

शश्वत्प्रसन्नो ननु सूनुकांतासंतोषयुक्तोऽतितरां चिरायुः ।
नरः सदाचारपरोऽप्युदारो धीरश्च सौम्यायनजातजन्मा ॥१॥

जो मनुष्य उत्तरायणसूर्यमें पैदा हो वह मनुष्य निरंतर प्रसन्न, निश्चय कर पुत्र और स्त्री करके सन्तोषको प्राप्त, बड़ी उमरवाला, हमेशा आचारमें तत्पर, उदार और धीरवान् होता है ॥ १ ॥

अथ दक्षिणायनजातफलम् ।

अखर्वगर्वः कृषिकर्मकर्ता चतुष्पदाढ्योऽतिकठोरचित्तः ।
शठोऽप्यसह्यो ननु मानवानां याम्यायने नाजननं प्रपन्नः ॥२॥

जो मनुष्य दक्षिणायनमें जन्मता है वह मनुष्य बड़ा अभिमानी, खेती करनेवाला, चतुष्पदोंसहित, अत्यन्त कठोरचित्त और शठ सदा किसीकी बातको सहनेवाला नहीं होता है ॥ २ ॥

अथ ऋतुजातफलमाह—तत्रादौ वसंतऋतुजातफलम्।

कंदर्परूपो मतिमान्प्रतापी सङ्गीतशास्त्रे गणिते प्रवीणः।
शास्त्रप्रभूतामलचैलचेता वसंतजन्मा मनुजः प्रसन्नः॥ १॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वसन्त हो वह मनुष्य कामदेवसमान रूपवाला, बुद्धिमान, प्रतापी, गाने बजानेमें प्रवीण, गणितशास्त्रमें चतुर, बहुत शास्त्रोंका जाननेवाला, सुन्दर वस्त्र धारण करनेवाला और प्रसन्नचित्त होता है॥ १॥

अथ ग्रीष्मऋतुजातफलम्।

ऐश्वर्यविद्याधनधान्ययुक्तो वक्ता प्रलम्बामलकेशपाशः।
भोगी भवेन्नीरविहारशीलो यो ग्रीष्मकालोद्भवतां प्रसन्नः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रीष्मऋतु हो वह मनुष्य ऐश्वर्य और विद्या, धन अन्न करके सहित, बहुत बोलनेवाला, बहुत बड़े लम्बे सुन्दर केशोंवाला, भोगी और जलमें विहार करनेमें शील जिसका, ऐसा होता है॥ २॥

अथ वर्षर्तुजातफलम्।

संग्रामधीरो मतिमान्प्रतापी तुरंगमप्रेमकरः सुरूपः।
कफानिलात्मा ललनाविलासी वर्षोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः॥३॥

जो मनुष्य वर्षाऋतुमें पैदा हो वह मनुष्य युद्धमें धैर्यवाला, बुद्धिमान्, प्रतापी, घोड़ेमें प्रीति करनेवाला, रूपवान्, कफ और वात करके सहित, स्त्रियोंमें विलास करनेवाला और विचित्र मन्त्रवाला होता है॥ ३॥

अथ शरदृतुजातफलम्।

अल्पप्रकोपः पुरुषोऽनिलात्मा मानी धनी कर्मरुचिः शुचिः स्यात्।
रम्यप्रियो वाहनसंयुतश्च ऋतौ शरन्नाम्नि च यस्य जन्म॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शरद् ऋतु हो वह मनुष्य क्रोधहीन, वातप्रकृतिवाला, अभिमानी, धनवान, कर्मोंमें प्रीति करनेवाला, पवित्रदेह, सौन्दर्य जिसको प्यारा और वाहनों करके सहित होता है॥ ४॥

अथ हेमंतऋतुजातफलम्।

नरेन्द्रमंत्री चतुरोऽप्युदारो नरो मंत्रयाकगुणोपपन्नः।
स्वकर्मधर्मानुरतो मनस्वी हेमंतजातः प्रभवेद्विनीतः॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हेमन्त ऋतु होती है वह मनुष्य राजाका मंत्री, चतुर, उदार, श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित, श्रेष्ठ कर्म धर्मसहित और निरंतर नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ शिशिरऋतुजातफलम्।

मिष्टान्नपानानुरतो नितांतं क्षुधान्वितः पुत्रकलत्रसौख्यः।
सत्कर्मवेषः पुरुषः सरोषो बलाधिशाली शिशिरर्तुजन्मा ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शिशिरऋतु हो वह मनुष्य मिष्टान्नपानमें तत्पर, क्षुधासहित, पुत्र और स्त्री सहित सौख्यवान, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, क्रोधसहित व बलवान् होता है ॥ ६ ॥

अथ मासजातफलमाह—तत्रादौ चैत्रजातफलम्।

सत्कर्मविद्याविनयोपपन्नो भोगी नरः स्यान्मधुरान्नभोजी।
सत्पात्रमित्रानुरतश्च मन्त्री चैत्रोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः ॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चैत्र मास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसहित, भोगी, मधुर अन्नका खानेवाला, सत्पुरुषोंसे मित्रता करनेवाला, राजाका मंत्री तथा विचित्र मन्त्रवाला होता है ॥ १ ॥

अथ वैशाखमासजातफलम्।

सुलक्षणः पुण्यगुणानुशीलः पुमान्बलीयान्द्विजदेवभक्तः।
कामी चिरायुर्जलपानशीलः स्यान्माधवे बांधवसौख्ययुक्तः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वैशाखमास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ लक्षणवाला, पुण्य गुणोंमें शीलवाला, बलवान्, देवता और ब्राह्मणोंका भक्त, कामी, बड़ी उमरवाला, जलपानमें शील और भाइयोंके सौख्यसहित होता है ॥ २ ॥

अथ ज्येष्ठमासजातफलम्।

क्षमान्वितश्चञ्चलचित्तवृत्तिर्विदेशवासाभिरुचिश्च तीव्रः।
विचित्रबुद्धिः खलु दीर्घसूत्री ज्येष्ठोद्भवः श्रेष्ठतरो नरः स्यात्॥३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ज्येष्ठमास होता है वह मनुष्य क्षमासहित, चंचल चित्तवाला, परदेशमें वास करनेवाला, शीघ्र, विचित्र बुद्धिवाला, बहुत देरमें काम करनेवाला और श्रेष्ठ मनुष्य होता है ॥ ३ ॥

अथ आषाढमासजातफलम्।

बहुव्ययोऽनल्पवचोविलासः प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च।
सदामिर्मांद्यः शुभकर्मकृत्स्यादाषाढजो गाढतराभिमानः ॥४॥

अथ ऋतुजातफलमाह—तत्रादौ वसंतऋतुजातफलम् ।

कंदर्परूपो मतिमान्प्रतापी सङ्गीतशास्त्रे गणिते प्रवीणः ।
शास्त्रप्रभूतामलचेलचेता वसंतजन्मा मनुजः प्रसन्नः ॥ १

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वसन्त हो वह मनुष्य कामदेवसमान रूपवाला, बुद्धिमान, प्रतापी, गाने बजानेमें प्रवीण, गणितशास्त्रमें चतुर, बहुत शास्त्रोंका जाननेवाला, सुन्दर वस्त्र धारण करनेवाला और प्रसन्नचित्त होता है ॥ १ ॥

अथ ग्रीष्मऋतुजातफलम् ।

ऐश्वर्यविद्याधनधान्ययुक्तो वक्ता प्रलम्बामलकेशपाशः ।
भोगी भवेन्नीरविहारशीलो यो ग्रीष्मकालोद्भवतां प्रसन्नः॥२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रीष्मऋतु हो वह मनुष्य ऐश्वर्य और विद्या, धन अन्न करके सहित, बहुत बोलनेवाला, बहुत बड़े लम्बे सुन्दर केशोंवाला, भोगी और जलमें विहार करनेमें शील जिसका, ऐसा होता है ॥ २ ॥

अथ वर्षर्तुजातफलम् ।

संग्रामधीरो मतिमान्प्रतापी तुरंगमप्रेमकरः सुरूपः ।
कफानिलात्मा ललनाविलासी वर्षोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः ॥३॥

जो मनुष्य वर्षाऋतुमें पैदा हो वह मनुष्य युद्धमें धैर्यवाला, बुद्धिमान्, प्रतापी घोड़ेसे प्रीति करनेवाला, रूपवान्, कफ और वात करके सहित, स्त्रियोंमें विलास करनेवाला और विचित्र सलाहवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ शरदृतुजातफलम् ।

अपूर्णरोषः पुरुषोऽनिलात्मा मानी धनी कर्मरुचिः शुचिः स्यात् ।
रणप्रियो वाहनसंयुतश्च ऋतौ शरन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शरद् ऋतु हो वह मनुष्य क्रोधहीन, वातप्रकृतिवाला, अभिमानी, धनवान, कर्मोंमें प्रीति करनेवाला, पवित्रदेह, संग्राम जिसको प्यारा और वाहनों करके सहित होता है ॥ ४ ॥

अथ हेमंतऋतुजातफलम् ।

नरेंद्रमंत्री चतुरोऽप्युदारो नरो भवेच्चारुगुणोपपन्नः ।
सत्कर्मधर्मानुरतो मनस्वी हेमंतजातः सततं विनीतः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हेमन्त ऋतु होती है वह मनुष्य राजाका मंत्री, चतुर, उदार, श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित, श्रेष्ठ कर्म धर्मसहित और निरंतर नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ शिशिरऋतुजातफलम्।

मिष्टान्नपानानुरतो नितांतं क्षुधान्वितः पुत्रकलत्रसौख्यः।
सत्कर्मवेषः पुरुषः सरोषो बलाधिशाली शिशिरर्तुजन्मा ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शिशिरऋतु हो वह मनुष्य मिष्टान्नपानमें तत्पर, क्षुधासहित, पुत्र और स्त्री सहित सौख्यवान्, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, क्रोधसहित व बलवान् होता है ॥ ६ ॥

अथ मासजातफलमाह–तत्रादौ चैत्रजातफलम्।

सत्कर्मविद्याविनयोपपन्नो भोगी नरः स्यान्मधुरान्नभोजी।
सत्पात्रमित्रानुरतश्च मन्त्री चैत्रोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः ॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चैत्र मास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसहित, भोगी, मधुर अन्नका खानेवाला, सत्पुरुषोंसे मित्रता करनेवाला, राजाका मंत्री तथा विचित्र मन्त्रवाला होता है ॥ १ ॥

अथ वैशाखमासजातफलम्।

सुलक्षणः पुण्यगुणानुशीलः पुमान्बलीयान्द्विजदेवभक्तः।
कामी चिरायुर्जलपानशीलः स्यान्माधवे बांधवसौख्ययुक्तः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वैशाखमास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ लक्षणवाला, पुण्य गुणोंमें शीलवाला, बलवान्, देवता और ब्राह्मणोंका भक्त, कामी, बड़ी उमरवाला, जलपानमें शील और भाइयोंके सौख्यसहित होता है ॥ २ ॥

अथ ज्येष्ठमासजातफलम्।

क्षमान्वितश्चञ्चलचित्तवृत्तिर्विदेशवासाभिरुचिश्च तीव्रः।
विचित्रबुद्धिः खलु दीर्घसूत्रो ज्येष्ठोद्भवः श्रेष्ठतरो नरः स्यात् ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ज्येष्ठमास होता है वह मनुष्य क्षमासहित, चंचल चित्तवाला, परदेशमें वास करनेवाला, तीव्र, विचित्र बुद्धिवाला, बहुत देरसे काम करनेवाला और श्रेष्ठ मनुष्य होता है ॥ ३ ॥

अथ आषाढमासजातफलम्।

बहुव्ययोऽनल्पवचोविलासः प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च।
सदाग्निमांद्यः शुभकर्मकृत्स्यादाषाढजो गाढतराभिमानः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आषाढ़मास होता है वह मनुष्य बहुत खर्च क॰ वाला, बहुत बोलनेवाला, आलस्य करनेवाला, गुरुका भक्त, हमेशा मन्दाग्निवाला, शुभ कर्म करनेवाला और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ श्रावणमासजातफलम्।

पुत्रैश्च पौत्रैश्च कलत्रमित्रैः सुखी च तातस्य निदेशकर्ता।
लोकप्रसिद्धः कफवान्वदान्यो गुणान्वितः श्रावणमासजन्मा

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रावण मास हो वह मनुष्य पुत्र पौत्र स्त्री और मि॰ करके सुखी और पिताकी आज्ञा पालन करनेवाला, संसारमें प्रसिद्ध, कफ स॰ और गुणों करके युक्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भाद्रपदमासजातफलम्।

श्रीमान्भवेत्क्षीणकलेवरश्च दाता च कांताश्रुतजातसौख्यः।
सुखे च दुःखेऽविकृतो हि मर्त्यो भवेन्नरो भाद्रपदासजन्मा ६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भाद्रपद मास होता है वह मनुष्य लक्ष्मीवान्, क्षीणश॰ रीर, दानी, स्त्री और शास्त्रसे सौख्य पानेवाला तथा सुख और दुःखमें विकृत नहीं होता है ॥ ६ ॥

अथ आश्विनमासजातफलम्।

विद्वान्धनी राजकुलप्रियश्च सत्कार्यकर्त्ता बहुभृत्ययुक्तः।
दाता गुणज्ञो बहुपुत्रसंपत्स्यादाश्विनेऽश्वादिसमृद्धियुक्तः ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आश्विन मास हो वह मनुष्य विद्वान, धनवान, राजाका प्यारा, श्रेष्ठ कार्य करनेवाला, बहुत नौकरोंवाला, दानी, गुणका जाननेवाला, बहुत पुत्र-संपत्ति और अश्वादि समृद्धियुक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ कार्तिकमासजातफलम्।

सत्कर्मकर्ता बहुवाग्विलासो धनी लसत्कुंचितकेशपाशः।
कामं सकामः क्रयविक्रयार्थी सत्कृत्यकृत्कार्तिकजातजन्मा ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कार्तिक मास हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्मकरनेवाला, बहुत बातें बोलनेवाला, धनवान, टेढ़े बालोंवाला, कामी, क्रय विक्रय अर्थी तथा अच्छे काम करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ मार्गशिरमासजातफलम्।

सत्तीर्थयात्रानिरतः सुशीलः कलाकलापे कुशलो विलासी।
परोपकर्ता धनसाधुमार्गो मार्गोद्भवो वै विभवैः समेतः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मार्गशिरमास हो वह मनुष्य श्रेष्ठ, तीर्थोंकी यात्रा करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ शीलवाला, कलाओंके समूहमें चतुर, पराया उपकार करनेवाला, श्रेष्ठ मार्गको धारण करनेवाला तथा वैभवसहित होता है ॥ ९ ॥

अथ पौषमासजातफलम्।

परोपकारी पितृवित्तहीनः कष्टार्जितार्थव्ययकृद्धिधिज्ञः।
सुगुप्तमंत्रः कृतशास्त्रयत्नः पौषे विशेषात्पुरुषः कृशाङ्गः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पौष मास हो वह मनुष्य पराया उपकार करनेवाला, पिताके धनसे रहित, कष्टसे धन पैदा करनेवाला, थोड़ा खर्च करनेवाला, गुप्त मंत्र करनेवाला, शास्त्रमें यत्न करनेवाला तथा दुर्बलदेह होता है ॥ १० ॥

अथ माघमासजातफलम्।

सन्मंत्रविद्वैदिकसाधुयोगी योगोक्तविद्याव्यसनानुरक्तः।
बुद्धेर्विशेषान्निहतारिसंघो माघोद्भवः स्यादनघो मनुष्यः॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें माघमास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ मंत्रोंका जाननेवाला, वेदका जाननेवाला, साधु-योगवाला, योगशास्त्रोक्त विद्याके व्यसनमें तत्पर, बड़ी बुद्धिमत्तासे शत्रुदलका नाश करनेवाला, अपापी होता है ॥ ११ ॥

अथ फाल्गुनमासजातफलम्।

परोपकारी कुशलो दयालुर्बलान्वितः कोमलकायशाली।
विलासिनीकेलिविधानशीलो यः फाल्गुनेफल्गुवचोविलासः१२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें फाल्गुन मास हो वह मनुष्य पराये उपकार करनेमें कुशल, दयावान्, कोमल शरीरवाला, स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला और निःसार वचन बोलनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ मलमासजातफलम्।

विषहीनमतिः सुचरित्रदृग्विविधतीर्थकरश्च निरामयः।
सकलवल्लभ आत्महितंकरः खलु मलिम्लुचमाससमुद्भवः१३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मलमास होता है वह मनुष्य विषयमें हीनबुद्धिवाला, श्रेष्ठ चरित्रसहित, रोगरहित, अनेक तीर्थयात्रा करनेवाला, सबका प्यारा और अपने जनोंका हित करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ पक्षजातफलमाह तत्रादौ शुक्लपक्षजातफलम्।

चंचच्चिरायुः सुतरां सुशीलः श्रीपुत्रवान्कोमलकायकांतिः।
सदा सहर्षश्च विनीतकालश्चेज्जन्मकालस्तु वलक्षपक्षे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लपक्ष हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, निरंतर श्रेष्ठ शीलवाला, लक्ष्मी और पुत्रवान, कोमलदेहकांतिमान्, हमेशा आनंद सहित तथा नम्रतासहित होता है ॥ १ ॥

अथ कृष्णपक्षजातफलम् ।

प्रतापशीलो विबलश्च लोलः कलिप्रियः स्वीयकुलोद्धतश्च ।
मनोभवाधिक्ययुतो नितांतं सितेतरे यस्य नरस्य जन्म ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृष्णपक्ष होता है वह मनुष्य प्रतापी, शीलवान निर्बल, चञ्चल, कलह जिसको प्रिय, अपने कुलसे विपरीत और अत्यंत कामी होता है ॥ २ ॥

अथ दिनरात्रिजातफलमाह—तत्रादौ दिवाजातफलम् ।

तेजस्वी पितृसादृश्यश्चारुदृष्टिर्नृपप्रियः ।
बंधुपूज्यो धनाढ्यश्च दिवाजातो नरो भवेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यका जन्म दिनमें हो वह मनुष्य तेजवाला, पिताके तुल्य, सुंदर नेत्रवाला, राजाओंका प्यारा, भाइयों करके पूज्य और धनवान होता है ॥ १ ॥

अथ रात्रिजातफलम् ।

मन्ददृग्बहुकामार्तः क्षयरोगी मलीमसः ।
क्रूरात्मा छन्नपापश्च निशि जातो नरो भवेत् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यका जन्म रात्रिमें हो वह मनुष्य मंद नेत्रवाला, बहुत कामातुर, क्षयरोगवाला, मलिनतावाला, दुष्टात्मा और पापोंसे आच्छादित होता है ॥ २ ॥

अथ तिथिजातफलमाह तत्रादौ प्रतिपदाजातफलम् ।

बहुजनपरिवारश्चारुविद्यो विवेकी
कनकमणिविभूषाविभ्रमाली सुशीलः ।
अतिमृदुलितकान्तिर्भूमिपालात्तवित्तः
प्रतिपदि यदि सूतिर्जायते यस्य जन्तोः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रतिपदा तिथि हो वह मनुष्य बहुत जन और परिवारवाला, सुन्दर विद्यावान, विवेकी, सोना मणि और आभूषण सहित, शील स्वभाववाला, अति सुन्दर कांतिवाला और राजासे धनकी प्राप्ति करता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयाजातफलम् ।

दाता दयालुर्गुणवान्विवेकी सत्कर्मदानादिविचारदक्षः ।
सत्कर्मसंपूर्णतरोऽतिमन्दो द्वितीयातिथौसंभवः स्यात् ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वितीया तिथि हो वह मनुष्य दानी, दयावान्, गुणवान् और विवेकी होता है और निरंतर श्रेष्ठ आचार और विचारोंमें धन्य, प्रसन्न मूर्ति और बहुत यशवाला होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयाजातफलम्।

कामाधिकश्चाप्यनवद्यविद्यो बलान्वितो राजकुलाप्तवित्तः।
प्रवासशीलश्चतुरो विलासी मर्त्यस्तृतीयाप्रभवोऽभिमानी ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीया तिथि हो वह मनुष्य अधिक कामी, निर्दोष विद्यावाला, बलवान्, राजा करके धन प्राप्त करनेवाला, परदेशमें रहनेवाला, चतुर, विलासयुक्त और अभिमानी होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थीजातफलम्।

ऋणप्रवृत्तिर्बहुसाहसः स्याद्रणप्रवीणः कृपणस्वभावः।
द्यूते रतिर्लोलमना मनुष्यो वादी यदि स्याज्जनने चतुर्थी॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थी तिथि हो वह मनुष्य ऋणमें प्रवृत्ति करनेवाला, बड़ा साहसी, संग्राममें प्रवीण, जुआ खेलनेवाला, चंचलमन तथा विवाद करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमीजातफलम्।

सम्पूर्णगात्रश्च कलत्रपुत्रमित्रान्वितो भूतदयान्वितश्च।
नरेंद्रमान्यस्तु नरो वदान्यः प्रसूतिकाले किल पञ्चमी चेत्॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पञ्चमी तिथि हो वह मनुष्य पूर्णशरीर, स्त्री और पुत्र, मित्रों सहित, प्राणीमात्र पर दया करनेवाला, राजमान्य तथा दाता, होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठीजातफलम्।

सत्यप्रतिज्ञो धनसूनुसंपद्दीर्घोरुजानुर्मनुजो महौजाः।
प्रकृष्टकीर्तिश्चतुरो वरिष्ठः षष्ठ्यां प्रजातो व्रणकीर्णगात्रः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें षष्ठी तिथि हो वह मनुष्य सत्य प्रतिज्ञा करनेवाला, धन पुत्रोंकी संपदा सहित, बड़ी जंघा और जानुवाला, बड़ा पराक्रमी, बड़ी कीर्तिवाला, चतुर, श्रेष्ठ और घावयुक्त देहवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमीजातफलम्।

ज्ञानी गुणज्ञो हि विशालनेत्रः सत्पात्रदेवार्चनचित्तवृत्तिः।
कन्याप्रजो वै परवित्तहर्ता स्यात्सप्तमीजो मनुजोऽरिहंता ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमी तिथि हो वह मनुष्य ज्ञानी, गुणवान, नेत्रोंवाला, श्रेष्ठ मनुष्य और देवताओंके पूजनमें चित्त लगानेवाला, कन्या मंत्र पैदा करनेवाला, पराया धन हरण करनेवाला और शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमीजातफलम् ।

नानासंपत्सुतसौख्यः कृपालुः पृथ्वीपालप्राप्तविद्याधिकारः ।
कांताप्रीतिश्चंचला चित्तवृत्तिर्यस्याष्टम्यां जन्म चेन्मानवस्य ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमी तिथि हो वह मनुष्य अनेक पुत्र और संपत्तिका सौख्य पानेवाला, दयावान्, राजा करके विद्याके अधिकारको मान, स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला और चंचल चित्तवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमीजातफलम् ।

पराङ्मुखो बंधुजनस्य कार्ये कठोरवाक्यश्च सुधीविरोधी ।
नरः सदाचारगतादरःस्याद्यस्य प्रसूतौ नवमी तिथिश्चेत् ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमी तिथि हो वह मनुष्य अपने कुटुम्बियोंके कार्य विमुख, कठोर वाणी बोलनेवाला, पंडितोंका विरोधी और सदाचारमें आदरहीन होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमीजातफलम् ।

धर्मैकबुद्धिर्भवबैभवाढ्यः प्रलंबकण्ठो बहुशास्त्रपाठी ।
उदारचित्तोऽतितरां विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवःस्यात् १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमी तिथि हो वह मनुष्य धर्म करनेमें ही बुद्धि रखनेवाला, कल्याण और वैभव करके सहित, लंबे कंठवाला, बहुत शास्त्रोंका पढ़नेवाला, उदारचित्त तथा अत्यन्त नम्रता सहित और कामी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशीजातफलम् ।

देवद्विजार्चाव्रतदानशीलः सुनिर्मलांतःकरणः प्रवीणः ।
पुण्यैकचित्तोत्तमकर्मकृत्स्यादेकादशीजो मनुजः प्रसन्नः ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकादशी तिथि हो वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणोंके पूजन करनेवाला, व्रत और दान करनेमें है शील जिसका, कुशल और शुद्धान्तःकरणवाला, पुण्यमें ही है मन जिसका, उत्तम कर्म करनेवाला और प्रसन्न चित्तवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशीजातफलम्।

जलप्रियो वै व्यवहारशीलो निजालयावासविलासशीलः।
सदान्नदाता क्षितिपालवित्तः स्याद्वादशीजो मनुजःप्रजावान्१२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वादशी तिथि हो वह मनुष्य जलसे प्रीति करे, व्यवहारमें शील जिसका, अपने मकानपर रहनेमें और विलास करनेमें शील जिसका, हमेशा अन्नदान करनेवाला, राजासे धनको प्राप्त करनेवाला और पुत्रवान् होता है ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशीजातफलम्।

रूपान्वितः सात्त्विकताविमुक्तः प्रलम्बकंठश्च नरप्रसूतिः।
नरोऽतिशूरश्चतुरः प्रकामं त्रयोदशीनामतिथौ प्रसूतः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें त्रयोदशी तिथि हो वह मनुष्य रूपवान्, सत्त्वगुणरहित, लम्बी गर्दनवाला, बडा शूर वीर और अत्यन्त चतुर होता है ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशीजातफलम्।

क्रूरोऽतिशूरश्चतुरः सहासः कंदर्पलीलाकुलचित्तवृत्तिः।
स्याद्दुःसहोऽत्यंतविरुद्धभाषी चतुर्दशीजः पुरुषः सरोषः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्दशी तिथि हो वह मनुष्य क्रूरस्वभाव, शूरवीर, चतुर, हास्ययुक्त, कामक्रीडाकरके व्याकुल चित्त, किसीसे सहा न जाय तथा दुष्ट वाणी बोलनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ पौर्णमासीजातफलम्।

अतिसुललितकामो न्यायसंप्राप्तवित्तो
बहुयुवतिसमेतो नित्यसंजातहर्षः।
प्रबलतरविलासोऽत्यंतकारुण्यपुण्यो
गुणगणपरिपूर्णः पूर्णिमाजातजन्मा ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्णमासी तिथि हो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर देहवाला, न्याय करके धन पैदा करनेवाला व बहुत स्त्रियोंसहित हमेशा हर्षको प्राप्त, अत्यन्त विलास करनेवाला, अत्यन्त दयावान्, पुण्यवान्, गुणोंके समूहसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ अमावास्याजातफलम्।

शांतो मनस्वी पितृमातृभक्तः क्लेशाप्तवित्तश्च धनागमेच्छुः।
मान्यो जनानां हतकांतिहर्षोदर्शोद्भवःस्यात्पुरुषःकृशाङ्गः॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अमावास्या तिथि हो वह मनुष्य शांतचि माता पिताका भक्त, क्लेशसे प्राप्त धनवाला, धनके प्राप्त करनेकी इच्छावाला, म ष्योंमें माननीय, कांति रहित और दुर्बलदेह होता है ॥ १६ ॥

अथ वारजातफलमाह–तत्रादौ रविवारजातफलम्।

शूरोऽल्पकेशो विजयी रणाग्रे श्यामारुणः पित्तचयप्रकोपः।
दाता महोत्साहयुतो महौजा दिने दिनेशस्य भवेन्मनुष्यः॥१

जो मनुष्य रविवारके दिन पैदा होता है वह मनुष्य शूर वीर, थोड़े केश वाला, संग्राममें यशको प्राप्त होता है और श्यामता लिये लालवर्णवाला, पित्त समूहसे कोपित, दानी, बड़ा उत्साहवाला व पराक्रमी होता है ॥ १ ॥

अथ सोमवारजातफलम्।

प्राज्ञः प्रशांतः प्रियवाग्विधिज्ञः शश्वन्नरेंद्राश्रयवृत्तिवर्ती।
सुखे च दुःखे च समस्वभावो वारे नरः शीतकरस्य जातः॥२

जिस मनुष्यका जन्म चंद्रवारको होता है वह मनुष्य चतुर, शांतचि प्यारी वाणी बोलनेवाला, विधियोंको जाननेवाला, निरंतर राजाके आश्र करके आजीविका करनेवाला तथा सुख और दुःखमें एकसा स्वभाववा होता है ॥ २ ॥

अथ भौमवारजातफलम्।

वक्रोक्तिरत्यंतरणप्रियः स्यान्नरेंद्रमंत्री च धरोपजीवी।
सत्त्वान्वितस्तीव्रतरस्वभावो दिने भवेन्नावनिनंदनस्य ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म मंगलवारको होता है वह मनुष्य टेढी वाणी बोलने वाला, संग्राम जिसको प्यारा, राजाका वजीर, पृथिवी करके आजीविका करनेवाला बलवान और अति तीव्र स्वभाववाला होता है ॥ ३ ॥

अथ बुधवारजातफलम्।

सद्रूपशाली मृदुवाग्विलासः श्रीमान्कलाकौशलतासमेतः।
वणिक्क्रियायां हि भवेदभिज्ञः प्राज्ञो गुणज्ञो ज्ञदिनोद्भवो यः॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधवार होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला, मीठी वाणी बोलनेवाला, श्रीमान् कलाओंमें कुशल, वणिग् व्यापारमें निपुण, विद्वान् और गुणोंका जाननेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ गुरुवारजातफलम्।

विद्वान्धनी सर्वगुणोपपन्नो मनोरमः क्ष्मापतिलब्धकामः।
आचार्यवर्यश्च जनप्रियः स्याद्वारे गुरोर्यस्य नरस्य जन्म ॥५॥

जिस मनुष्यका जन्म गुरुवारको होता है वह मनुष्य विद्वान्, धनवान्, सम्पूर्ण गुणोंसहित, मनका हरनेवाला, राजा करके कामनाको प्राप्त, श्रेष्ठ आचार्य और मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ ५ ॥

अथ भृगुवारजातफलम्।

सुनीलसत्कुंचितकेशपाशः प्रसन्नवेषो मतिमान्विशेषात्।
शुक्लांबरः प्रीतिधरो नरः स्यात्सन्मार्गगो भार्गववारजन्मा॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भृगुवार होता है वह मनुष्य सुंदर, नीलवर्णके घूंघवाले बालोंवाला, प्रसन्नचित्त, विशेष बुद्धिमान्, सफेद वस्त्रोंको धारण करनेवाला, प्रीति करनेवाला और श्रेष्ठ मार्गपर चलनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ शनिवारजातफलम्।

अकालसंप्राप्तजराप्रवृत्तिर्बलोज्झितो दुर्बलदेहयष्टिः।
तमोगुणी क्रौर्यचयाभिभूतः शनेर्दिने जातजनुर्मनुष्यः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनिवार होता है वह मनुष्य विना समयके आये बुढ़ापेको प्राप्त, बलहीन, दुर्बल देहवान्, तमोगुणी और क्रूरस्वभाववाला होता है ॥ ७ ॥

अथ नक्षत्रजातफलमाह तत्रादावश्विनीनक्षत्रजातफलम्।

सदैव सेवाभ्युदितो विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसंपत्।
योषाविभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य ॥१॥

जिस मनुष्यका जन्म अश्विनी नक्षत्रमें हो वह मनुष्य हमेशा सेवा करनेवाला, नम्रतासहित, सत्ययुक्त, सम्पूर्ण प्रकारकी संपत्तियोंको प्राप्त, स्त्री और आभूषण तथा पुत्रादिकों करके बड़े सन्तोषको प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ भरणीनक्षत्रजातफलम्।

सदापकीर्तिर्हि महापवादैर्नानाविनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतो भरणीभजातः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भरणी नक्षत्र होता है वह मनुष्य सदा अपयशभागी, बड़ी निंदा करके युक्त, अनेक विनोदों करके समयको व्यतीत करनेवाला, जलसे अधिक डरनेवाला, चपल और खलस्वभाववाला होता है ॥ २ ॥

अथ कृत्तिकानक्षत्रजातफलम्।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीनो वृथाटनोत्पन्नमतिः कृतघ्नः।
कठोरवाग्गर्हितकर्मकृत्स्याच्चेत्कृत्तिका जन्मनि यस्य जंतोः॥३॥

जिसमनुष्यका जन्म कृत्तिका नक्षत्रमें होता है वह मनुष्य अधिक क्षुधावाला, और धन रहित, विनाकार्य घूमनेवाला, कृतघ्न और कठोर वाणी बोलनेवाला निंदित कर्म करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ रोहिणीनक्षत्रजातफलम् ।

धर्मकर्मकुशलः कृषीवलश्चारुशीलविलसत्कलेवरः ।
वाग्विलासकलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्य जन्मभम्

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रोहिणी नक्षत्र हो वह मनुष्य धर्मकर्ममें कुशल खेती करनेवाला, सुन्दर शीलवाला, सुन्दर शरीर, वाणियोंसे सभी आशयोंका प्र करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ मृगशिरनक्षत्रजातफलम् ।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गुणेषु ।
भोक्ता नृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृत्तो मृगजातजन्मा ॥ ५

जिस मनुष्यका जन्म मृगशिर नक्षत्रमें होता है वह मनुष्य धनुषविद्याके अभ्यासमें तत्पर, नम्रतासहित, गुणियोंके गुणोंमें हमेशा तत्पर, भोग करनेवाला, राजस्नेहसे पूर्ण व श्रेष्ठमार्गकी वृत्ति करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ आर्द्रानक्षत्रजातफलम् ।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकांतिर्बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः ।
प्रसूतिकाले च भवेत्किलार्द्रा दयार्द्रचेता न भवेन्मनुष्यः ॥६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आर्द्रानक्षत्र हो वह मनुष्य अधिक भूखवाला, रूखे शरीरवाला, कोपसहित, भाइयोंका प्यारा, कृतघ्न और निर्दय चित्त होता है ॥ ६

अथ पुनर्वसुनक्षत्रजातफलम् ।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः ।
दाता धरित्रीवसुभिः समेतः पुनर्वसुर्यस्य भवेत्प्रसूतौ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पुनर्वसु नक्षत्र होता है वह मनुष्य बहुत मित्रों वाला, शास्त्रका यत्न करनेवाला, श्रेष्ठ रत्न और सोनेके आभूषणोंसहित, दानी, पृथ्वी और धनोंसे युक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ पुष्यनक्षत्रजातफलम् ।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयानुयुक्तः ।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सन्माननानाधनवाहनाढ्यः ॥८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पुष्य नक्षत्र होता है वह मनुष्य प्रसन्नदेह, पिता और माताका भक्त, अपने धर्ममें आसक्त, विनयसहित, सम्मान और अनेक प्रकारके धन वाहनोंवाला होता है ॥ ८ ॥

अथाश्लेषानक्षत्रजातफलम्।

वृथाटनः स्याददतिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदश्चापि वृथा जनानाम्।
सार्पे सदर्थो हि वृथार्पितार्थः कंदर्पसंतप्तमना मनुष्यः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आश्लेषा नक्षत्र हो वह मनुष्य व्यर्थ भ्रमण करनेवाला, अत्यन्त दुष्टचित्त, वृथा ही मनुष्योंको कष्ट देनेवाला, धनको वृथा खर्च करनेवाला और कामकला करके दुःखचित्त होता है ॥ ९ ॥

अथ मघानक्षत्रजातफलम्।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्रस्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेज्जन्मभं यस्य मघानघः सन्मतिः सदारातिविघातदक्षः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मघा नक्षत्र हो वह मनुष्य कठोर चित्तवाला, पिताकी भक्तिसहित, तीव्रस्वभाववाला और अनवद्यविद्य-अर्थात् अनिन्द्य विद्यावाला, पापरहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, हमेशा शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रजातफलम्।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता कामार्तोऽपि स्याच्चिरालोऽतिदक्षः।
धूर्तः क्रूरोऽत्यंतसंजातगर्वः पूर्वाफल्गुन्यस्ति चेज्जन्मकाले ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो वह मनुष्य शूरवीर, त्यागी, साहसी, बहुत नोकरोंवाला, काम करके दुःखी श्रेष्ठ केशोंवाला, अत्यन्त चतुर, धूर्त, उग्र तथा अभिमानी होता है ॥ ११ ॥

अथ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रजातफलम्।

दाता दयालुः सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपतेः प्रधानः।
धीरो नरोऽत्यंतमृदुर्नरः स्याद्युत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो वह मनुष्य दानी, दयालु, अत्यन्त सुशील, बड़ी कीर्तिवाला, राजाका वजीर, धैर्यवान् और अत्यन्त कोमल होता है ॥ १२ ॥

अथ हस्तनक्षत्रजातफलम्।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेवार्चनकृत्प्रयत्नात्।
प्रसूतिकाले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसंपत्॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हस्त नक्षत्र हो वह मनुष्य दानी, उदारमन, अत्यंत यशवाला, ब्राह्मण और देवताओंके पूजनमें यत्न करनेवाला होता है और उस हाथसे सब तरहकी संपत्ति होती है ॥ १३ ॥

प्रतापसंतापितशत्रुपक्षो नयेऽतिदक्षश्च विचित्रवासाः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिर्विचित्रा खलु तस्य शास्त्रे॥

अथ चित्रानक्षत्रजातफलम्।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चित्रा नक्षत्र हो उस मनुष्यके प्रतापसे शत्रु संतापको प्राप्त होता है, नीतिमें चतुर, विचित्र वस्त्र पहिरनेवाला और शास्त्रमें विचित्र बुद्धिवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ स्वातीनक्षत्रजातफलम्।

कंदर्परूपः प्रभया समेतः कांतापरप्रीतिरतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपतिप्राप्तविभूतियुक्तः॥ १५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें स्वाती नक्षत्र हो वह मनुष्य कामदेवके समान रूपवाला, कांतिसहित, स्त्रियोंसे अधिक प्रीति करनेवाला, अत्यंत प्रसन्न और राजा करके वैभवको प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

विशाखानक्षत्रजातफलम्।

सदानुरक्तोऽग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसौम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः॥ १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विशाखा नक्षत्र हो वह मनुष्य अग्निहोत्र और देवताओंकी क्रियामें तत्पर और धातु क्रियाओंका जाननेवाला, उग्र और सौम्य स्वभाव होता है और वह किसीका मित्र नहीं होता है ॥ १६ ॥

अथ अनुराधानक्षत्रजातफलम्।

सत्कांतिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेता रिपूणां च कलाप्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा संपद्विशाला विविधा च तस्य॥ १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अनुराधा नक्षत्र हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कांति और कीर्ति और सदा उत्सवसहित शत्रुओंका जीतनेवाला, कलाओंमें प्रवीण होता है और विशाल संपत्तिवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ ज्येष्ठानक्षत्रजातफलम्।

सत्कांतिकीर्तिर्विभुतासमेतो वित्तान्वितोऽत्यंतलसत्प्रतापः।
श्रेष्ठप्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोद्भवः स्यात्पुरुषो विशेषात्॥ १८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ज्येष्ठा नक्षत्र हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कांति और कीर्ति तथा वैभवसहित, धनवान्, प्रताप करके शोभित, श्रेष्ठ प्रतिष्ठावाला, बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ १८ ॥

अथ मूलविचार।

मूलं विरुद्धावयवं समूलं कुलं हरत्येव वदंति संतः।
चेदन्यथा सत्कुरुते विशेषात्सौभाग्यमायुश्च कुलाभिवृद्धिम्१९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अभुक्तमूल हो वह बालक जड़से कुलका नाश करता है और अभुक्तमूल न हो तो वह सौभाग्य और आयुका बढ़ानेवाला तथा कुलकी वृद्धि करता है ऐसा विद्वानोंका कथन है ॥ १९ ॥

अथ अभुक्तमूलमाह।

ज्येष्ठांत्यघटिकैका च मूलस्याद्यघटीद्वयम्।
अभुक्तमूलमित्युक्तं तत्रोत्पन्नशिशोर्मुखम् ॥ २० ॥
अष्टवर्षाणि नालोक्यं तातेन शुभमिच्छता।
तद्दोषपरिहारार्थं शांतिकं प्रोच्यतेऽधुना ॥ २१ ॥

अब अभुक्तमूल कहते हैं-ज्येष्ठा नक्षत्रके अंतकी एक घड़ी और मूल नक्षत्रके आदिकी दो घडी अभुक्तमूल कहाती है, इनमें पैदा हुए बालकका मुख शुभकी इच्छा करनेवाला पिता आठ वर्षतक न देखे। अब उस अभुक्तमूलजात दोषको दूर करनेकी शांति कहते हैं ॥ २० ॥ २१ ॥

अथ मूलशांतिप्रकारः।

रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्।
शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥ २२ ॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति।
जपहोमप्रदाने च कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ॥ २३ ॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः।
मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥ २४ ॥

अब मूलजातशांति कहते हैं नवरत्न, सौ औषधियोंकी जड, सात मृत्तिकाओंसे पूर्ण और सौ छेदके घडेमेंसे निकलते हुए जलकरके ॥ २२ ॥ पैदा हुआ, बालक और माता पिता स्नान करें; ब्राह्मणोंके कहे हुए वाक्यसे जप, होम, दान करके निश्चय मंगल होता है ॥ २३ ॥ विरुद्ध मूलोंकी यह विधि पंडितजनोंने कही है।

कल्याणकी इच्छावाले पुरुष मुनीश्वरोंके वचनको सत्य माने ॥ २४ ॥
विधिपूर्वक मूल, आश्लेषा और ज्येष्ठा-शांति भाषामें बनाये हुए ग्रन्थ में
सविधि वर्णित हैं जिसको आवश्यकता हो वह स्त्रीजातकर्म देख ले. वह में
खेमराज श्रीकृष्णदासके यहां बम्बईमें छपा है ॥)

अथ मूलपादजातफलम् ।

मूलस्य पादत्रितये क्रमेण पितुर्जनन्याश्च धनस्य रिष्टम् ।
चतुर्थपादः शुभदो नितांतं सार्पे विलोमं परिकल्पनीयम् ॥ २

जिस बालकका जन्म मूलनक्षत्रके पहिले चरणमें हो वह पिताको क
चरणमें माताको कष्ट, तीसरे चरणमें धननाश कहना चाहिये और च
हमेशा शुभ है । इसी तरह आश्लेषा नक्षत्रका उलटा फल जानना चाहिये
चतुर्थचरणमें पिताका नाश, तीसरे चरणमें माताका नाश, दूसरे चरणमें
नाश करता है और आश्लेषा नक्षत्रका पहिला चरण शुभ है ॥ २५ ॥

अथ विशेषमूलमाह ।

कृष्णे तृतीया दशमी वलक्षे भूतो महीजार्किबुधैः समेतः
चेज्जन्मकाले किल यस्य मूलमुन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य ॥ २

दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च ।
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम् ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यका जन्म कृष्णपक्षकी तृतीया, मंगलवार और दशमी श
वार और शुक्लपक्षकी चतुर्दशी, बुधवार सहित हो और मूल नक्षत्र हो
समयमें जन्मा बालक समग्र कुलका नाश करता है ॥ २६ ॥ दिन, संध्या, रा
प्रातःकालमें जन्म हो तो क्रमकरके पिता, माता, पशु और मित्रोंको
अनिष्ट फल देते हैं ॥ २७ ॥

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलमाह ।

मूर्ध्नि पञ्च मुखे पञ्च स्कंधयोर्घटिकाष्टकम् ।
गजाश्च भुजयोर्युग्मं हस्तयोर्द्वयेऽष्टकम् ॥ २८ ॥
युग्मं नाभौ दिशो गुह्ये षट् जान्वोः षट् च पादयोः ।
विन्यस्य पुरुषाकारं मूलस्य फलमादिशेत् ॥ २९ ॥

अब पुरुषाकृतिमें मूल और आश्लेषा नक्षत्रका फल कहते हैं-मनुष्याकार
रूप बनावे और जिसमें पांच घडी, मुखमें पांच, दोनों कन्धोंमें आठ,

बांहोंमें आठ और हाथोंमें दो, हृदयमें आठ ॥ २८ ॥ धुंदीमें २, कमरमें दश, जांघोंमें ६, पैरोंमें ६ इस तरह पुरुषाकृति मूलकी घड़ियें स्थापन करे ॥ २९ ॥

अथ पुरुषाकृतिमूलघटीफलम्।

छत्रलाभः शिरोदेशे वदने पितृघातकम्।
स्कंधयोर्धूर्वहत्वं च बाहुयुग्मे त्वकर्मकृत् ॥ ३० ॥
हत्याकरः करद्वंद्वे राज्याप्तिर्हृदये भवेत्।
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ॥ ३१ ॥
जंघायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीवितात्पता।
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुंगवैः ॥ ३२ ॥

अब पुरुषाकृतिमूलोंकी घटीका फल कहते हैं-शिरकी घटियोंमें पैदा हो तो छत्रलाभ करावे, मुखकी घटी पिताका नाश करे और दोनों कंधोंकी घटीमें पैदा हो तो भार वहन करनेवाला हो, दोनों बांहोंकी घटीमें जन्मे तो खोटे कर्म करे ॥ ३० ॥ और दोनों हाथोंकी घटीमें हो तो हत्या करनेवाला हो और हृदयकी घटीमें पैदा हो तो राज्यकी प्राप्ति करावे और नाभिकी घटीमें पैदा हो तो थोड़ी उमर करे और कमरकी घड़ीमें पैदा हो तो अद्भुत सुख करावे ॥ ३१ ॥ और जांघोंकी घटीमें पैदा हो तो भ्रमण करनेवाला हो और पैरोंकी घड़ीमें थोड़ा जीवे यह मूलकी घड़ियोंका फल श्रेष्ठ मुनियोंने कहा है ॥ ३२ ॥

॥ चक्रम् ॥

शिर	मुख	कंधा	भुजा	हाथ	हृदय	नाभि	कमर	जांघ	पैर	अंग
५	५	८	८	२	८	२	१०	६	६	घटी

विज्ञेयं विबुधैः सर्वं सार्पे तच्च विपर्ययात् ॥ ३३ ॥

जो पहिले पुरुषाकृति मूलनक्षत्रकी घड़ी वर्णन की है और उनका फल कहा है वह आश्लेषा नक्षत्रमें घड़ी तथा उनका फल उलटा जानना चाहिये ॥ ३३ ॥

अथ मूलाश्लेषामुहूर्तस्वामिन आह।

राक्षसो यातुधानश्च सोमशुक्रफणीश्वराः।
पिता माता यमः कालो विश्वेदेवा महेश्वरः ॥ ३४ ॥
शर्वाख्यश्च कुबेरश्च शुक्रो मेघो दिवाकरः।
गंधर्वो यमदेवश्च ब्रह्मा विष्णुर्यमस्तथा ॥ ३५ ॥

ईश्वरो विष्णुरुद्रौ च पवनो मुनयस्तथा ।
षण्मुखो भृङ्गिरीटी च गौरीनाम्नी सरस्वती ॥ ३६ ॥

प्रजापतिश्च मूलस्य त्रिंशद्वै क्षणनामकाः ।
विपरीता पुनर्ज्ञेया आश्लेषाजातबालके ॥ ३७ ॥

एक नक्षत्रके तीस मुहूर्त होते हैं, एक मुहूर्त दो घड़ीका होता है, उन मुहूर्त स्वामी कहते हैं-राक्षस १ यातुधान २ सोम ३ शुक्र ४ फणीश्वर ५ पि ६ माता ७ यम ८ काल ९ विश्वेदेवता १० महेश्वर ११ ॥ ३४ ॥ अर्व १ कुवेर १३ गुरु १४ मेघ १५ दिवाकर १६ गंधर्व १७ यम १८ ब्रह्मा १९ वि २० यम २१ ॥ ३५ ॥ ईश्वर २२ विष्णु २३ रुद्र २४ पवन २५ मुनि २ स्वामी कार्तिक २७ भृंगिरीटी २८ गौरी सरस्वती २९ ॥ ३६ ॥ प्रजापति ३ ये मूलनक्षत्रके ३० तीस मुहूर्तोंके स्वामी कहे हैं और आश्लेषानक्षत्रमें इन विपरीत (उलटे) मुहूर्तोंके स्वामी जानने चाहिये ॥ ३७ ॥

अथ मुहूर्तजातफलम् ।

प्रथमे द्वितीये षष्ठे चाष्टमेऽष्टादशे तथा ।
त्रयोविंशे च नवमे परिवारभयंकरः ॥ ३८ ॥

अब मूल और आश्लेषानक्षत्रके मुहूर्तोंमें उत्पन्न बालकका फल कहते हैं पहिले, दूसरे, छटे, आठवें, अठारहवें, तेईसवें, नववें, मुहूर्तमें जो बालक पैदा हो परिवारका नाश करता है ॥ ३८ ॥

॥ अथ मुहूर्तेशचक्रम् ॥

मुहूर्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मुहूर्तेश	राक्षस	यातुधान	सोम	शुक्र	फणीश्वर	पितर	माता	यम	काल	विश्वेदेवता	महेश्वर	कुबे.	गुरु	मेघ	दि
मुहूर्त	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मुहूर्तेश	गंधर्व	यम	ब्रह्म	विधि	यम	ईश्वर	विष्णु	रुद्र	पवन	मुनि	स्वामीकार्तिक	भृंगिरीटी	गौरी	सरस्वती	प्रजापति

॥ अथाश्लेषानक्षत्रस्य मुहूर्तेशचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त
प्रजापति	सरस्वती	गंगी	भृगुपति	स्वा.अग्निय	मुनि	पवन	अग्नि	शंकर	सर्प	विष्णु	ब्रह्मा	सर्प	गंधर्व	दिवाकर	मुहूर्तेश
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	मुहूर्त
मूम	अग्नि	मृ.पत्र	शंभु	महेश्वर	विश्वेदेवा	यम	मग	माता	पिता	पृथ्वीश्वर	वसु	सोम	वायुमाप	पवन	मुहूर्तेश

अथ मूलवृक्षः ।

वेदाः४सप्त७गजाः८काष्ठाः १० खेटा९बाणाश्च५ षट्६शिवाः ।
११ मूलस्तंभत्वचः शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ ३९ ॥

अथ मूलवृक्ष कहते हैं–मूल वृक्षकी जड़में ४ चार स्तंभमें ७ सात छालमें ८ आठ शाखाओंमें दश १० पत्तोंमें ९ नौ फूलोंमें ५ पांच फलोंमें ६ छ और शिखामें ११ ग्यारह घड़ियोंको स्थापन करना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथ मूलवृक्षफलम् ।

मूलवृक्षविभागेषु मंगलं हि फले दले ।
अमंगलं फलं विद्याच्छेषभागेषु निश्चितम् ॥ ४० ॥

अथ मूल वृक्षकी घड़ियोंका फल कहते हैं–मूलवृक्षके अंगविभागोंमें फल और पुष्पोंकी घड़ियोंमें पैदा हो तो श्रेष्ठ फल जानो और अन्य अंगोंकी घड़ियोंमें पैदा हो तो नष्ट फल कहना चाहिये ॥ ४० ॥

अथ मूलस्य शुभाशुभम् ।

पादे मुहूर्ते वेलायां वृक्षे च पुरुषाकृतौ ।
अनिष्टमशुभाधिक्ये शुभाधिक्ये शुभं फलम् ॥ ४१ ॥

जो मूल नक्षत्रमें चरण मुहूर्त वेला और मूल वृक्षमें और पुरुषाकृतिमूलोंके विचारसे जो अधिकपनेमें शुभ फल आवे तो शुभफल कहना चाहिये और नष्ट जो फल अधिक पाया जाय तो नेष्ट ही कहना चाहिये ॥ ४१ ॥

अथ पितुर्नक्षत्रजातफलम् ।

तातस्य जन्मभं यस्य प्रसूतिर्यदि जायते ।
तातं वा भ्रातरं ज्येष्ठं रिष्टं स कुरुते ध्रुवम् ॥ ४२ ॥

जो मनुष्य पिताके नक्षत्रमें पैदा हो वह बालक पिताको अथवा भ्राताको अ रोगी करता है, अथवा पिता वा ज्येष्ठभ्राताका नाश करता है ॥ ४२ ॥

तस्य शांतिमाह ।

मूलवच्छांतिकं तत्र विधेयं हि विचक्षणैः ।
भूमिरत्नानि हेमान्नं देयं विप्रेषु भक्तितः ॥ ४३ ॥

जो बालक अपने पिताके नक्षत्रमें पैदा हो तो मूलनक्षत्रके समान यही शांति करनी चाहिये तथा धरती रत्न सोना और अन्न ब्राह्मणको दान क देवे ॥ ४३ ॥

अथ मूलनक्षत्रजातफलम् ।

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता
प्रतापिनारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्यान्ननं प्रसन्नः॥४४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मूल नाम नक्षत्र होता है वह मनुष्य सुखसहित ध और वाहन सहित, हिंसा करनेवाला बलसहित, स्थिर कर्म करनेवाला, शत्रुओंको त्रास देनेवाला और चतुर होता है ॥ ४४ ॥

अथ पूर्वाषाढानक्षत्रजातफलम् ।

भूयोभूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः
नूनं संपन्नायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः॥४५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाषाढा नाम नक्षत्र हो वह मनुष्य वारंवार ज पीनेमें आसक्त, भोग करनेवाला, निर्मल वाणीका विलास करनेवाला, श्रेष्ठशी और बहुत धनवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ उत्तराषाढानक्षत्रजातफलम् ।

दाता दयावान्विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुतासमेतः ।
कांतासुतार्थानगुणो नितांतं वेश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी॥४६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराषाढा नक्षत्र हो वह मनुष्य दानी, दयावा युद्धमें जयवान् नम्र, नम्रतासहित, अच्छे कर्म करनेवाला, ऐश्वर्यसहित, स्त्री औ पुत्रोंसे पूर्ण, सुरूप, नम्र और अभिमानी होता है ॥ ४६ ॥

अथ अभिजिज्जातफलम्।

अतिसुललितकांतिः संमतः सज्जनानां
ननु भवति विनीतश्चारुकीर्तिः सुरूपः।
द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ्मानवः स्या-
दभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स स्ववंशे ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अभिजित् नक्षत्र हो वह मनुष्य अत्यन्त शोभायमान कांतिवाला, सत्पुरुषोंका सम्मत, नम्रतासहित, कीर्तिमान्, रूपवान्, देवता और ब्राह्मणोंकी भक्ति करनेवाला, पंडितोंकीसी वाणी बोलनेवाला और अपने वंशमें राजा होता है ॥ ४७ ॥

अथ श्रवणनक्षत्रजातफलम्।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्तिर्विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवणप्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य ॥४८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रवण नक्षत्र हो वह मनुष्य शास्त्रोंमें तत्पर, बहुत पुत्र और मित्रोंवाला, सत्पुरुषोंका भक्त, शत्रुओंका जीतनेवाला और पुराण श्रवण करनेमें प्रवीण होता है ॥ ४८ ॥

अथ धनिष्ठानक्षत्रजातफलम्।

आचारयुक्तादरचारुशीलो धनाधिशाली बलवान्कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठासहितो नरः स्यात् ॥४९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनिष्ठा नक्षत्र हो वह मनुष्य आचारयुक्त, आदरका देनेवाला, सुन्दर शीलवाला, अधिक धनवान्, बलवान्, दयालु और बड़ी प्रतिष्ठावाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ शतभिषानक्षत्रजातफलम्।

शीतभीरुरतिसाहसिदाता निष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारुणो वारुणोडुनि च यस्य संभवः ॥५०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शतभिषा नक्षत्र हो वह मनुष्य शीतसे डरनेवाला, साहसी, दाता, कठोरचित्त, चतुर और शत्रुओंको अतिशय करके दारुण होता है ॥ ५० ॥

अथ पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रजातफलम्।

जितेंद्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र हो वह मनुष्य इंद्रियोंका जीतने वाला, सब कलाओंमें चतुर, शत्रुओंका जीतनेवाला और निरंतर अपूर्व बुद्धिवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ उत्तराभाद्रपदानक्षत्रजातफलम् ।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता ।
यस्योत्तराभाद्रपदा च जन्मा धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः ५२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र हो वह मनुष्य अपने कुलमें अधिक आभूषण स्वरूप, न अत्यन्त ऊंची देहवाला, श्रेष्ठ कर्मका करनेवाला धन्य होता है ॥ ५२ ॥

अथ रेवतीनक्षत्रजातफलम् ।

चारुशीलविभवो जितेंद्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः ।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम् ॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रेवती नक्षत्र हो वह मनुष्य सुन्दर शीलवाला, इंद्रियोंका जीतनेवाला, श्रेष्ठ धनवाला और बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ५३ ॥

अथ बृहज्जातकोक्तनवांशफलमाह-तत्रादौ प्रथमनवांशजातफलम् ।

विनीतो धर्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः ।
विद्याव्यसनशीलश्च जायते प्रथमांशके ॥ १ ॥

जो मनुष्य पहिले नवांशमें पैदा हो वह मनुष्य नम्रतासहित, धर्ममें शीलवाला, सत्य बोलनेवाला, दृढ प्रतिज्ञावाला और विद्याको पढनेवाला होता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयनवांशजातफलम् ।

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः ।
गंधर्वप्रमदासक्तो जायते द्विनवांशके ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वितीय नवांश हो वह मनुष्य उत्पन्न किये हुए वैभवोंका भोगनेवाला, युद्धमें हारनेवाला और वेश्याओंमें आसक्त होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयनवांशजातफलम् ।

स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोऽल्पवीर्यवान् ।
वीरविद्याविचारज्ञो जायते त्रिनवांशके ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म तीसरे नवांशमें हो वह मनुष्य स्त्रियों करके जीता हुआ, पुत्रहीन, इंद्राजाली करनेवाला, थोड़े बलवाला, शूर वीर और विद्याके विचारको जाननेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थनवांशजातफलम्।

वहुस्त्रीसुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः।
नृपसेव्यथवामात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चतुर्थ नवांशमें हो वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंवाला, श्रेष्ठ भाग-वाला,पूजनीय,जलसेवामें तत्पर, धनवान्, राजसेवी, अथवा राजाका मंत्री होता है ४

अथ पंचमनवांशजातफलम्।

वहुमित्रनृपामात्यो बंधुमित्रसुखान्वितः।
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पंचमांशके ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमनवांश हो वह मनुष्य बहुत मित्रोंवाला, राजाका मंत्री, कुटुंबीजन और मित्रोंसे सुखसहित बड़ी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठनवांशजातफलम्।

जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः।
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठा नवांश हो वह मनुष्य वैरियोंको जीतनेवाला, शूरवीर, पक्की मित्रता करनेवाला और देशका स्वामी होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमनवांशजातफलम्।

अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथकलायुक्तः।
सेनापतित्वमाप्नोति संजातः सप्तमांशके ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यका जन्म सातवें नवांशमें होता है वह मनुष्य सब जगह निर्बंधन होकर विचरनेवाला, राजाओंकी कलासहित और सेनाका मालिक होता है ॥ ७ ॥

अथ अष्टमनवांशजातफलम्।

उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्यपोहितः।
कोपी दुर्जनतप्तांगो नरो जातोऽष्टमांशके ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यका जन्म अष्टमनवांशमें हो वह मनुष्य उदार बुद्धिवाला, धरती पर प्रसिद्ध, धन और अन्नको दूर करनेवाला, क्रोधी और खोटे आदमियोंसे संतापको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमनवांशजातफलम्।

दीर्घजीवी प्रसन्नात्मा विद्याभ्यासी सदासुखी।
ज्ञाता धर्मी धनी मान्यो जायते नवमांशके ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र हो वह मनुष्य इंद्रियोंका जी- वाला, सब कलाओंमें चतुर, शत्रुओंका जीतनेवाला और निरंतर अपूर्व बुद्धिवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ उत्तराभाद्रपदानक्षत्रजातफलम् ।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता ।
यस्योत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः ५२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र हो वह मनुष्य अपने कुलमें अधिक आभूषण स्वरूप, न अत्यन्त ऊंची देहवाला, श्रेष्ठ कर्मका करनेवाला धन- होता है ॥ ५२ ॥

अथ रेवतीनक्षत्रजातफलम् ।

चारुशीलविभवो जितेंद्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः ।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम् ॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रेवती नक्षत्र हो वह मनुष्य सुन्दर शीलवाला, इंद्रियोंका जीतनेवाला, श्रेष्ठ धनवाला और बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ५३ ॥

अथ वृद्धजातकोक्तनवांशफलमाह-तत्रादौ प्रथमनवांशजातफलम् ।

विनीतो धर्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः ।
विद्याव्यसनशीलश्च जायते प्रथमांशके ॥ १ ॥

जो मनुष्य पहिले नवांशमें पैदा हो वह मनुष्य नम्रतासहित, धर्ममें शीलवाला, सत्य बोलनेवाला, दृढ प्रतिज्ञावाला और विद्याको पढनेवाला होता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयनवांशजातफलम् ।

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः ।
गंधर्वप्रमदासक्तो जायते द्विनवांशके ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वितीय नवांश हो वह मनुष्य उत्पन्न किये हुए वैभवोंका भोगनेवाला, युद्धमें हारनेवाला और वेश्याओंमें आसक्त होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयनवांशजातफलम् ।

धीमांश्चानपत्यश्च मायायुक्तोऽल्पवीर्यवान् ।
वैरविद्याविचारज्ञो जायते त्रिनवांशके ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म तीसरे नवांशमें हो वह मनुष्य [illegible] भीरु हुआ, दुर्बुद्धि, [illegible] करनेवाला, थोडे बलवाला, शूर वीर और [illegible] विद्याको जाननेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थनवांशजातफलम् ।

बहुस्त्रीसुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः ।
नृपसेव्यथवामात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चतुर्थ नवांशमें हो वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंवाला, श्रेष्ठ भाग्यवाला, पूजनीय, जलसेवामें तत्पर, धनवान्, राजसेवी, अथवा राजाका मंत्री होता है ४

अथ पंचमनवांशजातफलम् ।

बहुमित्रनृपामात्यो बंधुमित्रसुखान्वितः ।
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पंचमांशके ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमनवांश हो वह मनुष्य बहुत मित्रोंवाला, राजाका मन्त्री, कुटुंबीजन और मित्रोंसे सुखसहित बड़ी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठनवांशजातफलम् ।

जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः ।
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठा नवांश हो वह मनुष्य वैरियोंको जीतनेवाला, शूरवीर, पक्की मित्रता करनेवाला और देशका स्वामी होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमनवांशजातफलम् ।

अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथकलायुक्तः ।
सेनापतित्वमाप्नोति संजातः सप्तमांशके ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यका जन्म सातवें नवांशमें होता है वह मनुष्य सब जगह निर्बंधन होकर विचरनेवाला, राजाओंकी कलासहित और सेनाका मालिक होता है ॥ ७ ॥

अथ अष्टमनवांशजातफलम् ।

उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्यपोहितः ।
[illegible] ८ ॥

[illegible] बुद्धिवाला, धरती पर
प्रसि[illegible] आदमियोंसे संतापको
प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमनवांशजातफलम् ।

दीर्घजीवी प्रसन्नात्मा विद्याभ्यासी सदासुखी ।
ज्ञाता धर्मी धनी मान्यो जायते नवमांशके ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यका जन्म नवम नवांशमें हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, प्रसन्न विद्याका पढ़नेवाला, हमेशा सुखी, ज्ञाता, धर्म करनेवाला, धनवान् और मान.. होता है ॥ ९ ॥

अथ योगजातफलमाह–तत्रादौ विष्कंभयोगजातफलम् ।

शश्वत्कांतापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातंत्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसङ्गे ।
चंचद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जंतोः ॥१॥

जिस मनुष्यका जन्म विष्कंभयोगमें हो वह मनुष्य निरन्तर स्त्री, पुत्र और मित्रादिकोंसे सौख्यको प्राप्त, सब कार्मोंमें स्वाधीनताको प्राप्त और शोभायमान देहवाला होता है ॥ १ ॥

अथ प्रीतियोगजातफलम् ।

वक्ता चंचद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च ।
जातानंदः सद्विनोदप्रसक्तो धर्मे प्रीतिःप्रीतिजन्मा मनुष्यः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रीतिनाम योग होता है वह मनुष्य बहुत बोलने वाला, सुंदरस्वरूप और संपत्तिवाला, प्रसन्नमुख, बड़ा दानी, आनंदको जानने वाला, श्रेष्ठ विनोदयुक्त और धर्ममें प्रीति करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ आयुष्मयोगजातफलम् ।

अर्थास्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानपानप्रवृत्तिः ।
यस्यायुष्मत्संभवः संभवेद्धि स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आयुष्मान् योग हो वह मनुष्य धनसे पूर्ण, साहस करके सहित, अनेक स्थान और जंगलमें जानेकी इच्छा रखनेवाला, मानसहित बड़ी उमरवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सौभाग्ययोगजातफलम् ।

ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यादाचारशीलो बलवान्विवेकी ।
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौभाग्ययोग हो वह मनुष्य ज्ञानवान्, धनवान्, सत्यमें तत्पर, श्रेष्ठ आचारवाला, बलवान्, चतुर जनोंसे प्रशंसाको प्राप्त, सौभाग्य युक्त और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ शोभनयोगजातफलम् ।

... मृदुतरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः ।
... शोभनो भवति शोभनोद्भवः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम योग होता है वह मनुष्य बहुत फुर्तीला, चतुरतायुक्त, ठीक जवाब देनेवाला, सुन्दर, गौरवसहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला और नित्य ही शुभकार्यमें तत्पर होता है ॥ ५ ॥

अथातिगण्डयोगजातफलम् ।

सदामदोऽथो गलरुक्सरोषो विशालहस्ताङ्घ्रिरतीवधूर्तः ।
[illegible] तिगंडजातः॥६॥

[illegible] हमेशा अभिमान-सहित, गलेकी बीमारीवाला, क्रोधसहित, विशाल हाथ पैरोंवाला, अत्यन्त धूर्त, कलहप्रिय, बड़ी ठोड़ीवाला और पाखंडी होता है ॥ ६ ॥

अथ सुकर्मयोगजातफलम् ।

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च ।
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुकर्मनाम योग हो, वह मनुष्य हमेशा प्रसन्नचित्त, सब कलाओंमें प्रवीण, श्रेष्ठ पराक्रमी, पराये उपकारमें तत्पर और अतिश्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ धृतियोगजातफलम् ।

प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः ।
नयेन युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धृति योग हो वह मनुष्य चतुरतायुक्त, दानी, निरंतर प्रसन्न, सभामें श्रेष्ठ, चपल, श्रेष्ठ शीलवाला और नीतिसहित नियमका धारण करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शूलयोगजातफलम् ।

नरोदरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरक्तः ।
यस्य प्रसूतौ यदि शूलयोगो शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शूलनाम योग होता है वह मनुष्य दरिद्र और रोगसहित, श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसे रहित हो तथा उसको कभी कभी शूल-रोगकी व्यथा होती है ॥ ९ ॥

अथ गण्डयोगजातफलम् ।

धूर्तः सुहृत्कार्यपराङ्मुखश्च क्लेशी विशेषात्परुषस्वभावः ।
चेत्संभवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचंडकोपः पुरुषः प्रदिष्टः ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम योग होता है वह मनुष्य बहुत फुर्तीला, चतुरतायुक्त, ठीक जवाब देनेवाला, सुन्दर, गौरवसहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला और नित्य शुभकार्यमें तत्पर होता है ॥ ५ ॥

अथातिगण्डयोगजातफलम् ।

सदामदोऽथो गलरुक्सरोषो विशालहस्तांघ्रिरतीवधूर्तः ।
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकः स्यादतिगंडजातः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अतिगंडनाम योग हो वह मनुष्य हमेशा अभिमानसहित, गलेकी बीमारीवाला, क्रोधसहित, विशाल हाथ पैरोंवाला, अत्यन्त धूर्त, कलहप्रिय, बड़ी ठोडीवाला और पाखंडी होता है ॥ ६ ॥

अथ सुकर्मयोगजातफलम् ।

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च ।
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुकर्मनाम योग हो, वह मनुष्य हमेशा प्रसन्नचित्त, सब कलाओंमें प्रवीण, श्रेष्ठ पराक्रमी, पराये उपकारमें तत्पर और अतिश्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ धृतियोगजातफलम् ।

प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः ।
नयेन युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धृति योग हो वह मनुष्य चतुरतायुक्त, दानी, निरंतर प्रसन्न, सभामें श्रेष्ठ, चपल, श्रेष्ठ शीलवाला और नीतिसहित नियमसे धारण करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शूलयोगजातफलम् ।

नरोदरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरक्तः ।
यस्य प्रसूतौ यदि शूलयोगो शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शूलनाम योग होता है वह मनुष्य दरिद्र और रोगसहित, श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसे रहित हो तथा उसको कभी कभी शूलरोगकी व्यथा होती है ॥ ९ ॥

अथ गण्डयोगजातफलम् ।

धूर्तः सुहृत्कार्यपराङ्मुखश्च क्लेशी विशेषात्परदारभावः ।
यत्संभवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचंडकोपः पुरुषः प्रदिष्टः ॥१०॥

जिस मनुष्यका जन्म नवम नवांशमें हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, म विद्याका पढ़नेवाला, हमेशा सुखी, ज्ञाता, धर्म करनेवाला, धनवान् और माननी होता है ॥ ९ ॥

अथ योगजातफलमाह—तत्रादौ विष्कंभयोगजातफलम्।

शश्वत्कांतापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातंत्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसङ्गे।
चंचद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जंतोः ॥१॥

जिस मनुष्यका जन्म विष्कंभयोगमें हो वह मनुष्य निरन्तर स्त्री, पुत्र औ मित्रादिकोंसे सौख्यको प्राप्त, सब कामोंमें स्वाधीनताको प्राप्त और शोभायमा देहवाला होता है ॥ १ ॥

अथ प्रीतियोगजातफलम्।

वक्ता चंचद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च।
जातानंदः सद्विनोदप्रसङ्गो धर्मे प्रीतिःप्रीतिजन्मा मनुष्यः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रीतिनाम योग होता है वह मनुष्य बहुत बोल वाला, सुंदरस्वरूप और संपत्तिवाला, प्रसन्नमुख, बड़ा दानी, आनंदको जान वाला, श्रेष्ठ विनोदयुक्त और धर्ममें प्रीति करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ आयुष्मयोगजातफलम्।

अर्थात्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानपानप्रवृत्तिः।
यस्यायुष्मत्संभवः संभवेद्वै स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आयुष्मान् योग हो वह मनुष्य धनसे पूर्ण, साह करके सहित, अनेक स्थान और जंगलमें जानेकी इच्छा रखनेवाला, मानयुक्त और बड़ी उमरवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सौभाग्ययोगजातफलम्।

ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यादाचारशीलो बलवान्विवेकी।
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौभाग्ययोग हो वह मनुष्य ज्ञानवान्, धनवा सत्यमें तत्पर, श्रेष्ठ आचारवाला, बलवान्, चतुर जनोंसे प्रशंसाको प्राप्त, सौभा युक्त और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ शोभनयोगजातफलम्।

मन्त्रगेऽतिचतुरः मदुत्तरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः।
नित्यशोभनविधानतत्परः शोभनो भवति शोभनोद्भवः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम योग होता है वह मनुष्य बहुत फुर्तीला, तुरतायुक्त, ठीक जवाब देनेवाला, सुन्दर, गौरवसहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला और नित्य शुभकार्यमें तत्पर होता है ॥ ५ ॥

अथातिगण्डयोगजातफलम्।

सदामदोऽथो गलरुक्सरोपो विशालहस्तांघ्रिरतीवधूर्तः।
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकः स्यादतिगंडजातः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अतिगंडनाम योग हो वह मनुष्य हमेशा अभिमानसहित, गलेकी बीमारीवाला, क्रोधसहित, विशाल हाथ पैरोंवाला, अत्यन्त धूर्त, कलहप्रिय, बड़ी ठोड़ीवाला और पाखंडी होता है ॥ ६ ॥

अथ सुकर्मयोगजातफलम्।

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणःससाहसोत्साहसमन्वितश्च।
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुकर्मनाम योग हो, वह मनुष्य हमेशा प्रसन्नचित्त, सब कलाओंमें प्रवीण, श्रेष्ठ पराक्रमी, पराये उपकारमें तत्पर और अतिश्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ धृतियोगजातफलम्।

प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः।
नयेन युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धृति योग हो वह मनुष्य चतुरतायुक्त, दानी, निरंतर प्रसन्न, सभामें श्रेष्ठ, चपल, श्रेष्ठ शीलवाला और नीतिसहित नियमका धारण करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शूलयोगजातफलम्।

नरोदरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरक्तः।
यस्य प्रसूतौ यदि शूलयोगो शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शूलनाम योग होता है वह मनुष्य दरिद्र और रोगसहित, श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसे रहित हो सदा उसको कभी कभी शूलरोगकी व्यथा होती है ॥ ९ ॥

अथ गण्डयोगजातफलम्।

धूर्तः सुहृत्कार्यपराङ्मुखश्च क्लेशी विशेषात्परुषस्वभावः।
चेत्संभवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचंडकोपः पुरुषः प्रदिष्टः॥१०॥

जिस मनुष्यका जन्म नवम नवांशमें हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, प्रमत्र है विद्याका पढ़नेवाला, हमेशा सुखी, ज्ञाता, धर्म करनेवाला, धनवान् और मानने होता है ॥ ९ ॥

अथ योगजातफलमाह-तत्रादौ विष्कंभयोगजातफलम् ।

शश्वत्कांतापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातंत्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसङ्गे ।
चंचद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जंतोः ॥१

जिस मनुष्यका जन्म विष्कंभयोगमें हो वह मनुष्य निरन्तर स्त्री, पुत्र मित्रादिकोंसे सौख्यको प्राप्त, सब कामोंमें स्वाधीनताको प्राप्त और शोभायमा देहवाला होता है ॥ १ ॥

अथ प्रीतियोगजातफलम् ।

वक्ता चंचद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च ।
जातानंदः सद्विनोदप्रसक्तो धर्मे प्रीतिःप्रीतिजन्मा मनुष्यः॥२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रीतिनाम योग होता है वह मनुष्य बहुत बोल वाला, सुंदरस्वरूप और संपत्तिवाला, प्रसन्नमुख, बड़ा दानी, आनंदको जान वाला, श्रेष्ठ विनोदयुक्त और धर्ममें प्रीति करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ आयुष्मयोगजातफलम् ।

अर्थात्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानपानप्रवृत्तिः ।
यस्यायुष्मत्संभवः संभवेद्वै स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः॥३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आयुष्मान् योग हो वह मनुष्य धनसे पूर्ण, साह करके सहित, अनेक स्थान और जंगलमें जानेकी इच्छा रखनेवाला, मानसहि और बड़ी उमरवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सौभाग्ययोगजातफलम् ।

ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यादाचारशीलो बलवान्विवेकी
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौभाग्ययोग हो वह मनुष्य ज्ञानवान्, धनवा सत्यमें तत्पर, श्रेष्ठ आचारवाला, बलवान्, चतुर जनोंसे प्रशंसाको प्राप्त, सौभा युक्त और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ शोभनयोगजातफलम् ।

सत्वरोऽतिचतुरः सदुत्तरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः ।
नित्यशोभनविधानतत्परः शोभनो भवति शोभनोद्भवः ॥५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम योग होता है वह मनुष्य बहुत फुर्तीला, तुरतायुक्त, ठीक जवाब देनेवाला, सुन्दर, गौरवसहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला और नित्य शुभकार्यमें तत्पर होता है ॥ ५ ॥

अथातिगण्डयोगजातफलम्।

सदामदोऽथो गलरुक्सरोषो विशालहस्तांघ्रिरतीवधूर्तः।
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकः स्यादतिगंडजातः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अतिगंडनाम योग हो वह मनुष्य हमेशा अभिमानसहित, गलेकी बीमारीवाला, क्रोधसहित, विशाल हाथ पैरोंवाला, अत्यन्त धूर्त, कलहप्रिय, बड़ी ठोड़ीवाला और पाखंडी होता है ॥ ६ ॥

अथ सुकर्मयोगजातफलम्।

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च।
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुकर्मनाम योग हो, वह मनुष्य हमेशा प्रसन्नचित्त, सब कलाओंमें प्रवीण, श्रेष्ठ पराक्रमी, पराये उपकारमें तत्पर और अतिश्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ धृतियोगजातफलम्।

प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः।
नयेन युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धृति योग हो वह मनुष्य चतुरतायुक्त, दानी, निरंतर प्रसन्न, सभामें श्रेष्ठ, चपल, श्रेष्ठ शीलवाला और नीतिसहित नियमसे धारण करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शूलयोगजातफलम्।

नरो दरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरक्तः।
यस्य प्रसूतौ यदि शूलयोगो शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शूलनाम योग होता है वह मनुष्य दरिद्र और रोगसहित, श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसे रहित हो तथा उसको कभी कभी शूलरोगकी व्यथा होती है ॥ ९ ॥

अथ गण्डयोगजातफलम्।

धूर्तः सुहृत्कार्यपराङ्मुखश्च क्लेशी विशेषात्परदारभावः।
चेत्संभवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचंडकोपः पुरुषः प्रदिष्टः ॥१०॥

जिस मनुष्यका जन्म नवम नवांशमें हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, मन्त्रके विद्याका पढ़नेवाला, हमेशा सुखी, ज्ञाता, धर्म करनेवाला, धनवान् और मानवान् होता है ॥ ९ ॥

अथ योगजातफलमाह–तत्रादौ विष्कंभयोगजातफलम्।

शश्वत्कांतापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातंत्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसङ्गे।
चंचद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जंतोः ॥१॥

जिस मनुष्यका जन्म विष्कंभयोगमें हो वह मनुष्य निरन्तर स्त्री, पुत्र और मित्रादिकोंसे सौख्यको प्राप्त, सब कामोंमें स्वाधीनताको प्राप्त और शोभायमान देहवाला होता है ॥ १ ॥

अथ प्रीतियोगजातफलम्।

वक्ता चंचद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च।
जातानंदः सद्विनोदप्रसक्तो धर्मे प्रीतिःप्रीतिजन्मा मनुष्यः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रीतिनाम योग होता है वह मनुष्य बहुत बोलने वाला, सुंदरस्वरूप और संपत्तिवाला, प्रसन्नमुख, बड़ा दानी, आनंदको जानने वाला, श्रेष्ठ विनोदयुक्त और धर्ममें प्रीति करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ आयुष्मयोगजातफलम्।

अर्थात्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानपानप्रवृत्तिः।
यस्यायुष्मत्संभवः संभवेद्वै स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आयुष्मान् योग हो वह मनुष्य धनसे पूर्ण, साहस करके सहित, अनेक स्थान और जंगलमें जानेकी इच्छा रखनेवाला, मानसहित और बड़ी उमरवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सौभाग्ययोगजातफलम्।

ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यादाचारशीलो बलवान्विवेकी
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौभाग्ययोग हो वह मनुष्य ज्ञानवान्, धनवान् सत्यमें तत्पर, श्रेष्ठ आचारवाला, बलवान्, चतुर जनोंसे प्रशंसाको प्राप्त, सौभाग्ययुक्त और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ शोभनयोगजातफलम्।

सत्वरोऽतिचतुरः सदुत्तरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः।
नित्यशोभनविधानतत्परः शोभनो भवति शोभनोद्भवः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्रनाम योग होता है वह मनुष्य सुन्दर बुद्धिवाला सुन्दर बन्धुओंवाला, गुणवान् महापराक्रमी, सत्यसहित रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला और हीरोंसे जडे हुए आभूषणोंसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम्।

उदारचेताश्चतुरःसुशीलः शास्त्रादः सारविराजमानः।
प्रसूतिकाले यदि सिद्धियोगो भाग्याभिवृद्धिःसततं हि तस्य१६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य उदारचित्त, चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, शास्त्रका जाननेवाला, बल करके युक्त और निरंतर उसके भाग्यकी वृद्धि होती है ॥ १६ ॥

अथ व्यतीपातयोगजातफलम्।

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः।
परस्यकार्यव्यतिपाततुल्यो नरःखलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यतीपातनाम योग हो वह मनुष्य पिता माताके वचनमें उदार बुद्धि रखनेवाला, रोगयुक्त देहवाला, कठोरचित्त और पराये कार्यको बिगाडनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ वरीयान्योगजातफलम्।

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्यालपतासद्व्ययतासमेतः।
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान्भवेद्वरीयान्प्रभवे हि यस्य ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वरीयान् नाम योग हो वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला, नम्रतासहित, थोडे धनवाला, श्रेष्ठ कार्यमें खर्च करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, श्रेष्ठजन होता है ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगजातफलम्।

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः।
दक्षोऽल्पभक्षो विजितारिपक्षस्त्वधर्पितो वै परिघोद्भवःस्यात्१९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिघ योग होता है वह मनुष्य झूठी गवाही देनेवाला, बहुतोंकी जमानत करनेवाला, प्रकट कर्मोंवाला, क्षमारहित, चतुर, थोडा भोजन करनेवाला, शत्रुओंका जीतनेवाला और निर्भय होता है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगजातफलम्।

सन्मंत्रशास्त्राभिरतो नितांतं जितेंद्रियश्चारुशरीरयष्टिः।
योगःशिवो जन्मनियस्यजंतोः सदाशिवंतस्यशिवप्रसादात्२०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्रनाम योग होता है वह मनुष्य सुन्दर बुद्धिवाला सुन्दर, बन्धुओंवाला, गुणवान् महापराक्रमी, सत्यसहित रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला और हीरोंसे जडे हुए आभूषणोंसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम्।

उदारचेताश्चतुरःसुशीलः शास्त्रादः सारविराजमानः।
प्रसूतिकाले यदि सिद्धियोगो भाग्याभिवृद्धिःसततं हि तस्य १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य उदारचित्त, चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, शास्त्रका जाननेवाला, बल करके युक्त और निरंतर उसके भाग्यकी वृद्धि होती है ॥ १६ ॥

अथ व्यतीपातयोगजातफलम्।

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः।
परस्यकार्यव्यतिपाततुल्यो नरःखलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यतीपातनाम योग हो वह मनुष्य पिता माताके वचनमें उदार बुद्धि रखनेवाला, रोगयुक्त देहवाला, कठोरचित्त और पराये कार्यको बिगाडनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ वरीयान्योगजातफलम्।

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पतासद्व्ययतासमेतः।
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान्भवेद्वरीयान्प्रभवे हि यस्य ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वरीयान् नाम योग हो वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला, नम्रतासहित, थोडे धनवाला, श्रेष्ठ कार्यमें खर्च करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, श्रेष्ठजन होता है ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगजातफलम्।

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः।
दक्षोऽल्पभक्षो विजितारिपक्षस्त्वधर्षितो वै परिघोद्भवःस्यात् १९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिघ योग होता है वह मनुष्य झूठी गवाही देनेवाला, बहुतोंकी जमानत करनेवाला, प्रकट कर्मोंवाला, क्षमारहित, चतुर, थोडा भोजन करनेवाला, शत्रुओंका जीतनेवाला और निर्भय होता है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगजातफलम्।

सन्मंत्रशास्त्राभिरतो नितांतं जितेंद्रियश्चारुशरीरयष्टिः।
योगःशिवो जन्मनियस्यजंतोः सदाशिवंतस्यशिवप्रसादात् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गंडनाम योग होता है वह मनुष्य धूर्त, मित्र कामसे विमुख, क्लेशका पानेवाला, विशेष रूपसे कठोरस्वभाववाला और क्रोधका करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ वृद्धियोगजातफलम् ।

सुसंग्रहप्रीतिरतीव दक्षो धनान्वितः स्यात्क्रयविक्रयाभ्याम् ।
प्रसूतिकाले यदि यस्य वृद्धिर्भाग्याधिवृद्धिर्नियमेन तस्य ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य सब चीजें संग्रह करनेमें रत, अत्यंत चतुर, क्रय और विक्रय करनेसे धनवान् और नि करके भाग्यकी वृद्धिवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ ध्रुवयोगजातफलम् ।

निश्चला हि कमला सदालये संभवेच्च वदने सरस्वती ।
चारुकीर्तिरपि स ध्रुवं तदा चेद् ध्रुवो भवति यस्य संभवे ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ध्रुवनाम योग हो उस मनुष्यके घरमें अ लक्ष्मी सदा रहती है और उसके मुखमें सरस्वती वास करे तथा नि सुन्दर कीर्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ व्याघातयोगजातफलम् ।

क्रूरोऽल्पदृष्टिः कृपया विहीनो महाहनुः स्यादपवादवादी ।
असत्यताप्रीतिरतीव मर्त्यो व्याघातजातः खलु घातकर्ता ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्याघात नाम योग होता है वह मनुष्य क्रूरस्वभा वाला, थोड़ी दृष्टिवाला, दयारहित, ऊँची ठोड़ीवाला, झूठी निंदा करनेवाला, असत् तामें अत्यंत प्रीति करनेवाला और घात करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ हर्षणयोगजातफलम् ।

सुस्निग्धगात्रः कृतशास्त्रयत्नः सुरक्तभूषावसनानुरक्तः ।
प्रसूतिकाले यदि हर्षणश्चेत्स मानवो वै रिपुकर्षणः स्यात् ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हर्षणनाम योग होता है वह मनुष्य चिकनी देहवाला शास्त्रका पढ़नेवाला, रंगीन वस्त्रोंका पहिरनेवाला, सुंदर आभूषणों सहित शत्रुओं नाश करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ वज्रयोगजातफलम् ।

सुधीः सुवस्तुगुणवान्महौजाः सत्यान्वितो रत्नपरीक्षकः स्यात् ।
प्रसूतिकाले यदि वज्रयोगः स वज्रमुक्तोत्तमभूषणाढ्यः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्रनाम योग होता है वह मनुष्य सुन्दर बुद्धिवाला दूर. बन्धुओंवाला, गुणवान् महापराक्रमी, सत्यसहित रत्नोंकी परीक्षा करने- वाला और हीरोंसे जडे हुए आभूषणोंसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम्।

उदारचेताश्चतुरःसुशीलः शास्त्रादः सारविराजमानः।
प्रसूतिकाले यदि सिद्धियोगो भाग्याभिवृद्धिःसततं हि तस्य १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य उदारचित्त, चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, शास्त्रका जाननेवाला, बल करके युक्त और निरंतर उसके भाग्यकी वृद्धि होती है ॥ १६ ॥

अथ व्यतीपातयोगजातफलम्।

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः।
परस्यकार्यव्यतिपाततुल्यो नरःखलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यतीपातनाम योग हो वह मनुष्य पिता माताके वचनमें उदार बुद्धि रखनेवाला, रोगयुक्त देहवाला, कठोरचित्त और पराये कार्यको बिगाडनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ वरीयान्योगजातफलम्।

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पतासद्व्ययतासमेतः।
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान्भवेद्वरीयान्प्रभवे हि यस्य ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वरीयान् नाम योग हो वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला, नम्रतासहित, थोडे धनवाला, श्रेष्ठ कार्यमें खर्च करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, श्रेष्ठजन होता है ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगजातफलम्।

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः।
दक्षोऽल्पभक्षी विजितारिपक्षस्त्वधर्पितो वै परिघोद्भवःस्यात् १९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिघ योग होता है वह मनुष्य झूठी गवाही देने- वाला, बहुतोंकी जमानत करनेवाला, प्रकट कर्मोंवाला, क्षमारहित, चतुर, थोडा भोजन करनेवाला, शत्रुओंका जीतनेवाला और निर्भय होता है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगजातफलम्।

सन्मंत्रशास्त्राभिरतो नितांतं जितेंद्रियश्चारुशरीरयष्टिः।
योगःशिवो जन्मनियस्यजंतोः सदाशिवंतस्यशिवप्रसादात् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गंडनाम योग होता है वह मनुष्य धूर्त, नि
कामने विमुख, क्लेशको पानेवाला, विशेष रूपसे कठोरस्वभाववाला और
क्रोधका करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ वृद्धियोगजातफलम् ।

सुसंग्रहप्रीतिरतीव दक्षो धनान्वितः स्यात्क्रयविक्रयाभ्याम् ।
प्रसूतिकाले यदि यस्य वृद्धिर्भाग्याधिवृद्धिर्नियमेन तस्य॥११

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य सब चीजें
संग्रह करनेमें रत, अत्यंत चतुर, क्रय और विक्रय करनेसे धनवान् और नि
श्चय करके भाग्यकी वृद्धिवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ ध्रुवयोगजातफलम् ।

निश्चला हि कमला सदालये संभवेच्च वदने सरस्वती ।
चारुकीर्तिरपि स ध्रुवं तदा चेद् ध्रुवो भवति यस्य संभवे॥१२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ध्रुवनाम योग हो उस मनुष्यके घरमें क
लक्ष्मी सदा रहती है और उसके मुखमें सरस्वती वास करे तथा नि
सुन्दर कीर्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ व्याघातयोगजातफलम् ।

क्रूरोऽल्पदृष्टिः कृपया विहीनो मंहाहनुः स्यादपवादवादी ।
असत्यनामीतिरतीव मर्त्यो व्याघातजातः खलु घातकर्ता॥१३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्याघात नाम योग होता है वह मनुष्य क्रूरस्वभा
वाला, थोड़ी दृष्टिवाला, दयारहित, ऊँची ठोड़ीवाला, झूठी निंदा करनेवाला, असत्य
बोलनेमें अत्यंत प्रीति करनेवाला और घात करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ हर्षणयोगजातफलम् ।

सुखिस्त्वगाधः कृतशास्त्रयत्नः सुरत्नभूषावसनानुरक्तः ।
प्रसूतिकाले यदि हर्षणश्चेन्न मानवो वै रिपुकर्षणः स्यात॥१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हर्षणनाम योग होता है वह मनुष्य [illegible]
[illegible] करनेवाला, शरीर वस्त्रोंका धारनेवाला, सुंदर आभूषणों सहित [illegible]
[illegible] करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ वज्रयोगजातफलम् ।

[illegible] सुवर्णादिसुगन्धहीनाः मत्यानिनो रत्नपरीक्षकः स्यात् ।
प्रसूतिकाले यदि वज्रयोगः स वज्रयुक्तामणिभूषणाढ्यः ॥ १५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्रनाम योग होता है वह मनुष्य सुन्दर बुद्धिवाला सुन्दर बन्धुओंवाला, गुणवान् महापराक्रमी, सत्यसहित रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला और हीरोंसे जडे हुए आभूषणोंसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम्।

उदारचेताश्चतुरःसुशीलः शास्त्रादः सारविराजमानः।
प्रसूतिकाले यदि सिद्धियोगो भाग्याभिवृद्धिःसततं हि तस्य १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य उदारचित्त, चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, शास्त्रका जाननेवाला, बल करके युक्त और निरंतर उसके भाग्यकी वृद्धि होती है ॥ १६ ॥

अथ व्यतीपातयोगजातफलम्।

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः।
परस्यकार्यव्यतिपाततुल्यो नरःखलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यतीपातनाम योग हो वह मनुष्य पिता माताके वचनमें उदार बुद्धि रखनेवाला, रोगयुक्त देहवाला, कठोरचित्त और पराये कार्यको बिगाडनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ वरीयान्योगजातफलम्।

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पतासद्व्ययतासमेतः।
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान्भवेद्वरीयान्प्रभवे हि यस्य ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वरीयान् नाम योग हो वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला, नम्रतासहित, थोडे धनवाला, श्रेष्ठ कार्यमें खर्च करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, श्रेष्ठजन होता है ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगजातफलम्।

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः।
दक्षोऽल्पभक्षो विजितारिपक्षस्त्वधर्षितो वै परिघोद्भवःस्यात् १९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिघ योग होता है वह मनुष्य झूठी गवाही देनेवाला, बहुतोंकी जमानत करनेवाला, प्रकट कर्मोंवाला, क्षमारहित, चतुर, थोडा भोजन करनेवाला, शत्रुओंका जीतनेवाला और निर्भय होता है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगजातफलम्।

सन्मंत्रशास्त्राभिरतो नितांतं जितेंद्रियश्चारुशरीरयष्टिः।
योगःशिवो जन्मनियस्यजंतोः सदाशिवंतस्यशिवप्रसादात् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्रनाम योग होता है वह मनुष्य सुन्दर बुद्धिवाला सुन्दर, बन्धुओंवाला, गुणवान् महापराक्रमी, सत्यसहित रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला और हीरोंसे जडे हुए आभूषणोंसे पूर्ण होता है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम्।

उदारचेताश्चतुरःसुशीलः शास्त्रादः सारविराजमानः ।
प्रसूतिकाले यदि सिद्धियोगो भाग्याभिवृद्धिःसततं हि तस्य १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य उदाराचित्त, चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, शास्त्रका जाननेवाला, बल करके युक्त और निरंतर उसके भाग्यकी वृद्धि होती है ॥ १६ ॥

अथ व्यतीपातयोगजातफलम्।

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः ।
परस्यकार्यव्यतिपाततुल्यो नरःखलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यतीपातनाम योग हो वह मनुष्य पिता माताके वचनमें उदार बुद्धि रखनेवाला, रोगयुक्त देहवाला, कठोरचित्त और पराये कार्यको बिगाडनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ वरीयानयोगजातफलम्।

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पतासद्व्ययतासमेतः ।
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान्भवेद्वरीयान्प्रभवे हि यस्य ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वरीयान् नाम योग हो वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला, नम्रतासहित, थोडे धनवाला, श्रेष्ठ कार्यमें खर्च करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, श्रेष्ठजन होता है ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगजातफलम्।

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः ।
दक्षोऽल्पभक्षी विजितारिपक्षस्त्वर्पितो वै परिघोद्भवःस्यात् १९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिघ योग होता है वह मनुष्य झूठी गवाही देनेवाला, बहुतोंकी जमानत करनेवाला, प्रकट कर्मोंवाला, क्षमारहित, चतुर, थोडा भोजन करनेवाला, शत्रुओंका जीतनेवाला और निर्भय होता है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगजातफलम्।

सन्मंत्रशास्त्राभिरतो नितांतं जितेंद्रियश्चारुशरीरयष्टिः ।
योगःशिवो जन्मनियस्यजंतोः सदाशिवंतस्यशिवप्रसादात् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कौलवनाम करण हो वह मनुष्य कामी, बुद्धिमा
बहुतोंको प्यारा, स्वाधीनताको प्राप्त, बहुत मित्रोंसे मित्रता करनेवाला, बलवा
कोमलवाणी बोलनेवाला और अपने कुलमें श्रेष्ठ होता है ॥ ३ ॥

अथ तैतिलकरणजातफलम् ।

चारुकोमलकलेवरशाली केलिलाससुमनाश्च कलाज्ञः ।
वाग्विलासकुशलोऽतिसुशीलस्तैतिले विमलधीश्चलदृक्स्या

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तैतिलकरण हो वह मनुष्य सुन्दर कोमल देहवा
केलि विलासमें प्रीति करनेवाला, कलाप्रवीण, वाणीविलासमें चतुर, अतिश्रेष्ठ शी
वाला, निर्मल बुद्धि और चंचल नेत्रोंवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ गरकरणजातफलम् ।

परोपकारे विहितादरश्च विचारसारश्चतुरो जितारिः ।
शूरोऽतिधीरः सुतरामुदारो गरे नरश्चारुकलेवरश्च ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गरकरण हो वह मनुष्य पराया उपकार करनेवा
विचार करनेवालोंमें उत्तम,चतुर, शत्रुओंका जीतनेवाला, शूर वीर, अति धैर्य
अत्यन्त उदार और सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ वणिजकरणजातफलम् ।

कलाप्रवीणः सुतरां सहासः प्राज्ञो हि सन्मानसमन्वितश्च ।
प्रसूतिकाले वणिजो हि यस्य वाणिज्यतोऽर्थागमनं हि तस्य

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वणिजनाम करण हो वह मनुष्य कलाओंमें प्रवी
अत्यंत हास्ययुक्त, चतुर, सन्मानसहित और व्यापारसे धन पैदा करनेवा
होता है ॥ ६ ॥

अथ विष्टिकरणजातफलम् ।

चारुनक्रचपलो बलशाली हेलयासिदलितारिकुलश्च ।
जायते खलमतिर्बहुनिद्रो यस्य जन्मसमये खलु भद्रा ॥ ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विष्टिकरण हो वह मनुष्य सुंदर मुखवाला, प
बलवान, चलायमान ही तरवारसे शत्रुओंके कुलका नाश करनेवाला, दुष्टबु
और बहुत सोनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ शकुनिकरणजातफलम् ।

अतिसुलक्षितबुद्धिर्मंत्रविद्याविधाने
गुणगणसमवेतः सर्वदा सावधानः ।

ननु जनकृतसख्यः सर्वसौभाग्ययुक्तो
भवति शकुनिजन्मा शाकुनज्ञानशीलः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शकुनिनाम करण हो वह मनुष्य अत्यंत सुन्दर बुद्धिवाला, मंत्रविद्याके विधानमें चतुर, गुणोंके दलसहित, हमेशा सावधान, मनुष्योंसे मित्रता करनेवाला, सम्पूर्ण सौभाग्य पदार्थोंसहित और शकुनका जाननेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ चतुष्पदकरणजातफलम् ।

नरः सदाचारपराङ्मुखः स्यादसंग्रहः क्षीणशरीरयष्टिः ।
चतुष्पदे यस्य भवेत्प्रसूतिश्चतुष्पदात्सत्त्वयुतो मनुष्यः ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुष्पद नाम करण हो वह मनुष्य हमेशा सदाचारसे रहित, किसी वस्तुका संग्रह नहीं करे, क्षीण शरीरवाला और चौपायों के बलवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ नागकरणजातफलम् ।

दुःशीलवक्रचलनो बलवान्खलात्मा
कोपानलाहतमतिः कलिकृत्कुलार्यैः ।
द्रोहात्कुलक्षयभवादतिदीर्घकाले
जातो हि नागकरणे रणरंगधीरः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नागकरण हो वह मनुष्य खोटे स्वभाववाला, उलटा चलनेवाला, बलवान्, दुष्टात्मा, क्रोधाग्निसे नष्ट बुद्धिवाला, कुलके श्रेष्ठ पुरुषोंसे कलह करनेवाला, कुलका शत्रु, वैरसे कुलका नाश करनेवाला और संग्राममें धीर होता है ॥ १० ॥

अथ किंस्तुघ्नकरणजातफलम् ।

धर्मेऽप्यधर्मे समता मतेः स्यादङ्गेऽप्यनङ्गे विबलत्वमुच्चैः ।
मैत्र्याममैत्र्यां स्थिरता न किंचित्किंस्तुघ्नजातस्य हि मानवस्य ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें किंस्तुघ्न करण होता है वह मनुष्य धर्म और अधर्ममें बराबर होता है, देहमें और काम-क्रीडामें निर्बल, मित्रता और शत्रुता उसकी स्थिर कभी न रहे ॥ ११ ॥

अथ गण्डांतजातफलम् ।

पौष्णादिगंडांतभवो हि मर्त्यः क्रमेण पित्रोरशुभोऽग्रजस्य ।

तथा च सत्यं त्रिविधे प्रजातः सर्वाभिघातं कुरुते वदंति॥ १॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नक्षत्रगंडांत हो वह मनुष्य माता पिताका ना[श] करेगा और तिथिगंडांतमें उत्पन्न हुआ अपने ज्येष्ठ भ्राताका नाश कर[ता] और लग्नगंडांतमें पैदा हुआ आप नष्ट होता है और तीनों गंडांत [में] पैदा हो तो सबका नाश करता है ॥ १ ॥

अथ गणजातफलमाह-तत्रादौ देवगणजातफलम्।

सुस्वरश्च सरलोक्तिमतिः स्यादल्पभोजनकरो हि नरश्च।
जायते सुरगणेऽन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः॥ १॥

जो बालक देवगणमें पैदा हो वह श्रेष्ठ शब्दवाला, सीधी उक्ति बुद्धि[वाला], थोड़ा भोजन करनेवाला और गुणोंका जाननेवाला, विद्वानोंसे वर्णि[त] गुणवाला और धनी होता है ॥ १ ॥

अथ मनुष्यगणजातफलम्।

देवद्विजार्चाभिरतोऽभिमानी धनी दयालुर्बलवान्कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकीर्तिः सुखदो बहूनां मर्त्यो भवेन्मर्त्यगणे प्रसूतः॥ २॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मनुष्यगण हो वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणों[के] पूजनमें तत्पर, अभिमानी, धनवान, दयालु, बलवान, कलाओंका जाननेवा[ला], चतुर, श्रेष्ठ-कीर्तिवाला और बहुत जनोंको सुख देनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ राक्षसगणजातफलम्।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी कोपपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृत्तः कलिकृद्बलीयान्रक्षोगणोत्पन्ननरो विरोधी॥ ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राक्षसगण हो वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, क[ठोर] चित्त, साहसी, क्रोधवाला, बुरे शीलवाला, कलह करनेवाला, बलवान [और] विरोध करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ पक्षजातफलम्-तत्रादौ [illegible]पक्षजातफलम्।

[illegible]भिमानी गुणवानकोपः सुहृद्विरोधी च सदा परेषा[म्]।
[illegible] [illegible] यः पुरुषोऽतिगौरः॥ १॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें [illegible] पक्ष हो वह मनुष्य बड़ा अभिमानी, गुण[वान], [illegible] [illegible] है और [illegible] मित्र होता है, [illegible] [illegible] [illegible] मित्र होता है ॥ १ ॥

अथ वृषलग्नजातफलम्।

गुणाग्रणीः स्याद्गविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रणप्रियश्च।
धीरश्च शूरः प्रियवाक्प्रशांतः स्यात्पूरुषो यस्य वृषो विलग्ने॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषभ लग्न हो वह मनुष्य गुणवानोंमें अग्रणी ...नसे पूर्ण, गुरुओंका भक्त, संग्रामप्रिय, धैर्यवान्, शूर, वीर, प्यारी वाणी बोलने-...ला और शांतस्वरूप होता है॥ २॥

अथ मिथुनलग्नजातफलम्।

भोगी वदान्यो बहुपुत्रमित्रः सुगूढमन्त्रः सधनः सुशीलः।
तस्य स्थितिः स्यान्नृपसंनिधाने लग्ने भवेद्वै मिथुनाभिधाने॥३॥

जिस मनुष्यका जन्म मिथुन लग्नमें हो वह मनुष्य भोगी, दाता, बहुत पुत्र ...ौर मित्रोंवाला, छिपे हुए मंत्रवाला, धनी, श्रेष्ठ शीलवाला होता है और उसका ...हना राजाके पास होता है॥ ३॥

अथ कर्कलग्नजातफलम्।

मिष्टान्नभुक्साधुरतो विनीतो विलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः।
प्रकृष्टसारो नितरामुदारो लग्ने कुलीरे हि नरो भवेद्यः॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क लग्न हो वह मनुष्य मिष्टान्नका खानेवाला, ...ाधुओंमें तत्पर, नम्रतावाला, उलटी बुद्धिवाला, जलमें विहार करनेवाला, अनेक ...ोजोंके सारको जाननेवाला निरंतर उदार होता है॥ ४॥

अथ सिंहलग्नजातफलम्।

कृशोदरश्चारुपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोऽल्पभक्षः।
संजातबुद्धिर्मनुजोऽभिमाने पञ्चानने संजनने विलग्ने॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंह लग्न हो वह मनुष्य दुर्बल पेटवाला, ...न्दर पराक्रमवाला, भोगी और थोड़े पुत्रोंवाला, थोड़ा भोजन करनेवाला और ...भिमानमें उसकी बुद्धि होती है॥ ५॥

अथ कन्यालग्नजातफलम्।

...ामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्त्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः।
...ग्नं कन्या यस्य जन्यांजघन्यांकन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम्॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या लग्न हो वह मनुष्य अधिक कामी, श्रेष्ठ ...ुणवाला और ज्ञान तथा बलसहित चतुरता आदिमें युक्त, श्रेष्ठ, प्रसन्न और अंतमें ...क्ष्मीको प्राप्त करता है ६ ।

अथ तुलालग्नजातफलम् ।

गुणाधिकत्वाद्वणिपलब्धिर्वाणिज्यकर्मण्यतिनिपुणत्वम् ।
पद्मालया तन्निलये न लोला लग्ने तुला चेत्स कुलावतंसः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुला लग्न हो वह मनुष्य गुणोंमें अधिक प्राप्त करनेवाला, व्यवहार कार्यमें अत्यन्त निपुण तथा उसके स्थानसे लक्ष्मी हटती और अपने कुलमें प्रकाशवान् होता है ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकलग्नजातकफलम् ।

शूरो नरोऽत्यंतविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकतासमेतः ।
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैव ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिक लग्न हो वह मनुष्य शूर वीर, अ विचार करनेवाला, श्रेष्ठ विद्याओंकी अधिकतासे युक्त और हमेशा क्लेशको होता है ॥ ८ ॥

अथ धनुर्लग्नजातफलम् ।

प्राज्ञश्च राज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञःसुतरां मनोज्ञः ।
सुज्ञः कलाज्ञश्चधनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्धनुर्यस्य जनुस्तनुः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनुर्लग्न हो वह मनुष्य चतुर, राजाकी से करनेवाला, सत्यप्रतिज्ञावाला, निरंतर मनको जाननेवाला, विद्वान्, कलाओंका जा नेवाला और धनुर्विद्याको जाननेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ मकरलग्नजातफलम् ।

कठिनमूर्तिरतीव शठः पुमान्निजमनोगतकृद्बहुसन्ततिः ।
सुचतुरोऽपि च लुब्धतरो वरो यदि नरो मकरोदयसंभवः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर लग्न हो वह कठोरमूर्ति, अत्यन्त श अपने मनका काम करनेवाला, बहुत पुत्रोंवाला, अच्छी चतुरतासहित, अधि लोभी और श्रेष्ठ होता है ॥ १० ॥

अथ कुम्भलग्नजातफलम् ।

लोलस्वांतोऽत्यंतसंजातकामश्चश्चदेहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे ।
मस्त्यारम्भःसंभवेद्युक्तदम्भश्चेत्स्यात्कुंभे संभवो यस्य लग्ने ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भ लग्न हो वह मनुष्य चंचल, अपने हृद कामको मन, सुन्दर देह, मित्रगणोंमें प्रीति करनेवाला, अयका आरंभ करने और दम्भी होता है ॥ ११ ॥

अथ मीनलग्नजातफलम् ।

दक्षोऽल्पभक्षोल्पमनोभवश्च सद्रत्नहेमा चपलोऽतिधूर्तः ।
स्यान्ना च नानारचनाविधाने मीनाभिधाने जनने विलग्ने १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनलग्न हो वह मनुष्य चतुर, थोडा भोजन करने- ला तथा अल्पकामवाला, श्रेष्ठ रत्न और सुवर्णवाला, चपल, अत्यन्त धूर्त और नेक तरहकी रचना करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

भवेदलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ ।
तस्मिन्बलोने यदि वा विलग्ने युक्तेक्षिते क्रूरखगैस्तथाल्पम् १३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न बलवान् हो तो कहा हुआ पूरा फल होता है र जो लग्न निर्बल हो अथवा पापयुक्त हो अथवा पापग्रह देखता हो तो थोड़ा फल ता है ॥ १३ ॥

नन्वेवमुदाहृतानां संवत्सरादिफलानां समयनियमाभावात् निराधारकत्वेन फलादेशः कथं सम्यग्घटतीति व्यर्थमेव, किमर्थमुक्तमिति चेन्न समयनियमोऽप्यस्ति तथा हि-

निश्चयकर संवत्सरादिका फल निराधार कहा है और उसके प्राप्त होनेका समय नहीं कहा है तो वह निराधार फल किस प्रकार घट सकता है, तो पूर्वोक्त फलका ना व्यर्थ है, किस वास्ते कहा ऐसा तो न कहो क्योंकि समयनियम भी है लिये कहते हैं-

उक्तानि संवत्सरपूर्वकाणां फलानि तत्प्राप्तिरिति प्रकल्प्या ।
सांवत्सरं सावनवर्षपस्यपाकेऽयनर्तुप्रभवं खरांशोः ॥ १४ ॥

जो पहिले कहा संवत्सरादिका फल कहा है उसके प्राप्त होनेके समयकी कल्पना ते हैं, संवत्सरका फल सावन वर्षपतिकी दशामें कहना चाहिये और अयनऋतुका सूर्यकी दशामें कहना चाहिये ॥ १४ ॥

अथ पूर्वोक्तसंवत्सराणां फलप्राप्तिसमयमाह-

मासोद्भवं मासपतेस्तथैवोर्गणोडुपक्षप्रभवं च यत्स्यात् ।
तिथिप्रभूतं करणोद्भवं च चन्द्रान्तरेऽर्कस्य दशाविभागे ॥१५॥
वारोद्भवं वारविभोर्विचिन्त्य योगोत्थमिन्द्वर्कबलान्वितस्य ।
लग्नोद्भवं लग्नपतेर्दशायां दृग्भावपुंराशिजमेवमूह्यम् ॥ १६ ॥

और महीनेका फल मासपतिकी दशामें कहना चाहिये और गण तथा
और पक्षफल भी चंद्रमाकी दशामें कहना चाहिये और तिथिजात और करण
फल चंद्रमाके अन्तरमें सूर्यकी दशामें कहना चाहिये ॥ १५ ॥ और वारजात
वारके स्वामीकी दशामें कहना चाहिये और योगजातफल सूर्य चंद्रमा
अधिक बली हो उसकी दशामें कहना और लग्नजात फल लग्न
दशामें कहना चाहिये और दृष्टिभाव राशि इनका फल इनके स्वामीकी द
कहो ॥ १६ ॥

अथ डिंभाख्यचक्रम्।

डिंभाख्यचक्रं रविभाच्च भानां त्रयं न्यसेन्मूर्ध्नि मुखे त्रयं
द्वे स्कंधयोर्द्वे भुजयोर्द्वयं च पाणिद्वये वक्षसि पञ्च भानि॥
नाभौ च लिंगे च तथैकमेकं द्वे जानुनोःपादयुगे भषट्कम्।
पुंसां सदा वै परिकल्पनीयं मुनिप्रवर्यैः फलमुक्तमत्र ॥ २

अथ डिंभाख्यचक्र कहते हैं-डिंभाख्यचक्रके विषयमें सूर्यके नक्षत्रसे नक्ष
न्यास करे, वे शिरपर तीन, मुखमें तीन, दोनों कन्धोंपर एक एक और दोनों प
पर एक एक, दोनों हाथोंपर एक एक, छातीपर पांच नक्षत्र स्थापित करे॥
नाभिमें एक, लिंगपर एक और दोनों जांघोंमें दो दो और तीन तीन दोनों पै
पुरुषोंके हमेशा कल्पना करे, यहां मुनीश्वरोंके कहे हुए फलको कहा है ॥ २ ॥

अथ डिंभाख्यचक्रे नक्षत्रन्यासफलमाह-

मद्भवनार्मीकरचारुसत्रविचित्रबालव्यजनातपत्रैः।
विराजमानो मनुजो नितांतं मौलिस्थले भं नलिनीप्रभोश्चेत्
मिष्टाशनानां शयनासनानां भोक्ता च वक्ता सततं प्रसन्नः
स्मिताननो ना वदनानुयातं भानोर्भवृंदं जनने हि यस्य॥
दूरांगको वंशविभूषणश्च महोत्सवार्थं प्रथितः प्रतापी।
नरोऽतिशूरोऽतितरामुदारो दिवाकरांदुस्थितमंशके चेत्॥४

जो बालक सिरके नक्षत्रोंमें पैदा हो तो श्वेत छत्र और सोना मुंदर
व्यजन इनोंसे शोभित वह मनुष्य शोभायमान होता है, जो सूर्यके सिरके नक्ष
पर हो ॥ ३ ॥ और जो सूर्यके मुखके नक्षत्रमें पैदा हो तो वह बालक मीठे भो
शयन करना और आसनोंका भोग करनेवाला और बोलनेवाला
[illegible] है और [illegible] होता है ॥ ४ ॥ और जो

में पैदा हो तो वह मनुष्य वंशमें आभूषणके समान, बडे उत्सवों सहित गी, मतापवाला, मबल वीर और अत्यन्त उदार होता है ॥ ५ ॥

त्यक्तस्वदेशः पुरुषो विशेषाद्गर्वोद्धतः शौर्ययुतो नितांतम्।
विदेशवासाप्तमहत्प्रतिष्ठो मार्तंडभं बाहुगतं प्रसूतौ ॥ ६ ॥
वदान्यतासद्गुणवर्जितश्च पण्यादिरत्नादिपरीक्षकश्च।
सत्यानृताभ्यांसहितो हि मर्त्यो दिवामणेर्भं यदि पाणिसंस्थम्७
भूपालतुल्यः स्वकुले सुशीलो बालो विशालोत्तमकीर्तिशाली।
शास्त्रे प्रवीणः परिसूतिकाले वक्षस्थले चेन्नलिनीशभं स्यात् ८

जो बालक बाहोंके नक्षत्रोंमें पैदा हो वह मनुष्य अपने देशको विशेष करके त्याग देता है और बडा अभिमानी, अत्यन्त वीरतासे युक्त और परदेशमें जाय बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है और जो सूर्यके हाथोंके नक्षत्रमें पैदा हो ॥६॥ बालक उदार, श्रेष्ठ गुणसे रहित, व्यापारमें रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला, सत्य झूठसहित होता है ॥ ७ ॥ और जो बालक सूर्यकी छातीके नक्षत्रोंमें पैदा वह मनुष्य राजाके समान अपने कुलमें होता है और श्रेष्ठ शीलवाला, विशाल, यशवाला और शास्त्रमें प्रवीण होता है ॥ ८ ॥

क्षमासमेतो रणकर्मभीरुः कलाकलापाकलनैकशीलः।
धर्मप्रवृत्तिः सुतरामुदारो नाभीसरोजेऽम्बुजबंधुतारा ॥९॥
कंदर्पधुर्योज्झितसाधुकर्मा सङ्गीतनृत्याभिरुचिः कलाज्ञः।
चेज्जन्मकाले नलिनीशभं स्याद्गुह्यस्थले सोऽतुलकीर्तियुक्तः ॥ १० ॥ नानादेशानेकधा संप्रचारः कार्य्योत्साहश्चंचलः क्षामगात्रः। धर्मो मर्त्यः सत्यहीनश्च नूनं जानुस्थाने भानुभं जन्मनि स्यात ॥ ११ ॥ कृषिक्रियायां निरतोऽल्पधर्मः शङ्कोज्झितः सेवनकर्मकर्ता। तारा यदि स्यादरविंदबन्धोः पादारविंदे च नरस्य सूतौ ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्यके नाभिका नक्षत्र हो वह मनुष्य क्षमायुक्त, संग्राममें भीरु, कलाओंके समूहमें रचना करनेमें चतुर, धर्ममें प्रवृत्त, धर्मकी रुचि रखने- वाला निरन्तर उदार होता है ॥ ९ ॥ और जिसके जन्मकालमें सूर्यके गुह्यस्थान- का नक्षत्र हो वह मनुष्य बडा कामी, साधुकर्मोंसे रहित, श्रेष्ठ गीत और

नृत्यमें प्रीति करनेवाला, कलाओंको जाननेवाला होता है और बड़े ... होता है ॥ १० ॥ और जिसके जन्मकालमें सूर्यके जानुके नक्षत्र हों वह ... अनेक देशमें अनेक तरहका प्रचार करनेवाला, कार्यमें उत्साही, चंचल, ... देहवाला, धूर्ततायुक्त, सत्यसे रहित होता है ॥ ११ ॥ जिसके जन्मकालमें ... पैरोंका नक्षत्र हो वह मनुष्य खेतीकी क्रियामें कुशल, थोड़े धर्म करने... शत्रुरहित और सेवाका काम करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ ह्रस्वदीर्घाङ्गज्ञानमाह ।

ह्रस्वा मीनवृषाजघटा मिथुनधनुःकर्किमृगमुखाश्च समाः ।
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः ॥१॥
एभिर्लग्नादिगण्यैः शीर्षप्रभृति नृशरीराणि । सदृशानि
विजायंतेस्थितगगनचरेश्चैव तुल्यानि ॥ २ ॥ इदं लग्नतः
प्रकाशात्कालपुरुषाकारचक्रं द्रष्टव्यम् ॥

अथ ह्रस्व दीर्घ राशि कहते हैं—मीन, वृष, मेष, कुंभ, ये राशि छोटी हैं ... मिथुन, धन, कर्क, मकर ये सम अर्थात् न छोटी हैं न बड़ी हैं और वृश्चि... कन्या, सिंह, तुला ये राशि बड़ी हैं ॥ १ ॥ ये राशि लग्नसे लेकर शिर आदि... लेकर मनुष्यके शरीरके अंगोंका छोटा बड़ा समान जानना चाहिये ॥ २ ॥ लग्नके प्रकाशसे लेकर काल पुरुषके शरीरका आकार चक्रमें छोटा बड़ा ज... लेना चाहिये ॥

अथ द्वादशभावानां फलानि ।

भित्रं द्वादशधा विधाय विलसच्चक्रं च तत्र न्यसेत्
लग्नाद्द्वादश राशयोऽतिविशदा वामाङ्कमार्गक्रमात् ।
अङ्क्या तत्र नभश्चराः स्फुटतरा राशौ च यत्र स्थिता-
स्तेभ्यः साधुफलं त्वसाधुसुधिया वाच्यं हि होरागमात् ॥१॥

... बारह स्थान बनाके वहाँ चक्र करके स्थान कर फिर लग्नसे लेकर बारह राशियों को बायें अंगसे क्रम करके अंक स्थापित कर उन राशिके अंकोंमें ग्रह स्थापित करे, उसको जन्मकुण्डली कहते हैं, इससे अच्छा बुरा फल ज्योतिशास्त्रके ... विचार करे ॥ १ ॥

अथ तनुभावे किं विचारणीयम् ।

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् ।
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ॥२॥

अब तनुभावका विचार कहते हैं–उस तनुभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये, लग्नसे रूप और वर्णका निर्णय, देहके चिह्न, अवस्थाका प्रमाण, सुख और दुःख और साहस ये सब लग्नसे विचार करने चाहिये ॥ २ ॥

अथ तनुभावविचारः ।

विलोकिते सर्वखगैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ।
कुले नृपालो विपुलायुरेव भवेन युक्तोऽरिकुलस्य हंता ॥ ३ ॥

दीर्घायुर्योगः ३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सम्पूर्ण ग्रह लग्नको देखते हों तो वह मनुष्य हास्यविलास युक्त और बलवान् होता है कुलमें राजा हो, बड़ी उमरवाला, भयरहित, शत्रुओंके कुलको नाश करता है ॥ ३ ॥

राजयोगः ४

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युःकुर्वंति जातं नृपतिं विनीतम् । पापास्त्रयो दुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितांतं बहुभक्षकंच ॥ ४ ॥

दारिद्र्ययोग ४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन शुभग्रह लग्नमें बैठे हों तो वह मनुष्य नम्रतायुक्त राजा होता है और जो तीन पापग्रह लग्नमें बैठे हों तो वह मनुष्य दुःख दरिद्र शोक करके सहित अत्यंत भोजन करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

श्रेष्ठयोग. ५

लग्नादद्यूनपडष्टकेऽपि च शुभाः पापेन युतेक्षिता मंत्री दण्डपतिःक्षितेरधिपतिःस्त्रीणां बहूनां पतिः । दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयः सौंदर्यसख्यान्वितः सच्छीलो यवनेश्वरैर्निगदितो मर्त्यःप्रसन्नःसदा ५

जो जन्म लग्नसे सातवें, छठें, आठवें, शुभग्रह बैठे हों और पापग्रहोंसे युक्त और न दृष्ट हों तो वह मनुष्य राजाका मंत्री,फौजका मालिक,धरतीका स्वामी, स्त्रियोंका पति, बड़ी उमरवाला, रोगरहित, भयहीन, सुंदरता और श्रेष्ठ शीलवाला और हमेशा प्रसन्न होता है यह यवनाचार्यने कहा है ॥ ५ ॥

अथार्कादिग्रहाणां तु गुणवर्णविनिर्णयः ।
आकारोऽपि शरीरस्य प्रोच्यते मुनिसंमतः ॥ ६ ॥

अब मुनिमतानुसार सूर्यादि ग्रहोंके गुण वर्णका निर्णय और शरीरके कहते हैं ॥ ६ ॥

अथ सूर्यस्वरूपम् ।

शूरो गभीरश्चतुरः सुरूपः श्यामारुणश्चाल्पककुंतलश्च ।
सुवृत्तगात्रो मधुपिंगनेत्रो मित्रोहि पित्तास्थ्यधिको न तुंगः ७

अब सूर्यका स्वरूप कहते हैं-शूर, वीर, गम्भीर, चतुर, श्रेष्ठ रूप, श्याम, वर्ण, थोड़े बाल, सुडौल शरीर, शहदके समान पीले नेत्र, पित्तप्रकृति, न बहुत ऊंचा न बहुत छोटा ऐसा सूर्यका स्वरूप है ॥ ७ ॥

अथ चंद्रस्वरूपम् ।

सद्वाग्विलासोऽमलधीः सुकायो रक्ताधिकः कुञ्चितकेशकृष्णः
कफानिलात्माम्बुजपत्रनेत्रो नक्षत्रनाथः सुभगोऽतिगौरः ॥ ८

अब चन्द्रमाका स्वरूप कहते हैं-श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, निर्मल अधिक रुधिरवाला, घूँघरवाले काले बालवाला, कफ वायुकी प्रकृतिवाला समान नेत्रवाला सुन्दर और अत्यंत गौर होता है ॥ ८ ॥

अथ भौमस्वरूपम् ।

मज्जासारो रक्तगौरोऽत्युदारो हिंस्रः शूरः पैत्तिकस्तामसश्च ।
चंडः पिंगाक्षो युवाऽखर्वगर्वः खर्वश्चोर्वीसूनुरग्निप्रभःस्यात्

अब मंगलका स्वरूप कहते हैं-मेदामें सार, लाल गौरवर्ण, अत्यंत उदार, हिं करनेवाला, शूरवीर, पित्तप्रकृतिवाला, क्रोधी, प्रचंड, पीले नेत्रवाला, जवान, अभिमानी, अग्निके समान कांतिवाला, छोटा शरीर होता है ॥ ९ ॥

अथ बुधस्वरूपम् ।

श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कुतूहली कोमलवाक्त्रिदोषी
रजोधिको मध्यमरूपधृक्स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः ॥१०

कहना चाहिये। यथा काश्मीरदेशमें तथा विलायतमें सब गौर ही पैदा होते तो उस देशमें सबको श्याम मत कहना और जातिके अनुसार विचार करे जैसे नागरजाति, खत्री जातिके लोग बहुधा गौर होते हैं, जैसे भील किं कोलजातिके लोग काले होते हैं उन लोगोंको काला ही कहना चाहिये ॥ १४

अथ अंगन्यासः ।

सत्त्वं भवेयुः शशिसूर्यजीवास्तमो यमारौ च रजोज्ञशुक्रौ।
त्रिंशल्लवे यस्य गतो दिनेशो वाच्योगुणस्तस्यखगस्य नूनम् १५
शिरोऽक्षिणी कर्णनसा कपोलौ हनुर्मुखं च प्रथमे दृकाणे।
कंठांसदोर्दण्डककुक्षिवक्षः क्रोडं च नाभिस्त्रिलवे द्वितीये॥१६
वस्तिस्ततो लिंगगुदे तथाण्डावूरू च जानू चरणौ तृतीये
क्रमेण लग्नात्परपूर्वपट्के वामं तथा दक्षिणमंगमत्र ॥ १७।

चंद्रमा,सूर्य और बृहस्पति ये सत्त्वगुणके स्वामी हैं और शनैश्चर, मंगल तमो गुणके स्वामी हैं, बुध शुक्र रजोगुणके स्वामी होते हैं। सूर्य जिस २ त्रिंशांशमें बैठा हो उस २ त्रिंशांशका स्वामी जो ग्रह हो उसीके गुणकी अधिकता मनुष्यमें कहना चाहिये ॥ १५ ॥ शरीरके तीन भाग कहना जो लग्नमें पहिले द्रेष्काणका उदय हो शिर, आँख, कान, नासिका, गाल, ठोडी, मुखपर्यंत बारहों अंगोंको प्रथमभागमें जानना चाहिये, द्वितीय द्रेष्काणका उदय हो तो कंठ,कंधा, बाहु, पार्श्व, हृदय, पेट, नाभि द्वितीय भाग हैं और जो तीसरे द्रेष्काणका उदय हो ॥ १६॥ तो पेडू, लिंग, गुदा,जांघें, चरण दोनों तृतीय भाग हैं वह क्रम करके छः छः अंगोंके भाग वाम दहिने अंग चक्रमें कल्पना करनी चाहिये ॥ १७ ॥

प्रथमद्रेष्काणचक्रम्। द्वितीयद्रेष्काणचक्रम्। तृतीयद्रेष्काणचक्रम्।
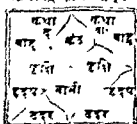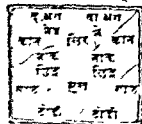
अथ व्रणलक्ष्मादिज्ञानम् ।

व्रणं तिलं लक्ष्म वदन्त्यनुमार्गं कुर्वन्ति सौम्या व्रणमत्र पापाः।
स्वांशस्वभागस्थितगाश्च लक्ष्मयुक्तक्षिताःसौम्ययुताश्च १८
व्रण, तिल, लक्ष्मण, घाव आदि समान कहना चाहिये. जो शुभग्रह हो तो तिल कहना चाहिये और जो पापग्रह जिस अंगमें बलवान् हो तो

ण कहना चाहिये, जो ग्रह अपने नवांश वा अपने द्रेष्काणमें स्थिरराशिमें हो तो पूर्वोक्त चिह्न स्थिर करना चाहिये, जो शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट अंग हो तो मस्सा, तेल, लहसन कहना चाहिये ॥ १८ ॥

अथ व्रणकारणमाह।

रवेर्व्रणः काष्ठचतुष्पदोत्थं शृंग्याम्बुचारिप्रभवः शशाङ्कात्।
कुजाद्विषाग्न्यस्त्रकृतश्च [illegible]

जो पूर्वोक्त व्रणकारक सूर्य हो [illegible]
चंद्रमा व्रणादिकारक होतो शींगके मारनेसे वा जलचर जीवके काटनेसे चिह्न कहना चाहिये और मंगलसे विष अग्नि अस्त्रकृत चिह्न कहना चाहिये और बुध, मंगल, शनैश्चरोंसे मनुष्यकृत वा पत्थरके लगनेसे चिह्न कहना चाहिये ॥ १९ ॥

अथ व्रणनिश्चयज्ञानम्।

कुर्य्याद्व्रणं क्रूरखगो रिपुस्थो युक्तः शुभैर्लक्ष्म तिलं च दृष्टः।
ग्रहत्रयं यत्र बुधान्वितं स्यात्तत्र व्रणोऽङ्के खलु राशितुल्यः॥२०॥

जो पापग्रह छठे बैठे हों तो व्रणका चिह्न करते हैं और शुभग्रह बैठे हों तो लहसन वा तिल करते हैं अथवा छठे पापग्रह बैठे हों और उनको शुभग्रह देखते हों तो भी पूर्वोक्त फल कहना यानी लहसन वा तिल कहना और जिस अङ्गमें तीन ग्रह बुधके सहित बैठे हों तो जरूर ही उस अंगमें राशिके तुल्य संख्यक व्रणके चिह्न कहने चाहिये ॥ २० ॥

स्वबाहुवीर्येण भाग्यवान् योगः।

मेषे शशांकः कलशे शनिश्चेद्भानुर्धनुस्थश्च भृगुर्मृगस्थः। तातस्य वित्तं न कदापि भुंक्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालकी मेषराशिमें चन्द्रमा, कुम्भराशिमें शनैश्चर, धनराशिमें सूर्य और मकरराशिमें शुक्र बैठा हो तो वह पिताके धनको कभी नहीं भोगता है अर्थात् अपनी भुजाके बलसे श्रेष्ठताको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

चतुर्षु केन्द्रेषु भवंति पापा वित्तस्थिताश्चापि च पापखेटाः। नरो दरिद्रोऽतितरां निरुक्तो भयंकरश्चात्मकुलोद्भवानाम् ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके चारों केंद्रोंमें पापग्रह बैठे हों और धनभावमें भी पापग्रह बैं तो वह मनुष्य दरिद्री होता है और अपने कुलके मनुष्योंके वास्ते मर्म होता है ॥ २२ ॥

राजसी बुद्धियोगः २३

सुतस्थितो वा यदि मूर्तिवर्ती बृहस्पती रा गतः शशांकः । नरस्तपस्वी विजितेंद्रिय स्याद्राजसो बुद्धिविराजमानः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें वा ल बृहस्पति बैठा हो और दशमें चन्द्रमा बैठा हो तो वह मनु तपस्वी, इंद्रियोंका जीतनेवाला और राजसी बुद्धिसे शोभायमान होता है ॥ २३

धनवान् योगः २४

कन्यायां च तुलाधरे सुरगुरुर्मेषे वृषे वा भृगुः सौम्यो वृश्चिकराशिगः शुभखगैर्दृष्टः कुल श्रेष्ठताम् । नूनं याति नरो विचारचतुरोऽप्यौ दार्यजातादरो नित्यानंदभरो गुणैर्वरतरो निष्ठापरो वित्तवान् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या या तुलाराशिमें बृहस्पति, मेष वा वृषराशि शुक्र और बुध वृश्चिक राशिमें बैठे हों और शुभग्रहोंसे दृष्ट हों तो कुलकी श्रे ताको प्राप्त होता है तथा वह मनुष्य विचारमें चतुर, संसारमें उदारताके मान प्राप्त होकर हमेशा आनंदसहित और गुणोंमें श्रेष्ठ तथा निष्ठावान् और धनवा होता है ॥ २४ ॥

चौर्ययोगः २५

षष्ठे ससौरी भवतो बुधारौ नरो भवेच्चौर्यपरो नितांतम् । स्वकर्मसामर्थ्यविधेर्विशेषात्पराङ्घ्रिपाणीन्कुगुणी छिनत्ति ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शनैश्वर सहित बुध और मंगल बैठे हों वह मनुष्य चौर्यमें तत्पर होता है और अपने कर्मके सामर्थ्यमें हीन होता है, पराये हाथ पैर काटनेवाला कुगुणी होता है ॥ २५ ॥

चौर्यप्रसङ्गयोगः २६

प्रसूतिकाले किल यस्य जंतोः कर्केऽर्कजश्चेन्मकरे महीजः । चौर्यप्रसंगोद्भवचंडदण्डाच्छाखादिखण्डानि भवंति नूनम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालकी कर्कराशिमें शनैश्चर और मकर राशिमें मंगल बैठा हो तो वह मनुष्य चोरीके संगमे पैदा हुआ जो बड़ा भारी दंड उस दण्डके द्वारा उसके हाथ पैरके खंड होते हैं ॥ २६ ॥

अथ वज्रेण मृत्युयोगः ।

वज्रेण मृत्युयोग २७

कुंभे च मीने मिथुनाभिधाने शरासने स्युर्यदि पापखेटाः । कुचेष्टितः स्यात्पुरुषो नितांतं वज्रेण नूनं निधनं हि तस्य ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभ,मीन, मिथुन, धनुराशिमें सब पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य अत्यंत बुरी चेष्टावाला, वज्रपतनसे उसका मरण होता है ॥ २७ ॥

अनेकतीर्थकृद्योगः २८

अथ अनेकतीर्थकृद्योगः ।

यस्य प्रसूतौ खलु नैधनस्थः सौम्यग्रहः सौम्यनिरीक्षितश्च । तीर्थान्यनेकानि भवंति तस्य नरस्य सम्यङ्मतिसंयुतश्च ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शुभग्रह बैठे हों और उनको शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्य अनेक तीर्थोंका करनेवाला और बुद्धिसे युक्त होता है ॥ २८ ॥

नीचकर्मकृद्योगः २९

अथ नीचकर्मकृद्योगः ।

बुधत्रिभागेन युते विलग्ने केंद्रस्थचन्द्रेण निरीक्षिते च । शिष्टान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा मनुजः प्रकामम् ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधके द्रेष्काणमें लग्नका उदय हो और ... १। ४। ७। १० चन्द्रमासे दृष्ट हो तो वह मनुष्य चाहे उत्तमवंशमें ही पैदा न हो तो भी नीच ही कर्म करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

हीनदेहयोगः ३०

अथ हीनदेहयोगः।

भानौ द्वितीये भवने ... गगनाश्रितश्च। भूनन्दने वै मदने तदा स्यान्मानवो हीनकलेवरः सः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शनैश्वर दूसरे बैठे हों और चन्द्रमा ... मंगल सातवें बैठा हो तो वह मनुष्य हीनदेह होता है ॥ ३० ॥

अथ श्वासक्षयप्लीहगुल्मरोगयोगः।

श्वासक्षयप्लीहगुल्मरोगयोगः ३१

पापांतराले च भवेत्कलावांस्तथार्कसूनुर्मदनालयस्थः। कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः ॥ ३१
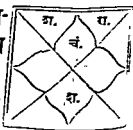
जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें बैठा हो और शनैश्वर सातवें बैठा हो तो उस मनुष्यका देह श्वास, क्षय, तापतिल्ली और गुल्मरोगसे विकल होता है ॥ ३१ ॥

लक्ष्मीविहीनयोगः ३२

अथ लक्ष्मीविहीनयोगः।
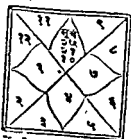
शशी दिनेशस्य यदा नवांशे भवेद्दिनेशः शशिनो नवांशे। एकत्र संस्थौ यदि तौ भवेतां लक्ष्मीविहीनो मनुजः स नूनम् ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा सूर्यके नवांशमें बैठा हो और सूर्य चन्द्रमाके नवांशमें, एक राशिमें, दोनों बैठे हों तो वह मनुष्य धनहीन होता है ॥ ३२ ॥

अथ तेजोहीननेत्रयोगः।

तेजोहीननेत्रयोगः ३३

व्ययेऽरिभावे निधने धने च निशाकरारार्कशनैश्वराः स्युः। बलान्वितास्ते त्वनिलाधिकत्वात्तेजोविहीने नयने प्रकुर्युः ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें, छठे, अष्टम और द्वैतीय स्थानोंमें चन्द्रमा, सूर्य, शनैश्वर बलसहित हों तो वह मनुष्य तेजसे हीन, नेत्रोंवाला और वायकी अधिकतावाला होता है ॥३३॥

अथ कर्णनाशयोगः।

कर्णनाशयोगः ३४

शु.बु.	सू.	मं.	स.	श.	चं.

पापास्त्रिपुत्रायगता भवन्ति विलोकिता नैव शुभैर्नभोगैः। कुर्वन्ति ते कर्णविनाशनं च जामित्रयाताः खलुकर्णघातम्॥

कर्णनाशयोग. ३४

च	सू.	गु.मं.श.	बु	श

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह तीसरे, पंचम, ग्यारहवें हो और उनको शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो उसके कानोंका नाश होता है और जो सप्तममें पापग्रह बैठे हों तो भी निश्चयसे उसके कानोंका नाश होता है ॥ ३४ ॥

अथ नेत्रदोषयोगः।

नेत्रदोषयोगः३५

च मं	चं मं

धनव्ययस्थानगतश्च शुक्रो वक्रोऽथवा कर्णरुजं करोति। नक्षत्रनाथो यदि तत्र संस्थो दृग्दोषकारी कथितो मुनीन्द्रैः॥ ३५ ॥

नेत्रदोषयोग. ३६

शु म.	शु म

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे बारहवें शुक्र वा मंगल बैठा हो तो उसके कानोंमें रोग होता है और जो चन्द्रमा दूसरे वा बारहवें बैठा हो तो भी नेत्रदोष होता है ॥ ३५ ॥

एते हि योगाः कथिता मुनींद्रैः सान्द्रं बलं यस्य ...
कल्प्यं फलं तस्य च पाककाले सुनिर्मला यस्य मतिस्तु ते...

ये योग मुनीश्वरोंसे कहे गये हैं। सम्पूर्ण ग्रहोंके बलसे कहा हुआ ... ग्रहोंकी दशामें श्रेष्ठ बुद्धिमान् पुरुष कहे ॥ ३९ ॥

अथ धनभावविचारमाह—तत्र धनभवनात्किं किं चिंतनीयम्।

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्च रत्नादिकोशोऽपि च संग्रहश्च।
एतत्समस्तं परिचिंतनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ १ ॥

अब धनभावका विचार कहते हैं-धनभावसे सुवर्ण आदि धातुओंका ... विक्रय, रत्न और खजानाका विचार एवं उनका संग्रह करना, यह ... भावसे पंडितजन विचार करें ॥ १ ॥

धनहीनयोगः २ अथ धनहीनयोगः धनहीनयोगः ३

श. सू. मं.

भानुभूतनयभानुतनूजैर्वे-
द्धनस्य भवनं युतहष्टम्।
जायते च मनुजो धन-
हीनः किं पुनः कृशश-
शीक्षितयुक्तम् ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल और शनैश्चर धनभावमें बैठे हों वा दे... हों तो वह मनुष्य धनहीन होता है और जो क्षीण चन्द्रमा भी देखता हो ... युक्त हो तो क्या कहना है ? अर्थात् अवश्य ही धनहीन होता है ॥ २ ॥

धनवान्योगः ३ अथ धनवत्तायोगः। धनवत्तायोगः ३

सू. श.

श.

धने दिनेशोऽतिधनानि
नूनं करोति मन्देन न
चेक्षितश्च। शुभाभिधाना
धनभावसंस्था नानाधना-
भ्यागमनानि कुर्युः ॥ ३ ॥

बु. शु. बृ.

जिसके धनभावमें सूर्य बैठा हो और शनि देखता हो तो वह अतिधनी ... होता है और जो धनभावमें शुभग्रह बैठे हों तो वे अनेक प्रकारका धन ... करते हैं ॥ ३ ॥

धनवत्तायोगः ४
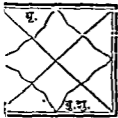
धनहीनयोगः

गीर्वाणवंद्यो द्रविणोपयातः सौम्येक्षितश्चेद्द्रविणं करोति। सोमेन दृष्टो धनभावसंस्थः सोमस्य सूनुर्धनहानिदः स्यात्॥४॥
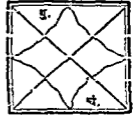
जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति धनभावमें बैठा हो और शुभग्रह देखते हों धनवान् करते हैं और जो धनभावमें बुध बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो धनकी हानि करता है ॥ ४ ॥

धनप्रतिबन्धकयोगः ५

अथ धनप्रतिबन्धकयोगः।

धनस्थितो ज्ञेन विलोकितश्च कृशः शशांकोऽपि धनादिकानाम्। पूर्वार्जितानां कुरुते विनाशं नवीनवित्तप्रतिबंधनं च ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें क्षीण चन्द्रमा बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो पहिलेका इकट्ठा किया हुआ धनादि वस्तुओंका नाश करता है और नये धनादिकोंका प्रतिबन्धक होता है ॥ ५ ॥

धनप्राप्तियोगः ६
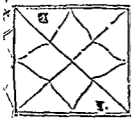
धनप्राप्तियोगः ६

वित्तस्थितो दैत्यगुरुः करोति वित्तागमं सोमसुतेन दृष्टः। स एव सौम्यग्रहयुक्तदृष्टः प्रकृष्टवित्ताप्तिकरो नराणाम्॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शुक्र बैठा हो और बुध देखता हो तो धनकी प्राप्ति कराता है और जो शुक्रको सब शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्योंके बहुत धनकी प्राप्ति करानेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ सहजभावविचारस्तत्र सहजभावात्किं किं चिंतनीयम्।

सहोदराणामथ किंकराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च।
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन कार्या॥

सहज भावसे क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं-वह सगे भाई और तथा पराक्रम और आजीविकाको ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले नियम करके करें ॥ १ ॥

भ्रातृहीनयोगः २ उदा०

पापालयं चेत्सहजं समस्तैः पापैः समेतं प्रविलोकितं च। भवेदभावः सहजोपलब्धेस्तद्वैपरीत्येन तदाप्तिरेव ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें पापग्रह बैठे हों और तीसरे सब पापग्रह देखते हों तो उसके भ्राताओंका अभाव होता है और भावमें शुभग्रहकी राशि हो और शुभग्रह देखते हों तो वह होता है ॥ २ ॥

भ्रातृनाशकयोगः। क्षेपकः॥

अग्रे जातं रविर्हन्ति पृष्ठे जातं शनैश्चरः।
अग्रजं पृष्ठजं हंति सहजस्थो धरासुतः॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके तीसरे भावमें सूर्य बैठा हो तो बड़े भ्राताओंका नाश और शनैश्चर तीसरे हो तो कनिष्ठ भ्राताका नाश करता है और मंगल तीसरे हो तो अगाड़ी पिछाड़ी दोनों तरफके भ्राताओंका नाश करता है ॥ ३ ॥

नवांशका ये सहजालयस्थाः कलानिधिः क्षोणिसुतेन दृष्टः।
तावन्मिताः स्युः सहजाभगिन्यस्त्वन्येक्षिता वै परिकल्पनीयाः॥

जिस मनुष्यके जन्मसमय तृतीय भावमें जितनी संख्याका नवांश उदय हो और चंद्रमा मंगल देखते हों उतनी संख्याके बहिन भाई कहना चाहिये और जो ग्रह देखते हों सो भी कल्पना करनी चाहिये ॥ ४ ॥

भ्रातृनाशयोगः ५

भ्रातृसौख्ययोगः ५

कुजेन दृष्टे रविजेऽनुजस्थे नश्यंति जाताः सहजाश्च तस्य। दृष्टे च तस्मिन्गुरुभार्गवाभ्यां शश्वच्छुभं स्यादनुजेषु नूनम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें शनैश्चर बैठा हो और मंगलसे दृष्ट हो भ्राताओंका नाश होता है और जो शुक्र बृहस्पति देखते हों तो भ्राताओंका सुख निरन्तर होता है ॥ ५ ॥

भ्रातृनाशयोगः ६

भ्रातॄणां रोगकारकयोगः ६
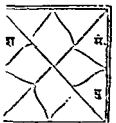
सौम्येन भूमितनयेन दृष्टः करोति नाशं रविजोऽनुजानाम्। शशांकवर्गे सहजे कुजेन दृष्टे सरोगाः सहजा भवेयुः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें बैठा हो और बुध मंगलसे दृष्ट हो तो भ्राताओंका नाश करता है और चन्द्रमाकी राशिमें शनैश्चर तीसरे बैठा हो और मंगलसे दृष्ट हो तो भ्राताओंको रोगी करता है ॥ ६ ॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे संदेह एवानुजजीवितस्य।
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्च भ्राता भवेद्भूपतिना समानः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य स्वक्षेत्री होकर नवमभावमें बैठा हो तो भाइयोंके जीनेमें संदेह है और जो एक भाई कदाचित् दीर्घ आयुको प्राप्त भी हो तो वह भ्राता राजाके समान होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रमा यदि पापानां त्रितयेन प्रदृश्यते।
भ्रातृनाशो भवेत्तस्य यदि नो वीक्षितः शुभैः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा तीन पापग्रहोंसे देखा गया हो और शुभग्रहोंसे दृष्ट न हो तो उसके भ्राताओंका नाश होता है ॥ ८ ॥

अथ सुहृद्भावविचारस्तत्रादौ चतुर्थभावात् किं किं विचारणीयम्।

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोद्यमालोकनकं चतुर्थे।

दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रसूतिर्नियमेन तपाप्‌ ॥ १ ॥

अथ चतुर्थभावसे क्या विचार करना चाहिये वह कहते हैं—मित्र और ग चौपाये और खेतीका उद्यम इनका चतुर्थ भावमें विचार करना, चतुर्थ शुभग्रह देखते हों अथ वा शुभग्रहोंका योग हो तो पूर्वोक्त पदार्थोंकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

परिवारक्षयकारकयोगः २ अथ परिवारक्षयकारकयोगः ॥
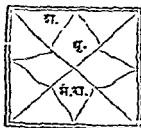
लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिश्च संस्थितः सप्तमे भवने पापाः परिवारक्षयंकराः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें बृहस्पति, धनमें शनैश्चर बैठा हो और सातवेंमें पापग्रह बैठे हों तो परिवारका नाश करते हैं ॥ २ ॥

परिवारनाशयोगः ३ माननाशयोगः ३

पापैस्त्रिभिश्चंद्रमसि प्रदृष्टे स्यान्माननाशः शुभदृष्टिहीने । व्ययास्तलग्नेष्वशुभाः स्थिताश्चेत्कुर्वंति ते वै परिवारनाशम्‌ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन पापग्रहोंसे चन्द्रमा दृष्ट हो और शुभग्रह न देखते हों तो मानका नाश होता है । एको योगः । जो बारहें सातवें लग्नके पापग्रह बैठे हों तो परिवारका नाश करते हैं ॥ ३ ॥

अथ मातृहा योगः ।

मातृहा योगः ४

शनिर्धने सज्जनने यदि स्याल्लग्ने विलग्ने सुरराजमन्त्री । सिंहीसुतः सप्तमभावयातो जातस्य जन्तोर्जननी न जीवेत्‌ ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर दूसरे और लग्नमें बृहस्पति, सातवें राहु बैठा हो वो उस मनुष्यकी माता जीवित नहीं रहती है ॥ ४ ॥

अथ सुतभावविचारः । अथ सुतभावे किं किं चिंतनीयम् ।

बुद्धिप्रबंधात्मजमंत्रविद्यां विनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थाः ।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिंतनीयाः ॥ १ ॥

अब पंचमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये यह कहते हैं-बुद्धिका प्रबंध, मंत्र, विद्या, नम्रता, गर्भस्थिति और नीति ये सब बातें मनुष्योंके जन्मकालमें पंचमभावसे ज्योतिषी लोग विचार करें ॥ १ ॥

द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथः प्रथमः सुतः स्यात् ।
स्थितेऽस्मिंश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नेश लग्न, द्वितीय वा तृतीयस्थानमें बैठा हो तो पहिले पुत्र पैदा होता है और जो लग्नेश चतुर्थ बैठा हो तो पहिले कन्या, पीछे पुत्र पैदा होता है, इसी तरहसे पुत्र कन्या, कन्या, पुत्रोंका विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

सुताभिधानं भवनं शुभानां योगेन दृष्ट्या सहितं विलोक्य ।
संतानयोगं प्रवदेन्मनीषी विपर्ययत्वे हि विपर्ययः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुभग्रहोंकी राशि हो और उसमें शुभग्रह हों और शुभग्रह देखते हों तो संतानवान् करता है। जो पंचमभाव पापग्रहोंसे युक्त और दृष्ट हो तो संतानहीन होता है ॥ ३ ॥

सन्तानभावो निजनाथदृष्टः संतानलब्धिं शुभदृष्टियुक्तः ।
करोति पुंसामशुभैः प्रदृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभाव पंचमेशसे दृष्ट हो और शुभग्रहसे दृष्ट हो संतानकी प्राप्ति होती है और पंचमभाव पापग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा युक्त हो और अपने स्वामीसे भी दृष्ट हो तो संतानहीन होता है ॥ ४ ॥

लग्ने वित्ते तृतीये वा लग्नेशोऽपत्यमग्रिमम् ।
तुर्ये जन्म द्वितीयस्य पुरः पुत्र्यादिजन्म च ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, द्वितीय अथवा तृतीय भावमें लग्नेश बैठा हो तो पहले पुत्र पीछे कन्या पैदा होती है और लग्नेश चतुर्थमें हो तो पहिले कन्या पीछे पुत्र होता है। १। ३। २। ५। ९। ११ भावस्थित लग्नेश हो तो पहिले पुत्र पीछे कन्या और चतुर्थ ६। ८। १०। १२ इन भावोंमें हो तो पहिले कन्या पीछे पुत्र पैदा होता है ॥ ५ ॥

बाल्ये सन्तानयोगः ६

द्विदेहसंस्थाभृगुभौमचन्द्राः सन्तानमादौ जनयंति नृनम् । एते पुनर्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथादौ गदितं महद्भिः ॥ ६ ॥

सन्तानहीनयोगः ६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र, मंगल, चन्द्रमा मिथुन, कन्या, मीन राशि में बैठे हों तो पहिले पुत्रसंतानको पैदा करें और पूर्वोक्त ग्रह धनमें बैठे हों तो आदि अन्तमें संतान नहीं होती हैं ॥ ६ ॥

संतानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति । स्यात्तत्संततिस्तत्प्रमिता नृसंज्ञैर्नराश्च कन्याः प्रमदाभिधानैः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें जितने ग्रहोंकी दृष्टि हो उतनी संख्याकी सन्तान होती है, पुरुष ग्रह देखते हों तो उतने पुत्र होते हैं और स्त्रीसंज्ञक ग्रह देखते हों तो उतनी ही कन्या उत्पन्न होती हैं ॥ ७ ॥

संतानभावांकसमानसंख्या स्यात्संततिर्वेति वदंति केचित् नीचोच्चमित्रादिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वा शुभमर्भकानाम् ॥

पंचमभावमें जितनी संख्याकी राशि हो उतने प्रमाणकी संतान होती है, किसी किसीका मत है और जो नीच उच्च मित्रक्षेत्रीय स्वक्षेत्रीय गृहमें बैठे अथवा उनको शुभग्रह देखते हों तो शुभ सन्तति होती है ॥ ८ ॥

नवांशतुल्यप्रभवात्र संख्या दृष्ट्या शुभानां द्विगुणावगम्या । क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगा मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोऽत्र ॥९॥

पंचमभावमें जितनी संख्याका नवांश हो उतनी संख्याकी सन्तानें होती हैं और उस नवांशको पापग्रह देखते हों तो सन्तानको द्विगुणा कहना चाहिये और नवांशको पापग्रह देखते हों वा युक्त हों तो दुःखसे सन्तान होती है और जो दोनों प्रकारके ग्रह बैठे हों तो मिश्रित फल मिलता है ॥ ९ ॥

सुताभिधाने भवने यदि स्यात्खलस्य राशिः खलखेटयुक्तः । सौम्यग्रहालोकनवर्जितश्च संतानहीनो मनुजस्तदानीम् ॥१०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें पापग्रहोंकी राशि हो और पापग्रहयुक्त हो और शुभग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य संतानहीन होता है ॥ १० ॥

(संतानहीनयोगः ११)

कविः कलत्रे दशमे मृगांकः पातालयाताश्च खला भवंति । प्रसूतिकाले यदि मानवं ते संतानहीनं जनयंति नूनम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र सातवें और दशवें चंद्रमा और चतुर्थ भावमें पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य संतानहीन होता है ॥ ११ ॥

सुते सितांशे च सितेन दृष्टे वहून्यपत्यानि विधोरपीदम् । दासीभवान्यात्मजभावनाथे यावन्मितेंशे शिशुसंमतिःस्यात् १२

जिस मनुष्यके जन्मकालके पंचमभावमें शुक्रका नवांश हो और शुक्र देखता हो तो बहुत संतान होती हैं और चंद्रमाका नवांश हो तो भी विशेष संतानवाला होता है और पंचम भावका स्वामी जितनी संख्याके नवांशमें हो उतनी संख्याके दासीजातपुत्र कहना चाहिये ॥ १२ ॥

शुक्रेन्दुवर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम् । भवंति कन्याः समराशिवर्गे पुत्राश्च तस्मिन्विषमाभिधाने॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुक्र वा चंद्रमाका वर्ग हो और शुक्र वा चंद्रमासे युक्त वा दृष्ट हो तो समराशिके वर्ग होनेसे कन्यासंतान होती है और विषमसंज्ञक राशि हो तो पुत्रसंतान होती है ॥ १३ ॥

क्रीतपुत्रलाभयोगः १४

मंदस्य राशिः सुतभावसंस्थो मंदेन युक्तः शशिनेक्षितश्च। दत्तप्रजातिः शशिवद्बुधेऽपि क्रीतःसुतस्तस्य नरस्य वाच्यः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर वा कुंभ राशि पंचम हो और शनैश्चरसे युक्त हो एवं उसको चंद्रमा देखता हो तो उस मनुष्यको दत्तकपुत्रकी प्राप्ति होती है और चंद्रमाके समान बुधयोग हो तो उसको मोल लिया पुत्र प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

मृतप्रजायोगः १५

संतानाधिपतेः पञ्चषष्ठरिःफस्थिते खले। पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जातो न जीवति ॥ १५ ॥

मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभवनका स्वामी जहां बैठा हो वहांसे पंचम छठे अथवा बारहें पापग्रह बैठे हों तो उस मनुष्यके पुत्रका अभाव होता है, कदाचित् पैदा भी हो तो जीवे नहीं ॥ १५ ॥

अथ पुनर्भूपुत्रलाभयोगः ।

पुनर्भूपुत्रलाभयोगः १६

मंदस्य वर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरस्थेऽपि च वीक्षितेऽस्मिन् । दिवाकरेणोशनसा नरस्य पुनर्भवासंभवसूनुलब्धिः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चरका वर्ग हो, उसमें चंद्रमा बैठा हो और उसको सूर्य और शुक्र देखते हों तो उस मनुष्यको द्वितीय औरतसे पुत्रलाभ होता है ॥ १६ ॥

अथ क्षेत्रजपुत्रलाभयोगः ।

शनेर्गणः सद्मनि पुत्रभावे बुधेक्षिते यो रविभूमिजाभ्याम् । पुत्रो भवेत्क्षेत्रभवोऽथ बौधे गणेऽपि गेहे रविजेन दृष्टः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चरका षड्वर्ग हो और बुध देखता हो और सूर्य, मंगल देखते हों तो उस मनुष्यके स्त्रीमें अन्य पुरुषके पुत्र पैदा होता है और जो पंचमभावमें बुधका षड्वर्ग हो उसको शनैश्चर देखता हो तो भी पूर्वोक्त फल कहना चाहिये ॥ १७ ॥

नवांशका पञ्चमभावसंस्था यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः । नश्यन्ति गर्भास्तु तत्प्रमाणाश्चेद्वीक्षिता नो शुभखेचराणाम् ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो नवांश पंचमभावमें हो और उसको जितने पापग्रह देखते हों उस मनुष्यके उतने ही गर्भ नाशको प्राप्त होते हैं परन्तु जो शुभग्रह न देखते हों तो ॥ १८ ॥

सूनुन्दनो नन्दनभावयातो जातं च जातं तनयं निहंति । दृष्टो यदा चित्रशिखण्डिजेन भृगोः सुतेन प्रथमोपपन्नम् ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल पांचवें बैठा हो उसके जितने पुत्र पैदा होते हैं वे सब नाशको प्राप्त होते हैं और जो केतु देखता हो अथवा शुक्र देखता हो तो पहिले पैदा हुआ ही पुत्र नष्ट होता है ॥ १९ ॥

अथ रिपुभावविचारः ।

वैरिव्रातः क्रूरकर्मामयानां चिंता शंका मातुलानां विचारः ।
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिंत्यम् ॥ १ ॥

छठे भावसे क्या क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं:-दुश्मन, क्रूर कर्म, रोग, चिंता और शंका एवं मामाका विचार करना चाहिये ऐसा ज्योतिषशास्त्रके पार जानेवाले पंडित विचार करें ॥ १ ॥

दृष्टिर्युतिर्वा खलखेचराणामरातिभावेऽरिविनाशनं स्यात् ।
शुभग्रहाणां प्रतिदृष्टितोऽत्र शत्रूद्गमोऽप्यामयसंभवः स्यात्॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठा भाव पापग्रहों करके दृष्ट वा युक्त हो तो शत्रुओंका तथा रोगोंका नाश होता है और जो छठा भाव शुभग्रहों करके युक्त वा दृष्ट हो तो शत्रुओंकी उत्पत्ति और रोगोंकी प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

अथ जायाभावविचारः ।

रणाङ्गणे चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारागमनप्रमाणम् ।
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत्॥ १ ॥

अब सप्तमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये उसे कहते हैं-संग्राम, स्त्री, व्यापार, यात्राका प्रमाण इन सब बातोंको सातवें भावसे ज्योतिषी लोग विचार करें ॥ १ ॥

स्त्रीलाभयोगः ।

मूर्तौ कलत्रस्य नवांशको वा द्विषड्भावस्त्रिलवः शुभानाम् ।
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानामचिरादवाप्तिः॥ २॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न और सप्तमभावमें शुभग्रहोंका नवांश वा द्वादशांश वा द्रेष्काणका उदय हो उस मनुष्यको शीघ्र ही स्त्रीका लाभ होता है ॥ २ ॥

स्त्रीपुत्रहीनयोगः ६

व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ। कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें, सातवें स्थानमें पापग्रह बैठे हों और पंचमभावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्त्रीपुत्र करके हीन होता है ॥ ६ ॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे।
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्तापि तस्या व्यभिचारकर्ता॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभावमें शनैश्चर वा मंगलका षड्वर्ग हो और शनैश्चर मंगल करके दृष्ट हों तो उसकी स्त्री व्यभिचारिणी होती है और उसका पति भी व्यभिचारी होता है ॥ ७ ॥

कलत्रहीनयोगः ८ स्त्रीलाभयोगः ८

शुक्रेंदुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुतो नरं तौ। शुभेक्षितौ तौ वयसो विरामे कामं च रामां लभते मनुष्यः॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र और बुध सातवें बैठे हों उसका विवाह नहीं होता है और पूर्वोक्त योग हो एवं शुभग्रह देखते हों तो उसको अन्त्य (वृद्ध) अवस्थामें स्त्रीका लाभ होता है ॥ ८ ॥

स्त्रीभावयोगः ९

शुक्रेंदुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च द्वाभ्यां कलत्रभवने च तथैककेन। एषां गृहे विषमभैरवलोकिते वा संति स्त्रियो भवनवर्गखगस्य भावाः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र, चन्द्र, बृहस्पति और बुध चारों वा तीन, दो वा एक ग्रह सातवें बैठे हों और इन्हीं ग्रहोंकी राशि विषम सातवें इसी हो और यही ग्रह सप्तमभावको देखते हों तो उतनी स्त्री कहनी चाहिये ॥ ९ ॥

स्त्रीप्राप्तियोगः ३

सौम्यैर्युक्तं सौम्यमसौम्यदृष्टं जायागेहं देहिनामङ्गनातिम् ॥ कुर्य्यान्नूनं वैपरीत्यादभावो मिश्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः ॥ ३ ॥

स्त्रीहानियोगः ३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभाव शुभग्रहों करके युक्त हो और शुभग्रह पापग्रहों करके दृष्ट हो, उस मनुष्यको स्त्रीप्राप्ति होती है और जो सप्तमभाव पापग्रहों करके युक्त हो और मिश्र ग्रहों करके दृष्ट हो तो स्त्रीकी प्राप्ति होनेके समय स्त्री नहीं नाश होती है ॥ ३ ॥

एकस्त्र्येकपुत्रयोगः ४

लग्नाद्व्यये वा रिपुमंदिरे वा दिवाकरेंदू भवतस्तदानीम् ॥ स्यान्मानवस्यात्मज एक एव भार्यापि चैकेति वदंति संतः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे बारह वा छठे भावमें सूर्य चंद्रमा बैठे हों तो उस मनुष्यको एक ही स्त्री, एवं एक ही पुत्र प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

वंध्यापतियोगः ५

गंडांतकालेऽपि कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेऽर्कजाते । वंध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षिते नो भवने खलेन ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभावमें गंडांत लग्न हो और शुक्र भावमें बैठा हो और लग्नमें शनैश्चर बैठा हो तथा सप्तमभाव शुभग्रहों करके दृष्ट न हो और सप्तमभावमें पापग्रहोंकी राशि हो तो वह मनुष्य वंध्या स्त्रीका पति होता है ॥ ५ ॥

कलत्रभावे च नवांशतुल्या नरस्य नार्यो ग्रहवीक्षणाद्वा।
एकैकभौमार्कनवांशके च जामित्रभावस्थबुधार्कयोर्वा ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें जितनी संख्याके नवांशका उदय और जितने ग्रह देखते हों उस पुरुषके उतने ही विवाह कहना और मंगल सूर्यका नवांश सातवें हो और सूर्य बुध बैठे हों तो एक ही विवाह कहना चाहिये ॥ १० ॥

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्वङ्गनाभिर्भृगुवीक्षणेन।
शुक्रेक्षिते सौम्यगणेऽङ्गनानां बाहुल्यमेवाशुभवीक्षणान्न ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तम भावमें शुक्र ग्रहका वर्ग हो और शुक्र देखता हो वह बहुत स्त्रियोंवाला होता है और शुभ ग्रहका वर्ग सातवें हो और शुक्र देखता हो तो भी बहुत स्त्रियोंवाला होता है और जो पापग्रह देखते हों तो विवाह नहीं होता है ॥ ११ ॥

महीसुते सप्तमभावयाते कान्तावियुक्तः पुरुषस्तदा स्यात्।
मन्देन दृष्टे म्रियतेऽपि लब्धाशुभग्रहालोकनवर्जितेऽस्मिन् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठा हो वह मनुष्य स्त्रीहीन होता है और सातवें भावको शनैश्चर देखता हो और एक भी शुभग्रह नहीं देखता हो तो स्त्री उत्पन्न होनेके बाद मर जाती है ॥ १२ ॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः।
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूतापि म्रियते चिरात् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तम भावमें राहु बैठा हो और दो पापग्रह देखते हों तो स्त्री नहीं प्राप्त होती और जो प्राप्त भी हो तो बहुत दिनोंतक नहीं जीती है ॥ १३ ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमो राहुसंभवः।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें मंगल और सातवें राहु और आठवें शनैश्चर बैठे हों उसकी भार्या नहीं जीती है ॥ १४ ॥

मेषयोगः ७

पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च। वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्वंति ते सौम्यदृशं विशेषात् ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमा युक्त सूर्य मंगल नवममें बलसहित बैठे हों वह मनुष्य अपने वंशके समान राजाका मंत्री या राजा होता है जो नवमभावको शुभग्रह देखते हों ॥ ७ ॥

लक्ष्मीयोगः ८

स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे न भोगी नरस्य योगः कुरुते सुलक्ष्म्याः। सौम्येक्षितोऽसौ यदि सौम्यपालं दंतावलोत्कृष्टविलासशीलः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उच्चराशिगत कोई ग्रह नवमभावमें बैठा हो तो उस मनुष्यको लक्ष्मी योग करता है और नवमभावको शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्य हाथियोंके विलासको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ दशमभावविचारः।

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव।
महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥ १ ॥

अब दशमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं—व्यापार, रुपया, राजमान और राजकीय प्रयोजन और पिता और बड़े पदकी प्राप्ति ये सब निश्चय करके दशमभावसे विचारने चाहिये ॥ १ ॥

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्ना-
दिह हि दशमभावे सर्वकर्मप्रकामम्।
गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्य भावैः
सकलमपि विचिंत्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ २ ॥

प्राचीन ऋषियोंने कहा है—दशमभावसे यत्नपूर्वक सम्पूर्ण कर्मोंका साधन करें। दृष्टि राशिग्रहके भाव करके सम्पूर्ण बलाबलसे पंडितजन विचार करें ॥ २ ॥

तनोः सकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम्।
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः सात्त्वकर्मभिश्च ॥ ३ ॥

६

चेदन्यैर्विषयान्तरेऽत्र शुभदा स्वोच्चाधिपाः सर्वदा
कुर्युर्भाग्यमलाघवेति विबला दुःखोपलब्धिं पराम् ॥ ३ ॥

जन्मलग्नसे वा चन्द्रमासे जो नवमस्थान है वह भाग्यभाव कहाता है। जो नव भाव अपने स्वामी करके युक्त वा दृष्ट हो तो उसका अपने देशमें भाग्योदय होता है और जो नवमभावको शुभग्रह देखते हों और अपना स्वामी न देखता हो तो उसका भाग्य परदेशमें उदय होता है और जो भाग्येश अपने उच्चमें हो तो उसका हमेशा भाग्योदय होता है और जो भाग्यका स्वामी निर्बल हो और भाग्यभावको पापी ग्रह देखते हों तो दुःखसे भाग्यकी प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

भाग्येश्वरो भाग्यमतोऽस्ति किं वा सुस्थानगः सारविराजमानः।
भाग्याश्रितः कोऽस्ति विचार्य सर्वमत्यल्पमल्पं परिकल्पनीयम् ॥

जो नवमभावका स्वामी नवममें बैठा हो अथवा केंद्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ५।९ में बैठा हो तो वह भाग्यवान् होता है, नवमेशके बलाबलसे अधिक समन्यून भाग्य कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ भाग्ययोगः ।

भाग्ययोगः ५

तनुत्रिसूनूपगतो ग्रहश्चयो वाधिवीर्यो नवमं प्रपश्येत् । यस्य प्रसूतौ स तु भाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, पंचम, तीसरे ग्रह बैठे हों और अधिक बल करके नवम भावको देखते हों तो वह मनुष्य भाग्यवान्, विलासमें शीलवाला एवं बहुतधनसे सम्पन्न होता है ॥ ५ ॥

भाग्ययोग ६

चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ । भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो भाग्यभावमें अपने घरका ग्रह बैठा हो और शुभग्रह करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् अपने कुलमें श्रेष्ठ होता है, जैसे हंस मानसरोवरमें शोभा पाता है ६

मंत्रयोगः ७

पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च। वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्वंति ते सौम्यदृशं विशेषात् ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमा युक्त सूर्य मंगल नवममें बलसहित बैठे हों वह मनुष्य अपने वंशके समान राजाका मंत्री या राजा होता है जो नवमभावको शुभग्रह देखते हों ॥ ७ ॥

लक्ष्मीयोगः ८

स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे न भोगी नरस्य योगः कुरुते सुलक्ष्म्याः। सौम्येक्षितोऽसौ यदि सौम्यपालं दंतावलोत्कृष्टविलासशीलः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उच्चराशिगत कोई ग्रह नवमभावमें बैठा हो तो उस मनुष्यका लक्ष्मी योग करता है और नवमभावको शुभग्रह देखते हों तो वह मनुष्य हाथियोंके विलासको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ दशमभावविचारः।

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव।
महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥१॥

अब दशमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं—व्यापार, रुपया, राजमान और राजकीय प्रयोजन और पिता और बड़े पदवी प्राप्ति ये सब निश्चय करके दशमभावसे विचारने चाहिये ॥ १॥

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्ना-
दिह हि दशमभावे सर्वकर्मप्रकामम्।
गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्य भावैः
सकलमपि विचिन्त्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ २ ॥

प्राचीन ऋषियोंने कहा है—दशमभावसे यत्नपूर्वक सम्पूर्ण कर्मोंका साधन ग्रहोंकी दृष्टि राशिग्रहके भाव करके सम्पूर्ण बलाबलसे पंडितजन विचार करें ॥ २ ॥

तनोः सकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम्।
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः सात्त्विककर्मभिश्च ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे चंद्रमा दशमभावमें बैठा हो तो उस ३
वृत्ति अनेक कलाओंकी कुशलता करके और वाग्विलास और सर्वोत्तम
कर्म करके धन पैदा करनेकी होती है ॥ ३ ॥

तनोः शशांकाद्दशमे बलीयान्स्याज्जीवनं तस्य खगस्य ४॥
बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥४

और जन्मलग्नसे वा चंद्रमासे जो दशममें ग्रह बलवान् बैठा हो तो उस मनु
वृत्ति और आजीविका उसी ग्रहके समान कहना अथवा षड्वर्गपति जो ब
हो तो उसी ग्रहकी वृत्तिको उसकी दशामें कहना चाहिये ॥ ४ ॥

दिवामणिः कर्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगाव
सत्त्वाधिकत्वं नरनायकत्वं पुष्टत्वमङ्गे मनसः प्रसादः ॥ ५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा वा लग्नसे दशममें सूर्य बैठा हो तो
मनुष्य अनेक उद्यम करके अनेक योगोंसे अनेक धनोंको प्राप्त करता है
जो सूर्य बलवान् हो तो वह राजा पुष्टशरीर और प्रसन्नमन होता है ॥ ५ ॥

लग्नेंदुतः कर्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसः क्रौर्यनिषादवृत्ति
नूनं नराणां विषयाभिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ॥ ६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चंद्रमासे दशमभावमें मंगल बैठा
वह मनुष्य साहस करके क्रोधसे निषादवृत्ति करके धनलाभ करता है और
मनुष्य विषयोंमें आसक्त, परदेशमें वास करनेवाला साहसी होता है ॥ ६ ॥

लग्नेंदुभ्यां कर्मगो रोहिणेयः कुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम्
शिल्पेऽभ्यासःसाहसं मत्रिकार्यं विद्वद्वृत्त्या जीवितं मानवानाम्

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशमभावमें बुध बैठा हो
मनुष्य अनेक धन और अनेक पुरुषोंका स्वामी, शिल्पविद्यामें अभ्यास करनेवा
साहसी, मंत्र कर्मोंसे विद्वानोंकी वृत्ति करके आजीविका करनेवाला होता है ॥ ७

विलग्नतःशीतमयूखतो वा माने मघोनः सचिवो यदा स्यात्
नानाधनाप्त्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशमभावमें बृहस्पति बैठा
वह मनुष्य अनेक प्रकारसे धनका लाभ करनेवाला, विचित्र वृत्ति करके राजों
करके मान्य होता है ॥ ८ ॥

होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो
नानाशास्त्रकलाकलापविलसद्वृत्त्यादिशेज्जीवनम्।
दाने साधुमतिं तथा विनयतां कामं धनाभ्यागमं
मानं मानवनायकादविरलं शीलं विशालं यदा ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमासे दशममें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य अनेक शास्त्रकी कलाओंके समूहकी विलासवृत्तिसे आजीविका करनेवाला, दान करनेमें साधुबुद्धि, उत्तम शील, काम करके धनको प्राप्त, राजासे प्रतिष्ठा पानेवाला, श्रेष्ठ और विशाल शीलयुक्त होता है ॥ ९ ॥

होरायाश्च सुधाकराद्रविसुतः सूतौ खमध्यस्थितो
वृत्तिं हीनतरां नरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा।
खेदं वादभयं च धान्यधनयोर्हीनत्वमुच्चैर्मन-
श्चित्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्मलम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चन्द्रमासे शनैश्चर दशम बैठा हो वह मनु-ष्य हीनवृत्ति करनेवाला, दुर्बल रहे, खेदयुक्त, विवाद करनेवाला, धन धान्य करके हीन, चित्तमें अत्यन्त उद्वेग पैदा होनेसे चपल और शील निर्मल नहीं होता है॥१०॥

सूर्यादिभिर्व्योमचरैर्विलग्नादिंदोः स्वपाके क्रमशो विकल्प्याः।
अर्थोपलब्धिर्जनकाज्जनन्याः शत्रोर्हिताद्भ्रातृकलत्रभृत्यात् [illegible]

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमासे सूर्य दशममें [illegible] पितासे धनलाभ कहना और चन्द्रमा दशममें हो तो मातासे [illegible] चाहिये और मंगल दशममें बैठा हो तो शत्रुसे धनलाभ कहना, [illegible] हो तो मित्रसे धनलाभ कहना और बृहस्पति हो तो भाईसे [illegible] दशममें हो तो स्त्रीसे धनलाभ कहना और शनैश्चर दशममें [illegible] कहना चाहिये ॥ ११ ॥

रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशे पतेस्तु वृत्त्या[illegible]। [illegible]
[illegible] ॥१२॥
[illegible] व।

दशमभावमें जो नवांशका उदय हो उस नवां[illegible] ॥
जो दशमस्थित नवांशपति सूर्य हो तो [illegible] और
[illegible]
करके वृत्ति कहना ॥ १२ ॥

नक्षत्रनाथोऽत्र कलत्रतश्च जलाशयोत्पन्नकृषिक्रियादेः ।
कुजोऽग्निसत्साहसधातुवस्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः ॥१३॥

जो दशमनवांशपति चन्द्रमा हो तो स्त्रीकरके, जलाशय करके उत्पन्न खेती करके आजीविका कहनी चाहिये और जो मंगल नवांशपति हो तो साहस और धातु शस्त्र करके आजीविका कहनी और बुध नवांशपति हो तो काव्यकी कलाओंके समूह करके आजीविका करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

जीवो द्विजान्मोचितदेवधर्मैः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ।
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥ १४ ॥
कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशोपरि वर्तते ।
तत्तुल्यकर्मणो वृत्तिं निर्दिशति मनीषिणः ॥ १५ ॥

और जो दशमनवांशपति बृहस्पति हो तो ब्राह्मणों करके श्रेष्ठ धर्म और देवाराधन करके वृत्ति कहना और शुक्र नवांशपति हो तो महिषी, चांदी तथा रत्न करके आजीविका करनेवाला होता है और शनैश्चर हो तो नीचकर्मोंसे धनकी आजीविका करता है ॥ १४ ॥ दशमभावका स्वामी जिस नवांशमें बैठा हो उसीके समान कर्मोंकरके अपनी आजीविका करनेवाला होता है यह बुद्धिमानोंने कहा है॥१५॥

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोऽर्थः परिकल्पनीयः ।
तुंगे पतंगे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात्॥१६॥
लग्नार्थलाभोपगतैः सवीर्यैः शुभैर्भवेद्धनसौख्यमुच्चैः ।
इतीरितं पूर्वमुनिप्रवर्यैर्बलानुमानात्परिचिंतनीयम् ॥ १७ ॥

जो मित्र शत्रुके घरमें ग्रह बैठे हों तो उन्हींसे धनलाभ कहना और उच्चमें वा स्वक्षेत्र मूलत्रिकोणमें सूर्य हो तो अपने बाहुबलसे धन पैदा करता है॥१६॥जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, धन लाभस्थानोंमें शुभग्रह बलसहित बैठे हों वह मनुष्यके घरती सौख्यसहित होता है यह पूर्वाचार्योंने कहा है, ग्रहोंके बलसे विचार कर फल कहना१७

अथ लाभभावविचारः ।

गजाश्वहेमांबररत्नजातमान्दोलिकामंगलमण्डनानि ।
लाभः किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे गृहज्ञैः ॥१॥

अब ग्यारहवें भावसे क्या क्या विचार करना चाहिये-हाथी, घोड़ा, सोना, वस्त्र, रत्न, पालकी, मंगल, मकान और लाभ ये सब बातें निश्चय कर ग्यारह घरमें ज्योतिषी विचारे ॥ १ ॥

सूर्येण युक्ते च विलोकिते वा लाभालये तस्य गणोऽत्र चेत्स्यात्।
भूपालतश्चौरकुलात्कलेवों चतुष्पदादेर्बहुधा धनाप्तिः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य करके युक्त वा दृष्ट ग्यारहवाँ भाव हो अथवा ग्यारहवें भावके षड् वर्गमें हो तो राजा वा चोर फलहसे चौपायों करके बहुत प्रकार करके धनकी प्राप्ति कहना चाहिये ॥ २ ॥

चंद्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालयं चन्द्रगणाश्रितं चेत्।
जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमम् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवाँ भाव चंद्रमा करके युक्त वा दृष्ट हो और चन्द्रमाका षड्वर्ग हो तो वह मनुष्य जलाशय, स्त्री, गज (हाथी), घोडोंकी वृद्धि करता है, जो पूर्णचन्द्रमा हो तो और क्षीणचंद्रमासे पूर्वोक्त पदार्थोंका नाश कहना ॥ ३ ॥

लाभालयं मङ्गलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूपामणिहेमलब्धिः।
विचित्रयात्रा बहुसाहसं स्यान्नानाकलाकौशलबुद्धियोगः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवाँ भाव मङ्गल करके युक्त वा दृष्ट हो और मंगलका षड्वर्ग हो तो आभूषण, सोनाकी प्राप्ति और विचित्र यात्रा, बहुत साहस और अनेक कलाओंमें कुशलता बुद्धि करके होती है ॥ ४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते सति युते सौम्येन संवीक्षिते
नानाकाव्यकलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्या सुखम्।
युक्तिर्द्रव्यमयी भवेद्धनचयः सत्साहसैरुद्यमैः
सख्यं चापि वणिग्जनैर्बहुतरं क्लीबैर्नृणां कीर्तितम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें बुध बैठा हो वा युक्त हो और बुधका षड्वर्ग हो तो वह मनुष्य अनेक काव्योंके समूहसे और शिल्प करके लिखनेसे बहुत सुख धन पाता है, मिले हुए पदार्थों करके धनका संग्रह करनेवाला, श्रेष्ठ साहस और उद्यम करके बनियोंसे मित्रता करके अथवा नपुंसकोंसे धनके लाभवाला कहना चाहिये ॥ ५ ॥

यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टरूपो नरः स्यात्।
द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरोर्वर्गयुगीक्षणे चेत् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति ग्यारहवें भावमें बैठा हो वा युक्त हो और बृहस्पतिका षड्वर्ग हो तो वह मनुष्य यज्ञक्रियासे, सत्पुरुषोंके संगसे, राजाके

आश्रयसे बहुत धन पैदा करनेवाला, अत्यन्त कृपालु और द्रव्य सुवर्ण करके सहित होता है ॥ ६ ॥

लाभालये भार्गववर्गयाते युतेक्षितं वा यदि भार्गवेण।
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरस्वलब्धिः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें शुक्रका षड्वर्ग हो और शुक्र करके युक्त वा दृष्ट हो तो उसको रंडियों करके परदेश जाने व आनेसे श्रेष्ठ चांदी, मोती और बहुत धन प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

लाभवेश्मनि शनीक्षितयुक्ते तद्गणेन सहिते सति पुंसाम्।
नीललोहमहिषीगजलाभो ग्रामवृन्दपुरगौरवमिश्रः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें शनैश्चरका षड्वर्ग हो, शनैश्चर करके युक्त वा दृष्ट हो तो उस मनुष्यको नील, लोहा, महिषी, हाथी (घोड़ों) का लाभ और ग्रामोंके समूहसे बड़े गौरव और धनका लाभ कहना चाहिये ॥ ८ ॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे सुखाख्ये वर्गे शुभानां समवस्थितेऽपि।
लाभो नराणां बहुधाथवास्मिन्सर्वग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ॥ ९ ॥

जो लाभस्थान शुभ ग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट हो और शुभग्रहोंका षड्वर्ग हो और सब ग्रह लाभ भावमें बैठे हों अथवा देखते हों तो बहुत प्रकारसे धनलाभ होता है ॥ ९ ॥

अथ व्ययभावविचारः।

हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्बंध एव च।
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिंतनीयं प्रयत्नतः ॥ १ ॥

व्ययभावसे क्या क्या विचारना चाहिये—हानि और दान, खर्च, दंड, बंधन यह सब बारहें स्थानसे विचारना चाहिये ॥ १ ॥

द्रव्यहरणयोगः २

व्ययालये क्षीणकरः कलावान्सूर्योऽथवाद्वावपि तत्र संस्थौ। द्रव्यं हरिद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टियुक्ते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें घरमें क्षीण चंद्रमा अथवा सूर्य चंद्रमा दोनों बैठे हों और मंगल देखता हो तो उसका धन राजा हरण करता है ॥ २ ॥

धननाशयोगः ३

पूर्णेन्दुसौम्येज्यसिताः व्ययस्थाः कुर्वन्ति संस्थां धनसंचयस्य। प्रांत्यस्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात् ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें भावमें पूर्ण चंद्रमा और बुध, बृहस्पति, शुक्र, बारहें बैठे हों तो वह धनका [सं]ग्रह करनेवाला होता है और जो बारहें शनैश्चर बैठे हो और मंगल करके [दृ]ष्ट हो वा युक्त हो तो धनका नाश कहना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ भावफलोपयुक्तत्वेन रिष्टाध्यायो निरूप्यते।

पुत्रस्त्रीनाशयोगः १

लग्नेन्द्वोश्च कलत्रपुत्रभवने स्वस्वामिसौम्यैर्ग्रहैर्युक्ते वाथ विलोकिते खलु तदा तत्प्राप्तिरावश्यकी। लग्ने चेत्सविता स्थितो रविसुतो जायाश्रितो मृत्युकृज्जायायाश्च महीसुतः सुतगतः कुर्यात्सुतानां क्षतिम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चंद्रमासे सप्तम पंचमभाव अपने [स्व]ामी करके वा शुभग्रह करके युक्त वा दृष्ट हों तो पुत्र वा स्त्रीप्राप्ति अवश्य [क]हना चाहिये और जो लग्नमें सूर्य बैठा हो और शनैश्चर सातवें बैठा हो तो [स्त्र]ीकी मृत्यु कहना चाहिये और जो पंचमभावमें मंगल बैठा हो तो पुत्रोंका [न]ाश करता है ॥ १ ॥

स्त्रीनाशयोगः २

असौम्यमध्यस्थितभार्गवश्चेत्पातालरंध्रे खलखेटयुक्ते। सौम्यैरदृष्टे भृगुजे च पत्नीनाशो भवेत्पाशहुताशनाद्यैः ॥ २ ॥

जो पापग्रहोंके बीचमें शुक्र बैठा हो और चतुर्थ और अष्टम भावमें पापग्रह बैठे हों और शुभग्रहों करके शुक्र अदृष्ट हो तो उसकी स्त्री फांसी करके वा अग्नि आदि करके मरती है ॥ २ ॥

दंपतीकाणयोगः ३ स्त्रीहीनयोगः ३

दिवाकरेन्दू व्ययनैरियातौ जायापती चेकविलोचनौ स्तः ॥ कलत्रयमात्मजगौ सितार्कौ पुमान्भवेत्क्षीणकलत्र एव ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा बारह या छठे बैठे हों वह स्त्री पुरुष दोनों काण होते हैं और जो सप्तम, नवम, पंचम भावोंमें शुक्र सूर्य बैठे हों तो मनुष्य स्त्रीहीन होता है ॥ ३ ॥

भसंधियाते च सिते स्मरस्थे तनौ प्रयत्नेन तु भानुसूनौ । वंध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं सुतालयं नो शुभदृष्टयुक्तम् ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र राशिकी संधिमें बैठा हो और लग्नमें शनैश्चर बैठा हो और पंचमभावमें कोई शुभग्रह नहीं बैठा हो, न देखता हो तो वह मनुष्य वांझस्त्रीका पति होता है ॥ ४ ॥

स्त्रीपुत्रहीनयोगः ५

क्रूराश्च होरास्मरारिःफयाताः सुतालये हीनबलः कलावान् । एवं प्रसूतौ किल यस्य योगो भवेत्स भार्यातनयैर्विहीनः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्न, सप्तम, व्ययभावमें बैठे हों और पंचममें हीनबली चंद्रमा बैठा हो ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य स्त्री पुत्र करके हीन होता है ॥ ५ ॥

पुत्रजायाहीनयोगः ६ स्त्रीसौख्ययोगः ६

द्यूनेऽर्कजारौ सभृगू शशांकादपुत्रभार्यं कुरुतो नरं तौ । स्यातां नृनार्योश्च खगौ स्मरस्थौ सौम्ये क्षितौ तौ शुभदौ नृनार्योः६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे सातवें स्थानमें सूर्य, मंगल, शुक्र बैठे हों वह मनुष्य स्त्री पुत्र घरके हीन होता है, जो सप्तम भावमें पुरुषग्रह बैठे हों और शुभग्रह देखते हों तो पुरुषको स्त्रीका सौख्य रहना और जो स्त्रीके सातवें स्त्रीग्रह बैठे हों और शुभग्रह देखते हों तो स्त्रीको पुरुषका सुख होता है ॥ ६ ॥

अथ व्यभिचारियोगः।

परस्त्रीरतयोगः ७

सितेऽस्तयाते शनिभौमवर्गे भौमार्कदृष्टे परदारगामी। मंदारचन्द्रा यदि संयुताः स्युः पौंश्चल्यसक्तौ रमणीनरौ स्तः॥७॥

उभयव्यभिचारियोगः ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र सातवें बैठा हो, मकर,कुंभ, मेष, वृश्चिकराशिमें और उसको मंगल शनि देखते हों तो वह मनुष्य परायी स्त्रीमें रत रहता है और जो सातवें भावमें शनैश्चर, चंद्रमा, मंगल बैठे हों और शुक्र वर्गके युक्त हों तो वे स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी होते हैं ॥ ७ ॥

परस्परांशोपगतौ रवीन्दू रोषामयं तौ कुरुतो नराणाम्।
एकैकगेहोपगतौ तु तौ वा तमेव रोगं कुरुतो नितान्तम् ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा परस्पर नवांशमें बैठे हों तो वे स्त्री पुरुष दोनों क्रोधी होते हैं और केवल सूर्य चंद्रमाके नवांशमें बैठा हो तो पुरुष रोगी, क्रोधी होता है और केवल चन्द्रमा सूर्यके नवांशमें बैठा हो तो स्त्री रोगिणी होती है ॥ ८ ॥

अन्धयोग ९

मंदावनीसूनुरवीन्दवक्ष्व्यन्त्यारिवित्तव्ययभावसंस्थाः। आंध्यं भवेत्सारसमन्वितस्य खेटस्य दोषात्पुरुषस्य नूनम्॥९॥

अन्धयोगः ९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा शुक्र पापग्रहों सहित द्वितीय सप्तम चतुर्थमें बैठे हों वह मनुष्य वंशनाश करनेवाला होता है और केन्द्रमें शनैश्चर बैठा हो, बुधके द्रेष्काणमें और बुध करके दृष्ट हो तो शिल्पी होता है, जिसके बारवें बृहस्पति सूर्यके नवांशमें बैठा हो वह दासी करके सहित होता है और जिसके सातवें सूर्य, चन्द्रमा बैठे हों और शनैश्चर करके दृष्ट हों तो वह मनुष्य नीच होता है ॥ १५ ॥

वयो राशिं स्वनक्षत्रमेकीकृत्य पृथक्पृथक् ।
द्विचतुस्त्रिगुणं कृत्वा सप्ताष्टरसभाजितम् ॥ १६ ॥
आद्यन्तयोर्भवेद्दुःखी मध्य शून्यं धनक्षयः ।
स्थानत्रयेऽप्यशेषे तु मृत्युः सांकेषु वै जयी ॥ १७ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्डिराजविरचिते जातकाभरणे भावो-
पयोगिरिष्टाध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

उमर, राशि और जन्मनक्षत्र इन तीनोंके अंकोंको एकत्रित कर अलग अलग तीन जगह स्थापित करना । पहिली जगहमें दोसे गुणे, दूसरी जगहमें चारसे गुणे और तीसरी जगहमें तीनसे गुणे । पहिली जगहके गुणे अंकोंमें सातका भाग देवे, दूसरी जगहके अंकोंमें आठका भाग देवे और तीसरी जगहके अङ्कोंमें छः का भाग देवे ॥ १६ ॥ जो पहिले और अन्तके गुणे हुए अंकोंमें शून्य आवे तो दुःख कहना चाहिये, बीचके अंकमें शून्य आवे तो धनका क्षय कहना चाहिये और जो तीन स्थानोंमें शून्य आवे तो उसी वर्षमें मृत्यु कहना चाहिये और तीनों जगह अंक शेष रहे तो उस वर्षमें जय कहना चाहिये ॥ १७ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्याममुंदरीभाषाटीकायां
भावोपयुक्तरिष्टाध्यायः ॥ २ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ रव्यादिग्रहभावफलाध्यायप्रारंभः ।

अथ लग्नभावस्थितफलम् ।

लग्नेऽर्केऽल्पकचः क्रियालसतनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतो
पामी लोचनरुक्सुकर्कशतनुः शूरोऽक्षमी निर्घृणः ।
फुल्लाक्षः शशिभे क्रिये स्थितिहरः सिंहे निशांधः पुमा-
न्दारिद्र्योपहतो विनष्टतनयः संस्थस्तुलासंज्ञिके ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य थोड़े केशवाला, काम करनेमें आलसी, बड़ा क्रोधी, ऊंचा शरीर, खुजली रोगसहित नेत्रोंका रोगी, कर्कश शरीरवाला, शूर वीर, क्षमारहित और निर्दय होता है। जिसके कर्कराशिवर्ती सूर्य लग्नमें हो उसके कमल सरीखे नेत्र होते हैं और मेषराशिवर्ती सूर्य हो तो न्यायमार्गकी स्थितिको हरण करता है और सिंहराशिवर्ती सूर्य हो तो उसको रतौंधी आती है और तुलराशिवर्ती सूर्य हो तो वह मनुष्य दरिद्री व पुत्रहीन होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितसूर्यफलम् ।

धनसुतोत्तमवाहनवर्जितो हतमतिः सुजनोज्झितसौहृदः ।
परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणेर्द्रविणे यदि संस्थितिः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य धन, पुत्र और अच्छी सवारी करके रहित, बुद्धिनष्ट, मित्रतासे हीन और पराये घरमें वास करता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितसूर्यफलम् ।

प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढ्यः सुकर्मचित्तोऽनुचरान्वितश्च ।
मितानुजः स्यान्मनुजो बलीयान्दिनाधिनाथे सहजेऽधिसंस्थे॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य मीठी वाणी बोलनेवाला, धन और वाहनों करके सहित, अच्छे कामोंमें मनको लगानेवाला, नौकरों करके सहित, थोड़े भाइयोंवाला और अधिक बलवान् होता है ॥ ३ ॥

उन्मत्तनीचबधिरो विकलोऽथ मूकः ।
शेषेषु ना भवति हीनतनुर्विशेषात् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क, वृष, मेष राशिवर्ती चंद्रमा लग्नमें बैठा हो (मनुष्य चतुर, रूपवान, धन और भोगमें श्रेष्ठ,गुणोंकरके सहित होता है और कर्क, वृष, मेष राशिके विना अन्य राशियोंमें चंद्रमा लग्नमें बैठा हो तो वह मनु(उन्मत्त यानी मतवाला, नीच, बहिरा, विकलदेह और गूंगा होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितचंद्रफलम् ।

सुखात्मजद्रव्ययुतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधुर्द्वितीये ।
क्षीणे स्खलद्वाग्विधनोऽल्पबुद्धिर्न्यूनाधिकत्वे फलतारतम्यम्

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमा धनभावमें बैठा हो वह मनुष्य सु(और पुत्र धन करके सहित, नम्रताकरके युक्त श्रेष्ठ होता है और जो क्षीणचंद्र धनभावमें हो तो वह मनुष्य तोतला, धनरहित, थोड़ी बुद्धिवाला होता है और (चंद्रमा न तो पूर्णबली हो और न हीनबली हो पूर्ण और हीनके अंतर्गतका (तो उसका फल कमबढ़ती विचार करके कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितचंद्रफलम् ।

हिंस्रः सगर्वः कृपणोऽल्पबुद्धिर्भवेज्जनो बंधुजनाश्रयश्च ।
दयाभयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे प्रसूतौ ॥ ३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य हिं(करनेवाला, बड़ा अभिमानी, कृपण, अल्पबुद्धि, बंधुजनोंका आश्रय करनेवा(दया और भयसे हीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितचंद्रफलम् ।

जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिं कृष्यंगनावाहनसूनुसौख्यम् ।
प्रसूतिकाले कुरुते कलावान्पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तिम् ॥४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य जलाश्रयों(उत्पन्न धनको प्राप्त करनेवाला, खेती और स्त्री तथा सवारी और पुत्रों सहि(ब्राह्मण और देवताओंका भक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थचंद्रफलम् ।

जितेंद्रियः सत्यवचाः प्रसन्नो धनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः ।
सुसंग्रही स्यान्मनुजः सुशीलः प्रसूतिकाले तनयालयेऽब्जे ॥५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य इन्द्रियों का जीतनेवाला, सत्यवादी, प्रसन्न, धन और पुत्रोंकरके सब सुखको प्राप्त, श्रेष्ठ संग्रह करनेवाला और शीलवान् होता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितचन्द्रफलम् ।

मंदाग्निः स्यान्निर्दयः क्रौर्ययुक्तोऽनल्पालस्यो निष्ठुरो दुष्टचित्तः
रोषावेषोऽत्यंतसंजातशत्रुः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथे नरः स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य मंदाग्नि-रोगवाला, दयारहित, क्रूरतासहित, बड़ा आलसी, कठोर, दुष्टचित्त, क्रोधवान् और बहुत शत्रुओंवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितचंद्रफलम् ।

महाभिमानी मदनातुरश्च नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ।
धनेन हीनो विनयेन चैवं चन्द्रेऽगनास्थानविराजमाने ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य बड़ा अभिमानी, कामातुर, दुर्बल देहवाला, धन और नम्रतारहित होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितचंद्रफलम् ।

नानारोगैः क्षीणदेहोऽतिनिस्वश्चौरारातिक्षोणिपालाभितप्तः ।
चित्तोद्वेगैर्व्याकुलो मानवः स्यादायुःस्थाने वर्त्तमाने हिमांशौ ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आठवें भावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य अनेक रोगों करके दुर्बल देहवाला, धनहीन, चोर और शत्रु तथा राजा करके संताप प्राप्त और मनके उद्वेग करके व्याकुल होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नः पुराणवार्ताश्रवणानुरक्तः ।
सुकर्मसत्तीर्थपरो नरः स्याद्यदा कलावान्नवमालयस्थः ॥९॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा नवम भावमें बैठा हो वह मनुष्य स्त्री पुत्र धन करके सहित, पुराणकथाके सुननेमें तत्पर, अच्छे कर्म और श्रेष्ठतीर्थ करनेमें युक्त होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितचन्द्रफलम् ।

क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशाला कीर्तिर्मूर्तिस्सत्त्वसंतोषयुक्ता ।
चंचल्लक्ष्मीः शीलसंशालिनी स्यान्मानस्थाने यामिनीनायकश्चेत् १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य ... करके धन प्राप्त करनेवाला, बड़े यशवाला, सुन्दर रूप और बल संतो... सहित, बड़ी लक्ष्मी और शीलवती स्त्रियोंवाला होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितचन्द्रफलम् ।

सन्माननानाधनवाहनाप्तिः कीर्तिश्च सद्भोगगुणोपलब्धिः ।
प्रसन्नतालाभविराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम् ॥ ...

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य ... प्रकारके सन्तान और धन वाहनोंको प्राप्त करनेवाला, यश और श्रेष्ठभोग गुणोंको प्राप्त करनेवाला और प्रसन्नताको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितचन्द्रफलम् ।

हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रैर्वैकल्यं स्यान्नेत्रयोः शत्रुवृद्धिः ।
रोषावेशः पूरुषाणां विशेषात्पीयूषांशौ द्वादशे वेश्मनीह ॥ ...

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठशील मित्रों करके रहित और आंखोंमें विकलताको प्राप्त, शत्रुओंकी वृद्धिको प्राप्त क्रोधित होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितभौमफलम् ।

अतिमतिभ्रमतां च कलेवरं क्षतयुतं बहुसाहससुग्रताम् ।
तनुभृतां कुरुते तनुसंस्थितोऽवनिसुतो गमनागमनानि च ॥ ...

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य बुद्धिमें भ्रम... घावयुक्त देहवाला, हठ करके सहित, जाने आनेका काम करता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितभौमफलम् ।

अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनताम् ।
तनुभृतो विदधाति विरोधतां धननिकेतनगोऽवनिनंदनः ॥२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य धनर... दुष्टजनोंका आश्रय करनेवाला, दुष्टबुद्धि और कृपारहित होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितभौमफलम् ।

भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारता चारुपराक्रमश्च ।
धनानि च भ्रातृसुखोज्झितत्वं भवेन्नराणां सहजे महीजे ॥ ३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य राजाकी कृपासे उत्तम सौख्यको प्राप्त, उदारतासहित, श्रेष्ठ पराक्रमवाला, धनवान् और भाइयोंके सुखसे हीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितफलम्।

दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासो कलेवरे रुग्बलताऽबलत्वम्।
प्रसूतिकाले किल मंगलाख्ये रसातलस्थे फलमुक्तमार्यैः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य मित्रजनों-करके और सवारीसे दुःखको प्राप्त, परदेशमें रहनेवाला, अधिक रोगों करके निर्बल देह होता है यह श्रेष्ठ जनोंने कहा है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थभौमफलम्।

कफानिलाव्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः।
मतिर्विलोमा विपुलात्मजेऽस्मिन्प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य कफ और वातरोग करके पीडित, स्त्री, मित्र, पुत्रोंके सुखको नहीं प्राप्त और उलटी बुद्धि-वाला होता है ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितभौमफलम्।

प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद्रोपावेशः शत्रुवर्गोपशांतिः।
सद्भिः संगो नंगबुद्धिर्नराणां गोत्रापुत्रे शत्रुसंस्थे प्रसूतौ ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें मंगल बैठा हो उस मनुष्यकी जठराग्नि अधिक प्रबल होती है, क्रोधितस्वरूप, शत्रुओंका नाश करनेवाला, सज्जनपुरुषोंका संग करनेवाला और कामकलामें बुद्धि हमेशा रखता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितभौमफलम्।

नानानर्थैर्व्यर्थचिंतोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्मानवं हीनदेहम्।
दारागारात्यंतदुःखप्रतप्तं दारागारेऽङ्गारकोऽयं करोति ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें मंगल बैठा हो तो वह मनुष्य अनेक अनर्थोंकरके, व्यर्थ चिंता करके और शत्रुसमूहकरके पीडित होता है और स्त्रीज-नित दुःखकरके संतापित होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितभौमफलम्।

वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात्पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः।
बुद्धेराध्यं सज्जनानां च निन्दा रंध्रस्थाने मेदिनीनंदनेऽस्मिन् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें मंगल बैठा हो उस मनुष्यके विकलता होती है और दुर्भगताको प्राप्त वह रक्तविकारकरके पीडित उसकी प्रवृत्ति और बुद्धिका अंधा होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितभौमफलम्।

हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिं भूमीपतेर्गौरवतोऽल्पलब्धिम्।
क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य हिंसा मनकी प्रवृत्ति करनेवाला, राजाकरके अल्प गौरवताको प्राप्त और पुण्य और नाश करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितभौमफलम्।

विश्वंभरापतिसमत्वमतीव तोषं
सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम्।
चंचद्विभूषणमणीन्विविधागमांश्च
मेपूरणे धरणिजः कुरुते नराणाम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य राजा समान अत्यंत आनन्दको प्राप्त, श्रेष्ठ साहस करनेवाला, पराया उपकार करनेवाला सुन्दर आभूषण, मणि और अनेक प्रकारसे लाभ करता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितभौमफलम्।

ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरत्नवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि
भूपप्रसादशुभवृन्दलमंगलानि दद्यादथातिभवने हि सदावनेपः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य [illegible] और मूंगा, सोना और वस्त्रोंको प्राप्त और सुंदर सवारी [illegible], राजासे [illegible] और [illegible] मंगलोंको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावस्थितभौमफलम्।

स्वमित्रवैरं नयनाभिघातं क्रोधाभिभूतं विकलत्वमंगे।
धनव्ययं बन्धनभर्त्सनं नो व्यये धरासूनुर्विदधाति नूनम् ॥१२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें मंगल बैठा हो वह मनुष्य अपने मित्रोंसे [illegible] करनेवाला, [illegible] क्रोधयुक्त, [illegible] अंगमें विकलताको प्राप्त, धन [illegible] करनेवाला, बंधनका भागी और [illegible] होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितबुधफलम्।

[illegible]रोऽतिधीरः।
[illegible] जनने तनुस्थे॥१॥

[illegible]ह मनुष्य शांत और
[illegible]नम्रतासहित, अत्यन्त उदार, हमेशा आचारमें तत्पर, धैर्यवान्, विद्वान् कलाओंको
[illegible]जाननेवाला और बहुत पुत्रोंवाला होता है॥ १॥

अथ धनभावस्थितबुधफलम्।

विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलताकलितार्थमहत्सुखः।
विपुलकांतिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनन्दने॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य निर्मल शील-
[illegible]ला, बड़ोंका प्यारा, कुशलतासहित, बड़े सुखको प्राप्त और बड़ी शोभा करके
[illegible]न्नतिको प्राप्त होता है॥ २॥

अथ तृतीयभावस्थितबुधफलम्।

साहसान्निजजनैः परियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः।
मानवः कुशलितेप्सितकर्त्ता शीलभानुतनयेऽनुजसंस्थे॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य हठकरके अपने
[illegible]म्बन्धियोंके साथ रहता है, चित्तशुद्धिविहीन, सौख्यरहित और अपने दिलके
[illegible]ाफिक काम करनेमें चतुर होता है॥ ३॥

अथ चतुर्थभावस्थितबुधफलम्।

सद्वाहनैर्धान्यधनैः समेतः संगीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः।
विद्याविभूषागमनाधिशाली पातालगे शीतलभानुसूनौ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन और
[illegible]न्य धन सहित, गानविद्या और नृत्यमें रुचि रखनेवाला तथा विद्या और भूष-
[illegible]णोंको प्राप्त करनेवाला होता है॥ ४॥

अथ पंचमभावस्थितबुधफलम्।

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मन्त्रवादकुशलं च सुशीलम्।
मानवं किल करोति सलीलं शीतदीधितिसुतः सुतसंस्थः॥५॥

जिस मनुष्यके पंचम भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य पुत्रोंके सौख्यसहित, बहुत
[illegible]मित्रोंवाला, मन्त्रवादमें चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला लीला करके सहित होता है॥ ५॥

अथ शत्रुभावस्थितबुधफलम् ।

वादप्रीतिः सामयो निष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसंतप्तचित्तः।
नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथा-
त्मजेऽस्मिन् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य झगड़ा प्रीतिवाला, रोगयुक्त, कठोरहृदय, अनेक शत्रुओंके उपद्रव करके संतप्तचित्त, आलसी और व्याकुल होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितबुधफलम् ।

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्यनिरतो नरो भवेत् ।
कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनींदुजे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ शील वैभव करके शोभित, सत्य बोलनेमें तत्पर और स्त्री सुवर्ण पुत्र करके सहित होता

अथाष्टमभावस्थितबुधफलम् ।

भूतप्रसादात्समस्तसंपन्नरो विरोधी सुतरां सुगर्वः ।
सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्ता रन्ध्रे भवेच्चन्द्रसुतः प्रसूतौ ॥ ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य भूत प्रेत कृपासे सम्पूर्ण सम्पत्तियोंको प्राप्त, बहुत विरोध करनेवाला, अभिमान सम्पूर्ण यत्नोंकरके अन्यके किये कर्मको हरनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितबुधफलम् ।

उपकृतिकृतिविद्या चारुजातादरः स्या-
दनुचरधनसूनुप्राप्तदर्पो विशेषात् ।
विनरणकरणोद्यन्मानसो मानवश्चे-
दमृतकिरणजन्मा पुण्यधामागतोऽयम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य उपकार करनेवाला, श्रेष्ठ विद्याका जाननेवाला और आदर करनेवाला, नौकर धनपुत्रों करके दर्प और संसारसे तरनेका उद्यम करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितबुधफलम् ।

ज्ञानप्रज्ञः श्रेष्ठकर्मा मनुष्यो नानासंपत्संयुतो राजमान्यः।
सत्यशीलावाग्विलासादिशाली मानस्थाने बोधने वर्तमाने॥

जिस मनुष्यके दशमभावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य ज्ञानमें चतुर, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, अनेक प्रकारकी संपत्तियोंकरके संयुक्त, राजमान्य, सुंदरलीलाओंकरके सहित और वाणीके विलासमें श्रेष्ठ होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितबुधफलम् ।

भोगासक्तोऽत्यंतवित्तो विनीतो नित्यानंदश्चारुशीलो बलिष्ठः ।
नानाविद्याभ्यासकृन्मानवःस्याल्लाभस्थाने नंदने शीतभानोः॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहे भावमें बुध बैठा हो वह मनुष्य भोगमें आसक्त, अत्यंत धनवाला, नम्रतासहित, नित्य ही आनंदको प्राप्त, श्रेष्ठ शीलवाला बलवान् और अनेक विद्याओंका अभ्यास करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितबुधफलम् ।

दयाविहीनः स्वजनोज्झितश्च स्वकार्यदक्षो विजितात्मपक्षः ।
धूर्तो नितांतं मलिनोनरःस्याद्व्ययोपपन्नेद्विजराजसूनौ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें बुध बैठा हो वह मनुष्य दयारहित अपने जनोंकरके रहित और अपने कार्यमें चतुर और अपने पक्षको जीतनेवाला, अत्यंत धूर्त और मलिन होता है ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितगुरुफलम् ।

विद्यासमेतोऽभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः ।
नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते चित्रशिखंडिसूनौ ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य विद्या करके सहित,राजाओंका प्यारा, चतुर,कृतज्ञ,अत्यंत उदार और सुंदर शरीरवाला होता है॥१

अथ धनभावस्थितगुरुफलम् ।

सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तः संत्यक्तवैरोऽपि नरो गरीयान् ।
त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवंद्ये द्रविणोपयाते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रूप विद्या गुण यश करके सहित, वैरको छोड़नेवाला, श्रेष्ठ, त्यागी, शीलवान् और धन करके पूर्ण होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितगुरुफलम् ।

सौजन्यहीनः कृपणः कृतघ्नः कांतासुतर्भातिविवर्जितश्च ।
नरोऽग्निमांद्यबलतासमेतः पराक्रमे शक्रपुरोहितेऽस्मिन् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मित्रता करके रहित, कृपण, कृतघ्न, स्त्री तथा पुत्रकरके प्रीतिरहित और रोगकरके बलहीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितगुरुफलम् ।

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव ।
नृपानुकंपासमुपात्तसंपद्दंभोलिभृन्मंत्रिणि भूतलस्थे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य सम्मान और अनेक प्रकारके धनवाहनादिकों करके हमेशा आनंदको प्राप्त, राजाकी कृपा करके संपदाको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावस्थितगुरुफलम् ।

सन्मित्रमंत्रोत्तममंत्रशास्त्रमुख्यानि नानाधनवाहनानि ।
दद्याद्गुरुः कोमलवाग्विलासं प्रसूतिकाले तनयालयस्थः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ मित्र और श्रेष्ठ मंत्रशास्त्र और अनेक प्रकारके धन वाहनोंको प्राप्त और कोमलवाणी बोलनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितगुरुफलम् ।

सद्गीतविद्याहतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोऽरातिजनप्रहर्ता ।
प्रारब्धकार्य्यालसकृन्नरः स्यात्सुरेंद्रमंत्री यदि शत्रुसंस्थः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत और श्रेष्ठविद्याकरके हीन अर्थात् दुष्ट गान और खोटी विद्याओंमें तत्पर अपना यश जिसको प्यारा, शत्रुओंका नाश करनेवाला, प्रारब्ध कार्यमें आलसी होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितगुरुफलम् ।

शास्त्राभ्यासासक्तचित्तो विनीतः कांतावित्तात्यंतसंजातसौख्यः ।
मंत्री मर्त्यः काव्यकर्ता प्रसूतौ जायाभावे देवदेवाधिदेवे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य शास्त्र अभ्यास करनेवाला, नम्रतासहित, स्त्री और धनकरके अत्यंत सौख्यको प्राप्त राजाका मंत्री और काव्य करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितगुरुफलम्।

प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोऽतिदीनो विवेकहीनो विनयोज्झितश्च।
नित्यालसः क्षीणकलेवरः स्यादायुर्विशेषे वचसामधीशे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य दूत अर्थात् हलकारेकी वृत्ति करनेवाला, मलिन, अत्यन्त दीन, विवेकरहित, नम्रताहीन हमेशा आलसी और दुर्बलदेह होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितगुरुफलम्।

नरपतेः सचिवः सुकृती कृती सकलशास्त्रकलाकलनादरः।
व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वै तपसि स्थिते ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य राजाका मंत्री श्रेष्ठ धर्म करनेवाला, चतुर, सर्वशास्त्रोंके विचारमें मनको लगानेवाला, व्रत करनेवाला और ब्राह्मणोंकी सेवामें तत्पर होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितगुरुफलम्।

सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मज श्रीरमणीसुखानि।
यशोभिवृद्धिं बहुधा विधत्ते राज्ये सुरेज्ये विजये नराणाम् ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ राजाके चिह्न छत्रचामरादि और उत्तम वाहनों करके सहित, मित्र, पुत्र, लक्ष्मी और स्त्रीके सुखसहित तथा बहुधा यशकी वृद्धिको धारण करता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितगुरुफलम्।

सामर्थ्यमर्थागमनानि नूनं सद्रत्नलोत्तमवाहनानि।
भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवन्द्यो यदि लाभसंस्थः ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य सामर्थ्यसहित धनका निश्चय लाभ करनेवाला श्रेष्ठरत्न, उत्तम रत्न और वाहनोंको प्राप्त करनेवाला और राजाकी कृपासहित होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितगुरुफलम्।

नानाचित्तोद्वेगसंजातकोपं
पापात्मानं सालसं त्यक्तलज्जम्।
कुर्व्या दीनं मानवं मानहीनं
वागीशोऽयं द्वादशस्थः करोति ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें भावमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य अनेक प्रकारके चित्तके उद्वेगों करके, क्रोधसहित, पापी, आलसी, त्याग की है लज्जा जिसने, बुद्धिकरके हीन और मानरहित होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितशुक्रफलम्।

बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभावः पुमान्।
अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुते तनुभावगते सति ॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बहुत कलाओंमें चतुर, सुन्दरवाणीवाला, श्रेष्ठ स्त्रीके साथ कामकलासहित, राजा करके मान और धन सहित होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितशुक्रफलम्।

सदन्नपानाभिरतं नितांतं सद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यम्।
विचित्रविद्यं मनुजं प्रकुर्याद्धनोपपन्नो भृगुनन्दनोऽयम् ॥ २

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ अन्न और पान करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ वस्त्र, भूषण, धन वाहनोंसे युक्त और विचित्र विद्याका जाननेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशुक्रफलम्।

कृशांगयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येण हीनो मदनानुततः।
सतामनिष्टो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात् ॥ ३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य दुर्बल अंगवाला, कृपण, दुष्टात्मा, धनहीन, कामदेवसे सन्तोषित, सत्पुरुषोंको दुःख देनेवाला और बहुत दुष्ट चेष्टावाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशुक्रफलम्।

[illegible] नानासौख्यं वंदनं देवतानाम्।
नित्यानंदं मानवानां प्रकुर्याद्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितोऽयम् ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य मित्र और खेत, ग्राम और वाहनोंका अनेक सौख्य पानेवाला, देवताकी वंदना करनेवाला हमेशा आनंदको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितशुक्रफलम्।

सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः।
नरपतेर्गुरुगौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥ ५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुक्र बैठा हो वह सम्पूर्ण काव्य कलाओं सहित, पुत्र, वाहन और अन्न करके सहित और राजा करके बड़े गौरवको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितशुक्रफलम्।

अभिमतो न भवेत्प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः।
विबलताकलितः किल संभवे भृगुसुतेऽरिगतेऽरिभयान्वितः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य स्त्रियोंका प्यारा नहीं, निश्चय करके कामदेवसे हीन, निर्बलतासहित और शत्रुओंके भय से युक्त होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितशुक्रफलम्।

बहुकलाकुशलो जलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः।
अतितरां नटिनीकृतसौहृदः सुनयनाभवने भृगुनन्दने ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बहुत कलाओंमें चतुर, जलक्रीडा करनेवाला, विषय करनेमें बड़ा चतुर और अत्यन्त चंचल स्त्रियोंसे मित्रता करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितशुक्रफलम्।

प्रसन्नमूर्तिर्नृपमानलब्धः शठोऽतिनिःशंकतरः सगर्वः।
स्त्रीपुत्रचिंतासहितःकदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सितास्ये॥ ८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य प्रसन्नरूप, राजा करके मानको प्राप्त, शठ, अति निर्भय, अभिमानी और कभी स्त्री पुत्रोंका चिन्ता करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितशुक्रफलम्।

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रार्पितार्थः
प्रतिदिनधनयानात्यंतसंजातदर्पः।
मुनिजनसमवेषः पूरुषस्त्यक्तरोषो
भवति नवमभावे संगवे भार्गवेऽस्मिन् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य अतिथि गुरु देवताओंका पूजन करनेवाला, तीर्थयात्रामें खर्च किया है धन जिसने, हर एक दिन धन और वाहनों करके हर्षको प्राप्त, मुनीश्वरोंके समान वेष धारण करनेवाला और क्रोध [illegible] है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितशुक्रफलम् ।

सौभाग्यसम्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमना धनाढ्यः ।
कांतासुतप्रीतिरतीव नित्यं भृगोः सुते राज्यगते नरस्य ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र दशममें बैठा हो वह मनुष्य सौभाग्य और सम्मानसे विराजमान, स्नान-पूजन-ध्यानमें मनको लगानेवाला, धनवान् और स्त्री पुत्रोंमें नित्य ही अत्यन्त प्रीति करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितशुक्रफलम् ।

सङ्गीतनृत्यादरता नितांतं नित्यं च चिंतागमनानि नूनम् ।
सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोःसुतो लाभगतो यदि स्यात् ॥११॥

जिस मनुष्यके एकादशभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत और नृत्यमें अत्यन्त प्रीति करनेवाला, नित्य ही यात्राकी चिंता करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म और धर्ममें चित्तको लगानेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितशुक्रफलम् ।

सन्त्यक्तसत्कर्मगतिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च ।
दयाकुतासत्यविवर्जितश्च काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययभावमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ धर्मके मार्गको त्यागनेवाला,कामदेवके विषे चित्तको लगानेवाला,दया और सत्यरहित होता है॥१२॥

अथ तनुभावस्थितशनिफलम् ।

प्रसूतिकाले नलिनीशसूनुः स्वोच्चे त्रिकोणर्क्षगते विलग्ने ।
कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषेष्वभद्रं सरुजं दरिद्रम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें तुला, मकर, कुंभ राशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य देश नगरका स्वामी (राजा) होता है और अन्यराशिगत शनैश्चर लग्नमें बैठा हो तो वह मनुष्य दुःखी और रोगसहित दरिद्री होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितशनिफलम् ।

अन्यालयस्थो व्यसनाभिततो जनोज्झितःस्यान्मनुजश्चपश्चात्।
देशांतरे वाहनराजमानो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य व्यसनों और मनुष्योंसे त्यागा हुआ होता है । जो उच्चस्वक्षेत्रके विना अन्यराशियों बैठा हो तो और जो तुला मकर कुंभराशिका शनैश्चर हो तो वह मनुष्य वाहन और राजमान्यताको प्राप्त होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशनिफलम्।

राजमान्यशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली।
पलको भवति भूरिजनानां मानवो हि रविजे सहजस्थे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य
राजासे माननीय, श्रेष्ठ वाहनोंकरके सहित, ग्रामपति, बड़ा बलवान् और बहुत
आदमियोंका पालनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशनिफलम्।

पित्तानिलक्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलांगम्।
मालिन्यभाजं मनुजं विदध्याद्रसातलस्थो नलिनीशजन्मा ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर चतुर्थभावमें बैठा हो वह मनुष्य पित्त-
वातसे क्षीणबलवाला, दुष्टशीलवान्, आलस्यसहित, झगडेसे दुर्बल देहवाला और
मलिनताका भागी होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितशनिफलम्।

सदा गदक्षीणतरं शरीरं धनेन हीनत्वमनंगहानिम्।
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रस्थितः पुत्रभयं करोति ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य हमेशा
रोगसे दुर्बलदेहवाला, धनहीन और कामदेवकी हानिवाला तथा पुत्रोंके भय वाला
होता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितशनैश्चरफलम्।

विनिर्जितारातिगणो गुणज्ञः सुज्ञाभ्यनुज्ञापरिपालकः स्यात्।
पुष्टाङ्गयष्टिः प्रबलोदराग्निर्नरोऽर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य शत्रुदलको
जीतनेवाला, गुणोंका जाननेवाला, ज्ञानी जनोंकी आज्ञा माननेवाला, पुष्टदेहवाला
और बलवान् है जठराग्नि जिसकी ऐसा होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितशनिफलम्।

आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः।
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनैश्चरे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य रोगसे
निर्बलताको प्राप्त और दुराचारी मनुष्योंसे मित्रता करनेवाला, स्त्री, घर और
अन्नसे दुःखित होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितशनिफलम्।

कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाभयवतो भयतोपविवर्जितः।
अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि भानुसुते स्थिते॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य अं.
निश्चय कर दाद रोग और फुड़ियोंकी बीमारीवाला, भय और सन्तोषसे
आलस्यसहित होता है॥ ८॥

अथ नवमभावस्थितशनिफलम्।

धर्मकर्मसहितो विकलांगो दुर्मतिर्हि मनुजोऽतिमनोज्ञः।
संभवस्य समये किल कोणस्त्रित्रिकोणभवने यदि संस्थः॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य धर्म
सहित, विकलदेह, दुष्टबुद्धि और अत्यन्त सुन्दर होता है॥ ९॥

अथ दशमभावस्थितशनिफलम्।

राज्ञः प्रधानमतिनीतियुतं विनीतं सद्ग्रामवृन्दपुटभेदनकाधिकार
कुर्यान्नरं सुचतुरंद्रविणेनपूर्णं मेषूरणेहितरणेस्तनुजः करोति॥१०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य राजा
मंत्री, नीतियुक्त बुद्धिवाला, नम्रतासहित, श्रेष्ठ ग्रामोंके समूह और नगरका अ
कारी, चतुर और धनकरके सहित होता है॥ १०॥

अथैकादशभावस्थितशनिफलम्।

कृष्णाश्वानामिंद्रनीलोर्णकानां नानाचंचद्वस्तुदंतावलानाम्।
प्राप्तिं कुर्यान्मानवानांबलीयान्प्राप्तिस्थाने वर्तमानोऽर्कसूनुः १

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य का
घोड़े और इंद्रनील मणि, ऊर्ण वस्त्र और बड़े हाथियोंके लाभको प्राप्त होता है १

अथ द्वादशभावस्थितशनिफलम्।

दयाविहीनो विधनो व्ययार्तः सदालसो नीचजनानुयातः।
नरोऽगभंगो ज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें भावमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य दया
रहित, धनहीन, खर्च करके दुःखी, हमेशा आलसी, नीच मनुष्योंका साथी औ
अंगभंगसे सर्व सौख्यरहित होता है॥ १२॥

तन्वादिस्थशनेः प्रोक्तं यच्च भावोद्भवं फलम् ।
राहोस्तदेव विज्ञेयं मुनीनामपि संमतम् ॥ १३ ॥

जो तन्वादिभावस्थ भावजनित फल शनैश्वरका कहा है वही अर्थात् शनैश्वरके समान राहुका भी फल जानना चाहिये। यह निश्चयकर मुनीश्वरोंकी सम्मति है ॥ १३ ॥

अथ फलमानमाह ।

स्वोच्चस्थितः पूर्णफलं हि धत्ते स्वर्क्षे हितर्क्षे हि फलार्द्धमेव ।
फलांघ्रिमात्रं रिपुमंदिरस्थश्चास्तं प्रयातः खचरो न किंचित्१४

जो ग्रह अपने उच्चमें बैठा हो वह पूर्ण फल देता है, जो ग्रह स्वक्षेत्र वा मित्रराशिमें बैठा हो वह ग्रह आधा फल देता है, जो ग्रह शत्रु क्षेत्रमें बैठा हो वह चतुर्थांश फल देता है, जो ग्रह अस्तंगत है वह कुछ भी फल नहीं देता है ॥ १४ ॥

अथ तनुभावस्थितराहुफलम् ।

लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात्स्वजनानुवंचकम् ।
शीर्षव्यथाकामरसेन संयुतं करोति वादे विजयं सरोगम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें राहु बैठा हो वह मनुष्य दुष्टबुद्धि, खोटे स्वभाववाला, अपने संबंधियोंको ठगनेवाला, शिरका रोगी, एवं वीर्य करके सहित, झगडेमें जीतनेवाला और रोगसहित होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितराहुफलम् ।

धनगतो रविचन्द्रविमर्दनो मुखरतांकितभावमथो भवेत् ।
धनविनाशकरो हि दरिद्रतां खलु तदा लभते मनुजोऽटनम् २

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य अप्रिय वाणी बोलनेवालेके भावको प्राप्त, धनका नाश करनेवाला, दरिद्री और भ्रमण करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितराहुफलम् ।

दुश्चिक्येऽरिभवं भयं परिहरँल्लोके यशस्वी नरः
श्रेयो वादिभवं तदा हि लभते सौख्यं विलासादिकम् ।
भ्रातॄणां निधनं पशोश्च मरणं दारिद्र्यभावैर्युतं
नित्यं सौख्यगणैः पराक्रमयुतं कुर्याच्च राहुः सदा ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य अनिष्टनाशको प्राप्त, निश्चय करके लिंग गुदा आदि गुप्त स्थानोंमें पीडाको प्राप्त, प्रमेहरोगवाला अंडवृद्धिसहित और विकलताको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितराहुफलम्।

धर्मार्थनाशः किल धर्मगे तमे सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य।
दरिद्रता बन्धुसुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें राहु बैठा हो तो वह मनुष्य धर्म अर्थके नाशको प्राप्त, अल्प सुखवाला, भ्रमण करनेवाला, दरिद्री और थोड़ा भाइयोंके सुखको पाता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितराहुफलम्।

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति।
रुजो वाहने वातपीडां च जंतोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्टभाजम् १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें राहु बैठा हो तो उसे पिताका सुख नहीं प्राप्त होता आप भी दुष्ट भाग्यवाला, वैरियोंका नाश करनेवाला, वाहनोंको रोगदाता, वातकी पीड़ा सहित होता है और जो वृष वा मीनराशिवर्ती राहु हो तो सौख्य और कष्टका भागी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितराहुफलम्।

लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं सौख्याधिकं नृपगणाद्विविधं च मानम् ॥ वस्त्रादिकांचनचतुष्पदसौख्यभावं प्राप्नोति सौख्यविजयौ च मनोरथं च ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य सब प्रकारके धनको लाभ करनेवाला, अधिक सौख्यको प्राप्त, राजाओंके समूहकरके अनेक प्रकारके मानसहित, वस्त्रादिक सुवर्ण चौपायोंके सौख्यका भागी, सौख्य, विजय और मनोरथको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितराहुफलम्।

नेत्रे च रोगं किल पादघातं प्रपंचभावं किल वत्सलत्वम्।
दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति जातं व्ययगे तमे वा ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यय भावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य नेत्रोंका रोगी, पैरोंमें घाव, प्रपंच करनेवाला, प्रीतियुक्त, दुष्ट जनोंमें रति करनेवाला और मध्यम पुरुषोंकी सेवा करता है ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितकेतुफलम् ।

यदा लग्नगश्चेच्छिखी सूत्रकर्त्ता सरोगादिभोगो भयव्यग्रता च
कलत्रादिचिंता महोद्वेगता च शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें केतु बैठा हो वह मनुष्य सूत्रकर्ता होव
रोगादिकों करके सहित भयसे व्यग्रचित्त, स्त्रियोंकी चिन्ता उद्वेगसहित और
विकारयुक्त शरीर होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितकेतुफलम् ।

धने चेच्छिखी धान्यनाशो धनं च कुटुंबाद्विरोधो नृपाद्द्रव्यचिं
मुखे रोगतासंततं स्यात्तथा च यदा स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य धन धान
नाश करनेवाला, कुटुम्बसे विरोध करनेवाला, राजासे धनकी चिन्ता करनेव
मुखमें रोग हमेशा होवे और जो केतु अपनी राशिमें वा शुभ ग्रहकी राशिमें
धनभावमें बैठा हो तो अत्यन्त सौख्यको पाता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादं धनं भोगमैश्वर्यजोऽधिकं च
भवेद्बन्धुनाशः सदा बाहुपीडा सुखं स्वोच्चगेहे भवोद्वेगता चं

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीय भावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य शत्रुओं
नाश करनेवाला, शत्रुओंसे झगड़ा करनेवाला, धनभोग ऐश्वर्यके तेजको औ
प्राप्त, भ्राताओंका नाश करनेवाला, हमेशा बाहोंमें पीड़ा करनेवाला होता है
अपने उच्चमें केतु बैठा हो तो सुखको करता वा उद्वेग देता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितकेतुफलम् ।

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पितृतो नाशमेति ।
शिखी बंधुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वैः सदा व्यग्रता च

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य माताका सु
कभी नहीं पाता, मित्रवर्ग और पितासे नाशको प्राप्त, भ्राताहीन होता है अ
उच्चराशिमें केतु बैठा हो तो वह पूर्वोक्त सब प्रकारके सौख्योंको प्राप्त, थोड़ा सु
हमेशा व्यग्रचित्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितकेतुफलम् ।

यदा पंचमे यस्य केतुश्च जातः स्वयं स्वोदरे वातपानादिकष्टम् ।
स दुर्बुद्धियुक्तः संततिः स्वल्पपुत्राः सदा स्वे भवेद्दासयुक्तो नरश्च

जिस मनुष्यके पंचमभावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य अपने उदरमें क्षत और गेरनेसे कष्टको प्राप्त और भाइयोंसे प्यार करनेवाला थोड़े पुत्रवाला और हमेशा ...लमहित होता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितकेतुफलम्।

शिखी यस्य षष्ठे स्थिते वैरिनाशो
भवेन्मातृपक्षाच्च तन्मानभंगः।
चतुष्पत्सुखं द्रव्यलाभो नितांतं
न रोगोऽस्य देहे सदा व्याधिनाशः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य शत्रुओंका नाश ...रनेवाला और मामाके पक्षसे मानभंगकी प्राप्ति, चौपायोंसे सुखी, हमेशा धनका ...ाभ करनेवाला, निरोगी और सदा देहव्याधिका नाश करता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितकेतुफलम्।

...शखी सप्तमे मार्गतश्चित्तवृत्ति सदा वित्तनाशोऽथवा वारिभूतः।
...वृत्कीटगे सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता च ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके सातवें भावमें केतु बैठा हो तो वह मनुष्य मार्गकी चिन्तामें ...चत्तकी वृत्ति रखनेवाला, हमेशा धनका नाश शत्रुओंकरके होता है और वृश्चिक-...ाशिवर्ती केतु हो तो हमेशा लाभ करनेवाला, कलत्रादिकोंको पीड़ा, व्यय और ...चत्तको व्यग्रता होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितकेतुफलम्।

...दे पीडनं वाहनैर्द्रव्यलाभो यदा कीटगे कन्यके युग्मगे वा।
...वेच्छिद्रगे राहुछाया यदा स्यादजे गोलिगे जायते चातिलाभः ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें केतु बैठा हो उस मनुष्यकी गुदामें पीड़ा ...ती है और जो केतु कर्क, कन्या, मिथुनराशिका हो तो वाहन और ...नका लाभ करता है और जो वृश्चिक, मेष, वृष, राशिवर्ती हो तो अत्यन्त ...ाभ कराता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितकेतुफलम्।

...दा धर्मगः केतवः क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः।
...हेत व्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं करोति ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें केतु बैठा हो वह मनुष्य ...

नाश करनेवाला, पुत्रकी इच्छा रखनेवाला, म्लेच्छोंसे जिसकी भाग्यवृद्धि होती है और म्लेच्छोंसे पीड़ा भी होती है और बाहोंमें रोगवाला, तप और हास्य वृद्धिको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितकेतुफलम् ।

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति रुजो वाहने वातपीडां च जन्तोर्यदा कन्यकास्थः सुखीकष्टभाक्च ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें केतु बैठा हो तो उस मनुष्यको पिताका सौख्य नहीं होता, किन्तु दुष्टभाग्यवाला, वैरियोंका नाश करनेवाला, रोगयुक्त, वाहनोंकी पीडा प्राप्त, वातरोग सहित होता है और जो वही केतु कन्याराशिमें हो तो सुख और दुःख दोनोंका भागी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितकेतुफलम् ।

सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रोऽपि यस्य । गुदे पीडचते सन्ततेर्दुर्भगत्वं शिखी लाभगः सर्वकालं करोति ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकादशभावमें केतु बैठा हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, श्रेष्ठ विद्यावाला, अधिक दर्शनीय स्वरूपवाला, श्रेष्ठ भोग करके युक्त श्रेष्ठ तेजवाला, सुन्दर वस्त्रोंसहित और गुदामें रोगवाला तथा दुष्ट पुत्रोंवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी रिःफगः पादनेत्रेषु पीडा स्वयं राजतुल्यो व्ययं वै करोति रिपोर्नाशनं मानसे नैव शर्मरुजा पीडचते वस्तिगुह्यं सरोगम् ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते तन्वादिद्वादशभावस्थितमद्भावफलाऽध्यायः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केतु बारहवें बैठा हो तो वह मनुष्य पैर और नेत्रोंमें पीड़ावाला, राजतुल्य धनका खर्च करनेवाला, शत्रुओंका नाश करनेवाला, मनमें दुःखी, एवं वस्ति और गुदाके रोग करके पीडित होता है ॥ १२ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजज्योतिर्विद्-पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितमद्भावफलाऽध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीः।

श्रीगोवर्द्धनधारिणे नमः।

अथ दृष्टिशीलाध्यायप्रारंभः।

अथ ग्रहाणां दृष्टिमाह।

दृष्टिर्दिक् १० त्रितये ३ गृहे नव ९ शरे ५ वेदा ४ ष्टके ८ कामभे ७ पश्यंत्यर्कविधुज्ञदैत्यगुरवः पादाभिवृद्ध्या क्रमात्। मंदेज्यक्षोणिभूनां चरणद्विचरणा वह्निपादं तथैव। पूर्णाः पश्यंति भावं मुनिवरभणितिः सर्वतन्त्रेषु धीराः॥ १॥

अब ग्रहोंकी दृष्टि कहते हैं–सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र क्रमसे चरण वृद्धिद्वारा इन स्थानोंको देखते हैं अर्थात् ३। १० एक चरण ९। ५ दो चरण ४। ८ तीन चरण ७ पूर्ण चारों चरणसे देखते हैं। इसी तरह शनैश्चर, मंगल और बृहस्पति एक चरण, दो चरण, तीन चरण, चारों चरण देखते हैं ऐसा सब ग्रन्थोंमें धीर मुनीश्वर कहते हैं। अर्थात् शनैश्चर, १० । ३। पूर्ण ९। ५ एक चरण ४। ८ दो चरण ७ तीन चरण। बृहस्पति ९। ५ पूर्ण ४। ८ एक चरण। ७। दो चरण १०। ३ तीन चरण। मंगल ४। ८ पूर्ण ७ एक चरण १०। ३ दो चरण ९। ५ तीन चरणसे देखता है॥ १॥

अथ ग्रहाणां दृष्टिचक्रम्।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सू.चं.बु.शु.	०	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०
श.	०	०	४	२	१	०	३	२	१	४	०	०
बृ.	०	०	३	१	४	०	२	१	४	३	०	०
मं.	०	०	२	३	३	०	१	४	३	२	०	०

अथ मेषादिगृहे रवौ ग्रहदृष्टिफलमाह,
तत्र–भौमगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

दानधर्मबहुभृत्यसंयुतः कोमलामलतनुर्नृपप्रियः। आवनेयभवने विरोचने शीतदीधितिनिरीक्षिते सति॥ २॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषवृश्चिक राशिमें स्थित सूर्यको चंद्रमा
हो तो वह मनुष्य दान और धर्म सहित, बहुत नौकरोंवाला, कोमल और
देहवाला और अपना घर उसको बड़ा प्यारा होता है ॥ २ ॥

अथ भौमगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्।

क्रूरो नरः संगरकर्मधीरश्चारक्तनेत्रांघ्रिरलं बलीयान् ।
भवेदवश्यं कुजगेहसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

जिन मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको मं
देखता हो तो वह मनुष्य क्रूर, संग्राममें धीर और उसके आंखें पैर लाल वर्ण के
पूर्ण बलवान् होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्।

सुखेन सत्त्वेन धनेन हीनः प्रेष्यः प्रवासी मलिनः सदैव ।
भवेदवश्यं परवान्मनुष्यः सहस्ररश्मौ कुजभे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको
बुध देखता हो तो वह मनुष्य सुख और पराक्रम तथा धनकरके हीन, दूसरों
काम करनेवाला, हमेशा परदेशमें वास करनेवाला, मलिन और परायेके व
रहनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्।

दाता दयालुर्बहुलार्थयुक्तो नृपालमन्त्री कुलधुर्यवर्यः ।
स्यान्मानवो भूतनयालयस्थे पत्यौ नलिन्याः किल जीवदृष्टे ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें, सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको
बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, दाता, दयावान, बहुत ध
वाला और अपने कुलमें श्रेष्ठ अग्रणी होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्।

दीनाङ्गनाप्रीतिनिरतोव दीनो धनेन हीनो मनुजः कुमित्रः ।
त्वग्दोषयुक्तः क्षितिपुत्रगेहे मित्रेऽधिसंस्थे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिकराशिमें बैठा हो और उसको शु
देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रियोंकी प्रीतिके साथ प्रीति करनेवाला, अर्थहीन,
दुष्टमित्रवाला और उसकी त्वचामें विकार होता है ॥ ६ ॥

अथ भौमगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्।

उत्साहहीनो मलिनोऽतिदीनो दुःखान्वितो वै विमतिर्नरः स्यात्।
कांते नलिन्याः क्षितिजालयस्थे प्रसूतिकाले रविजेन दृष्टे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेषवृश्चिक राशिमें बैठा हो और उसको शनि देखता हो तो वह मनुष्य उत्साहरहित, मलीन, अत्यन्त दीन, दुःखसहित और बुद्धिहीन होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

वराङ्गनाप्रीतिकरो नितांतं स्याद्भूरिभार्यः सलिलोपजीवी।
दिनाधिराजे भृगुजालयस्थे कलानिधिप्रेक्षणतां प्रयाते ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुला राशिमें बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठस्त्रियोंसे अति प्रीति करनेवाला, बहुत स्त्रियोंवाला और जलके व्यापारसे आजीविका करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्।

संग्रामधीरोऽतितरां महौजाः सुसाहसप्राप्तधनोरुकीर्तिः।
क्षीणो नरः स्याद्भृगुमंदिरस्थे सहस्ररश्मौ कुसुतेन दृष्टे ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठा हो और उसको मंगल दीखता हो तो वह मनुष्य संग्राममें धैर्यवाला, अत्यन्त तेजवाला श्रेष्ठ साहस करके धनको प्राप्त करनेवाला और यशस्वी होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्।

संगीतसत्काव्यकलाकलापे लेखक्रियायां कुशलो नरः स्यात्।
प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयाते प्रद्योतने सोमसुतेन दृष्टे ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य संगीत, विद्या, और सत्काव्यकी कलाओंके समूहको जाननेवाला और लेखक्रियामें कुशल, प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्।

वंशानुमानं नृपतिप्रधानः सद्रत्नभूषाद्रविणान्वितो वा।
भीरुर्नरः शुक्रगृहं प्रयाते दृष्टे रवौ देवपुरोहितेन ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य अपने वंशके समान राजाका प्रधान मंत्री, श्रेष्ठ रत्न और भूषण धन सहित, एवं डरपोक होता है ॥ ११ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ शुक्रदृष्टिफलम् ।

सुलोचनः कांतवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिंतः।
भवेन्नरो दैत्यगुरोर्गृहेऽर्के संवीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शु
देखता तो वह मनुष्य सुन्दरनेत्रोंवाला, शोभायमान देह व प्रधान होता है
शत्रु मित्रोंकरके सहित, तथा चिन्तायुक्त होता है ॥ १२ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

दीनोऽर्थहीनोऽलसतां प्रपन्नो भार्यामनोवृत्तिविभिन्नवृत्तः ।
असाधुवृत्तामययुङ्नरः स्याच्छुक्रालयेऽर्केऽर्कसुतेन दृष्टे ॥१३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको श
श्चर देखता हो तो वह मनुष्य दीन, धनहीन, आलस्यसहित और स्त्रीके साथ वि
मतवाला, दुष्ट आचरण करनेवाला और रोगयुक्त होता है ॥ १३ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्च विदेशयातोऽपि धनेन हीनः ।
नित्यं सरोगश्च नरः स्यात्सौम्यालयेऽर्के हरिणांकदृष्टे ॥१४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्या राशिमें सूर्य बैठा हो और उस
चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य मित्र और शत्रुओं करके परिपीडित, परदेश ज
कर भी धनहीन, और हमेशा उदास रहनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोऽत्यंतदीनो
रणजयविधिहीनोऽत्यंतसंजातलज्जः ।
भवति ननु मनुष्यः साहसश्चापि हंसे
बुधभवननिवासे लोहिताङ्गेन दृष्टे ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उस
मंगल देखता हो तो वह मनुष्य शत्रुओं करके भयभीत, कलहादिकरके युक्त, अत्य
दीन, रणमें हारनेवाला, अत्यन्त लज्जावाला साहसी और आलसी होता है ॥ १५

अथ सौम्यगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नतादंभविलासभाजो भवंति नो शत्रुजनानमित्राः ।
[illegible] बुधभवनस्थे ना बुधेन दृष्टे ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिगत सूर्य बुधकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य राजाकी कृपासे पुत्रोंके ऐश्वर्यसे उसके मित्र और शत्रु हमेशा संतापको प्राप्त होते हैं ॥ १६ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

सुगुप्तमन्त्रोऽतितरां स्वतन्त्रः कलत्रपुत्रादिजने सगर्वः ।
भवेन्नरः शीतकरात्मजर्क्षे दिवाकरे देवगुरुप्रदृष्टे ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य छिपे हुए मन्त्रवाला, अत्यन्त स्वतन्त्र और स्त्री पुत्रादिकोंके होनेसे गर्ववाला होता है ॥ १७ ॥

अथ सौम्यगृहे भृगुदृष्टिफलम् ।

विदेशवासी चपलो विलासी विषाग्निशस्त्रांकितमूर्तिवर्ती ।
पृथ्वीपतेर्दौत्यकरो नरः स्यादर्के बुधर्क्षे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य परदेशका वासकरनेवाला, चपल, विलास करनेवाला और उसका देह विष, अग्नि, शस्त्रकरके अंकित और राजाका दूत होता है ॥१८॥

अथ सौम्यगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

धूर्तोऽतिभृत्यो गतचित्तबुद्धिर्निजैः सदोद्विग्नमना मनुष्यः ।
दिवाकरे शीतकरात्मजर्क्षे निरीक्षिते भास्करिणा प्रसूतौ॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य धूर्त, बहुत नौकरोंवाला, बुद्धिहीन और उद्विग्न चित्त होता है ॥ १९ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

पण्यैश्च पानीयभवैर्महार्थी पृथ्वीपतिर्वा सचिवश्च रौद्रः ।
भवेन्नरो जन्मनि चण्डरश्मौ कर्कटकस्थे शिशिरांशुदृष्टे २०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य जलसंबंधी व्यापार करके बड़ा धनवान, राजा वा राजमन्त्री तथा बड़ा उग्र (प्रचण्ड) होता है ॥ २० ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

स्वबन्धुवर्गे गतचित्तबुद्धिः शोफादिरोगैश्च भगंदरैर्वा ।
पीडा नराणां हि कुलीरसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे२१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य अपने बंधुवर्गोंसे चित्तको दूर करनेवाला और सूजनके रोग व भगन्दर रोग करके पीडित होता है ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

विद्यायशोमानविराजमानो भूपानुकंपाप्तमनोऽभिलाषः ।
निरस्तशत्रुश्च बुधेन दृष्टे कर्काटकस्थे द्युमणौ नरः स्यात् २२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें स्थित सूर्यको बुध देखता हो तो वह मनुष्य विद्या और यश तथा मानकरके विराजमान, राजाकी कृपासे मनकी अभिलाषाको प्राप्त और शत्रुओंकरके रहित होता है ॥ २२ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

कुलाधिकश्चामलकीर्तिशाली भूपालसम्प्राप्तमहापदार्थः ।
भवेन्नरः शीतकरर्क्षपाते दिवामणौ वाक्पतिवीक्ष्यमाणे ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें स्थित सूर्यको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य अपने कुलमें श्रेष्ठ, निर्मलयशवाला एवं राजाकरके बड़े पदको प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिः परस्य कृत्ये हृदये विषादः ।
निशाकरागारकृताधिकारे दिवाकरे शुक्रनिरीक्ष्यमाणे ॥ २४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रीके आश्रयसे वस्त्र और धनको प्राप्त करनेवाला और पराये कार्यमें हृदयमें विषाद करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ चन्द्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

कदन्नान्वितः पिशुनोऽन्यकार्ये स्यादंतरायश्चपलस्वभावः ।
क्लेशी नरः शीतकरर्क्षसंस्थे दिवामणौ मंदनिरीक्ष्यमाणे ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य खराब अन्नवाला है दुःखी और पराये कार्यमें विघ्न डालनेवाला चपल स्वभाववाला और क्लेशी होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

धूर्तो गर्वितः क्षितिपालमान्यो धनोपलब्धापिपुनः प्रसिद्धः ।
सिंहे दिनेशे प्रसूतौ नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ २६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य धूर्त और गम्भीर राजासे मानको पानेवाला, धनकी माप्तिसे शक्तिशाली, एवं प्रसिद्ध होता है ॥ २६ ॥

अथ निजागारगते रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

नानाङ्गनाप्रीतिरतीव धूर्तः कफात्मकः क्रूरतरश्च शूरः ।
महोद्यमः स्यान्मनुजः प्रधानः सिंहस्थितेऽर्के कुसुतेन दृष्टे ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला, अत्यन्त धूर्त, कफ प्रकृतिवाला और अत्यन्त क्रूर तथा शूरवीर, उद्यमी होता है ॥ २७ ॥

अथ निजागारगते रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

धूर्तो नृपानुव्रजनः सुसत्त्वो विद्वत्प्रियो लेखनतत्परश्च ।
भवेन्नरः केसरिणि प्रयाते दिवामणौ सौम्य निरीक्ष्यमाणे॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य धूर्त, राजाकी आज्ञामें चलनेवाला, बलवान्, पंडितोंमें प्रीति करनेवाला और लेखक होता है ॥ २८ ॥

अथ निजागारगते रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्ता स्वजने प्रियश्च ।
भवेन्नरो देवपुरोहितेन निरीक्षितेऽर्के मृगराजसंस्थे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य देवताओंके स्थान, बगीचा और तालाब बावड़ीका बनानेवाला तथा अपने जनोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ निजागारगते रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

त्वग्दोषरोपापयशोऽभिभूतो गतोत्सवः स्वीयजनोज्झितश्च ।
स्यान्मानवः सत्यदयाविहीनः पञ्चाननेऽर्के भृगुजेन दृष्टे ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य त्वचाके दोषवाला, क्रोधसहित, अपयशका भागी उत्सव रहित, अपने जनों करके त्यागा हुआ, सत्य और दयारहित होता है ॥ ३० ॥

अथ निजागारगते रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

शठो नरः कार्यविघातकर्ता संतापयेदात्मजनांश्च नूनम् ।
नरो मृगेंद्रोपगते दिनेशे दिनेशपुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसको शनि देखता हो तो वह मनुष्य शठ, कामका बिगाडनेवाला, अपने कुटुम्बोंको देनेवाला होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

कामकांतिसुतसौख्यसमेतो वाग्विलासकुशलः कुलशाली।
स्यान्नरः सुरपुरोहितभस्थे भास्करे हिमकरेण हि दृष्टे ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य धन मीन राशिमें बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य शोभायमान देहवाला, पुत्रसौख्यसहित, वाणीविलासमें कुशल एवं कुटुम्बवाला होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्।

संग्रामसंप्राप्तयशोविशेषो वक्ता विमुक्तानुजनानुसंगः।
स्थिराश्रमो जीवगृहस्थितेऽर्के भौमेन दृष्टे पुरुषः प्रचण्डः ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य संग्राममें विशेष यशको पानेवाला तथा वक्ता होता और अपने मनुष्यके संगसे रहित स्थिर आजीविका करनेवाला और प्रचण्ड होता है ॥ ३३ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्।

धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञः सद्वाक्यमंत्रादिविधिप्रवीणः।
सतां मतः स्यात्पुरुषो दिनेशे सौम्येक्षिते जीवगृहोपयाते ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन और मीन राशिमें बृहस्पति बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य धातुक्रिया और काव्य, कला और कथाओंका जाननेवाला, श्रेष्ठ वाक्य और श्रेष्ठ मंत्रादिकी विधिमें चतुर तथा सत्पुरुषोंसे पूजित होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्।

नृपालमन्त्री कुलभूमिपालः कलाविधिज्ञो धनधान्ययुक्तः।
विद्वान्पुमान्भानुमतीज्यगेहे संदृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ ३५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें सूर्य बैठा हो और बृहस्पति करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, अपने कुलमें राजा, कलाकी विधि जाननेवाला और धन धान्य सहित विद्वान् होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्।

सुगंधमाल्यांबरचारुयोषाभूषाविशेषानुभवाप्तसौख्यः।
भवेन्नरो देवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतने दानववन्द्यदृष्टे ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन और मीन राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य सुगंधवाली माला और सुगंधित वस्त्र धारण करनेवाला, सुन्दर स्त्री और आभूषणोंका सौख्य भोगता है ॥ ३६ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्।

परान्नभुङ्नीचनरैः प्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिकरो नरः स्यात्।
सूर्य्ये सुराचार्यगृहे प्रयाते निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ ॥ ३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन और मीनराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य पराये अन्नको भोजन करनेवाला, नीचपुरुषोंमें प्रवृत्ति करनेवाला और चौपायोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ ३७ ॥

अथ शनिगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

नारीप्रसङ्गेन गतार्थसौख्यो मायापटुश्चंचलचित्तवृत्तिः।
भवेन्मनुष्यः शनिवेश्मयाते सहस्ररश्मौ हिमरश्मिदृष्टे ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर और कुंभ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य स्त्रीके संगसे धन और सौख्यका नाश करनेवाला, माया करनेमें चतुर और चञ्चलचित्तवाला होता है ॥ ३८ ॥

अथ शनिगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्।

परकलहहतार्थो व्याधिवैरप्रतप्तस्त्वतिविकलशरीरोऽत्यंतचिंतासमेतः। भवति ननु मनुष्यः संभवे तिग्मरश्मौ गतवति सुतगेहे दृष्टदेहे कुजेन ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य शत्रुओंसे झगड़ा करके धनको नाश करनेवाला और व्याधि वैर करके दुःखी, अत्यन्त व्याकुल देहवाला और बहुत चिन्तावाला होता है ॥ ३९ ॥

अथ शनिगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्।

क्लीबस्वभावः परचित्तहारी साधूज्झितः शूरतरो नरः स्यात्।
दिवाकरे शीतकरात्मजेन दृष्टे प्रसूतौ शनिमंदिरस्थे ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर व कुंभ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको

बुध देखता हो तो वह मनुष्य द्विजोंकेसा स्वभाववाला, पराये चित्तको हरनेवाला, साधुओं करके रहित और शूरवीर होता है ॥ ४० ॥

अथ शनिगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्।

सत्कर्मकर्त्ता मतिमान्बहूनां समाश्रयश्चारुयशा मनस्वी।
स्यान्मानवो भानुसुतालयस्थे भानौ च वाचस्पतिना प्रदृष्टे ॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर अथवा कुम्भराशिमें सूर्य बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, बुद्धिमान, बहुत पुरुषोंका पालनेवाला और श्रेष्ठ यशवाला, मनस्वी होता है ॥ ४१ ॥

अथ शनिगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्।

शङ्खप्रवालामलरत्नवित्तं वराङ्गनाभ्योऽपि धनोपलब्धिम्।
करोति भानुर्ननु मानवानां शन्यालयस्थो भृगुजेन दृष्टः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर, कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य शंख, मूंगा, निर्मल रत्न धनसे संपन्न और सुन्दर स्त्रियों द्वारा धनकी प्राप्ति करनेवाला होता है ॥ ४२ ॥

अथ शनिगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्।

प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षः क्षोणीपतिप्रीतिमहाप्रतिष्ठः।
प्रसन्नमूर्तिः प्रभवेन्मनुष्यः शन्यालयेऽर्के शनिना प्रदृष्टे ॥४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिमें सूर्य बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य बड़े प्रतापसे शत्रुओंका जीतनेवाला और राजाके प्रेमसे बड़ी प्रतिष्ठाको प्राप्त प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ ४३ ॥

इति मेषादिगृहे रवौ दृष्टिफलम्।

अथ मेषादिगृहे चन्द्रमसि ग्रहदृष्टिफलम्। तत्रादौ मेषे शशाङ्के सूर्यदृष्टिफलम्।

दयान्वितोऽपि मृदुनेत्रवान् धीरो धनार्थी धनगौरवाढ्यः।
नरो भवेन्मङ्गलभाग्नरेन्द्रो मेषे शशाङ्के नलिनीशदृष्टे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चन्द्रमा बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य दयावान्, नम्र अर्थात् नम्र, धनवान्, राजा ... और ... होता है ॥ १ ॥

अथ मेषगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्।

निरन्तरं साहसकर्म कदाचिन्न्यान्मनुजः ... महादुराग्रही।
... हिंसा ... मेषे शशाङ्के ... ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा बैठा हो और उसको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य विष, अग्नि, वात वा हथियारसे भयको पानेवाला, कभी कभी मूत्रकृच्छ्र रोगवाला, बड़े लोगोंसे आश्रय पानेवाला, दांत और नेत्रोंकी पीडा करके सहित होता है ॥ २ ॥

अथ मेषराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विलसदमलकीर्तिः सर्वविद्याप्रवीणो द्रविणगुणगणाढ्यः संमतः सज्जनानाम् । भवति ननु मनुष्यो मेषराशौ शशांके शशधरसुतदृष्टे श्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य प्रकाशवान्, निर्मल यशको प्राप्त करनेवाला, सर्व विद्याओंमें प्रवीण और धन तथा गुणोंके समूहकरके युक्त, सज्जनपुरुषोंकी सम्मति सहित और श्रेष्ठ संपत्ति करके प्रतिष्ठित होता है ॥ ३ ॥

अथ मेषराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा कुलानुभावाद्बहुसंपदाढ्यः । भवेन्नरः कैरविणो वनेशे मेषस्थिते गीष्पतिना प्रदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य राजाका मंत्री अथवा फौजका स्वामी होता है और अपने कुलके समान बहुत संपदाओं करके युक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

योषाविभूषाधनसूनुसौख्यभोक्ता सुवक्ता परिमुक्तरोषः । स्यात्पूरुषो मेषगतेऽमृतांशौ निरीक्ष्यमाणे भृगुणा गुणज्ञः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य स्त्री, आभूषण, धन और पुत्रके सौख्यको भोगनेवाला, श्रेष्ठ वक्ता, क्रोधरहित और गुणोंका जाननेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

गदयुतं हतचित्तसमुन्नतिं विगतवित्तमसत्यमसत्सुतम् । क्रियगतोऽर्कसुतेन निरीक्षितो हिमकरो नरं कुरुते खलम् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको शनैश्वर देखता हो तो वह मनुष्य रोगसहित, चित्तकी उन्नति करके नष्ट, धनहीन, झूंठ बोलनेवाला एवं दुष्टप्रकृतिवाला और दुष्टपुत्रोंवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

कृषिक्रियायां निरतो विधिज्ञः स्यान्मांत्रिको वाहनधान्ययुक्
नरो नितांतं चतुरः स्वकार्ये दृष्टे दिनेशेन वृषे शशांके ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो तो मनुष्य खेतीके काम करनेमें तत्पर और खेतीकी विधिको जाननेवाला, मंत्री वाहन और धान्य करके युक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ वृषराशिगते भौमदृष्टिफलम् ।

कामातुरश्चित्तहरोङ्गनानां स्यात्साधुमित्रः सुतरां पवित्रः ।
प्रसन्नमूर्तिश्च नरो वृषस्थे शीतद्युतौ भूमिसुतेन दृष्टे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो तो मनुष्य कामातुर, स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाला, सत्पुरुषोंका मित्र, अतिपवित्र और प्रसन्न मूर्ति होता है ॥ ८ ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं विधिज्ञं समेतं हर्षान्वितं भूतहिते रतं च ।
गुणाभिरामं मनुजं प्रकुर्याद्वृषे शशांकः शशिजेन दृष्टः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो तो वह चतुर, विधियोंका जाननेवाला, कृपालु, हर्षयुक्त, जीवोंके हित करनेमें तत्पर गुणों करके सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

जायात्मजानन्दयुतं सुकीर्तिं धर्मक्रियायां निरतं च पित्रोः ।
भक्तौ प्रसक्तं मनुजं प्रकुर्याद् वृषस्थितेन्दुर्गुरुणा प्रदृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो तो मनुष्य स्त्री और पुत्रोंके आनंद सहित, श्रेष्ठ कीर्तिवाला, धर्म क्रियामें तत्पर माता पिताकी भक्तिमें आसक्तचित्तवाला होता है ॥ १० ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

भूषणाम्बरगृहासनशय्यागंधमाल्यचतुरंगिसुखानि ।
आतनोति सततं मनुजानां चन्द्रमा वृषगतो भृगुदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य भूषण वस्त्र गृह भोजन सुगंधिवाला और चौपायोंके सुखसहित होता है ॥ ११ ॥

अथ वृषराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

कलानिधिः पूर्वदले वृषस्य शनीक्षितश्चेन्निधनं जनन्याः ।
करोति सत्यं मुनिभिर्यदुक्तं तथापरार्धे खलु तातघातम् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिके पूर्वभागमें चन्द्रमा बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो उस मनुष्यकी माता मृत्युको प्राप्त होती है और जो वृषराशिके उत्तरार्द्धभागमें चन्द्रमा बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो उसके पिताका नाश करता है यह मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १२ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं सुशीलं द्रविणेन हीनं क्लेशाभिभूतं सततं करोति ।
नरं च सर्वोत्सवदं प्रसूतौ द्वन्द्वे स्थितो भानुमता च दृष्टः॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य चतुर, श्रेष्ठ शीलवाला, धनहीन, निरन्तर क्लेशसहित और सम्पूर्ण उत्सवोंको प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम् ।

उदारदारं चतुरं च शूरं प्राज्ञं च सुज्ञं धनवाहनाद्यैः ।
युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेन्दुर्निरीक्षितो जन्मनि भूसुतेन॥ १४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य उदारचित्तवाला, चतुर, शूरवीर, बुद्धिमान्, सुज्ञ और धनवाहनादिसे युक्त होता है ॥ १४ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

धीरं सदाचारमुदारसारं नरं नरेन्द्राप्तधनं करोति ।
निशाधिनाथो मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेन दृष्टः १५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य धैर्यवान, हमेशा आचारसहित, उदार,राजाकरके धनको प्राप्त करता है॥१५॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

विद्याविवेकान्वितमर्थवन्तं ख्यातं विनीतं सुतरां सुपुण्यम् ।
करोति मर्त्यं मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीशो गुरुणा प्रदृष्टः१६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको भौम देखता हो वह मनु
राजाका मंत्री तथा धन, वाहन, पुत्र, स्त्रीके सुखसहित होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम्।

धनाङ्गनावाहननन्दनेभ्यः सुखप्रपूरं हि नरं करोति।
द्विजाधिराजो मृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य
धन, स्त्री तथा वाहन पुत्रादिकोंके सुखसे पूर्ण होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम्।

बहुश्रुतं विस्मृतसाधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेः प्रधानम्।
चन्द्रो मृगेन्द्रोपगतोऽमरेंद्रोपाध्यायदृष्टिः परिसूतिकाले॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको गुरु देखता हो वह मनुष्य
बहुश्रुत, साधुवृत्तको भूलनेवाला और राजाका मंत्री होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्।

स्त्रीवैभवं वै गुणिनं गुणज्ञं प्राज्ञं विधिज्ञं कुरुते मनुष्यम्।
पीयूषरश्मिर्जनने यदि स्यात्पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य
स्त्रीप्रयुक्त वैभवसहित, गुणवान्, गुणोंका जाननेवाला, चतुर और विधिका
जाननेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम्।

कांतावियुक्तः कृषिकर्मदक्षो दुर्गाधिकारी हि नरोऽल्पकार्थः।
सिंहोपयाते सति शीतभानौ निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य
स्त्री रहित, खेती करनेमें चतुर, राजाके किलेका स्वामी और थोडे धनवाला
होता है ॥ ३० ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम्।

भूमीशकोशाधिकृतं सुवृत्तं भार्यावियुक्तं गुरुभक्तियुक्तम्।
जातं च कन्याश्रितशीतरश्मिस्तनोति जन्तुं खररश्मिदृष्टः॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा हो और उसको सूर्य
देखता हो वह मनुष्य राजाके खजानेका मालिक, श्रेष्ठ वृत्तिवाला, स्त्रीरहित और
गुरुकी भक्तिमें तत्पर होता है ॥ ३१ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

हिंसापरं शूरतरं सकोपं नृपाश्रितं लब्धजयं रणाद्यौ ।
कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टो मनुजं करोति ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा हो उसको मङ्गल देखता हो वह मनुष्य हिंसामें तत्पर, अति शूरवीर, क्रोधसहित, राजाका आश्रय करनेवाला और संग्राम आदिमें जयको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

ज्योतिर्विद्याकाव्यसंगीतविद्यं प्राज्ञं युद्धे लब्धकीर्तिं विनीतम् ।
कुर्यान्नूनं मानवं मानवंतं कन्यास्थोऽब्जश्चेंदुजेन प्रदृष्टः ॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बैठा हो उसको बुध देखता हो वह मनुष्य ज्योतिश्शास्त्र और काव्य तथा सङ्गीत विद्याओंका जाननेवाला, चतुर संग्राममें यशको प्राप्त और नम्रतासहित होता है ॥ ३३ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

भूरिबंधुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकीर्तिसंयुतम् ।
मानवं हि कुरुतेऽङ्गनाश्रितश्चंद्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चन्द्रमा बैठा हो उसको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य बहुत भाइयोंवाला, राजाका प्यारा और श्रेष्ठ वृत्ति करके सुन्दर यशवाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

विलासिनीकेलिविलासचित्तं कांताश्रितं भूपतिलब्धवित्तम् ।
कुर्यान्नरं शीतकरः कुमार्यां स्थितः सितेन प्रविलोकितश्च॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा हो उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य वेश्याके साथ विलास करनेमें चित्तवाला, स्त्रीका आश्रित और राजाकरके धनको प्राप्त करता है ॥ ३५ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

निष्किञ्चनं हीनमतिं नितांतं स्त्रीसंश्रयादाप्तधनं जनन्या ।
हीनं प्रकुर्यात्खलु कन्यकायां गतो मृगांकोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य धनहीन, बुद्धिरहित, निरंतर स्त्रीके आश्रयसे धनको प्राप्त करनेवाला और मातासे हीन होता है ॥ ३६ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

सदाटनः सौख्यधनैर्विहीनः सदङ्गनासूनुजनैर्विहीनः ।
मित्रैरमित्रैश्च नरोऽतितप्तस्तुलाधरे शीतकरेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य हमेशा भ्रमण करनेवाला, सुख और धनसे हीन श्रेष्ठ स्त्री और पुत्रोंसे रहित, मित्र और शत्रुओंसे संतापको प्राप्त होता है ॥ ३७ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

बुद्ध्या परार्थाकरणैकचित्तं मायासमेतं विषयाभितप्तम् ।
करोति जातं हि तुलागतेंदुर्निरीक्ष्यमाणो धरणीसुतेन ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य बुद्धिकरके दूसरेके धनमें चित्त करनेवाला, मायासहित और विषयोंसे संतापको प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

कलाविधिज्ञं धनधान्ययुक्तं वक्तृत्वविद्याविभवैः समेतम् ।
कुर्य्यान्नरं शीतकरस्तुलास्थः प्रसूतिकाले शशिजेन दृष्टः ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य कलाओंकी विधिका जाननेवाला, धनधान्यसहित, बोलनेकी विद्या और वैभवसहित होता है ॥ ३९ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

विचक्षणो वस्त्रविभूषणेषु क्रयेऽथवा विक्रयताविधाने ।
तुलाधरे शीतकरो नरः स्याद्दृष्टः शुनासीरपुरोहितेन ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य वस्त्र और आभूषणोंके कार्यमें चतुर तथा वस्त्र और आभूषणोंके लेने और बेचनेमें चतुर होता है ॥ ४० ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

भाजनस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थः स्यात्पार्थिवानां कृपया समेतः ।
हृष्टो नरः पीनकलेवरश्च तुले मृगांके भृगुजेन दृष्टे ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य, अनेक उद्यमवाले [illegible] करनेवाला, राजाओंकी कृपासे [illegible] और पुष्ट देहवाला होता है ॥ ४१ ॥

अथ तुलाराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्।

धनेश्च धान्यैर्वरवाहनैश्च युतोऽपि हीनो विषयोपभोगैः।
भवेन्नरस्तौलिनि जन्मकाले कलानिधौ भानुतनूजदृष्टे ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य धन और धान्य तथा श्रेष्ठ वाहनों करके सहित और विषयभोगसे रहित होता है ॥ ४२ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तिहीनं धनिनं जनानामसह्यमत्यंतकृतप्रयासम्।
सेनानिवासं मनुजं प्रकुर्य्यात्ताराधिपःकौर्प्यगतोऽर्कदृष्टः ॥४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वृत्तिरहित, धनवान्, मनुष्योंको असह्य, अत्यन्त उद्यम करनेवाला और सेनामें रहनेवाला होता है ॥ ४३ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्।

रणाङ्गनावाप्तयशोविशेषो गभीरतागौरवसंयुतश्च।
भूपानुकंपासमुपात्तवित्तो नरोऽलिनीन्दौ क्षितिजेन दृष्टे ॥४४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य युद्धमें विशेष करके यशको प्राप्त, गम्भीरता, गौरव सहित और राजाकी कृपासे धनको पैदा करनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्।

वाग्विलासकुशली रणशीलो गीतनृत्यनिरतश्च नितांतम्।
कूटकर्मणि नरो निपुणः स्याद्वृश्चिके शशिनि चन्द्रजदृष्टे४५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता हो वह मनुष्य बोलनेमें चतुर, युद्ध करनेवाला, गीत और नृत्यमें तत्पर, झूंठे कर्मोंमें बडा चतुर होता है ॥ ४५ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्।

लोकानुरूपः सुतरां सुरूपः सत्कर्मकृद्वित्तविभूषणाढ्यः।
स्यान्मानवोजन्मनिशीतरश्मौ संस्थेऽलिनीज्येननिरीक्ष्यमाणे ४६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य संसारकी इच्छाके समान चलनेवाला, सुन्दर रूपवान्, श्रेष्ठ कर्मोंका करनेवाला तथा धन और आभूषणोंकरके सहित होता है ॥ ४६ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिः समुदारकीर्तिः कूटक्रियाज्ञो धनवाहनाढ्यः ।
कांताहृतार्थः पुरुषोऽलियाते शीतद्युतौ दैत्यगुरुप्रदृष्टे ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालके वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता है वह प्रसन्नमूर्ति, उदार यशवाला, छल छिद्रको जाननेवाला, धन वाहनों सहित और स्त्री करके उसका धन नष्ट होता है ॥ ४७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

स्थानभ्रंशं दैन्यनाशाल्पवित्तं नीचापत्यासत्त्वयक्ष्मणको
कुर्याच्चंद्रः सूतिकालेऽलिसंस्थश्छायापुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयातः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता मनुष्य, स्थानभ्रष्ट, दीनताका नाश करनेवाला, थोडे धनवाला, नीच संतान बलहीन और राजयक्ष्मा रोगवाला होता है ॥ ४८ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसंपत्सद्वाहनान्याहवजं जयं च ।
नृपप्रसादं कुरुते नराणां ताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ॥ ४९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह बडे प्रतापवाला, उत्तम यशवाला, संपदा सहित, श्रेष्ठ वाहनोंवाला, संग्राममें जय पानेवाला और राजकृपासहित होता है ॥ ४९ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

सेनापतित्वं च महत्प्रतापं पद्मालयालंकरणोपलब्धिम् ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्क एष शरासनस्थोऽवनिजेन दृष्टः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको भौम देखता है मनुष्य सेनाका मालिक, बडे प्रतापवाला, लक्ष्मीका स्थान और आभूषणोंका करनेवाला होता है ॥ ५० ॥

अथ धनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

महार्घ्यनिलाभं बहुभृत्ययुक्तं कुर्यान्नरं ज्योतिषशिल्पविद्यम्
तुरङ्गजंघे हि कुरङ्गजन्मा कुरङ्गलक्ष्मप्रभवेण दृष्टः ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको बुध देखता है मनुष्य श्रेष्ठ वस्तुओंके विलास और बहुत नौकरवाला, ज्योतिष और शिल्पविद्या जाननेवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम्।

महापदस्थो धनवान्सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः।
धनुर्धरे शीतकरे प्रयाते निरीक्षिते शक्रपुरोहितेन ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य बड़े अधिकारको प्राप्त, धनवान्, श्रेष्ठ वृत्तिवाला और सुंदर शरीरवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम्।

सुतानार्थात्यन्तसंजातधर्मः शश्वत्सौख्येनान्वितो मानवः स्यात्।
तारास्वामी चापगामी प्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्षणत्वं प्रयातः ॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य संतान, धन तथा धर्मको प्राप्त और निरंतर सौख्यसहित होता है ॥ ५३ ॥

अथ धनराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्।

सत्त्वोपेतं नित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारं मानवं च प्रचण्डम्।
कोदण्डस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टःसूतौशीतरश्मिःकरोति ॥५४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य बलसहित, नित्य शास्त्रमें आसक्त, श्रेष्ठवक्ता और प्रचंड प्रतापी होता है ॥ ५४ ॥

अथ मकरराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्।

गतधनो मलिनश्चलनप्रियो हतमतिःखलु दुःखितमानसः।
हिमकरे मकरे च दिवाकरे क्षितितनौ हि नरः प्रभवेद्यदि ॥ ५५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह मनुष्य धनहीन, मलिन, भ्रमणमें प्रीति करनेवाला, बुद्धिहीन और निश्चय करके दुःखित होता है ॥ ५५ ॥

अथ मकरराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्।

अतिप्रचण्डो धनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्च दारात्मजसौख्ययुक्तः।
स्यान्मानवो वैभवभाङ्नितांतं मृगे मृगांकेऽवनिजेन दृष्टे ॥ ५६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चन्द्रमाको मंगल देखता हो वह मनुष्य अत्यंत प्रचंड, धन और वाहनकरके सहित, चतुर, स्त्री और पुत्रोंके सुखसहित और निरन्तर वैभवकरके सहित होता है ॥ ५६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो वह कामदेवके सौख्यको अत्यंत प्राप्त करनेवाला, फौजका मालिक, बहुत धनी और श्रेष्ठकर्मोंकी सिद्धिको प्राप्त होता है ॥ ६७ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

पराभिभूत कुटलाधिसख्यं सौख्योज्झितं पापरतं नितांतम् ।
करोति जातं हि निधिः कलानां मीनस्थितो भूमिसुतेन दृष्टः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको मङ्गल देखता हो वह शत्रुओंसहित, कुलटा स्त्रीसे मित्रता करनेवाला, सुखसे रहित और निरन्तर पापमें तत्पर होता है ॥ ६८ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

वरांगनासूनुसुखानि नूनं मानं धनं भूमिपतेः प्रसादम् ।
कुर्यान्नराणां हरिणांक एष वैसारिणस्थो ज्ञनिरीक्ष्यमाणः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको बुध देखता हो वह श्रेष्ठ स्त्री पुत्रोंके सुखोंको प्राप्त और राजाकी कृपासे मान तथा धन प्राप्त करता है ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

उदारदेहं सुकुमारदेहं सद्देहिनीसूनुधनादिसौख्यम् ।
नृपं विदध्यात्पृथुरोमगामी तमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत् ॥ ७० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य उदारचित्त, सुकुमार, श्रेष्ठ स्त्री और पुत्र धनादिका सौख्य पानेवाला राजा होता है ॥ ७० ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

सद्गीतविद्यादिरतं सुवृत्तं विलासिनीकेलिविलासशीलम् ।
करोति मर्त्यं तिमियुग्मराशौ शीतद्युतिर्जन्मनि शुक्रदृष्टः ॥ ७१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत, श्रेष्ठ विद्यादिमें तत्पर, श्रेष्ठ वृत्तिवाला और स्त्रीके साथ विलास करनेमें शील जिसका ऐसा होता है ॥ ७१ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

कामातुरं दारसुतैर्विहीनं नीचांगनासख्यमविक्रमं च ।
नीहाररश्मिः शफरं प्रपन्नो नरं विदध्याद्रविसूनुदृष्टः ॥ ७२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमाको शनैश्वर देखता हो वह मनुष्य मलातुर, स्त्री और पुत्रोंसे रहित, नीच स्त्रियोंके साथ मित्रता करनेवाला और चलन होता है ॥ ७२ ॥ इति मेषादिराशौ चन्द्रमतिग्रहदृष्टिफलम्।

अथ मेषादिराशौ भौमग्रतिग्रहदृष्टिफलम्–

तत्र स्वभे भौमे रविदृष्टिफलम्।

प्राज्ञः सुवक्ता पितृमातृभक्तो धनिप्रधानोऽतितरामुदारः।
नरो भवेदात्मगृहे महीजे सरोजिनीराजनिरीक्ष्यमाणे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो वह मनुष्य चतुर, श्रेष्ठ वक्ता, पिताका भक्त, धनवानोंमें श्रेष्ठ और अत्यन्त उदार होता है ॥ १ ॥

अथ स्वभे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्।

अन्याङ्गनासक्तमतीव शूरं कृपाविहीनं हतचौरवर्गम्।
नरं प्रकुर्यान्निजधामगामी भूमीतनूजो द्विजराजदृष्टः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य परायी स्त्रीमें आसक्त, बड़ा शूरवीर, कृपारहित और चोरोंको मारनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ स्वभे भौमे बुधदृष्टिफलम्।

पण्याङ्गनालंकरणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी।
भवेन्नरः स्वर्क्षगते प्रसूतौ क्षोणीसुते सोमसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिकराशिमें मंगल बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य वेश्याके अलंकार और वस्त्र धनवानेमें एक चित्त रखनेवाला, बड़ा चतुर और पराया धन हरनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ स्वभे भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

वंशेऽवनीशो धनवान्सकोपो नृपोपचारः कृतचौरसख्यः।
आरे निजागारगते नरः स्यत्सूतौ सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषवृश्चिक राशिमें मङ्गल बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य अपने वंशमें राजा, धनवान, क्रोधसहित, राजचिह्नों सहित और चोरोंसे मित्रता करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ स्वभे भौमे भृगुदृष्टिफलम्।

भूयोभूयो भोजनौत्सुक्ययुक्तः कांताहेतोर्यानचिन्ता नितांतम्।
प्राणी पुण्ये कर्मणि प्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षे भौमे भार्गवेण प्रदृष्टे

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा हो उसको देखता हो तो वह मनुष्य वारंवार भोजनकी इच्छा करनेवाला और मीरे... मफरकी हमेशा चिंता करता है ॥ ५ ॥

अथ स्वभे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

मित्रोज्झितं मातृवियोगतप्तं कृशाङ्गयष्टिं विषमं कुटुम्बे ।
ईर्ष्याविशेषं पुरुषं विदध्यात्कुजः स्वभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मङ्गल बैठा हो वह ... मित्रोंसे त्यागा हुआ, माताके वियोगसे संतापको प्राप्त, दुर्बल देहवाला, कुटुंब विरोधी और बहुत ईर्ष्यासहित होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

कांतामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिं विपक्षम् ।
प्रचण्डकोपं कुरुते मनुष्यं कुजः सितागारगतोऽर्कदृष्टः ॥ ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिगत चन्द्रमाको सूर्य देखता हो मनुष्य स्त्रीके मनकी वृत्तिसे रहित, बड़े बड़े वन और पर्वतोंमें रहनेकी इच्छा करनेवाला, शत्रुहीन और बड़ा क्रोधी होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

अम्बाविरुद्धः खलु युद्धभीरुर्बह्वङ्गनानामपि नायकश्च ।
स्यान्मानवो भूतनये सितर्क्षे नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मङ्गल बैठा हो वा उसको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य माताके विरुद्ध, निश्चय कर संग्राममें डरपोक और बहुत स्त्रियोंका स्वामी होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

शास्त्रप्रवृत्तिः कलहप्रियः स्यादनल्पजल्पोऽल्पधनागमश्च ।
सत्कायकांतिः पृथिवीतनूजे सितालयस्थे शशिजेन दृष्टे ॥ ९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मङ्गल बैठा हो व उसको बुध देखता हो वह मनुष्य शास्त्रमें प्रवृत्तिवाला, लड़ाई जिसको प्यारी, बहुत बोलनेवाला, थोड़े धनका आगम हो और उसका देह शोभायमान होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

बंधुप्रिये स्यान्निरतोऽतिभाग्यः सद्गीतिनृत्यादिविधिप्रवीणः ।
क्षोणीतनूजे भृगुजर्क्षयाते निरीक्षिते वाक्पतिना प्रसूतौ ॥ १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें स्थित मंगलको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य भाइयोंकी प्रीतिमें तत्पर अत्यंत भाग्यवान् और गीतनृत्यादि विधिमें चतुर होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

सुश्लाघ्यनामा क्षितिपालमंत्री सेनापतिर्वा बहुसौख्ययुक्तः।
स्यान्मानवः शुक्रगृहोपयाते निरीक्षिते भूमिसुतेन तेन॥ ११ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें मंगल बैठा हो व उसको शुक्र देखता हो वह मनुष्य प्रशंसाके योग्य, राजाका मंत्री अथवा फौजका मालिक और बहुत सौख्यसहित होता है ॥ ११ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम्।

ख्यातो विनीतो धनवान्सुमित्रः पवित्रबुद्धिः कृतशास्त्रयत्नः।
नरः पुरग्रामपतिः सितर्क्षे भूनंदने भानुसुतेन दृष्टे ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य प्रसिद्ध, नम्रतासहित, धनवान्, श्रेष्ठमित्रोंवाला, पवित्रबुद्धि, शास्त्रमें यत्न करनेवाला और नगर वा ग्रामका पति होता है ॥ १२ ॥

अथ बुधगृहे भौमे रविदृष्टिफलम्।

विद्याधनैश्वर्ययुतं ससत्त्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलम्।
कुर्यान्नरं सोमसुतालयस्थः क्षोणीसुतः सूर्यनिरीक्ष्यमाणः॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधकी राशि (मिथुन, कन्या) में मंगल बैठा हो उसको सूर्य देखता हो वह मनुष्य विद्या धन ऐश्वर्यकरके सहित, बलयुक्त, वनपर्वतोंमें तथा किलेमें रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधगृहे भौमे चंद्रदृष्टिफलम्।

संरक्षणे भूपतिना नियुक्तं कांतारतिं सत्त्वयुतं सतोषम्।
भूमीसुतः संजनयेन्मनुष्यं बुधर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या, मिथुन राशिमें मंगल बैठा हो उसको चंद्र देखता हो वह मनुष्य राजाद्वारा अपनी रक्षाके लिये नियुक्त किया हुआ, स्त्रीमें तत्पर, बलसहित तथा संतोषवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ बुधगृहे भौमे बुधदृष्टिफलम्।

अनल्पजल्पं गणितप्रगल्भं काव्यप्रियं चानृतचारुवाक्यम्।
दौत्ये प्रयासैः सहितं प्रकुर्याद्धरातनूजो ज्ञगृहे ज्ञदृष्टः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें मंगल बैठा हो उसको देखता हो वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, गणितशास्त्रमें चतुर, काव्य प्रिय प्यारा, झूठी रचना करके सुन्दरवाणी बोलनेवाला, दूतोंके काम करनेमें उद्यमी होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधगृहे भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

अन्यदेशगमनं व्यसनाद्यैः संयुतं हि कुरुते नरमुच्चैः।
सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्दानवारिसचिवेन च दृष्टः ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन, कन्याराशिमें मंगल बैठा हो व उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य परदेशका भ्रमण करनेवाला, व्यसनादि उच्चस्थानको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधगृहे भौमे भृगुदृष्टिफलम्।

वस्त्रान्नपानीयसुखैः समेतं कांताप्रसक्तं सुतरां समृद्धम्।
कुर्यान्नरं भूमिसुतो बुधर्क्षसंस्थः प्रदृष्टो भृगुनन्दनेन ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें मंगल बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो वह मनुष्य वस्त्र अन्नपानीके सुखसे सहित, स्त्रीमें आसक्त और निरंतर समृद्धियों सहित होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधगृहे भौमे शनिदृष्टिफलम्।

अतीव शूरो मलिनोऽलसश्च दुर्गाचलारण्यविलासशीलः।
भवेन्नरो भास्करपुत्रदृष्टे धरासुते सोमसुतालयस्थे ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधकी राशि मिथुन वा कन्यामें मंगल बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य बड़ा शूरवीर, मलिन, आलसी और किला कोट पर्वत जंगलोंमें विलास करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे रविदृष्टिफलम्।

पित्तप्रकोपार्तियुतोऽतिधीरो दण्डाधिकारी सुतरां महौजाः।
भवेन्नरः कर्कगते महीजे निरीक्ष्यमाणे रविणा प्रसूतौ ॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल कर्क राशिमें बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो वह मनुष्य पित्तकोपसे दुःखी अत्यन्त धैर्यवान, फौजदारीका अधिकारी और निरंतर बडे बलवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्।

गदाभिभूतो गतवस्तुशोको विहीनवेषो गतसाधुवृत्तः।
भवेन्नरः कर्कटगे महीजे सोमेन सूतौ च निरीक्ष्यमाणे ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो व उसको चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य रोगकरके सहित, नष्ट चीजका शोच करनेवाला, कुरूपवान् और साधुवृत्तिसे हीन होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

मित्रैर्विमुक्तोऽल्पकुटुम्बभारः पापप्रचारः खलचित्तवृत्तिः ।
बुधेन दृष्टे सति कर्कटस्थे भौमे नरः स्याद्व्यसनाभिभूतः ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो वह मनुष्य मित्रोंकरके रहित, थोड़े कुटुंबवाला, पापका प्रचारक और दुष्टचित्तवाला और व्यसन करनेके कारण तिरस्कृत होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

नरेंद्रमंत्री गुणगौरवाढ्यो मान्यो वदान्यो मनुजः प्रसिद्धः ।
कुलीरसंस्थे तनये धरित्र्या निरीक्षिते चित्रशिखण्डिजेन ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य राजाका मंत्री, गुण और गौरवसहित, बड़े मान करके युक्त और प्रसिद्ध दानी होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

अर्थक्षयो दुर्व्यसनेन नूनं निरंतरानर्थसमुद्भवः स्यात् ।
भवेन्नराणां भृगुणा प्रदृष्टे त्वंगारके कर्कटराशिसंस्थे ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो व उसको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य बुरे कामोंमें धनको नष्ट करनेवाला और रातदिन बुरे कामोंका विचार करता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

कीलालधान्यादिधनः सुकांतिर्महीपतिप्राप्तधनो मनुष्यः ।
महीसुते कर्कटराशिसंस्थे निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य जलोत्पन्न धान्यसे धनवान्, श्रेष्ठ कांतिवाला और राजा करके धन प्राप्त करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थभौमे रविदृष्टिफलम् ।

हितप्रकर्ताऽभिमतेषु नूनं द्विषज्जनानामहितप्रदाता ।
वनाद्रिकुंजेषु कृतप्रचारः सिंहे महीजे रविणा प्रदृष्टे ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको सूर्य देखता हो तो वह अपने प्यारोंसे प्रीति करनेवाला और शत्रुओंको दुःख देनेवाला तथा वन कुञ्जोंमें रहनेवाला होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहस्थभौमे चन्द्रदृष्टिफलम्।

प्रपुष्टमूर्तिः कठिनस्वभावश्चाम्बाविनीतो निपुणः स्वकार्ये।
तीव्रः पुमांश्चारुमतिः प्रसूतौ सिंहे महीजे द्विजराजदृष्टे ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें मंगल बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य पुष्ट शरीरवाला, कठिन स्वभाव, मातामें नम्र, कार्यमें चतुर, तीव्र और सुन्दर बुद्धिवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थभौमे बुधदृष्टिफलम्।

सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापे विज्ञोऽपि लुब्धश्चलचित्तवृत्तिः।
स्वकार्यसिद्धौ निपुणो नरः स्यात्सिंहे महीजे शशिजेन दृष्टे ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको बुध देखता हो वह श्रेष्ठ काव्य और शिल्पादि कलाओंके समूहको जाननेवाला, लोभी, चंचल वृत्तिवाला और अपने कार्यके साधनमें चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

प्रशस्तबुद्धिर्नृपतेः सुहृच्च सेनाधिनाथोऽभिमतो बहूनाम्।
विद्याप्रवीणो हि नरः प्रसूतौ जीवेक्षिते सिंहगते महीजे ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला, राजाका मित्र, फौजका मालिक, बहुत मनुष्योंके मनोरथ पूर्ण करनेवाला और विद्यामें प्रवीण होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम्।

गर्वोन्नतोऽत्यन्तशरीरकांतिर्नानाङ्गनाभोगयुतः समृद्धः।
भूमीसुते सिंहगते प्रसूतौ निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको शुक्र देखता हो वह मनुष्य अभिमान करके ऊंचा, अत्यंत सुन्दर शोभायमान देहवाला, अनेक स्त्रियोंके साथ भोग करनेवाला और सम्पूर्णसमृद्धिसहित होता है ॥ २९ ॥

भवेन्निवासोऽन्यगृहेऽतिचिन्ता वृद्धाकृतित्वं द्रविणोज्झितत्वम्।
भवेन्नराणां धरणीतनूजे सिंहस्थिते भानुसुतेन दृष्टे ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य पराये घर वास करनेवाला, अत्यन्त चिन्ताकरके युक्त, बूढोंके समान स्वरूपवाला और धनहीन होता है ॥ ३० ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

वनाद्रिदुर्गेषु कृताधिवासं क्रूरं सभाग्यं जनपूजितं च ।
करोति जातं धरणीतनूजो जीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें बृहस्पति बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य वन, पर्वत किला कोटमें वास करनेवाला, क्रूरस्वभाववाला, भाग्यवान् और मनुष्यों करके पूजनीय होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

विद्वद्विधिज्ञं नृपतेरसह्यं कलिप्रियं सर्वनिराकृतं च ।
प्राज्ञं प्रकुर्य्यान्मनुजं धराजो जीवर्क्षगः शीतकरप्रदृष्टः॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो वह मनुष्य पण्डितोंकी विधिका जाननेवाला, राजाको नहीं माननेवाला, लड़ाई जिसको प्यारी और जनोंकरके त्यक्त, एवं बुद्धिमान् होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं च शिल्पे निपुणं सुशीलं समस्तविद्याकुशलं विनीतम् ।
करोति जातं खलु लोहितांगः सौम्येन दृष्टो गुरुगेहयातः॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिवर्ती मंगलको बुध देखता हो वह मनुष्य चतुर, शिल्पविद्यामें निपुण, श्रेष्ठ शीलवान, सब विद्याओंमें चतुर और नम्रतायुक्त होता है ॥ ३३ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

कांतातिचिन्तासहितं नितांतमरातिवर्गैः कलहानुरक्तम् ।
स्थानच्युतं भूमिसुतः प्रकुर्य्याज्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः॥३४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और बृहस्पति करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य स्त्रीकी अत्यन्त चिन्ता करनेवाला, निरन्तर दुश्मनोंमें लड़ाई करनेवाला और स्थानसे भ्रष्ट होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

उदारचेता विषयानुरक्तो विचित्रभूषापरिभूषितश्च ।
भाग्यान्वितःस्यात्पुरुषोऽवनीजे जीवर्क्षगे दानवपूज्यदृष्टे ॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और रवि देखता हो तो वह मनुष्य उदार चित्तवाला, विषयोंमें आसक्त, अनेक गहनों करके भूषित और भाग्यवान् होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

कायकांतिरहितश्च नितांतं स्थानसंचलनतोऽपि च दुःखी।
अन्यकर्मनिरतश्च नरः स्याज्जीवधाम्नि कुसुतेऽर्कजदृष्टे ॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा हो और शनि दृष्ट हो तो वह मनुष्य देहकी कांति करके रहित, अनेक स्थानोंमें भ्रमण दुःखी हो और पराये कार्यमें तत्पर होता है ॥ ३६ ॥

अथ शन्यागारगते भौमे रविदृष्टिफलम् ।

कलत्रपुत्रार्थसुखैः समेतं श्यामं सुतीक्ष्णं सुतरां च शूरम्।
कुर्यान्नरं भूतनयोऽर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतः प्रसूतौ ॥ ३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत मंगलको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य निरन्तर स्त्री पुत्र धनके सुख करके सहित तरुणस्वरूप, तीक्ष्ण और शूरवीर होता है ॥ ३७ ॥

अथ शन्यागारगते भौमे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

सद्भूषणं मातृसुखेन हीनं स्थानच्युतं चञ्चलसौहृदं च ।
उदारचित्तं प्रकरोति जातं कुजोऽर्कजस्थः शशिना प्रदृष्टः॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ आभूषणों करके सहित, माताके सुखसे हीन, स्थानभ्रष्ट, चञ्चल मित्रतावाला और उदारचित्त होता है ॥ ३८ ॥

अथ शन्यागारगते भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

प्रियोक्तियुक्तोऽटनवित्तलब्धः सत्त्वान्वितः कैतवसंयुतश्च ।
अभीर्नरो मंदगृहं प्रयाते पृथ्वीसुते चन्द्रसुतेन दृष्टे ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको बुध देखता हो तो वह प्रियवाणी बोलनेवाला, भ्रमण करनेसे धन प्राप्त करनेवाला बलसहित, जुए करके सहित और भयरहित होता है ॥ ३९ ॥

अथ शून्यागारगते भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

दीर्घायुषं भूपकृपागुणाढ्यं बंधुप्रियं चारुशरीरकांतिम्।
कार्यप्रलापं जनयेन्मनुष्यं जीवेक्षितो मन्दगृहे महीजः ॥४०॥

जिस मनुष्यके मकर कुंभ राशिवर्ती मंगलको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य बड़ी उमरवाला, राजाकी कृपाकरके सहित, गुणकरके युक्त, भाइयोंको प्यारा, सुन्दर देहकी कांतिवाला और कार्यमें बहुत बोलनेवाला होता है॥ ४०॥

अथ शून्यागारगते भौमे भृगुदृष्टिफलम्।

सद्भोगसौभाग्यसुखैः समेतः कांताप्रियोऽत्यंतकलिप्रियश्च।
क्षोणीसुते मन्दगृहं प्रयाते निरीक्ष्यमाणे भृगुणा नरः स्यात्॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत मंगलको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ भोग सौभाग्य सुखकरके सहित, स्त्रियोंका प्यारा और जिसको कलह अत्यन्त प्यारा ऐसा होता है॥ ४१॥

अथ शून्यागारगते भौमे शनिदृष्टिफलम्।

नृपात्तवित्तो वनिताविपक्षी बहुश्रुतोऽत्यन्तमतिः सकष्टः।
रणप्रियः स्याद्धरणीतनूजे मंदेक्षिते मंदगृहं प्रयाते॥ ४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भराशिगत मंगलको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य राजाकरके धनको प्राप्त करनेवाला, स्त्रीके साथ वैर करनेवाला, बहुश्रुत बड़ी बुद्धिवाला, कष्टसहित और संग्राम उसको प्यारा लगता है॥ ४२॥

इति मेषादिराशिगते भौमे ग्रहदृष्टिफलम्।

अथ मेषादिराशिगते बुधे ग्रहदृष्टिफलम्।

तत्र भौमगेहे बुधे रविदृष्टिफलम्।

बंधुप्रियं सत्यवचोविलासं नृपालसद्गौरवसंयुतं च।
करोति जातं क्षितिसूनुगेहसंस्थो बुधो भानुमता प्रदृष्टः॥ १॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य भाइयोंका प्यारा, सच्चा बोलनेवाला, विलासयुक्त, श्रेष्ठ राजाओंसे मान पानेवाला होता है॥ १॥

अथ भौमगृहे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्।

सद्गीतनृत्यादिरुचिः प्रकामं कांतारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः।
कौटिल्यभाक्स्यान्मनुजः कुजर्क्षे सोमात्मजे शीतकरप्रदृष्टे॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो और ... देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत नृत्यादिमें प्रीति करनेवाला, कामसहित, ... करनेवाला, वाहन और नौकरोंसे सहित और कुटिल होता है ॥ २ ॥

अथ भौमगृहे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

भूपप्रियं भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च ।
क्षुधान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको मंगल देखता हो मनुष्य राजाका प्यारा, बहुत धनवाला, शूरवीर, कलाओंमें चतुर, लड़ाई उद्यत और क्षुधाकरके सहित होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमगेहे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

सुखोपपन्नं चतुरं सुवाक्यं कांतासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम् ।
करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना प्रदृष्टः॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको बृहस्पति देखता वह मनुष्य सुख करके सहित, चतुर, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, स्त्री पुत्रादि और प्रसन्नचित्त होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमगेहे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

कांताविलासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम्
करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो तो और शुक्र देखता हो वह मनुष्य स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला, गुण और ... हित, मित्रोंका प्यारा, सुन्दरबुद्धिवाला एवं नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमगेहे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलोत्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिम् ।
करोति मर्त्यं हरणाङ्कसुनुर्भौमर्क्षसंस्थः शनिना प्रदृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ साहसवाला, क्रूरस्वभाववाला, कुलमें ... करनेवाला, प्रीति और श्रेष्ठ वृत्तिसे रहित होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रगेहे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकारातिरतं नितांतम् ।
शांतं सुचित्तं पुरुषं प्रकुर्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रयुतोऽर्कदृष्टः ॥७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बुध बैठा हो और सूर्य करके दृष्ट हो वह मनुष्य दरिद्र और दुःख तथा रोगों करके संतापित देहवाला, पराया उपकार करनेमें नितांत तत्पर, शांतस्वभाव और शुद्धचित्त होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्।

बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम्।
ख्यातं प्रकुर्यान्मनुजं हि सौम्यःशुक्रर्क्षसंस्थःशशिना प्रदृष्टः ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें बुध बैठा हो और चन्द्रमाकरके दृष्ट हो वह मनुष्य बहुत प्रपंच करनेवाला, धनधान्यसहित, दृढमतिज्ञावाला, राजाका मन्त्री और प्रख्यात होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विषयैश्च नूनम्।
कुर्यान्नरं सोमसुतः सितर्क्षे स्थितो धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ॥ ९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको मंगल देखता हो वह मनुष्य राजासे अपमान किया हुआ, रोगसे संतापित, मित्र और विषयोंसे रहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

देशोत्तमग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणज्ञं गुणिनं सुशीलम्।
कुर्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षसंस्थःसुराचार्यनिरीक्ष्यमाणः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य उत्तम देश, ग्राम तथा उत्तम नगरोंका स्वामी (राजा), चतुर, गुणोंका जाननेवाला, गुणवान् और श्रेष्ठशीलवाला होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

अतिसुललितवेषं वस्त्रभूषाविशेषै-
र्युवतिजनमनोज्ञं मन्मथोत्कर्षहर्षम्।
अतिचतुरमुदारं चारुभाग्यं च कुर्या-
द्भृगुगृहगतसौम्यो भार्गवेण प्रदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बुध बैठा हो और शुक्र करके दृष्ट हो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर वेषवाला, वस्त्र और भूषणोंसे युक्त, स्त्रियोंको प्रिय और कामदेवके उत्कर्षसे हर्षको प्राप्त, अत्यन्त चतुर, उदार और श्रेष्ठ भाग्यवाला होता है ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेप वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो और ... देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत नृत्यादिमें प्रीति करनेवाला, कामसहित, ... करनेवाला, वाहन और नौकरोंसे सहित और कुटिल होता है ॥ २ ॥

अथ भौमगृहे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

भूपप्रियं भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च ।
क्षुधान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेप वृश्चिक राशिगत बुधको मंगल देखता ... मनुष्य राजाका प्यारा, बहुत धनवाला, शूरवीर, कलाओंमें चतुर, लडाई ... उद्यत और क्षुधाकरके सहित होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमगेहे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

सुखोपपन्नं चतुरं सुवाक्यं कांतासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम् ।
करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना ...

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेप वृश्चिक राशिगत बुधको बृहस्पति देखे ... वह मनुष्य सुख करके सहित, चतुर, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, स्त्री पुत्रादि और प्रसन्नचित्त होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमगेहे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

कांताविलासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम् ।
करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेप वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो तो और ... शुक्र देखता हो वह मनुष्य स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला, गुण और ... हित, मित्रोंका प्यारा, सुन्दरबुद्धिवाला एवं नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमगेहे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलोत्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिम् ।
करोति मर्त्यं हरणाङ्गसूनुर्भौमर्क्षसंस्थः शनिना प्रदृष्टः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा हो और उसको ... शनि देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ साहसवाला, क्रूरस्वभाववाला, ... करनेवाला, प्रीति और श्रेष्ठ वृत्तिसे रहित होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रगेहे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकारानिरतं नितांतम् ।
शांतं शुचित्तं पुरुषं प्रकुर्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रयुतोऽर्कदृष्टः ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बुध बैठा हो और सूर्य करके दृष्ट
वह मनुष्य दरिद्र और दुःख तथा रोगों करके संतापित देहवाला, पराया उप-
ार करनेमें नितांत तत्पर, शांतस्वभाव और शुद्धचित्त होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम् ।
ख्यातं प्रकुर्यान्मनुजं हि सौम्यःशुक्रर्क्षसंस्थःशशिना प्रदृष्टः ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें बुध बैठा हो और चन्द्रमाकरके
ृ हो वह मनुष्य बहुत प्रपंच करनेवाला, धनधान्यसहित, दृढप्रतिज्ञावाला, राजाका
त्री और प्रख्यात होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विषयैश्च नूनम् ।
कुर्यान्नरं सोमसुतः सितर्क्षे स्थितो धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ॥ ९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको मंगल देखता हो वह
नुष्य राजासे अपमान किया हुआ, रोगसे संतापित, मित्र और विषयोंसे रहित
ता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

देशोत्तमग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणज्ञं गुणिनं सुशीलम् ।
कुर्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षसंस्थःसुराचार्यनिरीक्ष्यमाणः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह
ुष्य उत्तम देश, ग्राम तथा उत्तम नगरोंका स्वामी (राजा), चतुर, गुणोंका
ननेवाला, गुणवान् और श्रेष्ठशीलवाला होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

अतिसुललितवेषं वस्त्रभूषाविशेषै-
र्युवतिजनमनोज्ञं मन्मथोत्कर्षहर्षम् ।
अतिचतुरमुदारं चारुभाग्यं च कुर्या-
द्भृगुगृहगतसौम्यो भार्गवेण प्रदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बुध बैठा हो और शुक्र करके दृष्ट
वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर वेषवाला, वस्त्र और भूषणोंसे युक्त, स्त्रियोंको प्रिय
र कामदेवके उत्कर्षसे हर्षको प्राप्त, अत्यन्त चतुर, उदार और श्रेष्ठ भाग्यवाला
ा है ॥ ११ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

कलत्रमित्रात्मजयानपीडासंतप्तचित्तं सुखवित्तहीनम् ।
कुर्यान्नरं शत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितो ज्ञः सितधामगामी ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो मनुष्य स्त्री, पुत्र मित्र और वाहनके दुःखसे संतप्तचित्त और सुख और धनसे तथा शत्रुजनोंसे तिरस्कृत होता है ॥ १२ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

सत्योपेतं चारुलीलाविलासं भूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिं च
चञ्चत्क्षीणं चापि कुर्यान्मनुष्यः स्वक्षेत्रस्थश्चंद्रपुत्रोऽर्कदृष्टः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बुधको सूर्य देखता हो मनुष्य सत्यसहित, सुंदरलीलाका विलास करनेवाला, राजासे मान और उन्न मान और चञ्चलतारहित होता है ॥ १३ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषी कलिप्रियो राजसमीपवर्ती ।
भवेन्नरः सोमसुते स्वगेहे निरीक्ष्यमाणे मृगलाञ्छनेन ॥ १

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध मिथुन कन्या राशिमें बैठा हो और चं देखा गया हो वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, बहुत मीठी वाणी बोलनेवाला, जिसको प्यारी और राजाके पास रहनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नगात्रं कुटिलं कलाज्ञं नरेन्द्रकृत्ये सुतरां प्रवीणम् ।
जनप्रियं संजनयेन्मनुष्यं भौमेक्षितो ज्ञः स्वगृहेऽधिसंस्थः ॥ १

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या मिथुन राशिगत बुधको मंगल देखता हो मनुष्य प्रसन्नदेह, कुटिल, कलाओंका जाननेवाला, राजाके कृत्यमें प्रवीण और मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ १५ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

सद्धर्ममार्गैर्विराजमानं सद्राजमानात्पदाधिकारम् ।
सुखं मनुष्यं निजमन्दिरस्थः सौम्यः सदृष्टः सुरपूजितेन ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह [illegible] मनुष्य, सद्धर्ममार्गके सहित, और राजाके मानसे अधिकारको प्राप्त [illegible] होता है ॥ १६ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

राजेंद्रदूतो विजितारिवर्गः संधिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः ।
वारांगनासक्तमनोऽभिलापः शुक्रेक्षिते ज्ञे निजभे नरः स्यात्॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य राजाका दूत, वैरियोंको जीतनेवाला, दोनोंकी संधि करानेमें चतुर, वेश्याओंमें आसक्त और मनकी अभिलाषाको प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

प्रारम्भसिद्धिं विनयं विशेषात्सद्वस्त्रभूषादिसमृद्धिमुच्चैः ।
कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मा स्वमंदिरस्थो रविसूनुदृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य प्रारम्भ किये कार्यको सिद्ध करनेवाला, नम्रतासहित, श्रेष्ठ वस्त्र और आभूषणादि समृद्धियोंसहित होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

कांतानिमित्तासमहाव्यलीको द्रव्यव्ययात्यंतकृशांगयष्टिः ।
बहूपसर्गोऽपि भवेन्मनुष्यः कुलीरगे ज्ञे नलिनीशदृष्टे ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य स्त्रीके निमित्तसे पूर्ण पीडाको प्राप्त, धनका व्यय करनेवाला, अत्यन्त दुर्बलदेह और बहुत उत्पातोंसहित होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

वस्त्रादिशुद्धौ मणिसंग्रहे च गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणः ।
प्रसूनमालाग्रथनेऽपि मर्त्यः कुलीरगे ज्ञे शशिना प्रदृष्टे ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको चंद्रमा देखता हो वह मनुष्य वस्त्रादिकोंकी शुद्धि, मणियोंका संग्रह करने और मकानादिस्थानोंके बनानेमें चतुर और फूलोंकी माला गूंथनेमें भी चतुर होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

स्वल्पश्रुतं चार्थरतं च शूरं प्रियंवदं कूटविधौ प्रवीणम् ।
कुर्यान्नरं शीतकरस्य सूनुः कुलीरसंस्थेऽवनिसूनुदृष्टे ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको मंगल देखता हो वह मनुष्य थोडा शास्त्रका जाननेवाला, अर्थमें तत्पर, शूर वीर, प्यारी वाणी बोलनेवाला और झूठ बात बोलनेमें चतुर होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

प्राज्ञो विधिज्ञो विधिनातिशाली सद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः
स्यान्मानवो जन्मनि सोमसूनौ कुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह चतुर, विधिका जाननेवाला, बडा भाग्यवान् और श्रेष्ठ वाणी होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

प्रियंवदश्चारुशरीरभाक् च सङ्गीतवाद्यादिविधौ प्रवीणः।
स्यान्मानवो दानववंद्यदृष्टे कर्कटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ॥ २३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह प्यारी वाणी बोलनेवाला, सुन्दर शरीरवाला, गीत और बाजोंकी विधिमें चतुर होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

गुणैर्विहीनं स्वजनैर्वियुक्तमलीकदंभानुरतं कृतघ्नम्।
करोति मर्त्यं परिसूतिकाले कुलीरगो ज्ञो रविसूनुदृष्टः ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य गुणोंसे हीन, अपने मित्र तथा भाई बंधुओंसे रहित, झूठ बोलने तथा दंभमें तत्पर और कृतघ्न होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्।

कृपाविहीनं च चलस्वभावं सेर्ष्यं च हिंसाभिरतं च रौद्रम्।
क्षुद्रं प्रकुर्य्यान्मनुजं प्रसूतौ बुधोऽर्कदृष्टो मृगराजसंस्थः ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य कृपारहित, चंचल स्वभाववाला, ईर्षायुक्त, हिंसा करनेमें तत्पर, क्रूर और क्षुद्र होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्।

रूपान्वितं चारुमतिं विनीतं सङ्गीतनृत्याभिरतं नितान्तम्।
सद्वृत्तवृत्तं कुरुते हि मर्त्यं चन्द्रेक्षितः सिंहगतो बुधाख्यः ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य रूपवान, सुन्दर बुद्धिवाला, नम्रतासहित, गीत और नृत्यमें नितान्त तत्पर और श्रेष्ठ वृत्तिका करनेवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

कन्दर्पसत्त्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षतांकितं हीनमतिं विचित्रम्।
सुदुःखितं संजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतः शशीजः॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको मंगल देखता हो, वह मनुष्य कामदेव और पराक्रम रहित, चरित्रहीन, घावोंसे अंकित, बुद्धिहीन, विचित्र और दुःखसहित होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्च समर्थः।
वाहनोत्तमधनो मनुजः स्यादिन्दुजे हरिगते गुरुदृष्टे ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य कोमल निर्मल रुचिवाला, कुलमें श्रेष्ठ, सुन्दरनेत्र, सामर्थ्यवान्, उत्तम वाहन और धनवान् होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

सद्रूपशाली प्रियवाग्विलासो नृपाश्रितो वाहनवित्तयुक्तः।
भवेन्नरः सोमसुते प्रसूतौ सिंहस्थिते दानववन्द्यदृष्टे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें सिंहराशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला, मिष्ट वाणी बोलनेवाला, विलासयुक्त, राजाके आश्रित, वाहन और धनसहित होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगंधं विस्तीर्णगात्रं च कुरूपमुग्रम्।
सुखेन हीनं मनुजं प्रकुर्य्यान्मदेक्षितः सिंहगतो यदि ज्ञः॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो उस मनुष्यकी देहमें पसीने करके दुर्गंध आती है, बड़ी देहवाला, कुरूप, उग्र, सुखहीन होता है ॥ ३० ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्।

शूलाश्मरीमेहनिपीडिताङ्गो भङ्गोज्झितः शांतिमुपागतश्च।
स्यात्पूरुषो गीष्पतिवेश्मसंस्थे निशाधिनीस्वामिसुतेऽर्कदृष्टे॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह मनुष्य शूल, पथरी, प्रमेहरोगसे पीडित, मनस्वी, शांतिसे सहित और क्लेशोंसे रहित होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्।

लेखक्रियायां सुतरां प्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानाम्।
नरः सुखी शीतमयूखपुत्रे चन्द्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य लेखक्रियामें बड़ा चतुर, श्रेष्ठ संगति करनेवाला, साधु और मित्रोंकरिके सुखी होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

परम्पराचोरवनस्थितानां स्युर्लेखका धान्यधनैर्विहीनाः।
नरास्तु नीहारकरप्रसूतौ जीवालये मंगलदृष्टदेहे ॥ ३३ ॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको मंगल देखता हो वे परम्परासे लेकर चोर होते हैं और वनमें रहते हैं और उनके नाम लिखे जाते हैं और अन्न धनसे रहित होते हैं ॥ ३३ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

विज्ञानशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्ता।
भर्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें बुध बैठा हो उसको गुरु देखता हो वह मनुष्य ज्ञानवान् अपने कुलमें शिरोमणि और राजाके खजानेका लेखक और बहुतजनोंका स्वामी होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे शुक्रदृष्टिफलम्।

नृपामात्यापत्यकलत्राधिकारं धैर्यान्वितं सौकुमार्येण युक्तं।
स्त्रग्गन्धवस्त्रैः मानवं सौम्यसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ॥ ३५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, [illegible] [illegible] प्राप्त, धीरजमें आसक्त, सुकुमारता और [illegible] होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

[illegible] मलिनः कुरूपः [illegible]
[illegible] मनुष्यो [illegible] ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको शनैश्चर देखता हो वह
[मनु]ष्य बहुत अन्न खानेवाला, मलिन, दुष्टवृत्ति रखनेवाला, वन और पर्वतोंमें वास
[कर]नेवाला और कामके लायक नहीं होता है ॥ ३६ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे रविदृष्टिफलम्।

प्रारब्धकार्याकलितप्रतापं सन्मल्लविद्याकुशलं कुशीलम्।
कुटुम्बिनं संजनयेन्मनुष्यं बुधः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको सूर्य देखता हो वह
[मनु]ष्य अपने प्रारब्ध करके प्रतापसहित, श्रेष्ठ मल्लविद्यामें कुशल, दुष्टशील और
[कुटु]म्बी होता है ॥ ३७ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे चंद्रदृष्टिफलम्।

जलोपजीवी धनवांश्च भीरुः प्रसूनकन्दोद्यमतत्परश्च।
पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थे बुधे सुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे ॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभराशिमें बुध बैठा हो, उसको चन्द्रमा
[दे]खता हो वह मनुष्य जलसम्बन्धी कार्यसे आजीविका करनेवाला, धनवान्, डर-
[पो]क तथा फूल और कंदकरके उद्यम करनेवाला होता है ॥ ३८ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

व्रीडालसस्तब्धतरस्वभावः सौम्यः सुखी वाक्चपलोऽर्थयुक्तः।
स्यान्मानवो भानुसुतर्क्षसंस्थे दृष्टेऽब्जसूनौ क्षितिनन्दनेन ॥३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको मंगल देखता हो वह
[मनु]ष्य लज्जा और आलस्य करके सहित, कड़े स्वभाववाला, सौम्यमूर्ति, सुखी, चप-
[लवा]णी बोलनेवाला और धनवान् होता है ॥ ३९ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

धान्यवाहनधनान्वितः सुखी ग्रामपत्तनपतिर्महामतिः।
भानुसूनुभवनेऽब्जनंदने देवदेवसचिवेक्षिते नरः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको बृहस्पति देखता हो
मनुष्य अन्न और वाहन तथा धनकरके सहित, सुखी, ग्राम और नगरका
[स्वा]मी तथा बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ४० ॥

अथ शन्यालयगे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

बहुप्रजासंजनकं कुरूपं प्राज्ञोज्झितं नीचजनानुयातम्।
कामाधिकं संजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितो ज्ञः शनिगेहसंस्थः ॥४१

अथ गुरुभवनस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्।

लेखक्रियायां सुतरां प्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानाम्।
नरः सुखी शीतमयूखपुत्रे चन्द्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको चन्द्रमा देखता है, मनुष्य लेखक्रियामें बड़ा चतुर, श्रेष्ठ संगति करनेवाला, साधु और ... किये सुखी होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

परम्पराचोरवनस्थितानां स्युर्लेखका धान्यधनैर्विहीनाः।
नरास्तु नीहारकरप्रसूतौ जीवालये मंगलदृष्टदेहे ॥ ३३॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको मंगल देखता हो ... ष्य बाप दादेसे लेकर चोर होते हैं और वनमें रहते हैं और उनके नाम ... लिखे जाते हैं और अन्न धनसे रहित होते हैं ॥ ३३ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

विज्ञानशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्ता।
भर्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें बुध बैठा हो उसको ... देखता हो वह मनुष्य ज्ञानवान् अपने कुलमें शिरोमणि और राजाके ... लिखनेवाला और बहुतजनोंका स्वामी होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे शुक्रदृष्टिफलम्।

भूपामात्यापत्यलेखाधिकारं चौर्यासक्तं सौकुमार्येण युक्तम्।
द्रव्योपेतं मानवं सोमसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ॥ ३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको शुक्र देखता हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, लेखके अधिकारको प्राप्त, चोरोंमें आसक्त, सुकुमारता और धनवान् होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

बह्वन्नभोक्ता मलिनः कुवृत्तः कांतारदुर्गाचलवासशीलः।
कार्योज्झितो न.भवन्मनुष्यो जीवर्क्षगो ज्ञोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ३६॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ बुधदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनश्छिद्रप्रतीक्षी प्रणयानुयातः।
मर्त्यो भवेत्कैतवसंप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह
ष्य सदाचार और सत्य उत्तमवाणी करके रहित, दूसरेका छिद्र देखनेवाला,
मनुष्योंका साथी और धूर्त होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्।

गन्धमाल्यशयनासनभूषायोपिदम्बरनिकेतनसौख्यम्।
संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजसंस्थः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह
ष्य गंध, माला, शय्या, भोजन, आभूषण, स्त्री, वस्त्र, स्थान इन सब चीजोंके
ख्यको पाता है ॥ ५ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ शनिदृष्टिफलम्।

लुब्धं रौद्रं साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितं च।
कुर्यान्मन्त्रे निष्ठुरं देवमन्त्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मन्ददृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष, वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता
वह मनुष्य लोभी क्रूर, हठसहित, मित्र और संतानके सुखसे रहित और सलाह
नेमें कठोर होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम्।

संगरात्तविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम्।
मंत्रिणं हि कुरुते सुरमंत्री दैत्यमंत्रिगृहगो रविदृष्टः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बृहस्पति बैठा हो और सूर्यसे दृष्ट
वह मनुष्य युद्धमें जयको प्राप्त, घावसहित, शरीररोगसहित, बहुत वाहन और
करोंवाला राजाका मन्त्री होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम्।

सत्येन युक्तं सततं विनीतं परोपकाराभिरतं सुचित्तम्।
सद्भाग्यभाजं कुरुते मनुष्यं जीवः सितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता हो वह
नुष्य सत्यसहित, निरन्तर नम्रतायुक्त, पराया उपकार करनेवाला और श्रेष्ठ चित्त
श्रेष्ठ भाग्यवाला होता है ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बुधको शुक्र देखता हो व॰ ॰ष्य बहुत संतानका पिता, कुरूप, चतुरतारहित, नीचजनोंका साथी और कामी होता है ॥ ४१ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

सुखोज्झितं पापरतं च दीनमकिंचनं हीनजनानुयातम्।
करोति मर्त्यः शनिधामसंस्थःसौम्यस्तमोहंतृसुतेन दृष्टः।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भराशिगत बुधको शनैश्चर देखता ॰ मनुष्य सुखरहित, पापमें तत्पर, दीन, धनरहित और हीनजनोंका संग होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिराशिगे बुधे ग्रहदृष्टिफलम्।

अथ मेषादिराशिगे गुरौ ग्रहदृष्टिफलम्-

तत्र भौमर्क्षगे गुरौ रविदृष्टिफलम्।

असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्त्ता ख्यातश्च सद्भाग्ययुतो विनीतः।
भवेन्नरो देवगुरौ प्रयाते भौमस्य गेहे रविदृष्टदेहे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देख॰ वह मनुष्य असत्यसे डरनेवाला, बहुत धर्म करनेवाला, विख्यात, श्रेष्ठ भाग्य॰ और नम्र होता है ॥ १ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

ख्यातो विनीतो वनितानुयातः सतां मतो धर्मरतः प्रशांतः।
जातो भवेद्भूमिसुतर्क्षयाते वाचां पतौ शीतकरेण दृष्टे ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बृहस्पति बैठा हो और च॰ करके दृष्ट हो वह मनुष्य प्रसिद्ध, नम्रतासहित, स्त्रीका प्यारा, श्रेष्ठ पुरुषोंमें ॰ रनेवाला, धर्ममें तत्पर और शांतस्वभाव होता है ॥ २ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ भौमदृष्टिफलम्।

क्रूरोऽतिधूर्तः परगर्वहर्त्ता नृपाश्रयाज्जीवनवृत्तिकर्ता।
भर्त्ता बहूनां ननु मानवः स्याज्जीवे कुजर्क्षे च कुजेन दृष्टे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता ॰ वह मनुष्य क्रूर, बड़ा धूर्त, दूसरोंके अभिमानको नष्ट करनेवाला, राजाके आश्रयसे आजीविका करनेवाला और बहुत मनुष्योंका स्वामी होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनश्छिद्रप्रतीक्षी प्रणयानुयातः ।
मर्त्यो भवेत्कैतवसंप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य सदाचार और सत्य उत्तमवाणी करके रहित, दूसरेका छिद्र देखनेवाला, मनुष्योंका साथी और धूर्त होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

गन्धमाल्यशयनासनभूषायोषिदम्बरनिकेतनसौख्यम् ।
संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजसंस्थः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य गंध, माला, शय्या, भोजन, आभूषण, स्त्री, वस्त्र, स्थान इन सब चीजोंके सुखको पाता है ॥ ५ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

लुब्धं रौद्रं साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितं च ।
कुर्यान्मन्त्रे निष्ठुरं देवमन्त्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मन्ददृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष, वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य लोभी क्रूर, हठसहित, मित्र और संतानके सुखसे रहित और सलाहमें कठोर होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

संगरात्तविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम् ।
मन्त्रिणं हि कुरुते सुरमंत्री दैत्यमंत्रिगृहगो रविदृष्टः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बृहस्पति बैठा हो और सूर्यने देखा हो वह मनुष्य युद्धमें जयको प्राप्त, घावसहित, शरीररोगसहित, बहुत वाहन और नौकरोंवाला राजाका मन्त्री होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

सत्येन युक्तं सततं वि[illegible] ।
सद्भाग्यभाजं कुरुते म[illegible] ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता हो वह मनुष्य सत्यसहित, निरन्तर नम्रतायुक्त, पराया उपकार करनेवाला और श्रेष्ठ लक्ष्मी सौभाग्यवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

भाग्योपपन्नं सुतसौख्यभाजं प्रियंवदं भूपतिलब्धमानम् ।
नरं सदाचारपरं करोति भौमेक्षितेज्यो भृगुजालयस्थः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो वह मनुष्य भाग्यसहित, पुत्रसौख्यको प्राप्त, मीठी वाणी बोलनेवाला, राजा करके प्राप्त किया है मान जिसने और हमेशा आचारसहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सन्मन्त्रविद्यानिरतं नितांतं भाग्यान्वितं भूपतिलब्धवित्तम् ।
चञ्चत्कलाज्ञं पुरुषं प्रकुर्याद्गुरुर्भृगुक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें बृहस्पति बुध करके दृष्ट हो वह मनुष्य श्रेष्ठ मंत्र और श्रेष्ठ विद्यामें तत्पर, नितांत भाग्यसहित, राजासे धन प्राप्त करनेवाला, सुन्दर और कलाओंका जाननेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

धनान्वितं चारुविभूषणाढ्यं सद्वृत्तचित्तं विभवैः समेतम् ।
करोति मर्त्यं सुरराजमन्त्री शुक्रालयस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषतुलाराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य धन और भूषणसहित, श्रेष्ठ वृत्तिमें चित्त जिसका और ऐश्वर्यवान् होता है ॥ ११ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतं प्राज्ञं पुरग्रामभवोत्सवाढ्यम् ।
नरं प्रकुर्याच्चतुरं सुरेज्यो दैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र श्रेष्ठ स्त्रियोंके सुखकरके सहित, चतुर, नगर और ग्रामर्मे उत्सव करके सहित और चतुर होता है ॥ १२ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

सत्पुत्रदारं धनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम् ।
नरं प्रकुर्यात्सुरराजमन्त्री रविप्रदृष्टो बुधवेश्मसंस्थः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री, धन तथा मित्र सौख्यसहित, श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त शोभायमान होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

गुणान्वितं ग्रामपुरोपकारं विराजमानं बहुगौरवेण ।
कुर्यान्नरं देवगुरुर्बुधर्क्षसंस्थो निशानाथनिरीक्ष्यमाणः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पति चन्द्रमा करके दृष्ट हो वह मनुष्य गुणोंसे युक्त, ग्राम और नगरोंमें उपकार करनेवाला, बहुत गौरवसे शोभायमान होता है ॥ १४ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामसंप्राप्तजयं क्षताङ्गं धनेन सारेण समन्वितं च ।
करोति जातं विबुधेन्द्रमन्त्री बुधालयस्थः क्षितिसूनुदृष्टः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य संग्राममें जय पाता है और घावसहित देहवाला, धन तथा पराक्रमसे संपन्न होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्यो दक्षो भवेज्ज्योतिषशिल्पवेत्ता ।
स्याच्चारुभाषी पुरुषः प्रकामं जीवे बुधर्क्षे च बुधेन दृष्टः ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ और स्त्री पुत्र धन सौख्यसहित, चतुर, ज्योतिष और शिल्पशास्त्र जाननेवाला और यथेष्ट सुन्दर वाणी बोलनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनासूनुसुखैरुपेतः प्रसादवापीकृषिकर्मचित्तः ।
भवेत्प्रसन्नः पुरुषः सुरेज्ये दैत्येज्यदृष्टे बुधवेश्मसंस्थे ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य धन और स्त्री पुत्रोंके सुखसहित, मकान, बावड़ी और खेतीके काममें चित्त लगानेवाला, एवं प्रसन्नचित्तवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

नरेंद्रसद्गौरवसंप्रयुक्तं नित्योत्सवं पूर्णगुणाभिरामम् ।
नरं पुरग्रामपतिं करोति गुरुर्ज्ञगेहे शनिना प्रदृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देख हो तो वह मनुष्य राजा करके श्रेष्ठ गौरवको प्राप्त होता है और नित्य ही उत्साह सहित, गुणोंसे पूर्ण, नगर तथा ग्रामोंका पति होता है ॥ १८ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिं पूर्वं च पश्चात्खलु तत्सुखानि ।
कुर्य्यान्नराणां हि गुरुःसुराणां कुलीरसंस्थो रविणा प्रदृष्टः॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य स्त्री, पुत्र और धन करके उत्पन्न सौख्यको पहिले नाश करता है और पिछली अवस्थामें पूर्वोक्त पदार्थोंका सौख्य होता है ॥ १९ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

नरेंद्रकोशाधिकृतं सुकांतं सद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम् ।
सद्वृत्तचित्तं जनयेन्मनुष्यं कर्कस्थितेज्यो शनिना हि दृष्टः॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको चन्द्रमा देखता हो तो वह मनुष्य राजाके खजानेका स्वामी, श्रेष्ठकांतिवाला, श्रेष्ठवाहन और धनके सुखसहित, एवं श्रेष्ठवृत्तिमें चित्त लगानेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

कुमारदाराम्बरचारुभूपाविशेषभाजं गुणिनं च शूरम् ।
प्राज्ञं क्षताङ्गं कुरुतेमनुष्यंकर्कस्थितेज्योऽवनिजेन दृष्टः॥ २१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो तो मनुष्य बालक और स्त्री तथा सुन्दर वस्त्र भूषणोंसे सम्पन्न, गुणवान, शूरवीर और व्रणरोगवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिः सद्वृत्तिबुद्धिर्विलसत्प्रतापः ।
मन्त्री नरः कर्कटराशिसंस्थे गीर्वाणवन्द्ये शशिसूनुदृष्टे ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य मित्रोंके आश्रयसे सर्वसिद्धियोंको प्राप्त करनेवाला, श्रेष्ठ वृत्तिवाला, श्रेष्ठ बुद्धि और बडे प्रतापवाला और राजाका मन्त्री होता है ॥ २२ ॥

बह्वङ्गनावैभवभङ्गनानां नानासुखानामुपलब्धयः स्युः ।
कुलीरयाते वचसामधीशे निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥२३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंके वैभवको भोगनेवाला और स्त्रियोंके अनेक सौख्योंको प्राप्त करता है ॥ २३ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

सम्मानभूषागुणचारुशीलः सेनापुरग्रामपतिर्नरः स्यात् ।
अनल्पजल्पः खलु कर्कटस्थे वाचस्पतौ सूर्यसुतेन दृष्टे ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य सम्मान और भूषण तथा गुणोंसे सम्पन्न, श्रेष्ठ शीलवाला, फौज, नगर एवं ग्रामका स्वामी और बहुत बोलनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

व्ययान्वितं ख्यातमतीव धूर्तं नृपाप्तवित्तं शुभकर्मचित्तम् ।
नरं प्रकुर्यात्सुरराजपूज्यः सूर्येण दृष्टो मृगराजसंस्थः ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य खर्च करनेवाला, प्रसिद्ध, बड़ा धूर्त, राजासे धनलाभ करनेवाला और शुभ कर्ममें चित्त देनेवाला होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिं गतचित्तशुद्धिं स्त्रीहेतुसंप्राप्तधनं वदान्यम् ।
कुर्यात्पुमांसं वचसामधीशः शशांकदृष्टः करिवैरिसंस्थः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति और चित्त शुद्धिसे हीन और स्त्रीके कारणसे धन लाभ करनेवाला एवं दानी होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

मान्यो गुरूणां गुरुगौरवेण सत्कर्मनिर्माणविधौ प्रवीणः ।
प्राणी भवेत्केसरिणि स्थितेऽस्मिन्गीर्वाणवंद्येऽवनिजेन दृष्टे ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य बड़े मान और बड़े गौरवकरके सहित और श्रेष्ठ कर्मके निर्माण करनेमें चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम्।

गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणो गुणाग्रणीः स्यात्सचिवो नृपाणाम्।
वाणीविलासे चतुरो नरः स्यात्सिंहस्थिते देवगुरौ ज्ञदृष्टे ॥ २८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य मकानादिकोंके बनवानेके काममें चतुर, गुणोंमें अग्रणी, राजाका मन्त्री और वाणी-विलासमें चतुर होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्।

भूमीपतिप्राप्तमहापदस्थः कांताजनप्रीतिकरो गुणज्ञः।
भवेन्नरो देवगुरौ हरिस्थे निरीक्षिते चासुरपूजितेन ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य राजाके दिये हुए बड़े पदको पानेवाला, स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला और गुणोंका जाननेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम्।

सुखेन हीनं मलिनं सुवाचं कृशाङ्गयष्टिं विगतोत्सवं च।
करोति मर्त्यं मरुताममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य सुखकरके हीन, मलिन, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, दुर्बल देह और उत्सवरहित होता है ॥ ३० ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम्।

राज्ञा विरुद्धत्वमतीव नूनं सुहृज्जनेनापि च वैमनस्यम्।
शत्रूद्गमः स्यान्नियतं नराणां जीवेऽर्कदृष्टे स्वगृहं प्रयाते ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो वह मनुष्य राजाके अत्यन्त विरुद्ध, मित्रोंसे वैर करनेवाला और वैरी जिसके हमेशा रहते हैं ऐसा होता है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३१ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

सुगर्वितं भाग्यधनाभिवृद्ध्या प्रियाप्रियत्वाभिमतं विशेषात्।
करोति जातं सुखिनं विनीतं चन्द्रेक्षितो देवगुरुः स्वभस्थः ॥३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता हो वह मनुष्य भाग्य और धनवृद्धिसे अभिमानको प्राप्त और स्त्रीका प्यारा, सुखयुक्त और नम्रतासहित होता है ॥ ३२ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

व्रणाङ्कितं सङ्गरकर्मदक्षं हिंसापरं क्रूरतरस्वभावम् ।
परोपकाराभिरतं प्रकुर्य्याद्गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेन दृष्टः ॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो वह मनुष्य फोडे करके अंकित, युद्धमें चतुर, हिंसा करनेवाला, क्रूर स्वभाव और पराये उपकार करनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारो दाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः ।
परोपकारादरतैकचित्तो नरो गुरौ स्वर्क्षगते ज्ञदृष्टे ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पति बुध करके दृष्ट हो वह मनुष्य राजाके आश्रयसे बडे अधिकारको प्राप्त, स्त्री-ऐश्वर्य, धन,-सुख सहित और परायेके उपकार एवं सम्मान करनेमें एकचित्त होता है ॥ ३४ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

सुखोपपन्नं सधनं प्रसन्नं प्राज्ञं सदैश्वर्यविराजमानम् ।
नूनं प्रकुर्यान्मनुजं सुरेज्यो दैत्येज्यदृष्टो निजमंदिरस्थः॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य सुखसे सम्पन्न, धनवान, प्रसन्न, चतुर और हमेशा ऐश्वर्यसहित विराजमान रहता है ॥ ३५ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

पदच्युतं सौख्यसुतैर्विहीनं संग्रामसंजातपराभवं च ।
करोति दीनं स्वगृहे सुरेज्यः सूर्यात्मजेन प्रविलोक्यमानः॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको शनैश्वर देखता हो वह मनुष्य अधिकारसे पतित, सुख और पुत्रोंसे रहित तथा युद्धमें पराजयको प्राप्त होता है ॥ ३६ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नकांतिं शुभवाग्विलासं परोपकारादरतासमेतम् ।
कुले नृपालं कुरुते सुरेज्यो मंदालयस्थो यदि भानुदृष्टः॥३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता हो वह मनुष्य प्रसन्न कांतिमान, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, पराया उपकार आदरसे करनेवाला और अपने कुलका पालक होता है ॥ ३७ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

कुलोद्वहस्तीव्रमतिः सुशीलो धर्मक्रियायां सुतरामुदारः।
नरोऽभिमानी पितृमातृभक्तो जीवे शनिक्षेत्रगतेन्दुदृष्टे॥ ३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चरकी राशि १०।११ में बृहस्पति बैठा हो और चन्द्रमा करके दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुलको धारण करनेवाला, तीव्रबुद्धि, शीलवान्, धर्मक्रिया करनेमें अत्यन्त उदार, अभिमानी, माता और पिताका भक्त होता है॥३८॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ भौमदृष्टिफलम्।

स्यादर्थसिद्धिर्नृपतेः प्रसादात्कीर्तिः सुखानामुपलब्धिरेव।
सूतौ सुरेज्ये शनिमंदिरस्थे निरीक्ष्यमाणे धरणीसुतेन॥ ३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता हो तो मनुष्य राजाकी कृपासे धनकी सिद्धिको प्राप्त और सुखकी प्राप्ति करनेवाला होता है ३९

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ बुधदृष्टिफलम्।

शांतं नितांतं वनितानुकूलं धर्मक्रियार्थे निरतं नितांतम्।
करोति मर्त्यं मरुतां पुरोधा बुधेन दृष्टः शनिमंदिरस्थः॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको बुध देखता हो वह मनुष्य सदा शांत स्वभाववाला, निरन्तर स्त्रीके वशीभूत और धर्मक्रियाओंमें अत्यन्त तत्पर रहता है॥ ४०॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ भृगुदृष्टिफलम्।

विद्याविवेकार्थगुणैः समेतः पृथ्वीपतिप्राप्तमनोऽभिलापः।
स्यात्पूरुषः सूर्यसुतर्क्षसंस्थे जीवे प्रसूतौ भृगुजेन दृष्टे॥ ४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता हो वह मनुष्य विद्या, विवेक, धन, एवं गुणोंसे सम्पन्न और राजा करके मनकी अभिलाषाको प्राप्त करता है॥ ४१॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ शनिदृष्टिफलम्।

कामं सकामं सुगुणाभिरामं सद्मार्थप्राप्तिं धनधान्ययुक्तम्।
स्यातं विनीतं कुरुते मनुष्यं मंदेक्षितो मंदगृहस्थजीवः॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य कामनाको प्राप्त, श्रेष्ठ गुणोंसहित, मकान और अर्थकी प्राप्ति सहित धनधान्ययुक्त, प्रसिद्ध और नम्रतासहित होता है॥ ४२॥

इति शनिक्षेत्रगते गुरौ ग्रहदृष्टिफलम्।

अथ मेषादिराशिगे भृगौ ग्रहदृष्टिफलम्-तत्रादौ भौमर्क्षगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

कृपाविशेषं नृपतेर्नितांतमतीव जायाजनितव्यलीकम्।
कुर्य्यान्नराणां तरणिप्रदृष्टः शुक्रो हि वक्रस्य गृहं प्रयातः॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य विशेष करके निरन्तर राजाकी कृपावाला और अत्यन्त स्त्री करके किये हुए दुःखसे दुःखी होता है॥ १॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्।

श्रेष्ठप्रतिष्ठं चलचित्तवृत्तिं कामातुरत्वाद्विकृतिं प्रयातम्।
करोति मर्त्यं कुजगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ प्रतिष्ठावाला, चञ्चलचित्तवृत्तिवाला और कामातुरतासे विकारको प्राप्त होता है २

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

धनेन मानेन सुखेन हीनं दीनं विशेषान्मलिनं करोति।
नूनं धरित्रीतनयालयस्थः शुक्रो धरित्रीतनयेन दृष्टः॥ ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य धन, मान और सुख करके रहित, विशेष दीन और निश्चित रूपसे मलिन होता है॥ ३॥

अथ कुजर्क्षगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

अनार्यमर्थात्मजनैर्विहीनं स्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखं च।
क्रूरं परार्थापहरं नरं हि करोति शुक्रः कुजभे ज्ञदृष्टः॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य खोटा और धन तथा अपने सम्बन्धियोंसे रहित, अपनी बुद्धि और सामर्थ्यसे रहित, क्रूर और पराये धनको हरनेवाला होता है॥ ४॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतं सत्कायकांतिं सुनरं विनीतम्।
उदारचित्तं प्रकरोति मर्त्यं जीवेक्षितो दैत्यगुरुः कुजर्क्षे॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य स्त्री और पुत्रादिकोंके सुखसहित, श्रेष्ठ देह, शोभायमान, निरन्तर नम्रतासहित और उदार चित्तवाला होता है॥ ५॥

अथ भौमभगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

सुगुप्तवित्ताभिनतं प्रशांतं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम्।
करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो मनुष्य गुप्तधनवाला, शान्तस्वभाव, माननीय, बहुत दान देनेवाला और जनोंकी सम्मति सहित होता है॥ ६॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः।
प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतङ्गेन निरीक्ष्यमाणे॥ ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह म श्रेष्ठ स्त्रियों करके तथा धन वाहनों करके निश्चय सुखको प्राप्त होता है॥ ७

अथ स्वगेहगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्।

विलासिनीकेलिविलाससक्तः कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली।
नरःसुशीलःशुभवाग्विलासःस्वीयालयस्थेस्फुजितीन्दुदृष्टे॥८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो मनुष्य वेश्याओंके विलासमें आसक्त, अपने कुलका पालनेवाला, निर्मल बुद्धिशा सुशील और श्रेष्ठ वाणीके बोलनेमें चतुर होता है॥ ८॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

गृहादिसौख्योपहतं नितांतं कलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम्।
कुर्य्यान्नराणां दनुजेंद्रमन्त्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः॥९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको मङ्गल देखता हो तो मनुष्य गृहादि सौख्योंसे रहित और लड़ाईमें अपमानको प्राप्त होता है॥ ९॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

गुणाभिरामं सुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च।
स्वक्षेत्रगो दैत्यगुरुः प्रकुर्य्यान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः॥ १०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य गुणवान्, यथेष्ट सुन्दर, सौम्यस्वभाववाला, बलवान् और धै सहित होता है॥ १०॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

सद्वाहनानां गृहिणीगुणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम् ।
करोति लब्धिं निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो तो मनुष्य श्रेष्ठ वाहन और स्त्री तथा गुण, श्रेष्ठ मित्र धनादिक सम्पूर्ण वस्तुओंको करता है ॥ ११ ॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

गदाभिभूतो हतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोऽतिहीनः ।
भवेत्प्रसूतौ निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको शनैश्वर देखता हो वह न्य रोगी, साधुवृत्तिसे हीन, सौख्य और धनहीन होता है ॥ १२ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

नृपावरोधाधिकृतं विनीतं गुणान्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम् ।
कुर्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थो रविणा प्रदृष्टः ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह न्य राजाके रनवासकी ड्योढ़ीका अफसर, नम्रतासहित, गुणयुक्त और शास्त्रका नेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

सदन्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम् ।
सुकेशपाशं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिन्दुदृष्टः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो मनुष्य श्रेष्ठ अन्न वस्त्रादि सुखसहित और नीलकमलके समान श्याम सुन्दर वाला और सुन्दर बालोंवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

भाग्यान्वितःकामविधिप्रवीणः कान्तानिमित्तं द्रविणव्ययःस्यात् ।
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रकामं बुधर्क्षसंस्थः कुसुतेन दृष्टः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको मंगल देखता हो मनुष्य भाग्यसहित, कामकलामें चतुर और स्त्रीके निमित्त धनका व्यय करनेवाला कामी होता है ॥ १५ ॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

सुगुप्तवित्ताभिनतं प्रशांतं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम्।
करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य गुप्तधनवाला, शान्तस्वभाव, माननीय, बहुत दान देनेवाला और अपने जनोंकी सम्मति सहित होता है॥ ६॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः।
प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतङ्गेन निरीक्ष्यमाणे॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ स्त्रियों करके तथा धन वाहनों करके निश्चय सुखको प्राप्त होता है॥७॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्।

विलासिनीकेलिविलाससक्तः कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली।
नरः सुशीलः शुभवाग्विलासः स्वीयालयस्थे स्फुजितीन्दुदृष्टे॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य वेश्याओंके विलासमें आसक्त, अपने कुलका पालनेवाला, निर्मल बुद्धिवाला, सुशील और श्रेष्ठ वाणीके बोलनेमें चतुर होता है॥ ८॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

गृहादिसौख्योपहतं नितांतं कलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम्।
कुर्यान्नराणां दनुजेन्द्रमन्त्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको मङ्गल देखता हो तो वह मनुष्य गृहादि सौख्योंसे रहित और लड़ाईमें अपमानको प्राप्त होता है॥ ९॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

गुणाभिरामं सुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च।
स्वक्षेत्रगो दैत्यगुरुः प्रकुर्यान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको बुध देखता हो तो वह मनुष्य गुणवान्, अतीव सुन्दर, सौम्यस्वभाववाला, बलवान् और धैर्य सहित होता है॥ १०॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

सद्वाहनानां गृहिणीगुणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम्।
करोति लब्धिं निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन और स्त्री तथा गुण, श्रेष्ठ मित्र धनादिक सम्पूर्ण वस्तुओंको प्राप्त करता है॥ ११॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

गदाभिभूतो हतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोऽतिहीनः।
भवेत्प्रसूतौ निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे॥ १२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य रोगी, साधुवृत्तिसे हीन, सौख्य और धनहीन होता है॥ १२॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

नृपावरोधाधिकृतं विनीतं गुणान्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम्।
कुर्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थो रविणा प्रदृष्टः॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य राजाके रनवासकी ड्योढ़ीका अफसर, नम्रतासहित, गुणयुक्त और शास्त्रका जाननेवाला होता है॥ १३॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्।

सदन्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम्।
सुकेशपाशं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिंदुदृष्टः॥ १४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ अन्न वस्त्रादि सुखसहित और नीलकमलके समान श्याम सुन्दर नेत्रोंवाला और सुन्दर बालोंवाला होता है॥ १४॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

भाग्यान्वितःकामविधिप्रवीणः कांतानिमित्तं द्रविणव्ययःस्यात्।
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रकामं बुधर्क्षसंस्थः कुसुतेन दृष्टः॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य भाग्यसहित, कामकलामें चतुर और स्त्रीके निमित्त धनका व्यय करनेवाला कामी होता है॥ १५॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सुगुप्तवित्ताभिनतं प्रशांतं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम् ।
करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो मनुष्य गुप्तधनवाला, शान्तस्वभाव, माननीय, बहुत दान देनेवाला और जनोंकी सम्मति सहित होता है ॥ ६ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः ।
प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतङ्गेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ स्त्रियों करके तथा धन वाहनों करके निश्चय सुखको प्राप्त होता है ॥ ७

अथ स्वगेहगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

विलासिनीकेलिविलाससक्तः कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली ।
नरः सुशीलः शुभवाग्विलासः स्वीयालयस्थे स्फुजितीन्दुदृष्टे ॥ ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य वेश्याओंके विलासमें आसक्त, अपने कुलका पालनेवाला, निर्मल बुद्धिवाला सुशील और श्रेष्ठ वाणीके बोलनेमें चतुर होता है ॥ ८ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

गृहादिसौख्योपहतं नितांतं वलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम् ।
कुर्य्यान्नराणां दनुजेन्द्रमन्त्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ॥ ९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको मङ्गल देखता हो तो वह मनुष्य गृहादि सौख्योंसे रहित और लड़ाईमें अपमानको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

गुणाभिरामं सुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च ।
स्वक्षेत्रगो दैत्यगुरुः प्रकुर्य्यान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको बुध देखता हो तो वह मनुष्य गुणवान्, सदैव सुन्दर, सौम्यस्वभाववाला, बलवान् और धैर्यसहित होता है ॥ १० ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

कलासु दक्षो हतशत्रुपक्षो बुद्ध्या च सौख्येन युतो मनुष्यः ।
परंतु कांताकृतचिंतयार्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात् ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य कलाओंमें चतुर, शत्रुओंका नाश करनेवाला, बुद्धि तथा सौख्य सहित और स्त्री करके चिन्ताको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तम् ।
जनोज्झितं चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ज्ञदृष्टः॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण, गुणवान, गुणोंका जाननेवाला, स्त्री पुत्रोंकरके अत्यंत दुःखसे संतापको प्राप्त और मनुष्योंसे त्यागा जाता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तिं विनीत-
मतिविभवसमेतं यामिनीसूनुसौख्यम् ।
प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते
सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवः कर्कटस्थः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य अत्यंत चतुर, उदार, सुन्दरवृत्तिवाला, नम्रतासहित, मति और वैभवसहित स्त्री पुत्रोंके सौख्यवाला और प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सद्वृत्तसौख्योपहतं गतार्थं व्यर्थप्रयत्नं वनिताजितं च ।
स्थानच्युतं संजनयेन्मनुष्यं मंदेक्षितः कर्कगतः सिताख्यः॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठवृत्ति और सौख्यरहित, धनहीन, व्यर्थ परिश्रम करनेवाला, स्त्री करके जीता गया और स्थानसे पतित होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

स्पर्द्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कांताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः ।
कमेलकाद्यैर्यदि वा युतः स्यादर्केक्षिते सिंहगते [illegible] ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं महावाहनवित्तवृद्धिं सेनापतित्वं परिवारसौख्यम् ।
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रवीणं बुधर्क्षसंस्थश्च बुधेन दृष्टः ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको बुध देखता हो मनुष्य चतुर, बडा भारी वाहन और धनकी वृद्धिवाला, फौजका मालिक, परिवारके सौख्यसहित और बुद्धिमान् होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरां विनीतः ।
मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टे सिते देवपुरोहितेन ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवृद्धिसहित, बहुत वैभवसहित, प्रसन्नचित्त और नितरां नम्र होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

पराभिभूतं चपलं विविक्तं सुदुःखितं सर्वजनोज्झितं च ।
मर्त्यं करोत्येव भृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षे रविजेन दृष्टः ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य अपमान करके सहित, चपल स्वभाव, अकेला, दुःखसहित और सब लोगोंसे त्यागा हुआ होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

सरोपयोपाकृतदर्पनाशः स्यात्पूरुषः शत्रुजनाभिभूतः ।
दैत्यार्चिते कर्कटराशियाते निरीक्षितेऽहर्पतिना प्रसूतौ ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य स्त्रीकरके स्वीकृत दर्पका नाश करनेवाला और वैरियों करके पीडित होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमम्बां सपत्नीं बहुगौरवाणि ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कदृष्टः कुलीरगो भार्गवनामधेयः ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य पहिले लडकी पीछे लडका पैदा करता है और सिमातावाला तथा बडा गौरवी होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

कलासु दक्षो हतशत्रुपक्षो बुद्ध्या च सौख्येन युतो मनुष्यः।
परंतु कांताकृतचिंतयार्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात् ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य कलाओंमें चतुर, शत्रुओंका नाश करनेवाला, बुद्धि तथा सौख्य सहित और स्त्री करके चिन्ताको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तम्।
जनोज्झितं चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ज्ञदृष्टः॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण, गुणवान, गुणोंका जाननेवाला, स्त्री पुत्रोंकरके अत्यंत दुःखसे संताफको प्राप्त और मनुष्योंसे त्यागा जाता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तिं विनीत-
मतिविभवसमेतं यामिनीसूनुसौख्यम्।
प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते
सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवः कर्कटस्थः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य अत्यंत चतुर, उदार, सुन्दरवृत्तिवाला, नम्रतासहित, मति और विभवसहित स्त्री पुत्रोंके सौख्यवाला और प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तसौख्योपहतं गतार्थं व्यर्थप्रयत्नं वनिताजितं च।
स्थानच्युतं संजनयेन्मनुष्यं मंदेक्षितः कर्कगतः सिताख्यः॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठवृत्ति और सौख्यरहित, धनहीन, व्यर्थ परिश्रम करनेवाला, स्त्री करके जीता गया और स्थानसे पतित होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

स्पर्द्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कांताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः।
क्रमेलकाद्यैर्यदि वा युतः स्यादर्केक्षिते सिंहगते सिनाख्ये ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह मनुष्य दूसरेके चित्तवृत्तिको बढानेवाला, स्त्रीके आश्रयसे धनको लाभ करनेवाला और ऊंट गधे घोडोंसे धन लाभ करता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम्।

नूनं जनन्याश्च भवेत्सपत्नी पत्नीविरोधो विभवोद्भवश्च।
यस्य प्रसूतौ दनुजेंद्रमन्त्री चन्द्रेक्षितःसिंहगतो यदि स्यात्॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको चंद्रमा देखता हो उस मनुष्यकी माता दो होती हैं और वह स्त्रीसे विरोध करनेवाला तथा ऐश्वर्यवान् होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

नृपप्रियं धान्यधनैरुपेतं कन्दर्पजातव्यसनाभिभूतम्।
करोति मर्त्यं मृगराजसंस्थो भृगोस्तनूजोऽवनिजेन दृष्टः॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य राजाका प्यारा, अन्न धन सहित और कामकलाके व्यसनों सहित होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

धनान्वितं संग्रहचित्तवृत्तिं लुब्धं स्मराधिक्यविकारनिघ्नम्।
दैत्येंद्रमन्त्री कुरुते मनुष्यं सिंहस्थितः सोमसुतेन दृष्टः ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य धनसहित, संग्रह करनेमें चित्तवाला, लोभी और कामदेवकी अधिकताके हुए विकारोंसे युक्त होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

नरेंद्रमन्त्री धनवाहनाढ्यो बहुस्त्रीनन्दनभृत्यसौख्यः।
विख्यातकर्मा च भृगोस्तनूजे जीवेक्षिते सिंहगते नरः स्यात् २९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, धन वाहन सहित, बहुत स्त्री पुत्र नौकरोंके सौख्यवाला और प्रसिद्ध कर्मोंका करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

नृपोत्तमं सर्वसमृद्धिभाजं दाराविकारेऽप्यथ वा निपुणम्।
करोति मर्त्यं मृगराजवर्ती दैत्यार्चितः सूर्यसुतेन दृष्टः॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य राजाके समान सम्पूर्ण समृद्धियोंका भागी और फौजदारीके महकमेंका अफसर होता है ॥ ३० ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

रौद्रं प्राज्ञं भाग्यसौभाग्यभाजं सत्त्वोपेतं वित्तवन्तं विशेषात्।
नानादेशप्राप्तयानं मनुष्यं कुर्याच्छुक्रो जीवभे भानुदृष्टः॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्र सूर्यसे दृष्ट हो वह मनुष्य क्रूर, चतुर, भाग्य और सौभाग्यका भागी, बलसहित, विशेष धनवान् और अनेक देशोंकी यात्रा करनेवाला होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम्।

सद्राजमानेन विराजमानं ख्यातं विनीतं बहुभोगयुक्तम्।
धीरं ससारं हि नरं करोति भृगुर्गुरुक्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ राजमानसे विराजमान, प्रसिद्ध, नम्रतासहित, बहुत भोगसहित, धीर और बलवान् होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

द्विपामसह्यं धनिनं प्रसन्नं कांताकृतप्रेमभरं सुपुण्यम्।
सद्वाहनाढ्यं कुरुते मनुष्यं भौमेक्षितिज्यालयगामिशुक्रः॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको मंगल देखता हो वह मनुष्य वैरियोंको नहीं सहन होनेवाला, धनवान्, प्रसन्न, स्त्रीकृत प्रेमसे सहित, श्रेष्ठ पुण्यवान् और श्रेष्ठ वाहनों सहित होता है ॥ ३३ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

सद्वाहनार्थाम्बरभूषणानां लाभं सदन्नानि सुखानि नूनम्।
कुर्यान्नराणां गुरुमंदिरस्थो दैत्यार्चितः सोमसुतेन दृष्टः॥३४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन, धन, वस्त्र, आभूषणका लाभ करनेवाला और श्रेष्ठ अन्नोंके सुखसहित होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

तुरंगहेमाम्बरभूषणानां महागजानां वनितासुखानाम्।
करोत्यवाप्तिं भृगुजः प्रसूतौ जीवेक्षितो जीवगृहाश्रितश्च ॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्र बृहस्पतिसे दृष्ट हो वह मनु घोडे, सोना, वस्त्र, आभूषण, बडे हाथी और स्त्रियोंके सुखोंसहित होता है ॥ ३५

अथ गुरुगेहगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सद्भोगसौख्योत्तमकर्मभाजं नित्योत्सवोत्कर्षयुतं सुवित्तम् ।
करोति मर्त्यं गुरुगेहयातो दैत्यार्चितो भानुसुतेक्षितश्च ॥ ३६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको सूर्य देखता हो वह म ष्य श्रेष्ठ भोग, उत्तम सौख्य और कर्मोंका भागी, नित्य उत्सवसहित और धनवाला होता है ॥ ३६ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

स्थिरस्वभावं विभवोपपन्नं महाधनं सारविराजमानम् ।
कांताविलासैः सहितं प्रकुर्याद् भृगुः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः॥३७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको शनि देखता हो मनुष्य स्थिर स्वभाववाला, वैभवसहित, मणियुक्त, बलसे विराजमान और स्त्री विलासों सहित होता है ॥ ३७ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम् ।

ओजस्विनं चारुशरीरयष्टिं प्रकृष्टसत्त्वं धनवाहनाढ्यम् ।
करोति मर्त्यं शनिगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः॥३८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता हो व मनुष्य ओजस्वी, सुन्दर शरीरवाला, बडा बलवान्, धन और वाहनों सहित होता है ३

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

श्रमामयाभ्याममितप्तमूर्तिमनर्थतोऽर्थक्षतिसंयुतं च ।
कुर्यान्नरं दानवराजपूज्यः कुजेक्षितः सूर्यसुतालयस्थः ॥ ३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य श्रम और रोगसे अत्यन्त तप्तस्वरूपवाला और अनर्थसे धनका नाश करने वाला होता है ॥ ३९ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विद्वद्विधिज्ञं धनिनं सुतुष्टं प्राज्ञं सुसत्त्वं बहुलप्रपंचम् ।
सद्वाग्विलासं मनुजं प्रकुर्याद् भृगुः शनिक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको बुध देखता हो वह मनुष्य पंडितोंकी विधिका जाननेवाला, धनी, संतुष्ट, चतुर, बलसहित, बडा प्रपंची और श्रेष्ठ वाणीका विलास करनेवाला होता है ॥ ४० ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

सद्गन्धमाल्यांबरचारुवाद्यसंजातसंगीतरुचिः शुचिश्च ।
स्यान्मानवो दानवराजपूज्ये सुरेज्यदृष्टे शनिमन्दिरस्थे ॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता हो ह मनुष्य श्रेष्ठ गंध, माला, वस्त्र, सुन्दर वाजे सहित संगीतविद्याका जाननेवाला ौर पवित्र होता है ॥ ४१ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नगात्रं च विचित्रलाभं धनाङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ।
कुर्य्यान्नरं दानववृन्ददेवो मन्देक्षितो मन्दगृहाधिसंस्थः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शुक्रको शनैश्वर देखता हो वह मनुष्य प्रसन्न देह, अनेक वस्तु लाभ करनेवाला, धन और स्त्रीपुत्रोंके सौख्य-सहित वाहनवाला होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिराशिगते शुक्रे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ भौमालयस्थे शनौ रविदृष्टिफलम् ।

लुलायगोजाविसमृद्धिभाजं कृषिक्रियायां निरतं सदैव ।
सत्कर्मसक्तं जनयेन्मनुष्यं भौमालयस्थः शनिरर्कदृष्टः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्वरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य भैंसे, गैया, बकरी, भेड़की समृद्धिवाला, खेतीके काममें हमेशा तत्पर और श्रेष्ठ कर्ममें आसक्त होता है ॥ १ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

नीचानुयातं चपलं कुशीलं खलं सुखार्थैः परिवर्जितं च ।
कुर्यादवश्यं रविजो मनुष्यं शशीक्षितो भूसुतवेश्मसंस्थः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्वरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य नीचोंकी संगतिवाला, चपल, दुष्टशील, खल, सुख और धनरहित होता है ॥ २ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

अनल्पजल्पं गतसत्परार्थं कार्यक्षतिं यातविशेषवित्तम् ।
करोति जातं ननु भानुसूनुः कुजेन दृष्टः कुजवेश्मसंस्थः ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्वरको मङ्गल देखता हो

अथ बुधर्क्षे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिर्नृपतिप्रसादात्प्राप्ताधिकारोन्नतिकार्यवृत्तिः ।
कांताधिकारोयदि वानरःस्यान्मन्दे ज्ञभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे॥१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता तो वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति राजाकी कृपाकरके अधिकारको प्राप्त, ऊंचे कार्यमें करनेवाला और स्त्रियोंका अधिकारी होता है ॥ १४ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

प्रकृष्टबुद्धिं सुतरां विधिज्ञं ख्यातं गभीरं च नरं करोति ।
सोमात्मजक्षेत्रगतोऽर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टः परिसूतिकाले ॥ १५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत शनैश्चरको मंगल देखता तो वह मनुष्य बडा बुद्धिमान, अतिशय विधिका जाननेवाला, प्रसिद्ध व गम्भीर होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

धनान्वितं चारुमतिं विनीतं गीतप्रियं सङ्गरकर्मदक्षम् ।
शिल्पेऽप्यभिज्ञं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्येक्षितःसौम्यगृहस्थमन्दः॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको बुध देखता तो वह मनुष्य धनसहित, सुन्दर बुद्धिवाला, नम्रतासहित, गीत जिसको प्रि संग्रामके कार्यमें चतुर और शिल्पका जाननेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

राजाश्रितश्चारुगुणैः समेतः प्रियः सतां गुप्तधनो मनस्वी ।
भवेन्नरो मन्दचरो यदि स्याज्ज्ञराशिसंस्थः सुरपूज्यदृष्टः॥१७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देख हो तो वह मनुष्य राजाका आश्रय करनेवाला, सुन्दर गुणों करके सहित, सत्पु रुषोंका प्यारा और गुप्तधनवाला तथा उदार होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

योषाविभूषाकरणे प्रवीणं सत्कर्मधर्मानुरतं नितांतम् ।
स्त्रीसक्तचित्तं प्रकरोति मर्त्यं सितेक्षितो भानुसुतो ज्ञदृष्टः॥१८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता है तो वह मनुष्य स्त्रीके आभूषण बनवानेमें चतुर, श्रेष्ठ कर्म और धर्ममें निरन्तर तत्पर तथा स्त्रियोंमें आसक्तचित्तवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्।

आनन्ददारद्रविणैर्विहीनः सदान्नभोगैरपि वोज्झितश्च।
मातुर्महाक्लेशकरो नरः स्यान्मन्दे कुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य आनन्द और स्त्री धन करके हीन हमेशा अन्न भोग करके हीन और माताको बड़ा क्लेश देनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

निपीडितं बन्धुजने जनन्यां नूनं धनानामभिवर्द्धनं च।
कुर्यान्नराणां द्युमणेस्तनूजः कुलीरसंस्थो द्विजराजदृष्टः ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य बन्धुजनोंको पीडा देनेवाला और माताको दुःख देनेवाला, धनकी वृद्धि-सहित होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

गलद्बलः क्षीणकलेवरश्च नृपार्पितार्थोत्तमवैभवोऽपि।
स्यान्मानुषो भानुसुते प्रसूतौ कर्कस्थिते क्षोणिसुतेन दृष्टे॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो वह मनुष्य बल करके हीन, क्षीण देहवाला, राजाके दिये हुए धन करके वैभववाला होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम्।

वाग्विलासकठिनोऽटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपि युक्तः।
दम्भवृत्तिचतुरोऽपि नरः स्यात्कर्कगामिनि शनौ बुधदृष्टे॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो वह मनुष्य वाग्विलासमें कठिन और भ्रमण करनेवाला और मनोवांछित फलको प्राप्त एवं पाखण्ड करनेमें चतुर होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनै रत्नवाहनविभूषणैरपि।
संयुतो भवति मानवो जनौ जीवदृष्टियुजि कर्कगे शनौ ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य पृथ्वी, पुत्र, मकान और स्त्री, धन, रत्न और वाहन आभूषणोंकरके सम्पन्न होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्।

उदारतागौरवचारुमानैः सौन्दर्यवर्यामलवाग्विलासैः।
नूनं विहीना मनुजा भवेयुः शुक्रेक्षिते कर्कगतेऽर्कपुत्रे ॥ २४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्वरको शुक्र देखता हो वह म उदारता एवं गौरव करके युक्त, अच्छे प्रकार मान करके सहित और अधिक सु रता तथा निर्मल वाणी विलास करके हीन होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ रविदृष्टिफलम्।

धनेन धान्येन च वाहनेन सद्वृत्तिसत्योत्तमचेष्टितैश्च।
भवेद्विहीनो मनुजः प्रसूतौ सिंहस्थिते भानुसुतेऽर्कदृष्टे॥ २५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्वरको सूर्य देखता हो वह मनु धन, धान्य, वाहन, श्रेष्ठ वृत्ति, सत्य और उत्तम चरित्रों करके हीन होता है ॥२५

अथ सिंहराशिगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

सद्रत्नभूषाम्बरचारुकीर्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम्।
प्रसन्नमूर्तिं कुरुतेऽर्कसूनुर्नरं हरिस्थो हरिणांकदृष्टः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्वरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रत्न, आभूषण, वस्त्र, सुन्दर यश, स्त्री, मित्र और पुत्रादिकोंके सुखसे पूर्ण और प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

संग्रामकर्मण्यतिनिपुणः स्यात्कारुण्यहीनो मनुजः सकोपः।
क्रूरस्वभावो ननु भानुसूनौ सिंहस्थिते भूमिसुतेक्षिते च॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्वरको मंगल देखता हो वह मनुष्य संग्रामकर्ममें अत्यन्त निपुण, करुणाहीन, क्रोधी, और क्रूरस्वभाववाला होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम्।

धनाङ्गनासूनुसुखेन हीनं दीनं च नीचव्यसनाभिभूतम्।
करोति जातं तपनस्य सूनुः सिंहस्थितः सोमसुतेक्षितश्च ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्वरको बुध देखता हो वह मनुष्य धन, स्त्री और पुत्र सुख करके हीन, दीनतासहित और नीच व्यसनोंके करनेसे निरस्कृत होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतं ख्यातं सुवृत्तं सुतरां विनीतम्।
नरं पुरग्रामपतिं करोति सौरिर्हरिस्थो गुरुणा प्रदृष्टः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ मित्र और पुत्रादि युक्त, गुणोंसहित, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ वृत्तिवाला अत्यन्त नम्रता सहित पुर और ग्रामका पति होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्।

धनैश्च धान्यैरपि वाहनैश्च सुखैरुपेतं वनिताप्रतप्तम्।
कुर्यान्मनुष्यं तपनस्य सूनुः पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य धन और अन्न तथा वाहनके सुखसे सम्पन्न और स्त्रीसे सन्तापको प्राप्त होता है ॥ ३० ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ रविदृष्टिफलम्।

ख्यातिं धनाप्तिं बहु गौरवाणि स्नेहप्रवृत्तिं परनन्दनेषु।
लभेन्नरो देवगुरोरगारे शनैश्चरे पद्मिनिनाथदृष्टे ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य प्रसिद्ध धनको प्राप्त करनेवाला, बहुत गौरवको प्राप्त और पराये पुत्रमें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तशाली जननीवियुक्तो नामद्वयालंकरणप्रयातः।
सुतार्थभार्यासुखभाङ् नरः स्यात्सौरे सुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे ३२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वृत्ति करनेवाला, मातासे रहित और दो नामों करके शोभित पुत्र, धन, स्त्रीके सुख भोगनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

वातान्वितं लोकविरुद्धचेष्टं प्रवासिनं दीनतरं करोति।
नरं धरासूनुनिरीक्ष्यमाणो मार्तण्डपुत्रः सुरमंत्रिणो भे ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो वह मनुष्य वातरोगसहित, संसारमें मनुष्योंके विपरीत चलनेवाला, परदेशमें रहनेवाला या अत्यन्त दीन होता है ॥ ३३ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

गुणाभिरामो धनवान्प्रकामं नराधिराजाप्तमहाधिकारः ।
नरः सदाचारविराजमानः शनौ ज्ञदृष्टे गुरुमंदिरस्थे ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्वर बुधको देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित, धनवान, कामी, राजा करके बडे अधिकारको प्राप्त और हमेशा श्रेष्ठ आचरण करनेवाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा सर्वाधिशाली बलवान्सुशीलः ।
स्यान्मानवो भानुसुते प्रसूतौ जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्वरको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, अथवा फौजका स्वामी (जनरल), सब कार्योंको करनेवाला, बलवान् एवं सुशील होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

विदेशवासी बहुकार्यसक्तो द्विमातृपुत्रः सुतरां पवित्रः ।
स्यान्मानवो दानवमंत्रिदृष्टे मन्देऽमराचार्यगृहं प्रयाते ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिवर्ती शनैश्वरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य परदेशमें रहनेवाला, बहुकार्योंमें आसक्त, दो माताका पुत्र और अत्यन्त पवित्र होता है ॥ ३६ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ रविदृष्टिफलम् ।

कुरूपभार्यश्च परान्नभोक्ता नानाप्रयासामयसंयुतश्च ।
विदेशवासी प्रभवेन्मनुष्यो मन्दे निजागारगतेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्वरको सूर्य देखता हो वह मनुष्य बुरे रूपवाली स्त्रीका पति, पराया अन्न खानेवाला, अनेक प्रयाससहित रोगसहित और परदेशका वासी होता है ॥ ३७ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनाढ्यं वृजिनानुयातं चलस्वभावं जननीविरुद्धम् ।
कामातुरं चापि नरं प्रकुर्यान्मन्दः स्वभस्थोऽमृतरश्मिदृष्टः ॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्वरको चन्द्रमा देखता हो वह मनुष्य धन और स्त्री सहित, दुःख करके पैदा हुआ, चपल स्वभाववाला, माताके विरुद्ध और कामातुर होता है ॥ ३८ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

शूरः क्रूरः साहसी सद्गुणाढ्यः सर्वोत्कृष्टः सर्वदा हृष्टचित्तः ।
ख्यातो मर्त्यश्चात्मजस्थेऽर्कपुत्रे धात्रीपुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयाते॥३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्चरको मंगल देखता हो वह मनुष्य शूरवीर, क्रूर, साहसी, अच्छे गुणोंकरके सहित, सर्वजनोंमें उत्कृष्ट, हमेशा प्रसन्न रहनेवाला और प्रसिद्ध होता है ॥ ३९ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्त्वान्धीरांश्च नानाविधकार्यसक्तान् ।
करोति मर्त्यान्ननु भानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थःशशिपुत्रदृष्टः ॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्चरको बुध देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहनसहित, उत्साहसहित, बलवान् धीर और अनेक प्रकारके कार्योंमें आसक्त होता है ॥ ४० ॥

अथ स्वगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

गुणान्वितं क्षोणिपतिप्रधानं निरामयं चारुशरीरयष्टिम् ।
कुर्यान्नरं देवगुरुप्रदृष्टश्चंडांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य गुणोंसे संपन्न, राजाका मंत्री, रोगरहित, एवं सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ४१ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

कामातुरं सन्नियमेन हीनं भाग्योपपन्नं सुखिनं धनाढ्यम् ।
भोक्तारमीशं कुरुते स्वभस्थो रवेः सुतो भार्गवसूनुदृष्टः ॥४२॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
ग्रहदृष्टिफलाध्यायः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता हो वह मनुष्य कामातुर, श्रेष्ठ नियमसहित, भाग्यसहित, सुखवान्, धनवान्, भोग भोगनेवाला और लक्ष्मीका स्वामी होता है ॥ ४२ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजज्योतिषिक-पंडितश्यामलाल-कृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां ग्रहदृष्टिफलवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ राशिफलानि—तत्र मेषराशिगतसूर्यफलम् ।

भवति साहसकर्मकरो नरो रुधिरपित्तविकारकलेवरः ।
क्षितिपतिर्मतिमान्सहितस्तदा सुमहसा महसामधिपे क्रिये॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य साहसके का करनेवाला, रुधिर और पित्तविकारयुक्त देहवाला, भूमिका मालिक अति तेजस्वी और बुद्धिमान् होता है ॥ १ ॥

अथ वृषराशिगतसूर्यफलम् ।

परिमलैर्विमलैः कुसुमासनैः सवसनैः पशुभिस्सुखमद्भुतम् ।
गवि गतो हि रविजलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य दूर जानेवाली गन्धयुक्त पुष्प और शय्या और उत्तम वस्त्र और पशुओंके अद्भुत सौख्यको पानेवाला, जलसे डरनेवाला, मनुष्योंके लिये हित एवं कर्तव्य कर्मोंका उपदेश करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ मिथुनराशिगतसूर्यफलम् ।

गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललिताद्भुतवाक्प्रथितो भवेत्
दिनपतौ मिथुने ननु मानवो विनयतानयतातिशयान्वितः॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन राशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य गणितशास्त्रकी कलाको जाननेवाला, निष्कपट शीलवाला, शोभायमान, अद्भुत वाणी बोलनेवालोंमें अग्रणीय, विनयसहित, अतिशयकरके नीतियुक्त होता है ॥ ३ ॥

अथ कर्कराशिगतसूर्यफलम् ।

सुजनतारहितः किल कालविज्जनकवाक्यविलोपकरो नरः ।
दिनकरे हि कुलीरगते भवेत्सधनतासहिताधिकः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य मनुष्यतारहित, कालका जाननेवाला, पिताके वाक्यको नष्ट करनेवाला, धनवान् और धनवानोंमें अग्रणीय होता है ॥ ४ ॥

अथ सिंहराशिगतसूर्यफलम् ।

स्थिरमतिश्च पराक्रमताधिको विभुतयाद्भुतकीर्तिसमन्वितः ।
दिनकरे करिवैरिगते नरो नृपरतो परतोषकरो भवेत् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य स्थिर बुद्धिवाला, अधिक बलवान्, अपनी संपत्तिके द्वारा अद्भुत कीर्तिवाला, राजामें रत और पराया सन्तोष करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ कन्याराशिगतसूर्यफलम्।

दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेर्द्रविणं हि नरो लभेत्।
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः सुमहिमा महिमापिहिताहितः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य राजासे धन प्राप्त करनेवाला, कोमलवाणी बोलनेवाला, गाना सुननेवाला और बडे महत्त्वको पानेवाला, एवं अपने पराक्रमसे शत्रुओंको वशमें रखने वाला होता है॥ ६॥

अथ तुलाराशिगतसूर्यफलम्।

नरपतेरतिभीरुरहर्निशं जनविरोधविधानमघं दिशेत्।
कलिमनाः परकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्न मणिद्रविणादिकम्॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य रात दिन राजासे अत्यन्त डरने वाला, मनुष्योंसे विरोध करनेवाला, पापकर्म करनेवाला, कलह (झगडा) करनेवाला, पराये कर्ममें प्रीति करनेवाला होता है और उसको द्रव्यादिक मणियें नहीं प्राप्त होतीं॥ ७॥

अथ वृश्चिकराशिगतसूर्यफलम्।

कृपणतां कलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत्।
अलिगतः पितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम्॥८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य कृपण, अतिशय करके कलह करनेवाला, विष अग्नि शस्त्रसे भयको प्राप्त, पिता माताका विरोधी और उन्नतिरहित होता है॥ ८॥

अथ धनराशिगतसूर्यफलम्।

स्वजनकोपमतीव महामतिं बहुधनं हि धनुर्धरगो रविः।
स्वजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितो मतितोषविवर्द्धनम्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन राशिगत सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य अपने मित्रोंसे क्रोध करनेवाला, बडा बुद्धिमान्, बहुत धनवाला, मित्रोंका पूजन करनेवाला और श्रेष्ठ बुद्धिद्वारा संतोषका बढानेवाला होता है॥ ९॥

अथ मकरराशिगतसूर्यफलम्।

अटनतां निजपक्षविपक्षतामधनतां कुरुते सततं नृणाम्।
मकरराशिगतो विगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत् १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत सूर्य बैठा हो वह मनुष्य भ्रमण कर-

नेवाला, अपने जनोंसे विरोध रखनेवाला, निरन्तर धनहीन, उत्सवरहित और मि
तिका सुख नहीं पाता है ॥ १० ॥

अथ कुम्भराशिगतसूर्यफलम् ।

कलशगामिनि पंकजिनीपतौ शठतरो हि नरो गतसौहृदः ।
मलिनताकलितो रहितः सदा करुणयारुणयातसुखो भवेत् ११

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य शठता सहित
मित्रता रहित, मलिनतायुक्त, करुणाहीन और रुधिर प्रकोप होनेसे दुःखी
होता है ॥ ११ ॥

अथ मीनराशिगतसूर्यफलम् ।

बहुधनं क्रयविक्रयतः सुखं निजजनादपि गृह्यमहाभयम् ।
दिनपतौ गुरुभेऽभिमतो भवेत्सुजनतो जनतोपदसन्मतिः॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत सूर्य बैठा हो तो वह मनुष्य क्रय विक्र
करके बहुत धन पानेवाला, अपने मनुष्योंसे भयको प्राप्त, श्रेष्ठ जनों करके म
ष्योंको तोष करनेवाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ मेषराशिगतचन्द्रफलम् ।

स्थिरधनो रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदाविजितो भवेत् ।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्१३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्थिर धन-
वाला होता है और श्रेष्ठ जनोंकरके रहित, पुत्र सहित, स्त्री करके पराजित
अद्भुत वैभवसे अच्छी कीर्ति पाता है ॥ १३ ॥

अथ वृषराशिगतचन्द्रफलम् ।

स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगतान् ।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत्सुकृतितः कृतितश्च सुखानि च १४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्थिर गति-
वाला, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, शोभायमान, कुशलताको प्राप्त, बहुत भोगोंवाला, श्रेष्ठ
कार्योंसे और कुशलतासे सौख्य पाता है ॥ १४ ॥

अथ मिथुनराशिगतचन्द्रफलम् ।

प्रियकरः करमत्स्ययुतो नरः सुरतसौख्यपरो युवतिप्रियः ।
मिथुनराशिगते हिमगौ भवेत्सुजननाजननाकुलगौरवः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य प्रिय करनेवाला, हाथोंमें मछलीके आकारवाली रेखावाला, मैथुनके सौख्यसहित, अतिशय करके स्त्रियोंका प्यारा, एवं सज्जन होता है और मनुष्य उसका गौरव करते हैं ॥ १५ ॥

अथ कर्कराशिगतचंद्रफलम् ।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृत्तयः कुसुमगंधजलाशयकेलयः ।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमतीप्सितलब्धयः॥१६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य शास्त्रमें कुशल, बलवान्, शुद्धचित्त, पुष्पोंसे गंध सूंघनेवाला, जलमें क्रीडा करनेवाला, धरती करके सहित और श्रेष्ठ बुद्धिसे मनोरथको प्राप्त करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ सिंहराशिगतचंद्रफलम् ।

अचलकाननयानमनोरथं गृहकलिं च गलोदरपीडनम् ।
द्विजपतिर्मृगराजगतो नृणां वितनुते तनुतेजविहीनताम् ॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य पर्वत और जंगलकी यात्राका मनोरथ करनेवाला, घरमें कलह करनेवाला, गले और पेटमें पीडाको प्राप्त और शरीरके तेजरहित होता है ॥ १७ ॥

अथ कन्याराशिगतचन्द्रफलम् ।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिविलासकुतूहलैः ।
विमलशीलसुताजननोत्सवैः सुविधिनाविधिनासहितःपुमान्॥१८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य स्त्रियोंके साथ अधिक विलास करनेवाला, कुतूहल करके श्रेष्ठशील कन्याकी सन्तानके उत्सव सहित, श्रेष्ठ भाग्यवान् और उत्तम कृत्यवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ तुलाराशिगतचन्द्रफलम् ।

वृषतुरंगमविक्रमविक्रमो द्विजसुरार्चनदानमनाः पुमान् ।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसञ्चितविक्रमः॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य बैल घोडोंके समान पराक्रमवाला, एवं ब्राह्मणोंका पूजन करनेवाला, बहुत स्त्रियोंवाला, विभव और प्रतिष्ठा करके पराक्रम प्राप्त करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतचन्द्रफलम् ।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृप दुरोदरजातधनक्षयः ।
कलिरुचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चन्द्रमा बैठा हो उसका राजा अथ जुए करके धन नष्ट होता है, कलहमें प्रीति करनेवाला, निर्बल देहवाला, दुष्ट मन वाला एवं दुर्बल देहवाला और शान्तिरहित होता है ॥ २० ॥

अथ धनराशिगतचन्द्रफलम् ।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य बहुत कामोंमें चतुर, अधिक बलवान्, निर्मलता करके सहित, सीधी वाणी बोलनेवाला, धनका और बहुत खर्च नहीं करता है ॥ २१ ॥

अथ मकरराशिगतचन्द्रफलम् ।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुपासहितो मदनातुरः ।
निजकुलोत्तमवृत्तिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत् ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य पानी करके डरनेवाला, गानविद्याका जाननेवाला, रूखा शरीर, कामातुर और अपने कुलमें उत्तम वृत्ति करनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ कुम्भराशिगतचन्द्रफलम् ।

अलसतासहितोऽन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोऽतिविचक्षणः ।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरुरिपुव्रजः ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य आलस्य सहित, पराये पुत्रसे प्रीति करनेवाला, कुशलतासहित, अत्यन्त चतुर, शान्त स्वभाव वाला और वैरियोंका नाश करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ मीनराशिगतचन्द्रफलम् ।

शशिनि मीनगते विजितेंद्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः ।
विमलधीः किल शास्त्रकलादरस्त्वबलताबलताकलितो नरः २४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य इन्द्रियोंका जीतनेवाला, बहुत गुणवाला, कुशल, जलकी लालसावाला, निर्मल बुद्धिवाला, शास्त्रविद्यामें प्रवीण और निर्बल देहवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ मेषराशिगतभौमफलम् ।

क्षितिपतेः क्षितिमानधनागमैः सुवचसा महसा बहुसाहसैः ।
अवनिजः कुरुते सततं युतं त्वजगतो जगतोऽभिमतं नरम् ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य राजा करके धरती और मान धनको प्राप्त करनेवाला, श्रेष्ठ वाणी, एवं तेजवाला, बहुत साहसी और संसारका प्यारा होता है ॥ २५ ॥

अथ वृषराशिगतभौमफलम् ।

गृहधनाल्पसुखं च रिपूदयं परगृहस्थितिमादिशते नृणाम् ।
अविनयाग्नि वृषभस्थितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम् ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य घर और धनका थोड़ा सुख पानेवाला, शत्रुओंसहित, पराये घरमें वास करनेवाला अत्यन्त पुत्रजनित पीडाको प्राप्त, अनीति और अग्निरोगसहित होता है ॥ २६ ॥

अथ मिथुनराशिगतभौमफलम् ।

वहुकलाकलनं कुलजोत्कलि प्रचलनप्रियतां च निजस्थलात् ।
ननु नृणां कुरुते मिथुनस्थितः कुतनयस्तनयप्रमुखात्सुखम् २७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य बहुत कलाओंकी रचना करनेवाला, अपने कुटुम्बके पुरुषोंसे कलह करनेवाला, अपने स्थानसे यात्रा प्रिय और पुत्रादिकोंसे सौख्य पानेवाला होता है ॥ २७ ॥

अथ कर्कराशिगतभौमफलम् ।

परगृहस्थिरतामतिदीनतां विमतितां शमितां च रिपूदयैः ।
हिमकरालयगे किल मंगले प्रबलयाबलया कलहं व्रजेत् ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य पराये घरमें वास करनेवाला, अत्यन्त दीन, बुद्धिहीन, शत्रुओंके उपद्रवसे शांत और बलवान् स्त्रीसे कलह करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगतभौमफलम् ।

अतितरां सुतदारसुखान्वितो हतरिपुर्विततोद्यमसाहसः ।
अवनिजे मृगराजगते पुमाननयतानयताभियुतो भवेत् ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य अत्यन्त पुत्र और स्त्रीके सौख्यको पानेवाला व शत्रुओंका नाश करनेवाला, बडा उद्यमी और साहसी, अनीति आर नीति सहित होता है ॥ २९ ॥

अथ कन्याराशिगतभौमफलम् ।

सुजनपूजनताजनताधिको यजनयाजनकर्मरतो भवेत् ।
क्षितिसुते सति कन्यकयान्विते त्ववनितोवनितोत्सवतःसुखी ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ जनोंकरके पूजनीय मनुष्योंके साथ सौख्य सहित, यज्ञ करे और करावे और स्त्रियोंके उत्सवकर्मसे सुखी होता है ॥ ३० ॥

अथ तुलाराशिगतभौमफलम् ।

बहुधनव्ययतांगविहीनतागतगुरुप्रियतापरितापितः ।
वणिजि भूमिसुते विकलः पुमानवनितो वनितोद्भवदुःखितः ॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य बहुत खर्च करनेवाला, अंगविहीन, बडे जनोंमें प्रेमरहित, संतापको प्राप्त, विकल, ...रहित और स्त्रियोंसे दुःखको प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतभौमफलम् ।

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहत्सुखम् ।
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतः परतश्च जयं व्रजेत् ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य विष, अग्नि तथा शस्त्रके भयको प्राप्त, लडका, लडकी एवं वनिता (स्त्री) आदिके सौख्यको प्राप्त, राजामें रत और शत्रुओंसे जयको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

अथ धनुराशिगतभौमफलम् ।

रथतुरंगमगौरवसंयुतः परमरातितनुक्षतिदुःखितः ।
भवति नावनिजे धनुषि स्थिते सुवनितो वनिताभ्रमणप्रियः ॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य रथ और ... सदा ... शत्रुगणसे पीडित, श्रेष्ठ स्त्रीवाला और भ्रमण करनेवाला होता है ॥

अथ मकरराशिगत भौमफलम् ।

रणपराक्रमनावनितासुखं निजजनप्रतिकूलतया श्रमः ।
विभवता मनुजस्य धरात्मजे मकरगे करगैव रमा भवेत् ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य युद्धमें पराक्रम दिखानेवाला, स्त्रीके सौख्यको प्राप्त, अपने कुटुम्बियोंके प्रतिकूल होनेसे परिश्रम करनेवाला और इस प्रकार वैभववाला होता है कि मानो लक्ष्मी इसके हाथमें ही है ॥ ३४ ॥

अथ कुम्भराशिगतभौमफलम् ।

विनयतारहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलङ्कलम् ।
प्रकुरुते मनुजं कलशाश्रितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवदुःखितः २५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत मंगल हो वह मनुष्य नम्रतारहित, रोगसहित, अपने कुटुंबियोंके प्रतिकूल परिपूर्ण खलताको प्राप्त और बहु पुत्र निमित्त दुःखको प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

अथ मीनराशिगतभौमफलम् ।

व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलनं च निजालयात् ।
क्षितिसुतस्तिमिनासुसमन्वितो विमतिना मतिनाशनमादिशेत् २६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत मंगल बैठा हो वह मनुष्य व्यसनसहित खलतासहित, दयारहित, विकलतासहित, अपने स्थानसे चलनेवाला कुबुद्धिसे बुद्धिका नाश होय ॥ २६ ॥

अथ मेषराशिगतबुधफलम् ।

खलमतिः किल चञ्चलमानसो ह्यविरतं कलहाकुलितो नरः ।
अकरुणोऽनृणवांश्च बुधे भवेदविगते विगते क्षितिसाधनः २७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष राशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य दुष्टबुद्धि, चंचल स्वभाव, निरंतर कलह करके आकुल, बहुत खानेवाला, करुणारहित और पृथ्वीका साधनरहित होता है ॥ २७ ॥

अथ वृषराशिगतबुधफलम् ।

वितरणप्रणयं गुणिनं दिशेद्वहुकलाकुशलं रतिलालसम् ।
धनिनमिन्दुसुतो वृषभस्थितो तनुजतोऽनुजतोऽतिसुखं नरम् २८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य दान और नम्रतासहित, गुणवान्, बहुत कलाओंमें कुशल, मैथुनकी लालसा करनेवाला, धनवान्, पुत्र और भ्राताओंके सुखको पाता है ॥ २८ ॥

अथ मिथुनराशिगतबुधफलम् ।

प्रियवचोरचनासु विचक्षणो द्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ।
मिथुनगे जनने शशिनन्दने मदनतोऽदनतोऽपि सुखी नरः २९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन राशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य मीठे वचन बोलनेकी रचनामें चतुर, दो माताका पुत्र, शुभ वेषवाला, भोगी, स्नान और भोजन करके सुखी होता है ॥ ३९ ॥

अथ कर्कराशिगतबुधफलम्।

कुचरितानि च गीतकथादरो नृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम्।
किल कुलीरगते शशभृत्सुते सुरततारतता नितरां भवेत्॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य खोटे कर्म करनेवाला, गीत और कथाका आदर करनेवाला, राजसेवी, परदेश जानेवाला और निरंतर स्त्रियोंके साथ भोग करनेकी इच्छावाला होता है ॥ ४० ॥

अथ सिंहराशिगतबुधफलम्।

अनृततासहितं विमतिं परं सहजवैरकरं कुरुते नरम्।
युवतिदर्पपरं शशिनः सुतो हरिगतोऽरिगतोन्नतिदुःखितम्॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य झूठ बोलनेवाला, हीनबुद्धि, बन्धुगणोंसे वैर करनेवाला, स्त्रियोंके साथ आनंद करनेवाला, शत्रुओंके कारण उन्नति रहित और दुःखित होता है ॥ ४१ ॥

अथ कन्याराशिगतबुधफलम्।

सुवचनानुरतश्चतुरो नरो लिखनकर्मपरो हि धरोन्नतिः।
शशिसुते युवती च गते सुखी सुनयनानयनाञ्चलचेष्टितैः॥३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ वचन बोलनेमें तत्पर, चतुर, लिखाई करनेमें तत्पर, श्रेष्ठ उन्नतिवाला, सुखी और सुन्दर स्त्रियोंके नेत्रोंके अंचलकी इच्छा करनेवाला होता है ॥ ४२ ॥

अथ तुलाराशिगतबुधफलम्।

अनृतवाग्व्ययभाक्खलु शिल्पवित्कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः।
व्यसनयुङ्मनुजः सदने बुधे तुलगतातुलपात्यमनाः पुनः॥३३॥

जिस मनुष्यके तुलाराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य झूठ बोलनेवाला, खर्च करनेवाला, शिल्पविद्याका जाननेवाला, खोटे चरित्रोंमें प्रीति करनेवाला, बहुत बोलनेवाला, व्यसनसहित और पातकी होता है ॥ ४३ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतबुधफलम्।

[illegible]निरस्तमयश्रमो विहितकर्मगुणोपहतिर्भवेत्।
[illegible] शशिनन्दनसुतो [illegible]

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य कृपणतामें अत्यन्त भीति करनेवाला, बडा मेहनती, श्रेष्ठकार्य और सुखकरके हीन, हानि और आलस्यरहित, गुणोंमें दोष देनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ धनराशिगतबुधफलम्।

वितरणप्रणयो बहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलो भवेत्।
शशिसुतेऽत्र शरासनसंस्थिते विहितया हितया रमयान्वितः ४५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य दान और नम्रता युक्त, बहुत वैभवकरके सहित, कुलका स्वामी, कलाओंमें कुशल, योग्य एवं हितकारिणी स्त्रियोंके साथ रमण करनेवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ मकरराशिगतबुधफलम्।

रिपुभयेन युतः कुमतिर्नरः स्मरविहीनतरः परकर्मकृत।
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतःसनतःपुरुषो भवेत॥४६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य शत्रुभयसहित, खोटीबुद्धिवाला, कामकलारहित, पराये कर्म करनेवाला और व्यसनोंकरके नम्र होता है ॥ ४६ ॥

अथ कुम्भराशिगतबुधफलम्।

गृहकलि कलशे शशिनन्दनो वितनुते तनुतां ननु दीनताम्।
धनपराक्रमधर्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत बुध बैठा हो वह मनुष्य घरमें क्लेश करनेवाला, दीनताको बढानेवाला, धन पराक्रम धर्मरहित, बुद्धिहीन, और शत्रुओंकरके सन्तापित होता है ॥ ४७ ॥

अथ मीनराशिगतबुधफलम्।

परधनादिकरक्षणतत्परो द्विजसुरानुचरो हि नरो भवेत्।
शशिसुते पृथुरोमसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः ॥४८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिमें बुध बैठा हो वह मनुष्य पराया धन और जायदादकी रक्षा करनेवाला, ब्राह्मण और देवताओंका सेवक और श्रेष्ठ स्त्रियोंके अंगको देखनेवाला होता है ॥ ४८ ॥

अथ मेषराशिगतगुरुफलम्।

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुरचितां निजवैरिसमुन्नतिम्।
विभवतां च मरुत्पतिपूजितः क्रियगतोऽयगतोरुमतिप्रदः॥४९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य क्षमा, उदार चित्तवाला, शत्रुओंकी उन्नतिरहित, और बडी बुद्धिवाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ वृषराशिगतगुरुफलम्।

द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलुब्धयः।
सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्चरणगा रणगाढपराक्रमैः ॥ ५०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य ब्राह्मण, देवताओंके पूजन और भक्तिसहित, धन, वाहन और गौरव (प्रतिष्ठा) का लोभी, गाढ पराक्रमद्वारा शत्रुओंको अपने चरणोंका दास बनानेवाला होता है ॥ ५०

अथ मिथुनराशिगतगुरुफलम्।

कवितया सहितःप्रियवाक्छुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमा
मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितता हिततासहितैर्भवेद् ॥ ५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य क करके सहित, प्यारी वाणी बोलनेवाला, पवित्र, निष्कपट और शीलवाला, एवं हितकारी होता है ॥ ५१ ॥

अथ कर्कराशिगतगुरुफलम्।

बहुधनागमनो मदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः।
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैःकरिभिर्युतः ॥ ५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य बहुत वाला, कामदेवकी उन्नतिसहित, अनेक शास्त्रोंकी कलामें कुशल, प्रिय बोलने और घोडे और हाथियोंकरके सहित होता है ॥ ५२ ॥

अथ सिंहराशिगतगुरुफलम्।

अचलदुर्गवनप्रभुतोर्जितो दृढतनुर्ननु दानपरो भवेत्।
अरिविभूतिहरो हि नरो युतःसुवचसा वचसामधिपे हरौ ॥ ५३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य पर्वत,कि (कोट) तथा वनका स्वामी, मजबूत, शरीर, दान करनेवाला, शत्रुओंके वैभव हरण करनेवाला और श्रेष्ठवाणी बोलनेवाला होता है ॥ ५३ ॥

अथ कन्याराशिगतगुरुफलम्।

कुसुमगन्धसदम्बरशालिता विमलता धनदानमतिर्भृशम्।
सुरगुरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥ ५४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य पुष्पोंकी माला और उत्तम गंध श्रेष्ठ वस्त्र करके सहित, निर्मल, धन और दानमें बुद्धिवाला, सुन्दर तथा बहुत कालतक शत्रुता करनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

अथ तुलाराशिगतगुरुफलम्।

श्रुततपोजपहोममहोत्सवे द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत्।
वणिजि जन्मनि चित्रशिखण्डिजे चतुरतातुरताहिततारिता९५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य वेद और तप, जप, होम, बडे उत्सवमें तत्पर, ब्राह्मण देवताओंके पूजन और दानमें बुद्धिवाला, चतुरतासहित, आतुर, अहित करनेवाला और शत्रुओंसहित होता है ॥ ९५ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतगुरुफलम्।

धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतरो बहुदम्भपरो नरः।
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो वनतोऽपि च दुःखभाक्९६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य धनका नाश करनेवाला, दोषोंकरके उत्पन्न दुर्बल देहवाला, बड़ा पाखंडी और भवन तथा वनके द्वारा दुःखका भागी होता है ॥ ९६ ॥

अथ धनराशिगतगुरुफलम्।

वितरणप्रणयो बहुवैभवं ननु धनान्यथ वाहनसंचयः।
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरा रुचिराभरणानि,च॥९७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य दान देनेवाला और नम्र, बहुत वैभव और धन वाहनोंसहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला और सुन्दर आभूषणोंवाला होता है ॥ ९७ ॥

अथ मकरराशिगतगुरुफलम्।

हतमतिः परकर्मकरो नरः स्मरविहीनतरो बहुरोषभाक्।
सुरगुरौ मकरे विदधातिनोजनमनो न मनोरथसाधनम् ॥९८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य नष्टबुद्धि, पराया कर्म करनेवाला, कामदेवरहित, अत्यन्त क्रोधी, मनुष्योंके कामको नाश करनेवाला और अपना मनोरथ साधन करनेवाला होता है ॥ ९८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य अत्य उदार चित्तवाला, शत्रुओंकी उन्नतिसहित, और बड़ी बुद्धिवाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ वृषराशिगतगुरुफलम् ।

द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलुब्धयः ।
सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्चरणगा रणगाढपराक्रमैः ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य ब्राह्मण, दे ताओंके पूजन और भक्तिसहित, धन, वाहन और गौरव (प्रतिष्ठा) का लोभी व गाढ पराक्रमद्वारा शत्रुओंको अपने चरणोंका दास बनानेवाला होता है ॥ ५० ॥

अथ मिथुनराशिगतगुरुफलम् ।

कवितया सहितः प्रियवाक्छुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमान्
मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितता हितताः सहितैर्भवेत् ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य क करके सहित, प्यारी वाणी बोलनेवाला, पवित्र, निष्कपट और शीलवाला, च एवं हितकारी होता है ॥ ५१ ॥

अथ कर्कराशिगतगुरुफलम् ।

बहुधनागमनो मदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः ।
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैःकरिभिर्युतः ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य बहुत ध वाला, कामदेवकी उन्नतिसहित, अनेक शास्त्रोंकी कलामें कुशल, प्रिय बोलनेवा और घोडे और हाथियोंकरके सहित होता है ॥ ५२ ॥

अथ सिंहराशिगतगुरुफलम् ।

अचलदुर्गवनप्रभुतोर्जितो दृढतनुर्ननु दानपरो भवेत् ।
अरिविभूतिहरो हि नरो युतःसुवचसा वचसामधिपे हरौ ॥ ५३ ॥

. जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य पर्वत,कि (कोट) तथा वनका स्वामी, मजबूत, शरीर, दान करनेवाला, शत्रुओंके वैभव हरण करनेवाला और श्रेष्ठवाणी बोलनेवाला होता है ॥ ५३ ॥

अथ कन्याराशिगतगुरुफलम् ।

कुसुमगन्धसदम्बरशालिता विमलता धनदानमतिर्भृशम् ।
सुरगुरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥ ५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य पुष्पोंकी ला और उत्तम गंध श्रेष्ठ वस्त्र करके सहित, निर्मल, धन और दानमें बुद्धिवाला, दर तथा बहुत कालतक शत्रुता करनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

अथ तुलाराशिगतगुरुफलम्।

श्रुततपोजपहोममहोत्सवे द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत्।
वणिजि जन्मनि चित्रशिखण्डिजे चतुरतातुरताहिततारिता॥९५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य वेद और , जप, होम, बडे उत्सवमें तत्पर, ब्राह्मण देवताओंके पूजन और दानमें द्धिवाला, चतुरतासहित, आतुर, अहित करनेवाला और शत्रुओंसहित ता है ॥ ९५ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतगुरुफलम्।

धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतरो बहुदम्भपरो नरः।
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो वनतोऽपि च दुःखभाक्॥९६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य धनका श करनेवाला, दोषोंकरके उत्पन्न दुर्बल देहवाला, बडा पाखंडी और भवन तथा नके द्वारा दुःखका भागी होता है ॥ ९६ ॥

अथ धनराशिगतगुरुफलम्।

वितरणप्रणयो बहुवैभवं ननु धनान्यथ वाहनसंचयः।
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरा रुचिराभरणानि,च॥९७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य दान वाला और नम्र, बहुत वैभव और धन वाहनोंसहित, श्रेष्ठ बुद्धिवाला और दर आभूषणोंवाला होता है ॥ ९७ ॥

अथ मकरराशिगतगुरुफलम्।

हतमतिः परकर्मकरो नरः स्मरविहीनतरो बहुरोपभाक्।
सुरगुरौ मकरे विदधातिनो जनमनो न मनोरथसाधनम् ॥९८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य नष्टबुद्धि, राया कर्म करनेवाला, कामदेवरहित, अत्यन्त क्रोधी, मनुष्योंके कामको नाश नेवाला और अपना मनोरथ साधन करनेवाला होता है ॥ ९८ ॥

अथ कुंभराशिगतगुरुफलम्।

गदयुतः कुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बि
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनो दशनोदरपीडितः ॥ ५९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य रोग सहित, दुष्टबुद्धि, धनहीन, कृपणतामें तत्पर, पाप करनेवाला, दुष्ट भोजन करनेवाला, दांत और पेटकी पीडा युक्त होता है ॥ ५९ ॥

अथ मीनराशिगतगुरुफलम्।

नृपकृपाप्तधनो मदनोन्नतिः सदनसाधनदानपरो नरः।
सुरगुरौ तिमिना सहिते सतामनुमतोऽनुमतोत्सवदोमनद

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य राजा की कृपासे धनको पानेवाला, कामकी उन्नतिवाला, घरका साधन करने, दानमें तत्पर, सत्पुरुषोंका प्यारा और मित्रोंको सुख देनेवाला होता है ॥ ६० ॥

अथ मेषराशिगतभृगुफलम्।

भवनवाहनवृन्दपुराधिपः प्रचलनप्रियताविहितादरः।
यदि च संजननेऽहिभवेत्क्रियः कवियुतो वियुतो रिपुभिर्नरः ॥ ६१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य घर, वाहन समूह और नगरका स्वामी, यात्राका प्रेमी, आदर सहित, और शत्रुओंके रहित होता है ॥ ६१ ॥

अथ वृषराशिगतशुक्रफलम्।

बहुकलत्रसुतोत्सवगौरवं कुसुमगंधरुचिः कृषिनिर्मितः।
वृषगते भृगुजे कमला भवेद्विरला विरला रिपुमण्डली ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बहुत स्त्री पुत्र उत्सव तथा गौरव सहित, पुष्पोंकी गंधमें रुचि करनेवाला, खेती करनेवाला, धनवाला और थोडे शत्रुओंवाला होता है ॥ ६२ ॥

अथ मिथुनराशिगतशुक्रफलम्।

भृगुसुते जनने मिथुनस्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम्।
सुकलता ललिता किल भारती सुमधुरा मधुराननिर्भरम् ॥ ६३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र कलाओंमें कुशल, सीधी [illegible] मधुर वाणी बोलनेवाला और [illegible] करनेमें रुचि [illegible] ऐसा होता है ॥ ६३ ॥

अथ कर्कराशिगतशुक्रफलम्।

द्विजपतेः सदने भृगुनंदने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः।
जनमलं सकलं कुरुते वशं सुकलया कलयापि गिरा नरः ॥६४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्मोंमें देवाला, गुणोंसहित, सब आदमियोंको वशमें करनेवाला और अच्छी चतुरतासे र वाणीसहित होता है ॥ ६४ ॥

अथ सिंहराशिगतशुक्रफलम्।

रगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितो धनमानसुखानि च।
जजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततो मनुपोव्रजेत् ॥६५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य स्त्रियोंसे धन, र और सुख पानेवाला, अपने मनुष्योंमें व्यसनको प्राप्त, मित्रोंको संतोष कर- ला व शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ६५ ॥

अथ कन्याराशिगतशुक्रफलम्।

गुरुसुते सति कन्यकयान्विते बहुधनी खलु तीर्थमनोरथः।
कमलया पुरुषोऽतिविभूषितस्त्वमितयामितयापि गिरान्वितः ६६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बडा धन- ा, तीर्थोंमें मनोरथ करनेवाला, लक्ष्मी करके शोभायमान और बडी भारी वाणी के सहित होता है ॥ ६६ ॥

अथ तुलाराशिगतशुक्रफलम्।

कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितो बहुगमागमनो ननु मानवः।
जननकालतुलाकलनं यदा सुकविना कविनाकयतां व्रजेत् ॥६७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य पुष्प और चित्र वस्त्र धनसहित, बहुत आने जानेवाला और कवियोंका स्वामी अर्थात् उत्तम राज होता है ॥ ६७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशुक्रफलम्।

कलहघातमतिं जननिंद्यतां प्रजननामयतां नियतं नृणाम्।
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितः कविरलं विरलं कुरुते धनम् ॥६८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य कलहतया करनेवाला, मनुष्य करके निंद्य, जन्मसे रोगवाला, व्यसन सहित और अत्यन्त धनवाला होता है ॥ ६८ ॥

अथ धनराशिगतशुक्रफलम्।

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम्।
जनुषि कार्मुकगः कुरुते कविं कविरतिं विरतिं चिरतो नृणाम् ॥ ६९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य स्त्री पुत्र आगमन व उत्सवसहित, राजाका मन्त्री, श्रेष्ठ शीलवाला, कवियोंमें प्रेम करनेवाला और बहुत कालतक विरतिको प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥

अथ मकरराशिगतशुक्रफलम्।

अभिरतिस्तु जराङ्गनया नृणां व्ययभयं कृशतामतिचिंतया।
भृगुसुते मृगराजगते सदा कविजने विजनेऽपि मनो भवेत् ॥ ७० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिमें शुक्र बैठा हो वह मनुष्य वृद्ध स्त्रीमें प्रीति करनेवाला, व्यय करनेवाला, भयसहित, दुर्बल देहवाला, अत्यन्त चिंतावाला, कवीश्वर और जंगलमें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ७० ॥

अथ कुम्भराशिगतशुक्रफलम्।

उशनसः कलशे जनुषि स्थितौ वसनभूषणभोगविहीनता।
विमलकर्ममहालसता नृणामुपगतापगता विरमा भवेत् ॥ ७१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य वस्त्र और आभूषण भोगरहित, अच्छे कर्मोंमें आलस्य करनेवाला और धननाशक होता है ॥ ७१ ॥

अथ मीनराशिगतशुक्रफलम्।

भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विभुता विनता भवेत्।
रिपुसमाक्रमणं द्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् ॥ ७२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत शुक्र बैठा हो वह मनुष्य राजाकी कृपासे वैभवको प्राप्त, नम्रतासहित, शत्रुओंपर हमला करनेवाला, धनसे युक्त दान करनेमें और तैरनेमें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ७२ ॥

अथ मेषराशिगतशनिफलम्।

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधतयेप्सितनाशनम्।
क्रियगतेऽर्कसुते स्वजनैर्नृणां विषमताशमताशमनं भवेत् ॥ ७३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य धनरहित करके दुर्बल देहवाला, मनुष्योंमें वैर करके मनोरथका नाश करनेवाला, अपने मित्रोंमें विरोध करनेवाला और शांतिरहित होता है ॥ ७३ ॥

अथ वृषराशिगतशनिफलम्।

युवतिसौख्यविनाशनतां भृशं पिशुनसङ्गरुचिं मतिविच्युतिम्।
तनुभृतां जनने वृषभस्थितोरविसुतोविसुतोत्सवमादिशेत्॥७४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य स्त्रीके सुखको नाश करनेवाला, अतिशय दुष्ट मनुष्योंका संग करनेवाला और बुद्धिहीन, एवं पुत्रोत्सवसे रहित होता है ॥ ७४ ॥

अथ मिथुनराशिगतशनिफलम्।

प्रचलनं विमलत्वविहीनतां भवनबाह्यविलासकुतूहलम्।
व्रजति ना मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्नविभोर्लभते सुखम्७५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य ज्यादे चलनेवाला और निर्मलतासे रहित, मकानके बाहर हास्य विलास आनंद करनेवाला तथा सुखको नहीं लाभ करता है ॥ ७५ ॥

अथ कर्कराशिगतशनिफलम्।

शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशता भृशमंबया।
वरविलासकरा कमला भवेदविकलं विकलं रिपुमण्डलम्॥७६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य दुर्बल देहवाला, माता करके रहित, श्रेष्ठ विलासका करनेवाला, धनवान् और शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ७६ ॥

अथ सिंहराशिगतशनिफलम्।

लिपिकलाकुशलेश्च कलिप्रियो विमलशीलविहीनतरो नरः।
रविसुते रविवेश्मनि संस्थिते हलनयस्तनयप्रमदार्तिभाक्॥७७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य लेखक्रियामें कुशल, कलह जिसको प्यारी, निर्मलशीलरहित, नीतिरहित और पुत्र स्त्रीसे पीड़ाको प्राप्त होता है ॥ ७७ ॥

अथ कन्याराशिगतशनिफलम्।

विहितकर्मणि शर्म कदापि नो विनयतोपहतिश्चलसौहृदम्।
रविसुते सति कन्यकयान्विते विमलताबलतासहितो भवेत्७८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य जो कुछ काम करे उसमें कल्याण नहीं पाता, नम्रताहीन, चलायमान मन मित्रतावाला ऐसा निर्बल रहता है ॥ ७८ ॥

अथ तुलाराशिगतशनिफलम् ।

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरबलाकुलितो बहुदानदः
जलजिनीशसुते हि तुलान्विते नृपकृतोपकृतो हि नरो भवे

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य अपने कु
राजाके बलसहित, कामदेव करके सहित, बहुत दान देनेवाला और राजासे स
नको प्राप्त होता है ॥ ७९ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशनिफलम् ।

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितो धनविनाशनवैरिगदार्दितः ।
विकलता कलिता च समन्विते रविसुते विपुतेप्सुखो नरः

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य
अग्नि, शस्त्रसे डरनेवाला, धनका नाश करनेवाला, शत्रुओंसहित, रोगकरके
विकलता युक्त और पुत्रहीन होता है ॥ ८० ॥

अथ धनराशिगतशनिफलम् ।

रविसुतेन युते सति कार्मुके सुतगणैः परिपूर्णमनोरथः ।
प्रथितकीर्तिसुवृत्तपरो नरो विभवनो भवतोपयुतो भवेत्॥८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य पुत्रगण
परिपूर्ण मनोरथवाला, सत्यवान यशवाला, श्रेष्ठ वृत्तिमें तत्पर, वैभव और
सहित होता है ॥ ८१ ॥

अथ मकरराशिगतशनिफलम् ।

नरवरोऽपि च गोमवतीं व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः ।
अगुरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयानलजैः सुखम्॥८२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य
स्त्रीसंगको प्राप्त, अगर और पुष्प कस्तूरी तथा चंदनादि सुगंधोंसे भोग
करता होता है ॥ ८२ ॥

अथ कुम्भराशिगतशनिफलम् ।

अनृजुरो रिपुमित्र्यसनातुरो विहितकर्मपराङ्मुखतागितः ।
घटसुते कलुषेण समन्विते सुपदितः प्रदितः प्रमदितः॥८३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य शत्रुओं करके जीता हुआ, व्यसनोंमें आसक्त, कर्तव्य कर्मोंसे रहित और श्रेष्ठ मित्रोंवाला होता है॥ ८३॥

अथ मीनराशिगत शनिफलम्।

विनयता व्यवहारसुशीलतासकललोकगृहीतगुणो नरः।
उपकृतौ निपुणस्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः॥८४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत शनैश्चर बैठा हो वह मनुष्य नम्रता और व्यवहार सुशीलता सहित, सब संसार उसके गुणोंको ग्रहण करता है और वह सबका उपकार करनेवाला होता है॥ ८४॥

अथ राशिपतौ विचारः।

बलन्विते राशिपतौ च राशौ खेटेऽथ वा राशिफलं समग्रम्।
नीचोच्चगेहास्तमयादिभावैर्न्यूनाधिकत्वं परिकल्पनीयम्॥ ८५॥

जिस राशिका स्वामी राशि या बलसहित राशिगत ग्रह हो तो वह ग्रह राशिका पूरा फल देता है और जो राशिपति नीच उच्च अस्त होकर बैठा हो तो वह कमती बढती फल करता है अर्थात् उच्चमें श्रेष्ठ वा नेष्ट फल पूरा, नीचमें फल हीन होता है। बीच राशियोंमें त्रैराशिक गणित करके जान लेना चाहिये॥ ८५॥

इति राशिफलानि।

अथ शुभाशुभज्ञानार्थं शनिचक्रं विलिख्यते।

अथ नराकारशनिचक्रस्वरूपम्।

नराकारं लिखेच्चक्रं शनिचक्रं तदुच्यते। वेदितव्यं फलं तस्मान्मानवानां शुभाशुभम्॥ १॥ जन्मर्क्षतो यत्र च कुत्र संस्थं मित्रस्थपुत्रं प्रथमं विदित्वा। चक्रे नराख्ये खलु जन्मधिष्ण्याद्भिन्यस्य भानि प्रवदेत्फलानि॥ २॥

अब अच्छा बुरा फल जाननेके लिये शनिचक्र लिखते हैं, मनुष्याकार चक्र लिखे उसको शनिचक्र कहते हैं, उस शनिचक्रसे मनुष्योंको अच्छा बुरा फल जानना चाहिये॥ १॥ जन्मनक्षत्रसे गणना करके जिस नक्षत्रपर शनैश्चर हो वह नक्षत्र, जहां, कहीं स्थित हो अर्थात् जिस अंगमें शनि-

अथ सर्वतोभद्र बनानेका प्रकार कहते हैं:-दक्षिण उत्तर पूर्व पश्चिम नौ कोष्ठ का चक्र पंडितजन विधान करें उस चक्रमें अपने स्वर और जन्म नक्षत्र लिख-कर जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो वह ग्रह नक्षत्रर वेधित हो उस करके भावसे प्रसिद्ध अच्छा बुरा फल मैं कहता हूं ॥ २ ॥

अथ वेधफलमाह-

भ्रमो भवेद्भेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ।
राशौ च वेधे सति विघ्नमेवं जन्तुः कथं जीवति पञ्चवेधे ॥ ३ ॥

अब ग्रहोंके वेधका फल कहते हैं:-जो जन्मनक्षत्रपर पापग्रहोंका वेध हो तो भ्रम करते हैं और जन्म अक्षरपर पापग्रहोंका वेध हो तो हानि कहना और जन्म स्वर पर पापग्रहका वेध हो तो व्याधि कहना चाहिये और जन्म तिथि पर ग्रहोंका वेध हो तो भय कहना और जन्म राशिपर वेध हो तो विघ्न कहना चाहिये और जन्म नक्षत्र अक्षर स्वर तिथि राशि इन पांचोंको पापग्रह वेधे तो वह जीव नहीं जीता है ॥ ३ ॥

अथ वेधप्रकारमाह ।

भरण्यकारौ वृषभं च नन्दां भद्रां तकारं श्रवणं विशाखाम् ।
तुलां च विध्येदनलर्क्षसंस्थो ग्रहोऽत्र चक्रे गदितं स्वरज्ञैः ॥४॥
वकारमोकारमुकारदास्रं स्वातीं रकारं मिथुनं च कन्याम् ।
तथाभिजित्संज्ञकभं च विध्येद्ब्रह्मर्क्षसंस्थो हि नभश्चरेन्द्रः ॥५॥
कर्क ककारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् ।
अकारकं वैश्वभमत्र विध्येदलं नभोमण्डलगो मृगस्थः ॥ ६ ॥

अब वेधप्रकार कहते हैं:-भरणी नक्षत्र और अकारका वेध और वृषराशि नंदा तिथिका वेध होता है और भद्रा तिथि तकार श्रवण विशाखा नक्षत्र तुलाराशि और कृत्तिका नक्षत्रका वेध होता है ॥ ४ ॥ वकार वर्ण ओकार उकार अश्विनी नक्षत्र-पर वेध होता है तथा स्वाती नक्षत्र और रकारका वेध होता है, मिथुन कन्याका वेध कहना, इसी प्रकार अभिजित्पर रोहिणी नक्षत्रका वेध होता है ॥ ५ ॥ कर्क-राशि और ककारका वेध कहना चाहिये,सिंहराशिपर पकारका वेध होता है,चित्रा और रेवतीपर लकारका वेध कहना चाहिये और ओकार मकारका मकरराशिने वेध होता है ॥ ६ ॥

एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वर्क्षेभ्यश्चिंतनीयः सुधीभिः ।
दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽप्यन्तं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥७॥
यस्मिन्नृक्षेसंस्थितो वेधकर्ता पापः खेटःसोऽन्यभं याति यस्मिन् ।
काले तस्मिन्मङ्गलंपीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथास्यात्कदाचित् ८

इस प्रकार सर्वतोभद्र चक्रमें सम्पूर्ण नक्षत्र और राशियोंका वेध पंडितजन चिन्तन करें, जो शुभग्रहोंका वेध हो तो श्रेष्ठ फलको देता है और पापग्रहों का वेध दुष्ट फलको करता है ॥ ७ ॥ जिस नक्षत्रमें वेध करनेवाला ग्रह बैठा हो शुभग्रह हो तो शुभफलको देता है और पापग्रह अन्य नक्षत्रमें प्राप्त हो और वेध करता हो तो पीडा करता है ॥ ८ ॥

॥ अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ॥

अ.	कृ	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आश्ले.	आ.
भ.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	ल.	लृ.	वृ.	मि.	कर्क.	ॡ.	म.	पू.
रे.	च.	मे.	ओ.	१।६।११ सू. मं.	औ.	सिं.	ट.	उ.फा.
उ.भा.	द.	मी.	४।९।१४ गु.	५।१०।१५ श.	२।७।१२ चं.बु.	क.	प.	ह.
पू.भा.	स.	कुं.	अः.	३।८।१३ शु.	अं.	तु.	र.	चि.
श.	ग.	ऐ.	म.	ध.	वृश्चि.	ए.	त.	स्वा.
ध.	ख.	ॠ.	ज.	भ.	य.	न.	ऋ.	वि.
ई.	श्र.	अ.	उ.पा.	पू.पा.	मू.	ज्ये.	अ.	इ.

अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत् ।
तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥
त्रिशूलकायाः सरलाश्च तिस्रः किलोर्द्धरेखाःपरिकल्पनीयाः ।
रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये ॥ २ ॥

त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तदग्रयोः शृंगयुगं विधेयम्।
मध्ये त्रिशूलस्य च दण्डमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च ॥३॥

अब सूर्यकालानल चक्र कहते हैं:—स्वरशास्त्रमें कहा हुआ जो सूर्यकालानलचक्र है उसको विस्तार करके मैं कहता हूं, यह सूर्यकालानल चमत्कार करनेवाला है ॥ १ ॥ त्रिशूल है अग्रभागमें जिसके ऐसी सीधी रेखा तीन लिखे उनको ऊपरको मुख कर स्थापित करना और तीन रेखा उन रेखाओंके बीचमें तिरछी करे और दो दो रेखा चारों कोणोंमें करे ॥ २ ॥ त्रिशूल और कोणेके बीचमें एक रेखा और करना चाहिये। उस रेखाके आगे दो शृंग बनावे, बीचमें जो त्रिशूलकी रेखा है उस रेखाकी जड़से लेकर दाहिनी तरफको अभिजित् सहित सूर्यके नक्षत्रसे लेकरके अट्ठाईस नक्षत्र लिखने चाहिये ॥ ३ ॥

अथ सूर्यकालानलचक्रम्।
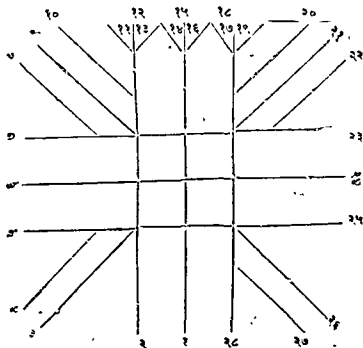
अथ सूर्यकालानलचक्रविचारः।

स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि।
तलस्थऋक्षत्रितये क्रमेण चिंता वधश्च प्रतिबंधनानि ॥ ४ ॥

शृंगद्वये रुक्च भवेद्धि भंग शूलेषु मृत्युः परिकल्पनीयः।
शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहुधा नराणाम् ५
श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्वदे च वादे च रणप्रयाणे।
प्रयत्नपूर्वं ननु चिंतनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

अब अपने नामका नक्षत्र जिस जगह स्थित हो उस क्रम करके अच्छा बुरा फल विचार करे। नीचेके तीन नक्षत्रोंमें अपना जन्मनक्षत्र हो तो चिंता, वध, बंधन क्रम करके करते हैं ॥ ४ ॥ और दोनों शृंगोंमें जन्मनक्षत्र हो तो रोगभय होता है त्रिशूलमें जन्मनक्षत्र हो तो मृत्यु करता है और बाकीके नक्षत्रोंमें जन्मनक्षत्र हो तो जय, लाभ, अभीष्ट सिद्धि अनेक प्रकारोंकी होती है ॥ ५ ॥ यह सूर्यकालानलचक्रका विचार रोग, विवाद, युद्ध, एवं यात्रामें यत्नपूर्वक विचारना चाहिये, यह पूर्वाचार्य गर्ग वशिष्ठादिकोंने कहा है ॥ ६ ॥

अथ चंद्रकालानलचक्रम्।

कर्कोटकेन प्रविधाय वृत्तं तस्मिंश्च पूर्वापरयाम्यसौम्ये।
वृत्ताद्बहिः संचलिते विधेये रेखे त्रिशूलानि तदग्रकेषु ॥ १ ॥
कोणाश्च रेखाद्वितयेन साध्याः पूर्वत्रिशूले किल मध्यसंस्थम्।
चान्द्रं लिखेद्रं तदनुक्रमेण सव्येन धिष्ण्यानि बहिस्तदन्ते २

अब चंद्रकालानलचक्र कहते हैं:—पहिलेकी तरह गोल मण्डल बनावे, उस मण्डलमें दो रेखा पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर बनावे, गोल मण्डलकी वे रेखा जो बाहर हो जावें उन रेखाओंके अग्रभागमें त्रिशूल बनाना चाहिये ॥ १ ॥ और कोनोंके बीचमें दो रेखा सीधी ईशान, नैर्ऋत्य और आग्नेय, पश्चिममें करे। पूर्वके त्रिशूलके बीचमें चंद्रमाका नक्षत्र लिखे, फिर क्रमसे अभिजित्सहित दक्षिण रीतिसे बाहर और भीतर नक्षत्र स्थापन करने चाहिये ॥ २ ॥

अथ चंद्रकालानलनक्षत्रफलम्।

कालानले चक्रमिदं हि चांद्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत्।
त्रिशूलसंस्थानि धनाय नूनमन्तर्बहिःस्थं त्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

यह जो चंद्रकालानलचक्र कहा है उसको युद्ध समयमें और यात्राकालमें विचारना चाहिये। जो जन्मनक्षत्र त्रिशूलमें आवे तो अवश्य मृत्यु करना चाहिये और त्रिशूलके बाहर भीतर जन्मनक्षत्र आवे तो शुभ फलका दाता होता है ॥ ३ ॥
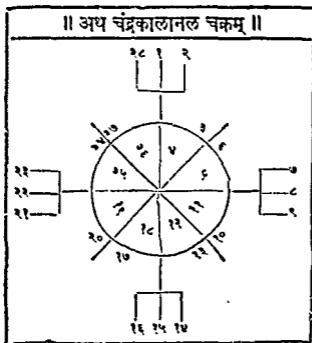
अथ गोचरफलम्।

नृजन्मराशेः खचरप्रचारैर्यद्गोचरैः सांहितिकैः प्रणीतम्।
स्थूलं फलं तत्किल संप्रवच्मि बालावबोधप्रदमग्रगानाम्॥१॥

अब गोचरफल कहते हैंः-मनुष्योंके जन्मराशिसे ग्रहोंके संचारसे जो गोचर रके संहिताकारोंने फल कहा है वही मोटा फल बालकोंके बोधके अर्थ पहले में हता हूं॥ १॥

अथ गोचरेण द्वादशधा सूर्यफलम्।

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो यानमतीव पीडा।
कांतिक्षयोऽभीष्टवरिष्ठसिद्धिर्लाभोव्ययोऽर्कस्य फलं क्रमेण॥२॥

जन्मके सूर्यमें यात्रा, दूसरे सूर्यमें भय, तीसरे सूर्यमें धनप्राप्त होता है, चौथे र्यमें व्यसन होता है, पांचवें सूर्यमें दीनता होती है, छठे सूर्यमें शत्रुनाश होता है ातवें सूर्यमें यात्रा होती है, आठवेंमें अत्यन्त पीडा होती है, नवम सूर्यमें कांति- ाय होता है, दशम सूर्यमें वांछितसिद्धि होती है, ग्यारहें सूर्यमें लाभ होता है ौर बारहें सूर्यमें खर्च होता है॥ २॥

अथ गोचरेण द्वादशधा चन्द्रफलम् ।

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभम् ।
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगांकः ॥३॥

अब गोचर करके चन्द्रमाका फल कहते हैं:-जन्मके चन्द्रमामें श्रेष्ठ अन्न प्राप्त होता है, दूसरे चन्द्रमामें धननाश, तीसरे चन्द्रमामें धनलाभ, चतुर्थ चंद्रमामें कोखका रोग, पांचवें चन्द्रमामें कार्यसिद्धि, छठे चन्द्रमामें कार्यनाश, सप्तम चन्द्रमामें लाभ अष्टम चन्द्रमामें रोग, नवम चन्द्रमामें राजभय, दशम चन्द्रमामें सुख, ग्यारहवें चन्द्रमामें लाभ और बारहवें चन्द्रमामें शोक होता है ॥ ३ ॥

पुत्रधर्मधनस्थस्य चन्द्रस्योक्तमसत्फलम् ।
कलाक्षये परिज्ञेयं कलावृद्धौ तु साधु तत् ॥ ४ ॥

पंचम नवम द्वितीयस्थ चंद्रमाका नेष्ट फल कहा है, सो फल कलाहीन चन्द्रमाका है और जो पूर्ण चंद्र ५ । ९ । २ में हो तो श्रेष्ठफल करता है ॥ ४ ॥

अथ गोचरे भौमफलम् ।

भीतिक्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम् ।
शस्त्रोपघातं च रुजं च रोगं लाभं व्यये भूतनयस्तनोति ॥५॥

अब गोचर करके मंगलका फल कहते हैं:-जन्मराशिमें मंगल हो तो भय, द्वितियमें हानि, तृतीयमें धनलाभ, चतुर्थ शत्रुवृद्धि, पंचम धननाश, छठे धनलाभ, सप्तम धननाश, अष्टम शस्त्रसे घात, नवम रोगदाता, दशम रोगको मात, एकादशमें लाभ और बारहवां मंगल खर्च अधिक कराता है ॥ ५ ॥

अथ गोचरे बुधफलम् ।

बंधुं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम् ।
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ॥६॥

अब गोचर करके बुधका फल कहते, हैं:-जन्मराशिमें बन्धुलाभ करनेवाला, द्वितीय बुध धनलाभ, तृतीय बुध शत्रुभय, चतुर्थ बुध धनकी प्राप्ति, पंचम बुध पीडा करनेवाला, छठा बुध स्थिति, सप्तम बुध पीडा, अष्टम बुध धनलाभ, नवम बुध खेद, दशम बुध सुख, ग्यारहवां बुध लाभ और बारहवां बुध धननाशक होता है ॥६॥

अथ गोचरे गुरुफलम् ।

भीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ।
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीडां दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ॥७॥

अब गोचरकी रीतिसे बृहस्पतिका फल कहते हैं:-जन्मस्थानपर बृहस्पति हो तो भय, द्वितीय धन, तृतीय पीडा, चतुर्थ शत्रुवृद्धि, पञ्चम सौख्य, छठा शोक, सप्तम राजमान, अष्टम रोग, नवम सौख्य, तथा दीनता, दशम मानवृद्धि, ग्यारहवां धनलाभ तथा बारहवां बृहस्पति पीडा करता है ॥ ७ ॥

अथ गोचरे शुक्रफलम्।

रिपुक्षयं वित्तमतीव सौख्यं वित्तं सुतप्रीतिमरातिवृद्धिम्।
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीडां स्वमर्थं च ददाति शुक्रः॥८॥

अब शुक्रका फल कहते हैं:-जन्मस्थानपर शुक्र हो तो शत्रुनाश, द्वितीयमें धनलाभ, तृतीयमें अतीव सौख्य, चतुर्थमें धनलाभ, पञ्चम पुत्रप्राप्ति, छठे शत्रुवृद्धि, सातवें शोक, अष्टम धनलाभ, नवम श्रेष्ठ वस्त्रलाभ, दशम पीडा, ग्यारहवें स्वकीय धनलाभ और बारहवें व्यय कराता है ॥ ८ ॥

अथ गोचरे शनिफलम्।

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्।
पीडां सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति॥९॥

गोचर करके शनैश्वरका फल कहते हैं:-जन्मका शनैश्वर भ्रष्ट करता है, द्वितीयमें क्लेश, तृतीयमें कल्याण, चतुर्थमें शत्रुवृद्धि, पञ्चम पुत्रोंसे सौख्य, छठे सौख्यवृद्धि, सप्तम क्रोध, अष्टम पीडा, नवम सौख्य, दशम निर्धनता, ग्यारहवें धनलाभ और बारहवें शनैश्वर अनेक अनर्थ कराता हैं ॥ ९ ॥

अथ गोचरे राहुफलम्।

हानिं नैःस्वं स्वं च वैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम्।
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्य्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेव॥१०॥

अथ गोचर करके राहुका फल कहते हैं:-जन्मके राहुमें हानि, द्वितीयमें धननता, तृतीयमें धनलाभ, चतुर्थमें बैर, पञ्चममें शोक, छठे धनप्राप्ति, सातवें विवाद, अष्टममें पीडा, नवममें पाप, दशममें बैर, एकादशमें सौख्य और बारहवेंमें राहु हानि करता है ॥ इसी तरह केतुका भी फल जानना चाहिये॥ १० ॥

राशौ राशौ गोचरे खेचराणामुक्तं पूर्वैर्यत्फलं जन्मराशेः।
तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानां भिन्नं भिन्नं दृश्यतेऽवश्यमेव॥११॥

राशिमें गोचर करके ग्रहोंका फल जो पूर्वाचार्योंने जन्मराशिसे लेकर कहा है ल एक राशिमें उत्पन्न मनुष्योंको जुदा जुदा देखनेमें आता है, अवश्य करके क्या कारण है ॥ ११ ॥

अब मंगलका अष्टक वर्ग कहते हैं-मंगल अपने स्थानसे १।२।४।७।८।९।१०। ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ६।१०।११।१२। स्थानोंमें शुभ फल देता है और चन्द्रमासे ३।६।११। स्थानोंमें शुभफल देता है और बुधसे ३।५।६।१२ स्थानोंमें शुभफल देता है और शनैश्चरसे १।४।७।८। ९।१०। ११। स्थानोंमें मंगल शुभ फल देता है और सूर्यसे ३।५।६।१०।११ स्थानोंमें शुभफल देता है और लग्नसे १।३।६।१०।११। स्थानोंमें शुभ-फल देता है ॥ १६ ॥

अथ भौमानिष्टाष्टकम्

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.
३	१	१	१	२	२	१	[illegible]
५	२	२	२	३	४	२	[illegible]
६	४	३	३	५	५	४	[illegible]
९	७	४	४	६	७	७	[illegible]
१२	८	५	५	१२	८	८	[illegible]
	९	७	७		९	९	[illegible]
	१०	८	९		१२	११	[illegible]
	११	९	१०				[illegible]

अथ बुधाष्टकवर्गमाह।

शुक्राद्यासुतधर्मलाभमृतिगः सौम्यः कुजा-र्कयोस्तपः केंद्रायाष्टधने स्वतोऽप्युपचर्या-त्यैकत्रिकोणे शुभः ॥ कोणांत्यारिभवे रवेरिपु-भवाष्टान्त्ये गुरोरिंदुतः खायाष्टारिसुखा-र्थगः सुखभवान्त्यैकोऽङ्कपट्टसूदयात ॥१७॥

अथ बुधाष्टकम्.

शु.	बृ.	स्व.	श.	ल.	र.	मं.	चं.
१	६	१	१	१	५	४	[illegible]
३	८	२	२	२	६	५	[illegible]
५	११	३	४	४	९	६	[illegible]
६	१२	४	७	६	११	८	[illegible]
९		५	८	९	१२	१०	[illegible]
१०		८	९	११		११	[illegible]
११		९	१०	१२			१०
१२		११	११				११

अब बुधका अष्टकवर्ग कहते हैं-बुध शुक्रके स्थानसे १।२।३।४।५।८।९।११ स्थानोंमें शुभ है और मंगल शनैश्चरसे १।२।४।७।८।९।१०।११ स्थानोंमें शुभ है और अपनी राशिसे १।३।५।६।९। १०।११।१२। स्थानोंमें शुभ है और सूर्यसे ५।६।९। ११।१२। शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ६।८।११ १२।१२ शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ६।८। ११ ११। शुभफल देता है और चंद्रमासे ४।२। ६।८।१०। ११ शुभफल देता है और लग्नसे १।२।४। ६।९।११।१२ बुध शुभफल दाता होता है १७

अथ बुधानिष्टाष्टकम्.

शु.	बृ.	श.	रा.	ल.	र.	मं.	चं.
३	१	६	३	३	१	१	३
४	२	७	५	५	३	३	५
७	३	१०	६	७	३	३	९
८	४	१२	१२	८	४	७	१२
	५			१०	६	९	
	७				८	१२	
	९				१०		
	१०						

अथ गुरोरष्टकवर्गमाह।

स्वात्खायाष्टत्रिकेन्द्रस्वनवदशभवारातिधीस्थश्च शुक्राद्धग्नात्केन्द्रायधीपट्स्वनवसु च कुजात्स्वाष्टकेन्द्राय ईज्यः। इन्दोर्धूनार्थकोणात्तिपु सहजनवाष्टायकेन्द्राष्टगोर्कोज्ज्ञात्कोणऽव्यायखाद्याम्बुधिरिपुपुशनेस्त्यन्त्यधीपट्सु शस्तः॥ १८॥

गुरोःशुभाष्टकम्.							
वृ.	शु	श.	ल.	सू	चं.	मं.	बु
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	८
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

अथ बृहस्पतिका अष्टक वर्ग कहते हैं:-बृहस्पति अपने स्थानसे १।२।३।४।७।८।१०।११ स्थानोंमें शुभफल देता है और शुक्रसे २।५।६।९।१०।११ स्थानोंमें शुभफल देता है और लग्नसे १।२।४।५।६।७।८।१०।११ है और मंगलसे १।२।४।७।८।१० देता है और चंद्रमासे २।५।७।८। ; देता है और सूर्यसे १।२।३।४।७।८।९।१०।११ स्थानोंमें शुभफलको देता है और बुधसे १।२।४।५।६।९।१०।११ भावोंमें बृहस्पति शुभफल देता है और शनैश्चरसे ३।५।६।१२ बृहस्पति शुभफल देता है॥ १८॥

गुरोरनिष्टाष्टकम्.							
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	७	७			६	९	१२
	८	८			८	१२	
	१२	९			१०		
		१०			१२		
		११					

अथ शुक्राष्टकवर्गम्।

खास्तांत्याहितवर्जितपु तनुतः शुक्रो विना स्तारिखं चन्द्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्काद्व्ययाष्टास्तिपु। मन्दाद्बन्द्वेकरिपुव्यायास्तरहितेष्वीज्यान्नवायाष्टधीखे ज्ञात्कोणभवत्रिपट्सु भवधीव्यन्त्यारिधर्मे कुजात्॥ १९॥

शुक्राष्टकवर्गचक्रम्.							
शु	श.	ल.	सू.	चं	मं.	बु	वृ.
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		११		११			
११				१२			

अथ शुक्रका अष्टकवर्ग कहते हैं:-लग्नसे शुक्र १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११ शुभफलको देता है और चंद्रमासे १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११ । १२ शुभफलको देता है और अपने स्थानसे शुक्र १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । १० । ११ शुभफलको देता है और सूर्यसे ८ । ११ । १२ शुभफल देता है और शनैश्चरसे ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । १० । ११ । शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ५ । ८ । ९ । १० । ११ । शुभफल देता है और बुधसे ३ । ५ । ६ ।९।११ शुभफल देता है और मंगलसे शुक्र ३ । ५ । ६ । ९ । ११ । १२ शुभफलको देता है ॥ १९ ॥

शुक्रनिष्टाष्टकवर्गच

शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.
६	१	६	१	६	१	१
७	२	७	२	७	२	२
१२	६	१०	३	१०	४	४
	७	१२	४		७	[illegible]
	१२		५		८	८
			६		१०	[illegible]
			७			१२
			९			
			१०			

अथ शनेरष्टकवर्गम् ।

स्वान्मन्दस्त्रिपडायधीपुरवितोऽष्टायाद्
द्विकेन्द्रे शुभो भौमात्खायपडंत्यधी
तनोः खायाम्बुपट्स्वेकगः । ज्ञादाय
नवांत्यखाष्टसु भृगोरंत्यायपट्सस्थि
श्चन्द्रादायरिपुत्रिगः सुरगुरोरन्त्याय
शत्रुगः ॥ २० ॥

शनेरष्टकवर्गचक्रम्.

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३	३	१	३	३	६	५	६
५	४	२	६	५	८	६	११
६	६	४	११	६	९	११	१२
११	९	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	१२		
	११	१०		१२			
		११					

अथ शनैश्चरका अष्टक वर्ग कहते हैं:-शनैश्चर अपने स्थानसे ३।५।६।११ में शुभ है और सूर्य १ । २ । ४ । ७।८।१० । ११ में शुभ है और मंगलसे ३ । ५ । ६ । १० । ११ । १२ में शुभ है और लग्नसे ३।४।६।९ ११ में शुभ है और बुधसे ६।८।९।१०।१२ में शुभ और शुक्रसे ६ । ११ । १२ में शुभ है और चंद्रसे ६ । ११ । में शुभ है और बृहस्पतिसे ५ । ६।११। शुभफल देता है ॥ २० ॥

शनेनिष्टाष्टकवर्गच०

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
१	१	२	१	१	१	१	१
२	२	५	२	२	२	२	२
४	५	६	४	४	३	३	३
७	७	९	५	७	४	४	४
८	८	१२	७	८	५	७	५
९	१२		८	९	७	८	७
१०			९		११	९	८
१२			१०			१०	९
			१२				१०

स्थानानि यानि प्रतिपादितानि शुभानि चान्यान्यशुभानि नूनम्।
तयोर्वियोगादधिकं फलं यत्स्वराशितो यच्छति तद्ग्रहेन्द्रः॥२१॥

लग्नकरके सहित सात ही ग्रहोंके जो स्थान कहे हैं उन स्थानोंमें ग्रह शुभफलको देते हैं और उक्त स्थानोंके विना अन्यस्थानोंमें अशुभ फल करते हैं, शुभाशुभ स्थानोंका अन्तर करनेसे जो अधिक स्थान हो तो अपनी राशिसे ग्रह फलको देता है॥ २१॥

अथ रेखासंख्यामाह–

भुजंगवेदा नवसागराश्च नवाग्नयः सागरसायकाश्च।
रसेषवो युग्मशरा नवत्रितुल्याः क्रमेणाष्टकवर्गलेखाः॥ २२॥

अब रेखाओंकी संख्या कहते हैं–सूर्यकी ४८ रेखा, चन्द्रमाकी ४९, मंगलकी ३९, बुधकी ५४, बृहस्पतिकी ५६, शुक्रकी ५२, शनैश्चरकी ३९, सब ग्रहोंकी रेखाओंका योग ३३७ होता है॥ २२॥

विलग्ननाथाश्रितराशितोऽत्र भवंति रेखाः खलु यत्र यत्र।
विलग्नतस्तत्र च तत्र राशौ संस्थापनीयाः सुधिया क्रमेण॥ २३॥

जन्मलग्नका स्वामी जिस राशिमें बैठा हो उस राशिसे जिस जगह रेखा निश्चय करके हो वह रेखा लग्नसे लेकर उसी उसी राशिमें पंडितजन क्रम करके स्थापन करें॥ २३॥

अथ प्रत्येकरेखाफलमाह।

क्लेशोऽर्थहानिर्व्यसनं समत्वं शश्वत्सुखं नित्यधनागमश्च।
सम्पत्प्रवृद्धिर्विपुलामलश्रीः प्रत्येकरेखाफलमामनन्ति॥ २४॥

अब प्रत्येक रेखाका फल कहते हैं:–१रेखासे क्लेश,२ धनहानि,३ व्यसन, ४ सम, ५ रेखा निरंतर सुख, ६ रेखा नित्य धनप्राप्ति, ७ रेखा संपदाकी वृद्धि करे, ८ रेखा बहु लक्ष्मी प्राप्त करती हैं। यह फल एकसे लेकर आठ रेखाका कहा है॥ २४॥

इत्येकखेटस्य हि संप्रदिष्टा रेखायुतिश्चाखिलखेटरेखाः।
अष्टद्विसंख्यास्तुसमास्ततोऽपियथाधिकोनाःसदसत्फलास्ताः २५

यह एक ग्रहकी रेखाका फल कहा है, सम्पूर्ण ग्रहोंकी रेखाओंको इकट्ठे करके फल कहना चाहिये २८ रेखामें ग्रहोंका फल बराबर होता है, जो २८ रेखासे कमती हो तो नेष्ट और २८ रेखासे अधिक हो तो श्रेष्ठ फल कहा है॥ २५॥

कः कदा फलदातेत्याह।

इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात्।
राश्यर्द्धभोगे भृगुजामरेज्यौ प्रान्ते शनीन्दू च सदेन्दुसूनुः॥२६॥

अब ग्रहोंके शुभाशुभ फल देनेका समय कहते हैं, कौन ग्रह किस समय फल देगा। मंगल और सूर्य राशिके प्रवेशमें फल देते हैं और शुक्र बृहस्पति राशिके अर्द्ध भाग व्यतीत होने पर फल देते हैं और शनैश्चर चन्द्रमा राशिके अन्तमें फल देते हैं और बुध हमेशा राशिमें फल देता है॥ २६॥

अथांगविभागेन ग्रहारिष्टमाह।

शिरःप्रदेशे वदने दिनेशो वक्षःस्थले चापि गले कलावान्।
पृष्ठोदरे भूतनयः प्रभुत्वं करोति सौम्यश्चरणे च पाणौ॥२७॥
कटिप्रदेशे जघने च जीवः कविस्तु गुह्यस्थलमुष्कयुग्मे।
जानूरुदेशे नलिनीशसूनुश्चारेण वा जन्मनिचिन्तनीयम्॥२८॥
यदा यदा स्यात्प्रतिकूलवर्त्ती स्वाङ्गेऽस्य दोषेण करोतिपीडाम्।
इदं तु पूर्वं प्रविचार्य सर्वं प्रश्नप्रसूत्यादिषु कल्पनीयम्॥२९॥

अब अंगविभागमें ग्रहोंका रिष्ट प्रकार कहते हैं:-सूर्य शिर और मुखमें रिष्ट करता है और छाती गलेमें चन्द्रमा रिष्ट करता है और मंगल पीठ और पेटमें रिष्ट करता है और बुध हाथ पैरोंमें पीडा करता है॥ २७॥ कमर और जंघोंमें बृहस्पति पीडा करता है और गुदा अंडकोशमें शुक्र पीडा करता है और जानु और पिंडलियोंमें शनैश्चर पीडा करता है। इसका ग्रहोंके चारसे विचार करना चाहिये ॥ २८॥ जो जो ग्रह गोचर अष्टकवर्गमें प्रतिकूल हो वह ग्रह अपने कहे हुए अंगमें अपने दोषको करता है यह पहिले सम्पूर्ण विचार करके प्रश्नकाल वा जन्मकालमें वर्षमासादिकोंमें कल्पना करनी चाहिये॥ २९॥

अथ द्विग्रहयोगादिवर्णनम्।

तत्र सूर्यचंद्रयोगफलम्।

पाषाणयंत्रक्रयविक्रयेषु कूटक्रियायां हि विचक्षणः स्यात्।
कामी प्रकामी पुरुषः सगर्वः सर्वोपर्वशिन रवौ समेते॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यचंद्रमा एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य पत्थर और यंत्रोंका बेचनेवाला, माया रचनेमें चतुर, कामी और घमंडी और मानी होता है॥ १॥

अथ सूर्यभौमयोगफलम्।

भवेन्महौजा बलवान्विमूढो गाढोद्धतोऽसत्यवचा मनुष्यः।
सुसाहसः शूरतरोऽतिहिंस्रो दिवामणौ क्षोणिसुताभ्युपेते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मंगल एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य बडे पराक्रमवाला, बलवान्, मूढ, अतिशय करके उद्धत, झूठ बोलनेवाला, साहसी, शूरवीर और हिंसा करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यबुधयोगफलम्।

प्रियवचाः सचिवो बहुसेवयार्जितधनश्च कलाकुशलो भवेत्।
श्रुतपटुर्हि नरो नलिनीपतौ कुमुदिनीपतिसूनुसमन्विते ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य बुध एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य प्यारी बोलीवाला, मंत्री, बहुत सेवा करके इकट्ठा करनेवाला, कलाओंमें कुशल और शास्त्रमें चतुर होता है ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रभौमयोगफलम्।

आचारहीनः कुटिलप्रतापी पण्यानुजीवी कलहप्रियश्च।
स्यान्मातृशत्रुर्मनुजो रुजार्तः शीतद्युतौ भूसुतसंयुते वै ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा मंगल एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य आचाररहित, कुटिल, प्रतापी, व्यापारसे आजीविका करनेवाला, कलह जिसको प्यारा मातृवैरी और रोग करके दुःखी होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यगुरुयोगफलम्।

पुरोहितत्वे निपुणो नृपाणां मन्त्री च मित्रात्तधनः समृद्धः।
परोपकारी चतुरो दिनेशे वाचामधीशेन युते नरः स्यात् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य बृहस्पति एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पुरोहिततामें निपुण, राजाका मन्त्री, मित्रतासे धनकी समृद्धिको प्राप्त, पराया उपकार करनेवाला और चतुर होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यशुक्रयोगफलम्।

संगीतवाद्यायुधचारुबुद्धिर्भवेन्नरो नेत्रबलेन हीनः।
कांतानियुक्ताप्तसुहृत्समाजः सितान्विते जन्मनि पद्मिनीशे॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य गाने, बजाना और शास्त्रविद्यामें सुन्दर बुद्धिवाला, नेत्रोंके बलसे रहित, स्त्रीको सहित और मित्रोंके समाज करके पूर्ण होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यशनियोगफलम् ।

धातुक्रियापण्यमतिर्गुणज्ञो धर्मप्रियः पुत्रकलत्रसौख्यः ।
सदा समृद्धोऽतितरां नरः स्यत्प्रद्योतने भानुसुतेन युक्ते ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शनि एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य धातु क्रिया और व्यवहारमें बुद्धि रखनेवाला, गुणका जाननेवाला, धर्म जिसको प्यारा, पुत्र और स्त्रीसे सौख्य पानेवाला और हमेशा अत्यन्त समृद्धिसे सहित होता है ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रबुधयोगफलम् ।

सद्वाग्विलासी धनवान्सुरूपः कृपार्द्रचेताः पुरुषो विनीतः ।
कांतापरप्रीतिरतीव वक्ता चंद्रे सचांद्रौ बहुधर्मकृत्स्यात् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बुध एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य श्रेष्ठ वाणीवाला, धनवान्, श्रेष्ठ रूपवाला, दयाकरके युक्तचित्त, नम्रतासहित, स्त्रीमें अधिक प्रीति करनेवाला और बड़ा भारी वक्ता होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रगुरुयोगफलम् ।

सदा विनीतो दृढगूढमंत्रः स्वधर्मकर्माभिरतो नरः स्यात् ।
परोपकारादरतैकचित्तो शीतद्युतौ वाक्पतिना समेते ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बृहस्पति एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य हमेशा नम्रतासहित, मजबूत, छिपी सलाह करनेवाला, अपने धर्म और कर्ममें तत्पर और पराये उपकार करनेमें एकचित्त होता है ॥ ९ ॥

अथ चन्द्रभृगुयोगफलम् ।

वस्त्रादिकानां क्रयविक्रयेषु दक्षो नरः स्याद्व्यसनी विचित्रः ।
सुगंधपुष्पोत्तमवस्त्रचित्तो द्विजाधिराजे भृगुजेन युक्ते ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा शुक्र एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य वस्त्रादिके खरीदने और बेचनेमें चतुर और व्यसन सहित विचित्र जाननेवाला, सुन्दर और उत्तम पुष्प वस्त्रोंमें चित्त रखनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ चन्द्रशनियोगफलम् ।

नानांगनानां परिसेवनेच्छुर्वेश्यानुवृत्तिर्गतसाधुशीलः ।
परात्मजः स्यात्पुरुषार्थहीन इन्दौ समन्दे प्रवदंति संतः ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा और शनिका योग हो वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंको सेवन करनेकी इच्छावाला, वेश्यावृत्ति करनेवाला, साधु शीलसे रहित, परपुत्र युक्त और पुरुषार्थहीन होता है ॥ ११ ॥

अथ भौमबुधयोगफलम् ।

बाहुयुद्धकुशलो विपुलस्त्रीलालसो विविधभेषजपण्यः ।
हेमलोहविधिबुद्धिविभावः संभवेद्यदि कुजेंदुजयोगः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मङ्गल बुध एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य मल्लविद्यामें चतुर, बहुत स्त्रियोंकी लालसा करनेवाला, अनेक औषधियोंका व्यापार करनेवाला, सोना और लोहेकी विधिमें बुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ भौमगुरुयोगफलम् ।

मंत्रार्थशास्त्रादिकलाकलापे विवेकशीलो मनुजः किल स्यात् ।
चमूपतिर्वा नृपतिः पुरेशो ग्रामेश्वरो वा सकुजे सुरेज्ये ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मङ्गल बृहस्पति एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य मन्त्र और शास्त्रविद्याकी कलाके समूहमें चतुर शीलवाला, फौजका मालिक अथवा राजा अथवा नगर वा ग्रामका स्वामी होता है ॥ १३ ॥

अथ भौमभृगुयोगफलम् ।

नानाङ्गनाभोगविधानचित्तो द्यूतानृतप्रीतिरतिप्रपंचः ।
नरः सगर्वः कृतसर्ववैरो भृगोः सुते भूसुतसंयुते स्यात् ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मङ्गल शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंके भोगविधानमें चित्त करनेवाला द्यूत और झूठमें प्रीति करनेवाला प्रपञ्चमें तत्पर, अभिमानसहित और सबसे बैर करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ भौमशनियोगफलम् ।

शस्त्रास्त्रवित्संगरकर्मकर्ता स्तेयानृतप्रीतिकरः प्रकामम् ।
सौख्येन हीनो नितरां नरः स्याद्धरासुते मंदयुतेऽतिनिंद्यः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल शनैश्चर एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य अ और शस्त्रोंको जाननेवाला, युद्ध करनेवाला, चोरी और झूठमें प्रीति करनेवाला और निरन्तर सौख्यरहित होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधगुरुयोगफलम् ।

सङ्गीतविद्यीतिपतिर्विनीतः सौख्यान्वितोऽत्यंतमनोभिरामः ।
धीरो नरः [illegible]

जिस मनुष्यके [illegible]
विद्याका जाननेवाला, नम्रतासहित, सौख्ययुक्त, अत्यंत श्रेष्ठ, धैर्यवान, [illegible] उदार और सुगन्धका भोग भोगनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधशुक्रयोगफलम् ।

कुलाधिशाली शुभवाग्विलासः सदा सहर्षः पुरुषः सुवेषः ।
भर्ता बहूनां गुणवान्विवेकी सभार्गवे जन्मनि सोमसूनौ ॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य कुल प्रतापी, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, हमेशा हर्षसहित, श्रेष्ठ वेष बहुत नौकरोंवाला और गुणवान, चतुर होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधशनियोगफलम् ।

चलस्वभावश्च कलिप्रियश्च कलाकलापे कुशलः सुवेषः ।
पुमान्बहूनां प्रतिपालकश्चेद्रवेत्प्रसूतौ मिलनं ज्ञशन्योः ॥ १८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध शनैश्चर एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चञ्चल स्वभाव, कलह जिसको प्यारा, कलाओंके समूहमें चतुर, श्रेष्ठ वेषवाला और बहुत मनुष्योंका पालनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ गुरुशुक्रयोगफलम् ।

विद्यया भवति पण्डितः सदा पंडितैरपि करोति विवादम् ।
पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतो मानवः सुरगुरौ भृगुयुक्ते ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शुक्र एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य विद्याकरके पण्डित, हमेशा पण्डितोंसे विवाद करनेवाला और पुत्र मित्र धनसे सौख्य सहित होता है ॥ १९ ॥

अथ गुरुशनियोगफलम् ।

शूरोऽर्थवान्ग्रामपुराधिनाथो भवेद्यशस्वी कुशलः कलासु ।
स्त्रीसंश्रयप्राप्तमनोरथश्च नरः सुरेज्ये रविजेन युक्ते ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शनैश्चर एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शूरवीर, धनवान्, ग्राम और नगरका स्वामी, यशवाला, कलाओंमें कुशल और स्त्रीके आश्रयसे मनोरथ प्राप्त करनेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ शुक्रशनियोगफलम्।

शिल्पलेख्यविधिजातकौतुको दारुणो रणकरो नरो भवेत्।
अश्मकर्मकुशलश्च जन्मनि भार्गवे रविसुतेन संयुते ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र शनैश्चर एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शिल्पशास्त्र और लेखनविधिमें चतुर, कौतुकी, घोर युद्ध करनेवाला और पत्थरके काममें कुशल होता है ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक-पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां भद्दृष्टिफलवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायप्रारंभः।
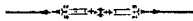
अथ सूर्यचंद्रभौमयोगफलम्।

शूराश्च यन्त्राश्वविधिप्रवीणास्त्रपाकृपाभ्यां सुतरां विहीनाः।
नक्षत्रनाथक्षितिपुत्रमित्रैरेकत्र संस्थैर्मनुजा भवंति ॥ १ ॥

अब त्रिग्रहयोग कहते हैं:-जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. मं. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शूरवीर, यंत्र और अश्वविद्याका जाननेवाला, लाज और कृपासे हीन होता है ॥ १ ॥

अथ सू० चं० बु० योगफलम्।

भवेन्महौजा नृपकार्यकर्त्ता वार्ताविधौ शास्त्रकलासु दक्षः।
दिवामणिज्ञामृतरश्मिसंस्थैः प्राणी भवेदेकगृहं प्रयातैः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. बु. एकराशिमें बैठे हों वह मनुष्य बड़े यशवाला, राजाका कार्य करनेवाला, बात करनेमें और शास्त्रकलामें चतुर होता है ॥ २ ॥

अथ सू० चं० गु० योगफलम्।

सेवाविधिज्ञश्च विदेशगामी प्राज्ञः प्रवीणश्चपलोऽतिधूर्तः।
नरो भवेचंद्रसुरेंद्रवंद्यप्रद्योतनानां मिलने प्रसूतौ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० बृ० बैठे हों वह मनुष्य सेवाकी रीति जाननेवाला, परदेश जानेवाला, चतुर, प्रवीण, चपल और अत्यन्त धूर्त होता है ॥ ३॥

अथ सू० चं० शु० योगफलम्।

परस्वहर्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात्।
मृगांकपंकेरुहबंधुशुक्राश्चैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० शु० एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराया धन हरनेवाला, व्यसनोंमें आसक्त और सत्कर्मोंकी रुचिसे रहित होता है ॥ ४ ॥

अथ सू० चं० श० योगफलम्।

परेंगितज्ञो विधनश्च मन्दो धातुक्रियायां निरतो नितांतम्।
व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यात्क्षेत्रे यदैकत्र रवींदुमन्दाः ॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराये इंगितका जाननेवाला, धनहीन, मन्दबुद्धि, धातुक्रियामें निरन्तर तत्पर और वृथा श्रम करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ सू० बु० भौ० योगफलम्।

ख्यातो भवेन्मंत्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः।
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. मं. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसिद्ध, मन्त्रशास्त्रकी विधिमें प्रवीण, श्रेष्ठ, साहसी, कठोर चित्तवाला और लज्जा, धन, स्त्री एवं पुत्रमित्रोंसहित होता है ॥ ६ ॥

अथ सू० मं० बृ० योगफलम्।

वक्ताऽर्थयुक्तः क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः।
महामनाः सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥ ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० मं० बृ० एक स्थानमें बैठे हों वह मनुष्य वक्ता, धनसहित, राजाका मंत्री, फौजका मालिक, नीतिविधानमें चतुर, तेजस्वी, सत्य बोलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ सू० मं० शु० योगफलम्।

भाग्यान्वितोऽत्यंतमतिर्विनीतः कुलीनवाग्शीलविराजमानः
स्यादल्पजल्पश्चतुरो नरश्चेद्भौमास्फुजित्सूर्ययुतिः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य भाग्यवान् अत्यन्त बुद्धिमान्, नम्रतासहित, कुलीन, शीलवान्, थोडा बोलनेवाला और चतुर होता है ॥ ८ ॥

अथ सू० मं० श० योगफलम् ।

धनेन हीनः कलहान्वितश्च त्यागी वियोगी पितृबंधुवर्गैः ।
विवेकहीनो मनुजः प्रसूतौ योगो यदार्कारशनैश्चराणाम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य धनहीन कलहसहित, त्यागी और पिता बन्धुवर्ग करके वियोगी विवेकरहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सू० बु० बृ० योगफलम् ।

विचक्षणः शास्त्रकलाकलापे सुसंग्रहार्थः प्रबलः सुशीलः ।
दिवाकरज्ञामरपूजितानां योगे भवेन्ना नयनामयार्तः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चतुर, शास्त्रोंकी कलाके समूहमें प्रवीण, धन संग्रह करनेवाला बडा, बलवान्, श्रेष्ठ शील और नेत्ररोगसे पीडित होता है ॥ १० ॥

अथ सू० बु० शु० योगफलम् ।

साधुद्वेषी निंदितोऽत्यंततप्तः कांताहेतोर्मानवः संयुतश्चेत् ।
दैत्यामात्यादित्यसौम्याख्यखेटावाचालःस्यादन्यदेशाटनश्च ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य साधुओंका वैरी, निन्दा करनेवाला, स्त्रीके कारण अत्यन्त सन्तापको प्राप्त, बहुत बोलनेवाला और देशोंका भ्रमण करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ सू० बु० श० योगफलम् ।

तिरस्कृतः स्वीयजनैश्च हीनोऽप्यन्यैर्महादोषकरो नरः स्यात् ।
पण्ढाकृतिर्हीनतरानुयातश्चादित्यमन्देन्दुसुतैः समेतैः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें स. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य तिरस्कारको प्राप्त, अपने जनोंकरके रहित और भी अनेक दोष करनेवाला हिजडोंकीसी आकृति तथा हीनवृत्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ सू० बृ० शु० योगफलम् ।

अप्रगल्भवचनो धनहीनोऽप्याश्रितोऽवनिपतेर्मनुजः स्यात् ।
शूरताप्रियतरः परकार्ये सादरोऽर्कगुरुभार्गवयोगे ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० बृ० बैठे हों वह मनुष्य मेवाकी रीति जाननेवाला, परदेश जानेवाला, चतुर, प्रवीण, चपल और अत्यन्त धूर्त होता है ॥ ३ ॥

अथ सू० चं० शु० योगफलम्।

परस्वहर्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात्।
मृगांकपंकेरुहबंधुशुक्राश्चैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० शु० एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराया धन हरनेवाला, व्यसनोंमें आसक्त और सत्कर्मोंकी रुचिसे रहित होता है ॥ ४ ॥

अथ सू० चं० श० योगफलम्।

परेंगितज्ञो विधनश्च मन्दो धातुक्रियायां निरतो नितांतम्।
व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यात्क्षेत्रे यदैकत्र रवींदुमन्दाः ॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराये इंगितका जाननेवाला, धनहीन, मन्दबुद्धि, धातुक्रियामें निरन्तर तत्पर और वृथा श्रम करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ सू० बु० भौ० योगफलम्।

ख्यातो भवेन्मंत्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः।
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. मं. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य मन्त्रि मन्त्रशास्त्रकी विधिमें प्रवीण, श्रेष्ठ, साहसी, कठोर चित्तवाला और लज्जा, धन, स्त्री एवं पुत्रमित्रोंसहित होता है ॥ ६ ॥

अथ सू० मं० बृ० योगफलम्।

वक्ताऽर्थयुक्तः क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः।
महामनाः सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० मं० बृ० एक स्थानमें बैठे हों वह मनुष्य वक्ता, धनसहित, राजाका मंत्री, फौजका मालिक, नीतिविधानमें चतुर, तेजस्वी, सत्य बोलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ सू० मं० शु० योगफलम्।

भाग्यान्वितोऽत्यंतमतिर्विनीतः कुलीनवाग्शीलविराजमानः।
स्यादल्पजल्पश्चतुरो नरश्चेद्भौमास्फुजित्सूर्ययुतिः प्रसूतौ ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य भाग्यवान् अत्यन्त बुद्धिमान्, नम्रतासहित, कुलीन, शीलवान्, थोडा बोलनेवाला और चतुर होता है ॥ ८ ॥

अथ सू० मं० श० योगफलम्।

धनेन हीनः कलहान्वितश्च त्यागी वियोगी पितृबंधुवर्गैः।
विवेकहीनो मनुजः प्रसूतौ योगो यदार्कारशनैश्चराणाम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य धनहीन कलहसहित, त्यागी और पिता बन्धुवर्ग करके वियोगी विवेकरहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सू० बु० बृ० योगफलम्।

विचक्षणः शास्त्रकलाकलापे सुसंग्रहार्थः प्रबलः सुशीलः।
दिवाकरज्ञामरपूजितानां योगे भवेन्ना नयनामयार्तः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चतुर, शास्त्रोंकी कलाके समूहमें प्रवीण, धन संग्रह करनेवाला बडा, बलवान, श्रेष्ठ शील और नेत्ररोगसे पीडित होता है ॥ १० ॥

अथ सू० बु० शु० योगफलम्।

साधुद्वेषी निंदितोऽत्यंततप्तः कांताहेतोर्मानवः संयुतश्चेत्।
दैत्यामात्यादित्यसौम्याख्यखेटावाचालःस्यादन्यदेशाटनश्च ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य साधुओंका वैरी, निन्दा करनेवाला, स्त्रीके कारण अत्यन्त सन्तापको प्राप्त, बहुत बोलनेवाला और देशोंका भ्रमण करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ सू० बु० श० योगफलम्।

तिरस्कृतः स्वीयजनैश्च हीनोऽप्यन्यैर्महादोषकरो नरः स्यात्।
षण्ढाकृतिर्हीनतरानुयातश्चादित्यमन्देन्दुसुतैः समेतैः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य तिरस्कारको प्राप्त, अपने जनोंकरके रहित और भी अनेक दोष करनेवाला हिजडोंकीसी आकृति तथा हीनवृत्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ सू० बृ० शु० योगफलम्।

अप्रगल्भवचनो धनहीनोऽप्याश्रितोऽवनिपतेर्मनुजः स्यात्।
शूरतामियतरः परकार्ये सादरोऽर्कगुरुभार्गवयोगे ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० बृ० बैठें हों वह मनुष्य सेवाकी विधि जाननेवाला, परदेश जानेवाला, चतुर, प्रवीण, चपल और अत्यन्त धूर्त होता है॥३॥

अथ सू० चं० शु० योगफलम्।

परस्वहर्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात्।
मृगांकपंकेरुहबंधुशुक्राश्चैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० चं० शु० एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराया धन हरनेवाला, व्यसनोंमें आसक्त और सत्कर्मोंकी रुचिसे रहित होता है ॥ ४ ॥

अथ सू० चं० श० योगफलम्।

परेंगितज्ञो विधनश्च मन्दो धातुक्रियायां निरतो नितांतम्।
व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यात्क्षेत्रे यदैकत्र रवींदुमन्दाः ॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य पराये इंगितका जाननेवाला, धनहीन, मन्दबुद्धि, धातुक्रियामें निरन्तर तत्पर और वृथा श्रम करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ सू० बु० भौ० योगफलम्।

ख्यातो भवेन्मंत्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः।
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. मं. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसिद्ध, मन्त्रशास्त्रकी विधिमें प्रवीण, श्रेष्ठ, साहसी, कठोर चित्तवाला और लज्जा, धन, स्त्री एवं पुत्रमित्रोंसहित होता है ॥ ६ ॥

अथ सू० मं० बृ० योगफलम्।

वक्ताऽर्थयुक्तः क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः।
महामनाः सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू० मं० बृ० एक स्थानमें बैठे हों वह मनुष्य वक्ता, धनसहित, राजाका मंत्री, फौजका मालिक, नीतिविधानमें चतुर, तेजस्वी, सत्य बोलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ सू० मं० शु० योगफलम्।

भाग्यान्वितोऽत्यंतमतिर्विनीतः कुलीनवान्शीलविराजमानः।
स्यादल्पजल्पश्चतुरो नरश्चेद्भौमास्फुजित्सूर्ययुतिः प्रसूतौ ॥८॥

अथ चं. मं. शु. योगफलम्।

ीलकांतापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकांतातनुजोऽल्पशीलः।
भवेज्जन्मनि चैकभावो भौमास्फुजिच्चन्द्रमसो यदि स्युः॥१८॥

जेस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य दुष्ट- ा स्त्रीका पति, अस्थिर, दुष्टशील माताका संतान और थोड़ा शीलवाला होता १८॥

अथ चं० मं० श० योगफलम्।

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदाऽपि कलहान्वितो भवेत्।
संभवे रविभवेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः॥ १९॥

जेस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य बालक- माताका मृत्यु करनेवाला और हमेशा कलहसहित निंदित होता है॥ १९॥

अथ चं. बु. बृ. योगफलम्।

विख्यातकीर्तिर्मतिमान्महौजा विचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः।
सद्वृत्तविद्योऽतितरां नरः स्यादेकत्र संस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः॥२०॥

जेस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. बृ. एकभावमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसिद्ध ाला, बुद्धिमान्, बड़ा प्रतापी, विचित्र मित्रोंवाला, बहुत भाग्यसहित और श्रेष्ठ ार और विद्यावाला होता है॥ २०॥

अथ चं. बु. शु. योगफलम्।

॥प्रवीणोऽपि च नीचवृत्तः स्पर्धाऽभिवृद्ध्या च रुचिर्विशेषात्।
दर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगांकसौम्यास्फुजितायुतिश्चेत्॥२१॥

जेस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य विद्यामें ा, नीचवृत्ति करनेवाला, सबसे द्रोह करनेवाला अर्थात् सबकी निन्दा करनेमें जिसकी, धनका लोभी होता है॥ २१॥

अथ चं० बु० श० योगफलम्।

ाकलापाऽमलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतो नितांतम्।
पुरग्रामप [illegible] ाते। [illegible] न्दाः सहिता यदि स्युः॥ २२॥

स मनुष्यके [illegible] एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य कला- समूहमें [illegible] का प्यारा, नगर ग्रामका पति और ासहित होता [illegible]

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य ढीठ बोलनेवाला, धनरहित, राजाका आश्रय करनेवाला और पराये काममें शुरता करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ सू० बृ० श० योगफलम्।

नृपप्रियो मित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कांतवपुर्नरः स्यात्।
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बृ. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य राजाका प्यारा, मित्र और स्त्री पुत्रों करके सहित, शोभायमान शरीर, अच्छी नीतिसे खर्च करनेवाला वडा, निर्भय और बोलनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सू० शुं० श० योगफलम्।

रिपुभयपरियुक्तः सत्कथाकाव्यमुक्तः
कुचरितरुचिरेवाऽत्यंतकंडूयनार्तः।
निजजनधनहीनो मानवः सर्वदा स्याव
कविरविरविजानां संयुतिश्चेत्प्रसूतौ ॥ १५ ॥

मनुष्यके जन्मकालमें सू. शु. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शत्रुके ... युक्त, श्रेष्ठ कथा और काव्यरहित खोटे कामोंमें प्रीति करनेवाला, अत्यन्त कण्डूरोगसे पीडित, अपना धन और बन्धुवर्गसे हीन होता है ॥ १५ ॥

अथ चं० मं० बु० योगफलम्।

भवंति दीना धनधान्यहीना नानाविधानां स्वजनापमानाः।
स्युर्मानवाहीनजनानुयाताश्चेत्संयुताः क्षोणिसुतेन्दुसौम्याः॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बु. एक भावमें बैठे हों वे मनुष्य दीन, धनधान्यरहित, अपने बन्धुवर्गोंसे अपमानित और नीचजनोंके साथ करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥

अथ चं० मं० बृ० योगफलम्।

व्रणांकितः कोपयुतश्च हर्ता कांतारतः कांतवपुर्नरः स्यात्।
प्रसूतिकाले मिलिता भवंति चेदारनीहारकरामरेज्याः॥ १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य व्रण करके सहित, क्रोधसहित, पराया धन हरनेवाला, स्त्रीमें तत्पर और ... शरीर होता है ॥ १७ ॥

अथ चं. मं. शु. योगफलम्।

दुःशीलकांतापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकांतातनुजोऽल्पशीलः।
नरो भवेज्जन्मनि चैकभावो भौमास्फुजिच्चन्द्रमसो यदि स्युः॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य दुष्टशीला स्त्रीका पति, अस्थिर, दुष्टशील माताका संतान और थोड़ा शीलवाला होता है॥ १८॥

अथ चं० मं० श० योगफलम्।

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदाऽपि कलहान्वितो भवेत्।
संभवे रविभवेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः॥ १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य बालकपनेमें माताका मृत्यु करनेवाला और हमेशा कलहसहित निंदित होता है॥ १९॥

अथ चं. बु. बृ. योगफलम्।

विख्यातकीर्तिर्मतिमान्महौजा विचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः।
सद्वृत्तविद्योऽतितरां नरः स्यादेकत्र संस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. बृ. एकभावमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसिद्ध यशवाला, बुद्धिमान्, बड़ा प्रतापी, विचित्र मित्रोंवाला, बहुत भाग्यसहित और श्रेष्ठ आचार और विद्यावाला होता है॥ २०॥

अथ चं. बु. शु. योगफलम्।

विद्याप्रवीणोऽपि च नीचवृत्तः स्पर्धाऽभिवृद्ध्या च रुचिर्विशेषात्।
स्यादर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगांकसौम्यास्फुजितायुतिश्चेत्॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण, नीचवृत्ति करनेवाला, सबसे द्रोह करनेवाला अर्थात् सबकी निन्दा करनेमें प्रीति जिसकी, धनका लोभी होता है॥ २१॥

अथ चं० बु० श० योगफलम्।

कलाकलापाऽमलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतो नितांतम्।
नरः पुरग्रामपतिर्विनीतो बुधेंदुमन्दाः सहिता यदि स्युः॥ २२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य कलाओंके समूहमें निर्मल बुद्धिवाला, विख्यात, राजाका प्यारा, नगर ग्रामका पति और नम्रतासहित होता है॥ २२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बृ. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य दंभ बोलनेवाला, धनरहित, राजाका आश्रय करनेवाला और पराये काममें मुग्ध करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ सू० बृ० श० योगफलम्।

नृपप्रियो मित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कांतवपुर्नरः स्यात्।
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बृ. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य राजाका प्यारा, मित्र और स्त्री पुत्रों करके सहित, शोभायमान शरीर, अच्छी नीतिसे खर्च करनेवाला बडा, निर्भय और बोलनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सू० शु० श० योगफलम्।

रिपुभयपरियुक्तः सत्कथाकाव्यमुक्तः
कुचरितरुचिरेवाऽत्यंतकंडूयनार्तः।
निजजनधनहीनो मानवः सर्वदा स्याव
कविरविरविजानां संयुतिश्चेत्प्रसूतौ ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. शु. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य शत्रु भयसे युक्त, श्रेष्ठ कथा और काव्यरहित खोटे कामोंमें प्रीति करनेवाला, अत्यंत कण्डूरोगसे पीडित, अपना धन और बन्धुवर्गसे हीन होता है ॥ १५ ॥

अथ चं० मं० बु० योगफलम्।

भवंति दीना धनधान्यहीना नानाविधानां स्वजनापमानाः।
स्युर्मानवाहीनजनानुयाताश्चेत्संयुताः क्षोणिसुतेन्दुसौम्याः॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बु. एक भावमें बैठे हों वे मनुष्य दीन, धन धान्यरहित, अपने बन्धुवर्गोंसे अपमानित और नीचजनोंसे साथ करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥

अथ चं० मं० बृ० योगफलम्।

व्रणांकितः कोपयुतश्च हर्ता कांतारतः कांतवपुर्नरः स्यात्।
प्रसूतिकाले मिलिता भवंति चेदारनीहारकरामरेज्याः॥ १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य व्रण करके सहित, क्रोधसहित, पराया धन हरनेवाला, स्त्रीमें तत्पर और शोभायमान शरीर होता है ॥ १७ ॥

अथ चं. मं. शु. योगफलम्।

दुःशीलकांतापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकांतातनुजोऽल्पशीलः।
नरो भवेज्जन्मनि चैकभावो भौमास्फुजिच्चन्द्रमसो यदि स्युः॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य दुष्टशीला स्त्रीका पति, अस्थिर, दुष्टशील माताका संतान और थोड़ा शीलवाला होता है॥ १८॥

अथ चं० मं० श० योगफलम्।

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदाऽपि कलहान्वितो भवेत्।
संभवे रविभवेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः॥ १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य बालकपनेमें माताका मृत्यु करनेवाला और हमेशा कलहसहित निंदित होता है॥ १९॥

अथ चं. बु. बृ. योगफलम्।

विख्यातकीर्तिर्मतिमान्महौजा विचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः।
सद्वृत्तविद्योऽतितरां नरः स्यादेकत्र संस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. बृ. एकभावमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसिद्ध यशवाला, बुद्धिमान्, बड़ा प्रतापी, विचित्र मित्रोंवाला, बहुत भाग्यसहित और श्रेष्ठ आचार और विद्यावाला होता है॥ २०॥

अथ चं. बु. शु. योगफलम्।

विद्याप्रवीणोऽपि च नीचवृत्तः स्पर्धाऽभिवृद्ध्या च रुचिर्विशेषात्।
स्यादर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगांकसौम्यास्फुजितायुतिश्चेत्॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण, नीचवृत्ति करनेवाला, सबसे द्रोह करनेवाला अर्थात् सबकी निन्दा करनेमें प्रीति जिसकी, धनका लोभी होता है॥ २१॥

अथ चं० बु० श० योगफलम्।

कलाकलापाऽमलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतो नितांतम्।
नरः पुरग्रामपतिर्विनीतो बुधेंदुमन्दाः सहिता यदि स्युः॥ २२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य कलाओंके समूहमें निर्मल बुद्धिवाला, विख्यात, राजाका प्यारा, नगर ग्रामका पति और नम्रतासहित होता है॥ २२॥

अथ चं० बृ० शु० योगफलम्।

भाग्यभाग्भवति मानवः सदा चारुकीर्तिमतिवृत्तिसंयुतः।
भार्गवेन्दुसुरराजपूजिताः संयुता यदि भवन्ति संभवे ॥ २३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य भाग्यवान्, हमेशा सुन्दर कीर्तिवाला, बुद्धिमान् और श्रेष्ठवृत्तिसहित होता है ॥ २३॥

अथ चं० बृ० श० योगफलम्।

विचक्षणःक्षोणिपतिप्रियश्च सन्मन्त्रशास्त्राधिकृतो नितांतम्।
भवेत्सुवेषो मनुजो महौजाः संयुक्तमन्देंदुसुरेन्द्रवन्द्यैः ॥ २४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चतुर, राजाका प्यारा, श्रेष्ठ, मंत्रशास्त्रमें अधिकारी, उत्तम वेषवाला और बड़ा प्रतापी होता है ॥ २४॥

अथ चं० शु० श० योगफलम्।

पुरोधसां वेदविदां वरेण्याः स्युः प्राणिनः पुण्यपरायणाश्च।
सत्पुस्तकालोकनलेखनेच्छाः,कवीन्दुमंदा मिलिता यदि स्युः २५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. शु. श. एक भावमें बैठे हों वे मनुष्य वेदके ज्ञाता पुरोहितोंमें श्रेष्ठ, पुण्यकरनेमें तत्पर, श्रेष्ठ पुस्तकोंके देखने और लिखनेवाले होते हैं ॥ २५॥

अथ मं० बु० बृ० योगफलम्।

क्ष्मापालकः स्वीयकुले नरः स्यात्कवित्वसङ्गीतकलाप्रवीणः।
परार्थसंसाधकतैकचित्तो वाचस्पतिज्ञावनिसूनुयोगे ॥ २६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य अपने कुलमें धरतीका पालनेवाला,राजाके समान,काव्य और गाने बजानेकी कलामें प्रवीण और पराया कार्य साधनमें एकचित्त होता है ॥ २६॥

अथ मं. बु. शु. योगफलम्।

वित्तान्वितः क्षीणकलेवरश्च वाचालताचञ्चलतासमेतः।
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्र यातैः कविभौमसौम्यैः॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य धनसहित, दुर्बल देह, बड़ा बोलनेवाला, चंचलतासहित, धृष्ट और निरंतर उत्सर होता है ॥ २७॥

अथ मं० बु० श० योगफलम् ।

कुलोचनः क्षीणतनुर्वनस्थः प्रेष्यप्रवासी बहुहास्ययुक्तः ।
स्यान्नोऽसहिष्णुश्च नरोऽपराधी मंदारसौम्यैः सहितैः प्रसूतौ ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य बुरे नेत्रोंवाला, दुर्बल देह, वनमें वास करनेवाला, दूतका काम करनेवाला, परदेशी, बहुत हास्यसहित, किसीकी न सहनेवाला और अपराधी होता है ॥ २८ ॥

अथ मं० बु० शु० योगफलम् ।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतः क्ष्मापालमान्यः सुजनानुयातः ।
[illegible] क्षेत्रे यदैकत्र गतैर्नरः स्यात् ॥ २९ ॥

[illegible] एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र और स्त्रीके सुखसहित, राजाकरके माननीय और श्रेष्ठ जनोंके साथ रहने वाला होता है ॥ २९ ॥

अथ मं० बृ० श० योगफलम् ।

नृपात्तमानं कृपया विहीनं कृशं कुवृत्तं गतमित्रसख्यम् ।
जन्यां च शन्यंगिरसावनीजाः संयोगभाजो मनुजं प्रकुर्युः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बृ. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य राजाकरके प्राप्त मान और कृपारहित, दुर्बल, खोटी वृत्ति करनेवाला और मित्रोंकी मित्रतारहित होता है ॥ ३० ॥

अथ मं० शु० श० योगफलम् ।

वासो विदेशे जननी त्वनार्या भार्या तथैवोपहतिः सुखानाम् ।
दैत्येन्द्रपूज्यावनिजार्कजानां योगे भवेज्जन्म नरस्य यस्य ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. शु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य परदेशमें वास करनेवाला और उसकी माता नीचकुलवाली, वैसी ही उसकी औरत होती है और उसके सुखोंका नाश होता है ॥ ३१ ॥

अथ बु० बृ० शु० योगफलम् ।

नृपानुकंप्यो बहुगीतकीर्तिः प्रसन्नमूर्तिर्विजितारिवर्गः ।
सौम्यामरेज्यास्फुजितां प्रसूतौ चेत्संयुतिः सत्त्वपरो नरः स्यात् ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु.बृ.शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य राजाकी कृपासहित, बहुतयशवाला, प्रसन्नचित्त, शत्रुओंको जीतनेवाला और बलवान् होता है ॥ ३२ ॥

अथ बु० बृ० श० योगफलम् ।

स्थानार्थसद्भिर्भवसंयुतः स्यादनल्पजल्पो धृतिमान्सुवृत्तः ।
शनैश्वराचार्यशशांकपुत्राः क्षेत्रे यदैकत्र गता भवंति ॥ ३३ ॥

अथ चं० बृ० शु० योगफलम्।

भाग्यभाग्भवति मानवः सदा चारुकीर्तिमतिवृत्तिसंयुतः।
भार्गवेन्दुसुरराजपूजिताः संयुता यदि भवन्ति संभवे ॥ २३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य भाग्यवान्, हमेशा सुन्दर कीर्तिवाला, बुद्धिमान् और श्रेष्ठवृत्तिसहित होता है ॥ २३॥

अथ चं० बृ० श० योगफलम्।

विचक्षणःक्षोणिपतिप्रियश्च सन्मन्त्रशास्त्राधिकृतो नितांतम्।
भवेत्सुवेषो मनुजो महौजाः संयुक्तमन्देंदुसुरेन्द्रवन्द्यैः ॥ २४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य चतुर, राजाका प्यारा, श्रेष्ठ, मंत्रशास्त्रमें अधिकारी, उत्तम वेषवाला और बड़ा प्रतापी होता है ॥ २४ ॥

अथ चं० शु० श० योगफलम्।

पुरोधसां वेदविदां वरेण्याः स्युः प्राणिनः पुण्यपरायणाश्च।
सत्पुस्तकालोकनलेखनेच्छाः,कवीन्दुमंदा मिलिता यदि स्युः२५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. शु. श. एक भावमें बैठे हों वे मनुष्य वेदज्ञाता पुरोहितोंमें श्रेष्ठ, पुण्यकरनेमें तत्पर, श्रेष्ठ पुस्तकोंके देखने और लिखनेवाले होते हैं ॥ २५ ॥

अथ मं० बु० बृ० योगफलम्।

क्ष्मापालकः स्वीयकुले नरः स्यात्कवित्वसङ्गीतकलाप्रवीणः
परार्थसंसाधकतैकचित्तो वाचस्पतिज्ञावनिसूनुयोगे ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. बृ. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य अपने कुलमें धरतीका पालनेवाला,राजाके समान,काव्य और गाने बजानेकी कलामें प्रवीण और पराया कार्य साधनमें एकचित्त होता है ॥ २६ ॥

अथ मं. बु. शु. योगफलम्।

वित्तान्वितः क्षीणकलेवरश्च वाचालताचञ्चलतासमेतः।
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्र यातैः कविभौमसौम्यैः॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. शु. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य धनसहित, दुर्बल देह, बड़ा बोलनेवाला, चंचलतासहित, धृष्ट और निरंतर उत्साहमें तत्पर होता है ॥ २७ ॥

अथ मं० बु० श० योगफलम् ।

कुलोचनः क्षीणतनुर्वनस्थः प्रेष्यप्रवासी बहुहास्ययुक्तः ।
स्यान्नोऽसहिष्णुश्च नरोऽपराधी मंदारसौम्यैः सहितैः प्रसूतौ ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य बुरे नेत्रों-वाला, दुर्बल देह, वनमें वास करनेवाला, दूतका काम करनेवाला, परदेशी, बहुत हास्यसहित, किसीको न सहनेवाला और अपराधी होता है ॥ २८ ॥

अथ मं० बु० शु० योगफलम् ।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतः क्ष्मापालमान्यः सुजनानुयातः ।
वाचस्पतिः क्षोणिसुतास्फुजिद्भिः क्षेत्रे यदेकत्र गतैर्नरः स्यात् ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं.बृ.शु. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र और स्त्रीके सुखसहित,राजाकरके माननीय और श्रेष्ठ जनोंके साथ रहने वाला होता है॥२९॥

अथ मं० बृ० श० योगफलम् ।

नृपाप्तमानं कृपया विहीनं कृशं कुवृत्तं गतमित्रसख्यम् ।
जन्यां च शन्यंगिरसावनीजाः संयोगभाजो मनुजं प्रकुर्युः ३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बृ. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य राजा करके मान मान और कृपारहित, दुर्बल, खोटी वृत्ति करनेवाला और मित्रोंकी मित्रतारहित होता है ॥ ३० ॥

अथ मं० शु० श० योगफलम् ।

वासो विदेशे जननी त्वनार्या भार्या तथैवोपहतिः सुखानाम् ।
दैत्येन्द्रपूज्यावनिजार्कजानां योगे भवेज्जन्म नरस्य यस्य ॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. शु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य परदेशमें वास करनेवाला और उसकी माता नीचकुलवाली, वैसी ही उसकी औरत होती है और उसके सुखोंका नाश होता है ॥ ३१ ॥

अथ बु० बृ० शु० योगफलम् ।

नृपानुकंप्यो बहुगीतकीर्तिः प्रसन्नमूर्तिर्विजितारिवर्गः ।
[illegible] चेत्संयुतिः सत्त्वपरो नरःस्यात् ३२॥

[illegible] एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य राजाकी कृपा-सहित,बहुतयशवाला,प्रसन्नचित्त,शत्रुओंको जीतनेवाला और बलवान् होता है॥३२॥

अथ बु० बृ० श० योगफलम् ।

[illegible] तिमान्सुवृत्तः ।
[illegible] भवंति ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु.बृ.श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य मकानमें धन और श्रेष्ठ वैभव सहित,बहुत बोलनेवाला,धृतिमान और श्रेष्ठ वृत्तवाला,होता है॥३३॥

अथ बु० शु० श० योगफलम् ।

साधुशीलरहितोऽनृतवक्ताऽनल्पजल्पनरुचिः खलु धूर्तः ।
दूरयाननिरतश्च कलाज्ञो भार्गवज्ञशनिसंयुतिजन्मा ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु. शु. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य श्रेष्ठ शीलरहित, झूठ बोलनेवाला, बहुत बोलनेवाला, निश्चय धूर्त, बडी दूरकी यात्रा करनेवाला और कलाओंका जाननेवाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ बृ० शु० श० योगफलम् ।

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा नरः सुकीर्तिः पृथिवीपतिः स्यात् ।
सद्वृत्तिशाली परिसूतिकाले मंदेज्यशुक्रा मिलिता यदि स्युः॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृ. शु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य नीचवंशमें भी चाहे पैदा हो तो भी श्रेष्ठ कीर्तिवाला, धरतीका स्वामी और श्रेष्ठ वृत्ति करनेवाला होता है ॥ ३५ ॥

अथ शुभाशुभयुक्तचन्द्रसूर्यफलम् ।

पापान्विते शीतरुचौ जनन्या नूनं भवेन्नैधनमामनंति ।
तादृग्दिनेशः पितृनाशकर्ता मिश्रे विमिश्रं फलमत्र कल्प्यम्॥३६॥
शुभान्वितो जन्मनि शीतरश्मिर्यशोऽर्थभूकीर्तिविवृद्धिलाभम् ।
करोति जातं सकलप्रदीपं श्रेष्ठप्रतिष्ठं नृपगौरवेण ॥ ३७ ॥
एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरूपम् ।
दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके युक्त चन्द्रमा बैठा हो तो माताका निश्चय करके नाश करता है, उसी प्रकार सूर्य पापग्रहों करके सहित हो तो पिताका नाश करता है, मिश्रग्रहोंसे मिश्र फल करता है ॥ ३६ ॥ और जो चंद्रमा शुभ ग्रहकरके सहित बैठा हो तो वह मनुष्य यश और धन, कीर्तिकी वृद्धिको प्राप्त होता है और वह मनुष्य श्रेष्ठ प्रतिष्ठा करके सहित, राजाकरके मानको प्राप्त होता है ॥ ३७ ॥ जिसके एक घरमें तीन पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य बुरे रूपवाला, दारिद्र्य और दुःखों करके सन्तापित कभी घरमें सुख नहीं पाता है ॥ ३८ ॥

इति त्रिग्रहयोगाध्यायः ।

अथ राजयोगाध्यायप्रारम्भः ।

तत्रादौ गणेशस्तुतिः ।

सद्विलासकलगर्जनशीलः शुण्डिकावलयकृत्प्रतिवेलम् ।
अस्तु वः कलितभालतलेंदुर्मंगलाय किल मंगलमूर्तिः ॥ १ ॥

अब राजयोग कहते हैं—तहां पहिले श्रीगणेशजीका ध्यान करते हैं, कैसे हैं गेशजी—श्रेष्ठ विलासके करनेवाले, मधुर स्पष्ट शब्दके गर्जनशीलवाले, शुण्डको ंचीके समान वारंवार घुमाते हुए, शोभायमान है मस्तकपर चंद्रमा जिनके स मंगलकी मूर्ति श्रीगणेशजी महाराज मंगलके वास्ते हमारे विघ्नोंका ाश करो ॥ १ ॥

अथ राजयोगकथनकारणमाह ।

भाग्यादिभावप्रतिपादितं यद्भाग्यं भवेत्तत्खलु राजयोगैः ।
तान्विस्तरेण प्रवदामि सम्यक्तैः सार्थकं जन्मयतो नराणाम्॥२॥

भाग्यादिभाव जो पहिले वर्णन किये हैं सो भाग्य निश्चय करके राजयोगसे ोता है, उन राजयोगोंको मैं भले प्रकार वर्णन करता हूं, उन राजयोगोंके उत्पन्न ससे मनुष्योंका जन्म सार्थक है ॥ २ ॥

अथ राजयोगः ।

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौमः ।
त्रयः स्वतुंगादिगताःस राजा राजात्मजस्त्वन्यसुतोऽत्रमंत्री ॥३॥

राजयोगः । राजयोगः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांच ग्रह अपनी उच्चराशिमें बैठे हों वह मनुष्य समुद्रपर्यंत धरतीका पति सार्वभौमराजा होता है (एको योगः) और जिसके तीन ग्रह अपने उच्च स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें ठे हों वह मनुष्य राजकुलमें उत्पन्न हुआ राजा होता है और अन्यजातिमें उत्पन्न ाजाका वजीर होता है ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु.बृ.श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य मकानमें म और श्रेष्ठ वैभव सहित,बहुत बोलनेवाला,धृतिमान् और श्रेष्ठ वृत्तवाला,होता है॥३३॥

अथ बु० शु० श० योगफलम्।

साधुशीलरहितोऽनृतवक्ताऽनल्पजल्पनरुचिः खलु धूर्तः।
दूरयाननिरतश्च कलाज्ञो भार्गवज्ञशनिसंयुतिजन्मा॥ ३४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु. शु. श. एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य सा शीलरहित, झूठ बोलनेवाला, बहुत बोलनेवाला, निश्चय धूर्त, बडी दूरकी या करनेवाला और कलाओंका जाननेवाला होता है॥ ३४॥

अथ बृ० शु० श० योगफलम्।

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा नरः सुकीर्तिः पृथिवीपतिः स्यात्।
सद्वृत्तिशाली परिसूतिकाले मंदेज्यशुक्रा मिलिता यदि स्युः॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृ. शु. श. एक भावमें बैठे हों वह मनुष्य नीचकुल भी चाहे पैदा हो तो भी श्रेष्ठ कीर्तिवाला, धरतीका स्वामी और श्रेष्ठ करनेवाला होता है॥ ३५॥

अथ शुभाशुभयुक्तचन्द्रसूर्यफलम्।

पापान्विते शीतरुचौ जनन्या नूनं भवेन्निधनमामनंति।
तादृग्दिनेशः पितृनाशकर्ता मिश्रे विमिश्रं फलमत्र कल्प्यम्॥३६॥
शुभान्वितो जन्मनि शीतरश्मिर्यशोऽर्थभुक्कीर्तिविवृद्धिलाभम्।
करोति जातं सकलप्रदीपं श्रेष्ठप्रतिष्ठं नृपगौरवेण॥ ३७॥
एकालये चेत्सकलखेचराणां भयं करोत्येव नरं कुरूपम्।
दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः॥ ३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके युक्त चन्द्रमा बैठा हो तो माताको निश्चय करके नाश करता है, उसी प्रकार सूर्य पापग्रहों करके सहित हो तो पिताका नाश करता है, मिश्रग्रहोंसे मिश्र फल करता है॥ ३६॥ और जो चन्द्रमा शुभ ग्रहकरके सहित बैठा हो तो वह मनुष्य यश और धन, कीर्तिकी वृद्धिको प्राप्त होता है और वह मनुष्य श्रेष्ठ प्रतिष्ठा करके सहित, राजाकरके मानको प्राप्त होता है॥ ३७॥ जिसके एक घरमें सब ग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य कुरूप, दरिद्र और दुःखों करके सन्तापित कभी घरमें सुख नहीं पाता है॥ ३८॥

इति [illegible]

अथ राजयोगाध्यायप्रारम्भः ।

तत्रादौ गणेशस्तुतिः ।

सद्विलासकलगर्जनशीलः शुण्डिकावलयकृत्प्रतिवेलम् ।
अस्तु वः कलितभालतलेंदुर्मंगलाय किल मंगलमूर्तिः ॥ १ ॥

अब राजयोग कहते हैं–तहां पहिले श्रीगणेशजीका ध्यान करते हैं, कैसे हैं गणेशजी–श्रेष्ठ विलासके करनेवाले, मधुर स्पष्ट शब्दके गर्जनशीलवाले, शुण्डको पहुँचाके समान वारंवार घुमाते हुए, शोभायमान है मस्तकपर चंद्रमा जिनके ऐसे मंगलकी मूर्ति श्रीगणेशजी महाराज मंगलके वास्ते हमारे विघ्नोंका नाश करो ॥ १ ॥

अथ राजयोगकथनकारणमाह ।

भाग्यादिभावप्रतिपादितं यद्भाग्यं भवेत्तत्खलु राजयोगैः ।
तान्विस्तरेण प्रवदामि सम्यक्तैः सार्थकं जन्मयतो नराणाम्॥२॥

भाग्यादिभाव जो पहिले वर्णन किये हैं सो भाग्य निश्चय करके राजयोगसे होता है, उन राजयोगोंको मैं भले प्रकार वर्णन करता हूं, उन राजयोगोंके उत्पन्न हुएसे मनुष्योंका जन्म सार्थक है ॥ २ ॥

अथ राजयोगः ।

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौमः ।
त्रयः स्वतुंगादिगताः स राजा राजात्मजस्त्वन्यसुतोऽत्रमंत्री ॥३॥

राजयोगः ।

मं. २ | १२ | ३ | गु. १ | ११ | सू. ४ | १० सं. | ५ | श. ७ | ९ | ६ | ८

राजयोगः ।

बु. ६ | ४ | ७ | ५ | ३ | ८ | २ च. | ९ | ११ | १ | १० | १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांच ग्रह अपनी उच्चराशिमें बैठे हों वह मनुष्य समुद्रपर्यंत धरतीका पति सार्वभौमराजा होता है (एको योगः) और जिसके तीन ग्रह अपने उच्च स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें बैठे हों वह मनुष्य राजकुलमें उत्पन्न हुआ राजा होता है और अन्यजातिमें उत्पन्न राजाका वजीर होता है ॥ ३ ॥

तुंगोपगा यस्य चतुर्नभोगा महापगासंतरणे वलानाम् । दंतावलानां किल सेतुबंधा कीर्तिप्रबन्धा वसुधातले ते ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चार ग्रह अपने उच्चमें बैठे हों उस मनुष्यके साथ हाथियोंके समूह चलते हैं और वह मनुष्य पुलबांधनेमें समर्थ हो उसकी धरतीपर बड़ी कीर्ति होती है ॥ ४ ॥

स्वोच्चे सूर्यशनीज्यभूमितनयैर्यद्वा त्रिभिर्लग्नगै-
स्तेषामन्यतमे हि षोडशमिताः श्रीराजयोगाः स्मृताः ।
तन्मध्ये निजतुंगगे ग्रहयुगे यद्वैकखेटे विधौ
स्वर्क्षे तुंगसमाश्रितैकखचरे लग्ने परे षोडशः ॥ ५ ॥

अब षोडश राजयोग कहते हैं–सूर्य शनैश्चर, बृहस्पति, मंगल ये उच्चराशिमें बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं अथवा पूर्वोक्त ग्रहोंमें एक उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठे हों तो बारह राजयोग होते हैं इस प्रकार सोलह हुए ॥

राजयोग १६

उन्हीं पूर्वोक्त ग्रहोंमेंसे दो ग्रह अपनी उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठे हों और चन्द्रमा कर्कराशिका हो तो बारह राजयोग होते हैं और उन्हीं चार ग्रहोंमेंसे एक ग्रह भी अपनी उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठा हो और चन्द्रमा कर्क राशिमें बैठा हो तो चार राजयोग होते हैं और पूर्वोक्त बारह राजयोग मिलकर सोलह हुए ॥ ९ ॥

राजयोगः १७
राजयोगः १८
राजयोगः २०
राजयोगः २१
राजयोगः २४

राजयोगः २९ राजयोगः ३० राजयोगः ३१

राजयोगः ३२

वर्गोत्तमेऽमृतकरे यदि वा शरीरे संवीक्षिते च चतुरादिभिरिंदुहीनैः । द्वाविंशतिप्रमितया खलु संभवंति योगाः समुद्रवलयक्षितिपालकानाम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांशगत लग्नमें बैठा हो अथवा वाली चन्द्रमा लग्नमें चार ग्रहोंको आदि लेकर पांच छः ग्रह लग्नको देखते हों तो बाइस राजयोग होते हैं इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य समुद्र पर्यन्त धरतीका पालनेवाला होता है ॥ ६ ॥

राजयोगः १ राजयोगः २ राजयोगः ३

राजयोगः ४ राजयोगः ५ राजयोगः ६

कृत्तिका रेवती स्वाती पुष्यस्थायी भृगोः सुतः।
करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ॥ ६६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृत्तिका, रेवती, स्वाती और पुष्य इन नक्षत्रोंमें शुक्र बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है, जो अश्विनी नक्षत्रमें शुक्र हो तो भी पूर्वोक्त फल जानना चाहिये ॥ ६६ ॥

अथ राज्यप्राप्तिकालमाह।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम्।
तयोरलाभे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले ॥६७॥

अब राज्यप्राप्तिके कालको कहते हैं, राज्यका जो ग्रह दशममें बैठा हो उस करके राज्यका लाभ कहना अथवा लग्नमें जो ग्रह बैठा हो उसकी दशामें राज्यका लाभ कहना चाहिये। इन दोनों भावोंके जब कोई ग्रह नहीं बैठा हो तब सब ग्रहोंमें जो अधिक बलवान् हो उस ग्रहकी दशामें श्रेष्ठ राजयोग कहना चाहिये ॥ ६७ ॥

इति राजयोगाध्यायः।

अथ राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः।

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य।
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवंति वा पाणितलेऽमलानि ॥ १ ॥
अनामिकामूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा।
मध्याङ्गुलेर्या मणिबंधमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा॥२॥
विराजमानं यवलाञ्छनं चेदङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य।
भवेद्यशस्वी निजवंशभूपा भूपाविशेषैः सहितो विनीतः ॥ ३ ॥
चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा।
वीणा च पादौ चरणे नराणां तैः स्युर्नराणामधिपा वरेण्याः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें सूर्य बैठा हो और कर्कराशिमें चंद्र बैठा हो और बृहस्पति करके दोनों दृष्ट हों तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ ६१ ॥

राजयोगः ।

बुधः कर्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्धरे ।
रविभूसुतदृष्टौ तौ पार्थिवं कुरुते सदा ६२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध कर्कराशिमें बैठा हो और बृहस्पति धनराशिमें बैठे और दोनों सूर्य, मङ्गल करके दृष्ट हों तो वह राजा होता है ॥ ६२ ॥

राजयोगः ।

शफरीयुगले चन्द्रः कर्कटे च बृहस्पतिः ।
शुक्रः कुंभे भवेद्राजा गजवाजिसमृद्धिभाक् ६३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीन वा मेषराशिमें चंद्रमा बैठा हो और कर्कराशिमें बृहस्पति हो और शुक्र कुंभराशिमें बैठा हो तो वह राजा हाथी घोड़ों करके समृद्धिका भोगी होता है ॥ ६३ ॥

राजयोगः ।

सितदृष्टः शनिः कुम्भे पद्मिनीनायकोदये ।
चंद्रे जलचरे राशौ यदि राजा तदा भवेत् ६४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र करके दृष्ट शनैश्वर कुंभराशिमें बैठा हो और सूर्य लग्नमें बैठा हो और चंद्रमा कर्कराशिमें बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ ६४ ॥

राजयोगः ।

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि
तदुच्चनाथः केन्द्रस्थितौ तौ भवतः प्रसूतौ
प्रकीर्तितौ भूपतिसम्भवाय ॥ ६५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो कोई ग्रह नीच राशिमें बैठा हो उस राशिका स्वामी जो ग्रह है उसके उच्चराशिका स्वामी केन्द्रमें बैठा हो तो राजाके कुलमें उत्पन्न मनुष्य राजा होता है ॥ ६५ ॥

कृत्तिका रेवती स्वाती पुष्यस्थायी भृगोः सुतः।
करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः॥ ६६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृत्तिका, रेवती, स्वाती और पुष्य इन नक्षत्रोंमें शुक्र बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है, जो अश्विनी नक्षत्रमें शुक्र हो तो भी पूर्वोक्त फल जानना चाहिये॥ ६६॥

अथ राज्यप्राप्तिकालमाह।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम्।
तयोरलाभे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले॥६७॥

अब राज्यप्राप्तिके कालको कहते हैं, राज्यका जो ग्रह दशममें बैठा हो उस करके राज्यका लाभ कहना अथवा लग्नमें जो ग्रह बैठा हो उसकी दशामें राज्यका लाभ कहना चाहिये। इन दोनों भावोंके जब कोई ग्रह नहीं बैठा हो तब सब ग्रहोंमें जो अधिक बलवान् हो उस ग्रहकी दशामें श्रेष्ठ राजयोग कहना चाहिये॥ ६७॥

इति राजयोगाध्यायः।

अथ राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः।

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य।
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवंति वा पाणितलेऽमलानि॥ १॥
अनामिकामूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा।
मध्याङ्गुलेर्या मणिबंधमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा॥२॥
विराजमानं यवलाञ्छनं चेदङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य।
भवेद्यशस्वी निजवंशभूपा भूपाविशेषैः सहितो विनीतः॥ ३॥
चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा।
वीणा च पादौ चरणे नराणां तैः स्युर्नराणामधिपा वरेण्याः॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें सूर्य बैठा हो और कर्कराशिमें चं० बैठा हो और बृहस्पति करके दोनों दृष्ट हों तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ ६१ ॥

बुधः कर्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्धरे।
रविभूसुतदृष्टौ तौ पार्थिवं कुरुते सदा ६२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध कर्कराशिमें बैठा हो और बृहस्पति धनराशिमें बैठे और दोनों सूर्य, मङ्गल करके दृष्ट हों तो वह राजा होता है ॥ ६२ ॥

राजयोगः ।

शफरीयुगले चन्द्रः कर्कटे च बृहस्पतिः।
शुक्रः कुंभे भवेद्राजा गजवाजिसमृद्धिभाक् ६३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीन वा मेषराशिमें चंद्रमा बैठा हो और कर्कराशिमें बृहस्पति हो और शुक्र कुंभराशिमें बैठा हो तो वह राजा हाथी घोड़ों की समृद्धिका भोगी होता है ॥ ६३ ॥

राजयोग।

सितदृष्टः शनिः कुम्भे पद्मिनीनायकोदये।
चंद्रे जलचरे राशौ यदि राजा तदा भवेत् ६४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र करके दृष्ट शनैश्चर कुंभराशिमें बैठा हो और सूर्य लग्नमें बैठा हो और चंद्रमा कर्कराशिमें बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है ॥६४॥

राजयोग।

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि
तदुच्चनाथः केन्द्रस्थितौ तौ भवतः प्रसूतौ
प्रकीर्तितौ भूपतिसम्भवाय ॥ ६५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो केंद्रवर्ती ग्रह नीच राशिमें बैठा हो उस राशिका स्वामी जो ग्रह है उसके उच्चराशिका स्वामी केन्द्रमें बैठा हो तो राजाके कुलमें उत्पन्न मनुष्य राजा होता है ॥ ६५ ॥

कृत्तिका रेवती स्वाती पुष्यस्थायी भृगोः सुतः ।
करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ॥ ६६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृत्तिका, रेवती, स्वाती और पुष्य इन नक्षत्रोंमें शुक्र हो तो वह मनुष्य राजा होता है, जो अश्विनी नक्षत्रमें शुक्र हो तो भी पूर्वोक्त जानना चाहिये ॥ ६६ ॥

अथ राज्यप्राप्तिकालमाह ।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम् ।
तयोरलाभे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले ॥६७॥

अब राज्यप्राप्तिके कालको कहते हैं, राज्यका जो ग्रह दशममें बैठा हो उसके राज्यका लाभ कहना अथवा लग्नमें जो ग्रह बैठा हो उसकी दशामें राज्यका लाभ कहना चाहिये । इन दोनों भावोंके जब कोई ग्रह नहीं बैठा हो तब सब ग्रहोंमें जो अधिक बलवान् हो उस ग्रहकी दशामें श्रेष्ठ राजयोग कहना चाहिये ॥ ६७ ॥

इति राजयोगाध्यायः ।

अथ राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः ।

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य ।
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवंति वा पाणितलेऽमलानि ॥ १ ॥
अनामिकामूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा ।
मध्याङ्गुल्यां मणिबंधमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा॥२॥
विराजमानं यवलाञ्छनं चेदङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य ।
भवेद्यशस्वी निजवंशभूपा भूपाविशेषैः सहितो विनीतः ॥ ३ ॥
चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा ।
वीणा च पादौ चरणे नराणां तैः स्युर्नराणामधिपा वरेण्याः ॥४॥

अब राजयोगोंके प्रसंगसे सामुद्रिकाध्याय कहते हैं-जिस मनुष्यके बलवान् राजयोग हो उसके हाथ और पैरोंमें निर्मल राजचिह्न होते हैं ॥ १ ॥ अनामिका अंगुलीकी जडसे चली जो रेखा उसको ऊर्ध्व रेखा कहते हैं और मध्यम अंगुलीसे चलकर हाथके मणिबन्धतक जो रेखा उसको ऊर्ध्व रेखा कहते हैं, वह राज्यकी प्राप्ति कराती है ॥ जिसके अँगूठेके बीचमें यवका चिह्न मौजूद हो वह मनुष्य यशस्वी, अनेक भूषण, बहुत आभूषणों सहित और नम्रतायुक्त होता है ॥ ३ ॥ और हाथकी हथेलीमें और पैरोंमें हाथीके सदृश वा छत्रके तुल्य मछलीके वा तलैयाके तुल्य या अंकुशके समान वा वीणाके समान रेखा हो वह राजा होता है ॥ ४ ॥

आदर्शमालाकरवालशैलहलाश्च तत्पाणितले मिलंति।
स्यान्मांडलीकोऽवनिपालको वा कुले नृपालः कुलतारतम्यात्॥
चेद्यस्य पाणौ चरणे च चक्रे धनुर्ध्वजाब्जव्यजनासनानि।
रथाश्वदोलाकमलाविलासास्तस्यालये स्युर्गजवाजिशालाः॥
स्तंभस्तु कुंभस्तु तरुस्तुरंगो गदा मृदंगोऽङ्घ्रिकरप्रदेशे।
दण्डोऽथवाखंडितराज्यलक्ष्म्या स्यान्मण्डितः पण्डितशौण्डराट्॥
सुवृत्तमौलिस्तु विशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः।
आजानुबाहुं पुरुषं तमाहुर्भूमण्डलाखण्डलमार्यवर्याः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके हाथ और पैरोंमें सीसेकी तरह, माला और तलवार, पर्वत और हलके सदृश रेखाएं आकार हो वह मनुष्य एकदेशका अथवा बड़ा राजा अपने कुलके समान होता है ॥ ५ ॥ और जिसके हाथ चक्र, धनुष, ध्वजा, कमल, पंखा और आसनके समान रेखा हों उसके रथ, घोड़े, पालकी, लक्ष्मीका विलास, हाथी घोडोंकी शाला होती है ॥ और जिसके हाथ पैरोंमें खम्भेके समान वृक्ष, घोडा, गदा, मृदंग, दण्डके रेखा हो वह मनुष्य अखण्डित राज्यलक्ष्मीको प्राप्त, पंडितोंका शिरोमणि है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यका शिर गोल, चौड़ा माथा और कानोंके तलक लम्बे नेत्र कमलके तुल्य, घोंटूपर्यंत बाहें हों वह पुरुष पृथिवीमण्डलका समान राजा होता है ॥ ८ ॥

नरस्य नासा सरला न यस्य वक्षस्थलं चापि शिलातलाभम्।
नाभिर्गभीरातिमृदू भवेतामारक्तवर्णौ चरणौ स भूपः ॥ ९ ॥

मतले यदि यस्य तिलो भवेदविरलः किल तस्य धनागमः।
दतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहनचिह्नसमन्वितः ॥ १० ॥
सन्नमूर्तिः समुदारचेता वंशाभिमानः शुभवाग्विलासः।
मनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः ॥ ११ ॥
तत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदन्ति।
कल्पयेदन्यकुलोद्भवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात् ॥ १२ ॥
चिह्नानि यानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि सम्पूर्णफलप्रदानि।
वामे तरंगे च करे नराणां वान्यानि वामे खलु कामिनीनाम् ॥ १३ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
संगतिसामुद्रिकाध्यायः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यकी नाक सीधी और छाती शिलाके समान और नाभि गहरी और कमल वर्णके पैर हों वह राजा होता है ॥ ९ ॥ जिस मनुष्यके हाथकी हथेलीमें तिलका चिह्न हो उसको बहुत धन प्राप्त होता है। जिसके पैरोंके तलुवेमें तिलका चिह्न हो और वाहन-चिह्न हो वह राजा होता है ॥ १० ॥ जो मनुष्य प्रसन्नमूर्ति और उदारचित्तवाला हो और श्रेष्ठ वंशमें पैदा हो, श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, अन्यायसे डरनेवाला, गुरु और साधुओंसे नम्र हो वह राजा होता है ॥ ११ ॥ और राजवंशके बिना अन्य कुलमें पैदा हो तो वह अपने वंशके समान राजलक्ष्मीको प्राप्त करता है ॥ १२ ॥ जो जो चिह्न कहे हैं वे चिह्न प्रकट दीख पड़ते हों तो पूरा फल देते हैं, पुरुषोंके दाहिने हाथ, पैर और स्त्रियोंके बांयें हाथ पैरमें पूर्वोक्त चिह्न श्रेष्ठ फल देते हैं ॥ १३ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराज-
ज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां
राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः ॥ ५ ॥

अथ राजभङ्गयोगाध्यायप्रारम्भः।

राजभंगयोगः

राजभंगयोगः

शत्रुक्षेत्रगतैः सर्वैर्वर्गोत्तमयुतैरपि। राजयोगा विनश्यंति बहुभिर्नीचगैर्ग्रहैः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शत्रुकी राशिमें सब ग्रह बैठे हों और चाहे नवांशमें वर्गोत्तम हों तो राजयोग नष्ट होते हैं (एको योगः) अथवा बहुत ग्रह नीचराशिमें बैठे हों तो भी राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥

राजभङ्गयोगः

चन्द्रं वा यदि वा लग्नं ग्रहो नैकोऽपि वीक्षते तथापि राजयोगानां भंगमाह पराशरः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमाको वा लग्नको कोई एक भी ग्रह नहीं देखता हो तो सब राजयोग नष्ट हो जाते हैं, यह पराशर कहते हैं ॥ २ ॥

राजभंगयोग

स्वांशे रवौ शीतकरे विनष्टे दृष्टे च पापैः शुभदृष्टिहीने। कृत्वापि राज्यं च्यवते मनुष्यः पश्चात्सुदुःखं लभते हताशः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य अपने नवांशमें बैठा और क्षीण चन्द्रमाको पापग्रह देखते हों और शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य पहिले राज्य करे पीछेसे दुःखको प्राप्त आशाहीन हो जाता है ॥ ३ ॥

उल्कान्यपातदिने तथैव निर्घातिके केतुसमुद्भवे वा। चंद्रार्कयोगेऽपि च यस्य सूतिर्नरो दरिद्रोऽतिनरा भवेन्मः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उल्कापात हो अथवा व्यतीपातयोग हो, अथवा धरती कम्पायमान हो वा फट जावे या जन्मके समयमें केतु तारेका उदय हो तो वह समग्र राजयोगोंमें पैदा हुआ मनुष्य दरिद्री होता है ॥ ४ ॥

राजयोगः।

तुलायां नलिनीनाथः परमं नीचमाश्रितः। निर्दिष्टराजयोगानां दलनोऽथ भवेद्ध्रुवम्॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत सूर्य परम नीच राशिमें बैठा हो तो पहिले कहे हुए सब राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ५ ॥

राजभंगयोगः।

मृगलग्ने सुराचार्यः परमं नीचमाश्रितः। राजयोगोद्भवस्यापि कुरुतेऽतिदरिद्रताम्॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरलग्नमें बृहस्पति परम नीचराशिगत बैठा हो तो राजयोगोंमें पैदा हुआ मनुष्य अत्यन्त दरिद्री होता है ॥ ६ ॥

राजभंगयोगः। राजभंगयोगः।

वाचस्पतावस्तगते ग्रहेंद्रास्त्रयोऽपि नीचेषु घटोविलग्ने। एकोऽपि नीचे दशमेऽपि पापा भूपालयोगा विलयं प्रयांति ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति अस्तका हो और तीन ग्रह नीच राशिमें बैठे हों और जन्मलग्न कुम्भ हो तो सम्पूर्ण राजयोग नष्ट हो जाते हैं (एको योगः)। अथवा एक भी ग्रह लग्नमें नीचराशिका बैठा हो और दशममें पापग्रह बैठे हों तो उस मनुष्यका राजयोग नष्ट हो जाता है ॥ ७ ॥

राजभंगयोगः।

प्रसूतौ दानवामात्यः परमं नीचमाश्रितः।
करोति पतनं नूनं मानवानां महापदात् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र परम नीचराशिगत बैठा हो तो वह मनुष्य राजयोगसे नष्ट होता है ॥ ८ ॥

राजभंगयोगः।

यदि तनुभवनस्थो राहुरिंदुप्रदृष्टः सहजरिपुभवस्था भानुमंदावनेयाः। शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यैर्भवति नृपतियोगो व्यर्थ एवेति चिंत्यम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु लग्नवर्ती बैठा हो और चंद्रमा देखता हो और तीसरे, छठे, ग्यारहें, सूर्य, शनैश्वर, मंगल बैठे हों और शुभग्रह केन्द्रसे बाहिर हों वा शुभग्रह सप्तममें बैठे हों तो उस मनुष्यके राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ९ ॥

राजयोगः।

केन्द्रेषु शून्येषु शुभैर्नभोगैरस्तं गतैर्नीचगृहस्थितैर्वा। चतुर्गृहेर्वाप्यरिमंदिरस्थैर्नृपालयोगाः प्रलयं प्रयाति ॥ १० ॥

राजयोगः।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चारों केन्द्रोंमें कोई शुभग्रह नहीं बैठा हो (प्रथमो योगः)। अथवा केन्द्रोंमें जो ग्रह बैठे हों वे अस्तगत हों (द्वितीयो योगः) अथवा नीच राशिगत हो (तृतीयो योगः) वा चारों केन्द्रोंमें शत्रुराशिगत ग्रह बैठे हों तो राजयोग नष्ट हो जाता है ॥ १० ॥

सर्वेऽपि पापा यदि कण्टकेषु नीचारिगा नो शुभदृष्टियुक्ताः।
नीचारिरिःफेषु च सौम्यसंज्ञा राज्ञां हि योगो विलयं प्रयाति॥११॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
राजभंगयोगाध्यायः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सम्पूर्ण पापग्रह जो केन्द्र १।४।७।१० में बैठे हों और नीचराशि वा शत्रुक्षेत्री हों, किसी शुभग्रह करके दृष्ट न हों अथवा नीच शत्रुराशिगत बारहें बैठे हों तो राजयोग नाशको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्योतिषिक-पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां राजभंगयोगाध्यायः ॥ ६ ॥

अथ पञ्चमहापुरुषाध्यायप्रारम्भः।

ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पंच पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिताः।
वच्मि तान्सुसरलान्महोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥१॥
स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वावनिसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥ २ ॥

अब पंच महापुरुष योगाध्याय कहते हैं-जो महापुरुषसंज्ञक राजा पांच पहिले मुनीश्वरोंने वर्णन किये हैं उन पांच महापुरुषोंको राजयोगविधि दर्शनकी इच्छासे सरल बडी उक्ति करके कहता हूं ॥ १ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने घरमें अपने उच्चमें भौमादि पांच ग्रह बैठे हों तो क्रम करके मंगलसे रुचक, बुधसे भद्र, बृहस्पतिसे हंस, शुक्रसे मालव्य और शनैश्चर करके शशकनाम योग होते हैं ॥ २ ॥

रुचकयोगः ४

भद्रयोगः ५

हंसयोगः ६

मालव्ययोगः

शशकयोगः

अथ रुचकयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्वच्छकांतिर्बहुरुधिरबलः [illegible]सिद्धि
श्चारुभ्रूनीलकेशः [illegible]
चरणो मंत्रविच्चारुकीर्तिः
रक्तश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः क्रू॰
राणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः ॥३॥ खट्वांगपाशवृषका॰
कचक्रवीणावज्राङ्कहस्तचरणः सरलांगुलः स्यात् । [illegible]
शलस्तुलयेत्सहस्रं मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥४॥
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोऽसौ
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालये सन्निधनं प्रयाति ॥५॥

अथ रुचकयोगजनित राजाके लक्षण कहते हैं-बडी उमरवाला, निर्मलकां॰ वाला, बहुत रुधिरके बलवाला, साहसकरके कार्यकी सिद्धिको प्राप्त, सुन्दर भौं॰ वाला, नील वर्णके बालोंवाला, हाथ पैर समान, एकसे मंत्रका जाननेवाला, सुन्दर यशवाला, लाली लिये श्यामवर्णवाला, अत्यन्त शूरवीर, शत्रुओंके बलका नाश करनेवाला, शंखके समान कंठवाला, बड़ा पराक्रमी, क्रूरस्वभाव, देवताओंका भक्त ब्राह्मण और गुरुओंसे नम्र, दुर्बल जानु, ऊरु और जांघोंवाला होता है ॥३॥ खट्वांग और फांसी और बैल और धनुप, चक्र, वीणा और वज्र इन चिह्नों॰ रके अंकित हाथ पैर जिसके, सीधी अंगुलियोंवाला, मंत्रोंके अभिचारमें कुशल तुलाके मान करके एक हजार पल तोल जिसके देहका भार होता है, लम्बा मुख होता है ॥ ४ ॥ सह्य और विन्ध्याचल और उज्जयिनीका राजा होता है और पचहत्तर वर्षकी आयु पाता है और शस्त्र तथा आग्नि चिह्न करके सहित देवस्थानमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भद्रयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षस्थलो
लम्बापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः ।
कामीकोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः
प्राज्ञः पंकजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाऽधिको योगवित् ॥६॥

शङ्खासिकुञ्जरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलांगलविचिह्नितपाणिपादः ।
यात्रागजेंद्रमदवारिकृताद्रभूमिः सत्कुंकुमप्रतिमगंधतनुः सुघोषः ॥७॥

सद्रूपगोऽतिमतिमान्खलु शास्त्रवेत्ता
मानोपभोगसहितोऽतिनिगूढगुह्यः ।
सत्कुक्षिधर्मनिरतो सुललाटपट्टो
धीरो भवेदसितकुंचितकेशपाशः ॥ ८ ॥

स्वतंत्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी ।
युज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥ ९ ॥

भालं तुलायां तु भवेत्सुरत्ने श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः ।
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्योजीवेन्नृपालःशरदामशीतिम्॥ १० ॥

अब भद्रसंज्ञक राजाके सुलक्षण कहते हैं- सिंहके समान हाथीकीसी चाल चलनेवाला, मोटी जांघोंवाला, पुष्ट छातीवाला, लम्बी पुष्ट बांहोंवाला और भुजाओंके प्रमाण ऊँचा, कामी और कोमल महीन रोमोंके समूहसे ढका हुआ गंडस्थल जिसका, चतुर, कमलपत्रके समान हाथ और पैरोंवाला, अधिक बलवान्, योगशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ६ ॥ शंख और तलवार और हाथी, गदा, कमलपुष्प और बाण, पताका और चक्र, चंद्रमा, हल इत्यादि चिह्नोंसे अंकित हाथ पैर जिसके और उस राजाकी यात्राके समय हाथियोंके मदके जलसे धरती गीली होती है और केसरके समान सुगंधित देहवाला, श्रेष्ठ आवाजवाला होता है ॥ ७ ॥ श्रेष्ठ रूपवाला, बुद्धिमान्, निश्चयकरके शास्त्रका जाननेवाला, मान और भोगों सहित, छिपा हुआ गुह्यस्थल जिसका, श्रेष्ठ कुक्षिवाला, धर्ममें तत्पर, श्रेष्ठ माथेवाला, धैर्यवान, काले बालोंवाला होता है ॥ ८ ॥ और भद्रराजा सब कामोंमें स्वतंत्र, अपने मित्रोंपर दया करनेवाला और उस राजाके वैभवको नित्य ही अतिथिलोग भोगते हैं ॥ ९ ॥ और भद्रनाम राजाकी देहका भार तुलामान १००० पल होता है और वह राजा कान्यकुब्ज देशका स्वामी, पुत्र और स्त्रीके सौख्यसहित अस्सी वर्षकी आयु पाता है ॥ १० ॥

अथ हंसमहापुरुषलक्षणम् ।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसः प्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः ।

शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगलैः खट्वांगमाला घटै
चञ्चत्पादकरस्थले मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥ ११
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम्।
उच्चोऽङ्गुलैर्वं षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिःसमानाम् ॥ १२॥
वाहीकदेशांतरशूरसेनगांधर्वगंगायमुनांतरालान्।
भुक्त्वा वनांते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तोमुनिभिः पुराणैः॥ १३॥

अब हंसनामक राजाके लक्षण कहते हैं-हंसनामक राजाका लाल मुख ऊँची नाक, सुन्दर पैर, प्रसन्न इंद्रियोंवाला, गोरे और पुष्ट गालोंवाला, लाल अंगुलियोंवाला हंसके समान शब्दवाला, कफप्रकृतिवाला और शंख, कमल, अंकुश, मछली और खट्वांग, माला, कुम्भ इन चिह्नों करके अंकित हाथ पैर जिसके, शहदके समान आभावाले नेत्र, गोल शिरवाला होता है ॥ ११ ॥ और जलकी जगहमें प्रीति करनेवाला, अत्यंत कामी, स्त्रियोंमें तृप्तिको प्राप्त नहीं और छियासी अंगुल ऊँचा शरीर और छयानवे वर्षकी आयु पाता है ॥ १२॥ और हंसराजा वाहीक, शूरसेन देश, गांधार देश, गंगायमुनाके बीचकी भूमिका राजा होता है और वनके बीचमें मृत्युको प्राप्त होता है ऐसा पहिले मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १३ ॥

अथ मालव्यनृपतिलक्षणमाह-

अस्थूलोष्ठोऽथ विषमवपुर्नैव रिक्तांगसंधि-
र्मध्ये क्षामः शशधररुचिर्हस्तिनासः सुगंडः।
सद्दीप्ताक्षिः समशितरदो जानुदेशाप्तपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ १४॥
वक्त्रं त्रयोदशमितांगुलमस्यदीर्घं तिर्यग्दशांगुलमितंश्रवणांतरालम्।
मालव्यसंज्ञनृपतिःसभुनक्तिनूनंलाटांश्चमालवकसिंधुसुपारियात्रान्॥

अब मालव्यनृपतिके लक्षण कहते हैं-मालव्यनामकराजा पतले होठोंवाला, और बढती देहवाला नहीं, जिसके अंगकी संधि खाली नहीं, कमर जिसकी पतली, चन्द्रमाके समान स्वरूपवाला, लंबी नाक, सुन्दर कपोलोंवाला होता है और मालव्यराज बराबर सफेद दांतोंवाला, आजानुबाहु, बडे नेत्र, सत्तर ७० वर्षकी आयुतक राज्य भोगता है ॥ १४ ॥ तेरह अंगुल मुख जिसका लम्बा, दश अंगुल चौडा, मालव्यनाम राजा लाटदेश, मालवदेश, सिन्धुदेश, पारिजातक देशोंके राज्यको भोगता है ॥ १५ ॥

लघुद्विजास्यो द्रुतगः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः ।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः ॥ १६ ॥

नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि-
ज्ज्ञातो वादे भवति कुशलश्चंचलः कोलनेत्रः ।
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजंघो
मध्ये क्षामः सुललितयती रंध्रवेदी परेषाम् ॥१७॥

पर्यंकशंखशरशास्त्रमृदंगमाला-
वीणोपमा खलु करे चरणे च रेखाः ।
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
सम्यक्शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ १८ ॥

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवंति ।
कुर्वंति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छंति ते केवलसत्फलानि ॥ १९ ॥

इति श्री दै० दुण्ढिराजवि० जात० पञ्चमहापुरुषलक्षणाध्यायः ॥ ७ ॥

अब शशकनाम नृपतिके लक्षण कहते हैं:—शशकनामक राजा छोटे दांतोंवाला, जल्दी चलनेवाला, कोपसहित, शठ, अत्यन्त शूरवीर, वन पर्वतोंमें प्रचार करनेवाला और नदीमें आसक्त, अतिथियोंका प्यारा, बहुत छोटा नहीं ऐसा प्रसिद्ध होता है ॥ १६ ॥ अनेक फौजोंके दल करके सहित, ऊँचे दांतोंवाला, किंचित् धातुके विवादमें चतुर, बडा चंचल, कुररपक्षीके नेत्रवाला, स्त्रीमें मस्त, पराये धनका हरनेवाला, माताका भक्त, श्रेष्ठ जांघोंवाला, कमरसे दुर्बल, सुन्दरबुद्धि, पराये छिद्र देखनेवाला होता है ॥ १७ ॥ शय्या और शंख, बाण, तरवार और मृदंग, माला और वीणाके समान निशान करके जिसके हाथ पैरोंमें रेखा होती हैं और शशकनाम राजा सत्तर ७० वर्षों तक राज्यभोग करता है यह मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १८ ॥ और पूर्वोक्त केन्द्र १।४।७।१० में भौमादि पांचों ग्रह उच्चमें बैठे हों और चन्द्रमा वा सूर्यके करके युक्त हों तो पूर्वोक्त राजयोग नहीं करते हैं, केवल श्रेष्ठ फल देते हैं ॥ १९ ॥

इति श्रीवंशवरेलीस्थराजज्योतिर्विद्पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषा-
टीकायां पञ्चमहापुरुषलक्षणवर्णनं नाम ॥ ७ ॥

अथ कारकयोगाध्यायप्रारम्भः।
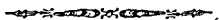
मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केन्द्रगता मिथः स्युः।
ते कारकाख्या मुनिभिः प्रणीता विज्ञेय आज्ञाभवने विशेषः ॥१॥

जो ग्रह अपने मूलत्रिकोणी राशिमें अथवा अपनी ही राशिमें या अपने उ
राशिमें केन्द्र १।४।७।१० में प्राप्त हों तो वे ग्रह आपसमें कारक कहाते
परन्तु केन्द्रमें भी दशम स्थान स्थित ग्रह विशेष कारक होते हैं ॥ १ ॥

प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवर्ती स्वमंदिरस्थो यदि तुंगयातः।
सूर्यार्किजारामरराजपूज्या परस्परं कारकसंज्ञकाः स्युः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य लग्नमें सिंह वा मेषराशिका बैठा हो तो सू
शनैश्चर, बृहस्पति ये परस्पर कारक संज्ञक होते हैं ॥ २ ॥

शुभग्रहे लग्नगते च खाम्बुस्थितो ग्रहः कारकसंज्ञकः स्यात्।
तुंगत्रिकोणे स्वगृहांशयातास्तेऽपीहमाने तपने विशेषात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह लग्नमें बैठे हों अथवा दशम चतुर्थ बैठे
व ग्रह कारक होते हैं और उच्च वा मूलत्रिकोणी वा अपनी राशि वा अपने नवां
शोंमें बैठे होकर दशममें हों तो विशेष कारक होते हैं ॥ ३ ॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो न भोगो लग्नं विलग्नं च लवे स्वकीये।
केन्द्राणि सर्वाणि शुभान्वितानि तस्यालये श्रीः कुरुते निवासम्॥४

केन्द्रस्थिता गुरुविलग्नपजन्मनाथा
मध्यं वयस्यतितरां वितरंति भाग्यम्।
शीर्षोदयाद्युभयमेषु गता भवेयु-
रारंभमध्यमविरामफलप्रदास्ते ॥ ५ ॥

मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यसे दूसरे घरमें शुभग्रह बैठे हों और जन्मल
नवांशमें हो और चारों केन्द्रोंमें भी शुभग्रह बैठे हों उसके मकानमें लक्ष्मी
वास करती है ॥ ४ ॥ जिस मनुष्यके बृहस्पति और लग्नका स्वामी जन्मराशिका
स्वामी केन्द्रमें बैठे हों तो उस मनुष्यका भाग्य जवानीमें उद

अथ गुरुदानमाह–

शर्करा च रजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम्।
पुष्परागलवणं च कांचनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम्॥ ६

अब बृहस्पतिका दान कहते हैं–खांड, हलदी, घोडा, चनेकी दाल, पीला कपडा पुष्पराजमणि, नोन और सोना ये सब चीजें बृहस्पतिकी प्रसन्नताके वास्ते दान करनी चाहिये॥ ६॥

अथ भृगुदानमाह–

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुरंगो धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम्।
सुतंडुलाज्योत्तमगंधयुक्तं वदंति दानं भृगुनन्दनाय॥ ७

अब शुक्रका दान कहते हैं–चित्र–कबरा कपडा, सफेद घोडा, गाय, हीरा और चांदी, सोना, चावल, घी और सुगंधयुक्त पुष्प ये सब चीजें शुक्रके निमित्त दान करना चाहिये॥ ७॥

अथ शनिदानमाह–

माषाश्च तैलं विमलेंदुनीलस्तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम्
सदक्षिणं चेति वदंति नूनं दुष्टाय दानं रविनन्दनाय॥ ८।

अब शनैश्वरका दान कहते हैं–उडद, तेल और नीलमणि, तिल, कुलथी, भैंस लोहा और दक्षिणा विरुद्ध शनैश्वरके वास्ते दान करना चाहिये॥ ८॥

अथ राहुदानमाह–

गोमेदरत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलानि च कंबलानि।
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति॥ ९॥

अब राहुका दान कहते हैं–गोमेदरत्न, काला घोड़ा, नीला कपडा कंबल, तिल, तेल और लोहा ये सब चीजें राहुके निमित्त दान करनी चाहिये॥ ९॥

अथ केतुदानमाह–

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोरुदीरितं दानमिदं मुनीन्द्रैः॥ १०॥

इति श्रीदैवज्ञपण्डितढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे दानाध्यायः॥ २२॥

केतुका दान कहते हैं–वैडूर्यमणि, तिल, तेल, कंबल, कस्तूरी और तलवार चीजें केतुग्रहकी तुष्टिके वास्ते मुनीश्वरोंने दानकी कही हैं॥ १०॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां दानाध्यायः॥ २२॥

अथ नष्टजातकाध्यायप्रारम्भः ।
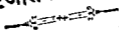
आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ।
प्रसूतिकालं प्रवदंति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥ १ ॥
तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जन्तोर्जननोपकालात् ।
तस्मिन्प्रनष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् ॥२॥

अब नष्ट जातकाध्याय कहते हैं:-जिन मनुष्योंका गर्भाधानकाल और जन्मकाल घर नहीं मालूम हो उन मनुष्योंका प्रसूतिकाल नष्टजातक करके कहते हैं ॥ १ ॥ जिस जातक करके जन्मकालमें मनुष्योंको अच्छे और बुरे फलकी प्राप्ति होती है उसको जातकशास्त्र कहते हैं। उस जन्मकालके नष्ट हो जानेसे फिर जिससे जन्मकालका ज्ञान हो उसको नष्टजातक कहते हैं ॥ २ ॥

अथ राशिगुणकविधिमाह-

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्ता मुनिभिः ७ खचंद्रैः १० । गजैश्च ८ वेदै ४ र्दशभि १० श्च बाणैः ५ शैलै ७ र्भुजंगैः ८ खचरैः ९ शरैश्च ५ ॥ ३ ॥ शिवैः ११ पतंगे १२ र्निहताः पुनस्ता विलग्नगाश्चेद्भृगुभौमजीवाः । तदा तुरंगैः ७ करिभिः ८ खचंद्रै १० र्गुण्याः शरैरन्यखगा यदि स्युः ॥ ४ ॥

पहले प्रश्नसमयकी तात्कालिक लग्नको स्पष्ट करके उसकी कलाओंका पिंड बनाना चाहिये और जो प्रश्नलग्न मेष हो तो उस कलात्मकपिंडको सातसे गुणना चाहिये। वृषको १० दशगुणा करे, मिथुनको ८ से, कर्कको ४ से, सिंहको १० से, कन्याको ५ से, तुलाको ७ से, वृश्चिकको ८ से, धनको ९ से, मकरको ५ से ॥ ३ ॥ कुम्भको ११ से और मीनलग्नको १२ से गुणना चाहिये ॥

अथ ग्रहगुणकविधिमाह-

जो लग्नमें-प्रश्नलग्नमें सूर्य बैठा हो तो उस गुणे हुए कलात्मकपिंडको फिर पांचसे गुणना चाहिये और जो चन्द्रमा हो तो भी ५ से गुणे, और जो मंगल बैठा हो तो उसको ८ से गुणना चाहिये, जो बुध बैठा हो तो भी ५

एक बाकी बचे तो ऋतुका पहिला महीना और शून्य शेष बचे तो ऋतुका द्वितीय मास कहना (यहां ऋतुके मासकी गणना माघसे जानना) ॥ १० ॥

अथ पक्षज्ञानमाह–

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रंतुल्येऽस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ॥ ११ ॥

पहिले कर्मविधान की हुई राशिको आठसे गुणकर पहिलेकी तरह नौ घटाकर वा मिलाकर दोका भाग देकर जो एक बाकी बचे तो मासका पहला पक्ष और शून्य बचे तो मासका द्वितीयपक्ष जानना चाहिये ॥ ११ ॥

अथ तिथिज्ञानमाह–

पंचेन्दुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवंति ।
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र ॥ १२ ॥

जो कर्मविधान की हुई राशिमें १५ पंद्रहका भाग दे, जो बाकी बचे सो पक्षकी तिथि जानना चाहिये और नक्षत्रतिथिके योगसे ग्रहलाघवादिक ग्रंथोंसे वार लाना चाहिये वा इस संवतका पत्रा देखकर वार जाने ॥ १२ ॥

अथ दिवारात्रिजन्मज्ञानम् ।

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् ॥ १३ ॥

और इस कर्मविधान की हुई राशिको सातसे गुणकर नौ घटाकर वा मिलाकर दोका भाग दे, एक बाकी बचे तो दिनका जन्म कहना और शून्य बाकी रहे तो रात्रिका जन्म कहना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ जन्मसमये इष्टकालज्ञानमाह–

पंचाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः ॥ १४ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे नष्टजातकाध्यायः ॥ २१ ॥

इस कर्मविधानकी हुई राशिको पांचसे गुणकर पहिलेकी तरह नौ घटाकर वा मिलाकर दिन वा रात्रिमानसे भाग देना, जो बाकी बचे वह दिनरात्रिकी इष्टघटी जन्म लेना चाहिये ॥ १४ ॥

इति श्री[illegible] भाषाटीकायां [illegible] नष्टजातकाध्यायः ॥ २१ ॥

अथ निर्य्याणाध्यायप्रारम्भः।
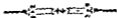
दिनकरप्रमुखैर्निधनस्थितैर्भवति मृत्युरिति प्रवदेत्क्रमात्।
अनलतो जलतो करवालतो ज्वरभवो गदतः क्षुधया तृषा ॥१॥

अब निर्याणाध्यायः कहते हैं:-जो सूर्य अष्टममें बैठा हो तो अग्निकरके और चन्द्रमा अष्टममें बैठा हो तो जलकरके और मंगल अष्टम हो तो हथियारसे और बुध अष्टममें हो तो ज्वरकरके और बृहस्पति अष्टममें हो तो रोग करके और शुक्र अष्टममें हो तो क्षुधाकरके और शनैश्चर अष्टममें हो तो प्यासकरके मनुष्यकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १ ॥

अथ मरणदेशज्ञानम्।

स्थिरभगो द्व्यंगसमाह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः।
स्वकीयदेशे विषयान्तरे च मार्गे प्रकुर्य्यान्मरणं क्रमेण ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टम स्थिरराशि २।५।८।११ हो वह मनुष्य अपने ही देशमें मृत्युको प्राप्त होता है और चर राशि १।४।७।१० इनमेंसे कोई अष्टमभावमें राशि हो तो उस मनुष्यका मरण परदेशमें होता है और जो द्विस्वभावराशि ३।६।९।१२ इनमेंसे कोई अष्टमभावमें हो तो उसकी मृत्यु मार्गमें होती है ॥ २ ॥

आयुर्गृहं खेटविवर्जितं च विलोकयेद्वा बलवान्महेन्द्रः।
तद्धेतुजातं प्रवदंति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो बलिष्ठाः ॥ ३ ॥

जो अष्टमभावमें कोई ग्रह नहीं बैठा हो तो उस अष्टमभावको जो ग्रह बलिष्ठ बलकरके देखता हो उसी ग्रहके हेतुसे मृत्यु कहना चाहिये और जो अष्टमभावके बहुतसे ग्रह बैठे हों या बलवान होकर बहुतसे ग्रह अष्टमभावको देखते हों तो अनेक कारणोंसे मृत्यु कहनी चाहिये ॥ ३ ॥

अथ मरणहेतुज्ञानम्।

पित्तं कफः पित्तमथ त्रिदोषः श्लेष्मानिलौ धान्यनिलः क्रमेण।
सूर्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुः प्रकल्पितः प्राक्तनजातकज्ञैः ॥ ४ ॥

जो सूर्य अष्टम हो तो पित्त करके, चंद्रमासे कफ करके, मंगलसे पित्त करके और बुधसे त्रिदोष करके और बृहस्पतिसे श्लेष्मा करके और शुक्र शनैश्चर अष्टम हों तो वातपित्तसे मृत्यु होती है, यह प्राचीन ज्योतिषियोंने कहा है ॥ ४ ॥

स्वल्पापत्यो द्विभार्यश्च कामी द्रव्यविवर्जितः ।
वामहस्ते भवेल्लक्ष्म पीडा प्रथमवत्सरे ॥ २ ॥
पंचमेऽग्निभयं विद्यादथ द्वादशवत्सरे ।
व्यालाद्वा जलतो भीतिरष्टाविंशतिमे क्षतिः ॥ ३ ॥
चौरेभ्यश्च भवेदायुर्वर्षाणां नवतिर्ध्रुवम् ।
भाद्रे मास्यसिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ॥ ४ ॥
भरणीनामनक्षत्रे गृणन्ति मरणं नृणाम् ।
एवमुक्तं मुनिश्रेष्ठैश्चन्द्रे जन्मनि कुंभगे ॥ ५ ॥

अथ कुंभराशिगत चन्द्रमाका निर्याण कहते हैं-दानी, मिष्टान्न भोजन करने वाला, धर्मकार्यको जल्दी करे और प्यारा बोलनेवाला, एवं क्षीणशरीर होता है ॥ १ ॥ थोड़ी सन्तानवाला, दो स्त्रियोंवाला, कामी, धनहीन, बायें हाथमें उत्तम चिह्न हो, पहिले वर्षमें पीडा होती है ॥ २ ॥ पांचवें वर्षमें अग्निभय हो, अथवा बारहवें वर्षमें हो, सर्पसे वा जलसे भय, अट्ठाईसवें वर्षमें घाव ॥ ३ ॥ चोरोंसे करके होता है, नब्बे वर्षकी आयु पाता है, भादोंका महीना, कृष्णपक्ष, चतुर्थी, शनैश्चरवार ॥ ४ ॥ भरणी नक्षत्रमें मनुष्यका मरण होता है । यह श्रेष्ठ मुनीश्वरोंने कुम्भके चन्द्रमाका फल कहा है ॥ ५ ॥

अथ मीनराशिगतचन्द्रनिर्याणमाह-

धनी मानी विनीतश्च भोगी संहृष्टमानसः ।
पितृमातृसुरानार्यगुरुभक्तियुतो नरः ॥ १ ॥
हृद्रोगी रूपवाञ्श्रेष्ठो गंधमाल्यविभूषणः ।
पंचमेऽब्दे जलाद्भीतिरष्टमे ज्वरपीडनम् ॥ २ ॥
द्वात्रिंशे महती पीडा चतुर्विंशन्मितेऽब्दके ।
स्वर्गागमनं चायुष्यानां नवतिः स्मृता ॥ ३ ॥
आश्विनस्यासिते पक्षे द्वितीयायां गुरोर्दिने ।
कृत्तिकानामनक्षत्रे प्राप्ते मृत्युर्न संशयः ॥ ४ ॥

इतीरितं तु निर्याणं यवनाचार्यसंमतम् ।
मीनस्थे यामिनीनाथे भवेदत्र न संशयः ॥ ५ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे प्रत्येक-
राशिस्थचंद्रनिर्याणाध्यायः ॥ २५ ॥

अथ मीनराशिगत चन्द्रमाका निर्याण कहते हैं-धनवान्, मानी, नम्रतासहित, भोगी, प्रसन्नचित्त होता है और पिता माता देवताओंका पूजन करनेवाला, ...का भक्त होता है ॥ १ ॥ उदार, रूपवान्, श्रेष्ठ गंध और पुष्पोंकी माला करके शोभित, पांचवें वर्षमें जलसे भय, आठवें वर्षमें ज्वरकी पीडा होती है ॥ २ ॥ ...सवें वर्षमें बडी पीडा और चौबीसवें वर्षमें पूर्वकी बाधा करे और नब्बे वर्षकी ...र होती है ॥ ३ ॥ आश्विनका महीना, कृष्णपक्ष, द्वितीया तिथि, शुक्रवार, ...चिकानाम नक्षत्रमें सायंकालके समय मृत्यु होती है ॥ ४ ॥ यह निर्याणाध्याय ...नाचार्यके मतका मीनराशिगत चन्द्रमाका कहा है ॥ ५ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्यौतिषिकपंडित-
श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-भाषाटीकायां प्रत्येकराशिस्थ चन्द्र-
निर्याणनिरूपणं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायप्रारम्भः ।

यज्जन्मकालादुदितं नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव ।
स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु चेदयोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् ॥ १ ॥

जो जन्मकालसे पुरुषोंको ज्योतिषशास्त्र जाननेवालोंने कहा है वही फल ...स्त्रियोंको भी कहना चाहिये, जो फल स्त्रियोंके कहने योग्य नहीं है सो सम्पूर्ण ...उ स्त्रियोंके स्वामीको कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ स्त्रीणां वैधव्यसौभाग्यपुत्रसौंदर्यविचारप्रकारः—

लग्ने शशांके च वपुर्विचिन्त्यं तयोः कलत्रे पतिरेभवानि ।
सुताख्यभावे प्रसवोऽष्टमस्थो वैधव्यमस्याःकिल कालनेहे ॥ २ ॥

स्त्रियोंके जन्मकालमें लग्न और चन्द्रमासे देहका विचार करना चाहिये और लग्न... मासे सातवें भावसे पतिका विचार करना चाहिये और पंचमभावसे संतानवि... ार करना और अष्टमस्थानसे वैधव्ययोगका विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

अथ स्त्र्याकृतियोगः ।

लग्ने च चंद्रे समराशियाते कांता नितांतं प्रकृतिस्थिता स्यात् । सद्रत्नभूषासहिताथ सौम्यैर्निरीक्षितौ तौ यदि चारुशीला ॥३॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्न और चंद्रमा दोनों २।४।६।८।१०।१२ इन राशियोंमें हों तो वह स्त्री स्त्रियोंकी प्रकृतिवाली होती है और जो पूर्वोक्तयोगोंको शुभग्रह देखते हों तो वह स्त्री श्रेष्ठरत्नों युक्त आभूषणसहित श्रेष्ठशीलवाली होती है ॥ ३ ॥

अथ पुरुषाकृतियोगः ।

पुरुषाकृतियोगः

तयोः स्थितिश्चेद्विषमाख्यराशौ नारी नराकारधरा कुरूपा । पापग्रहालोकनयोगयातौ तौ चेत्कुशीला गुणवर्जितालम् ॥ ४ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्न और चंद्रमा दोनों विषमराशिमें हों १।३।५।७।९।११ और पूर्वोक्तोंको पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री पुरुषोंकेसे आकारवाली, बुरे रूपवाली कुशीलवाली तथा गुणरहित होती है ॥ ४ ॥

अथ त्रिंशांशवशात्फलम् ।

लग्नेन्द्वोर्बलवान्कुजस्य भवने शुक्रस्य सौम्यंशके कन्या स्याद्‌तिनिंदिता सुरगुरोः साध्वी नितांतं भवेत् । दुष्टा भूतनयस्य नूनमुदिता सौम्यस्य मायाविनी दासी निम्नगरोचिषस्तुगगनाम्यंशे फलानि क्रमात् ॥ ५ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमामें जो बलिष्ठ हो और मेषराशी मंगलके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या अति निंद्य होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो पतिव्रता होती है और मंगलके त्रिंशांशमें हो तो दुष्टा होती है बुधके त्रिंशांशमें हो तो माया करनेवाली होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें हो तो दासी होती है ॥ ५ ॥

अथ बुधभवने लग्ने त्रिंशांशवशात्फलम्।

तारानायकपुत्रभेऽवनिसुते त्रिंशद्गते कापटा
शौक्रे हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः।
देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वी नितांतं तथा
सौरस्यांशेऽर्कसुतस्य सा निगदिता क्लीबस्य भार्या बुधैः॥६॥

जो लग्न व चंद्रमा बुधकी राशिमें मंगलके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या कपट-स्वभाव करनेवाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो कामरहित होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो बहुत गुणोंवाली होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो निरन्तर पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें नपुंसककी स्त्री होती है॥ ६॥

अथ गुरुभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम्।

देवाचार्यगृहेऽमृतांशुरथवा लग्नं खमह्यंशके
भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः।
तारास्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवे-
न्नूनं भानुसुतस्य चाल्पसुरता कांता बुधैः कीर्तिता॥ ७॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमा बृहस्पतिके घरमें मंगलके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या गुणवती होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो गुणोंके गण करके प्रसिद्ध होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो सुन्दर वैभववाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या सुरतमें थोड़ी प्रीति करनेवाली होती है॥ ७॥

अथ शनिभवने लग्नेन्दोस्त्रिंशांशवशात्फलम्।

...त्याचार्यगृहे सुरेंद्रसचिवस्याकाशवह्न्यंशके
...लग्ने वाप्युडुनायको गुणवती भौमस्य दोषाधिका।
...सौम्यस्यातिकलाकलापकुशला शुक्रस्य चक्रद्गुणैः
...कार्यनिपुणा वामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति॥ ८॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्रके भवनमें लग्न वा चन्द्रमा हो और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या गुणवती होती है और मंगलके त्रिंशांशमें हो तो ...होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो कलाओंके समूहमें कुशल ...

होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो प्रकाशगुणवाली होती है और शनैश्च
त्रिंशांशमें हो तो वह पुनर्भू होती है अर्थात् विवाहके बाद दूसरेके
रहती है ॥ ८ ॥

अथ शनिभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

मदालयेखाग्निलवे कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाल
बृहस्पतेःस्यात्पतिदेवता सा वंध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः ॥९

और जो कन्याके जन्मकालमें शनैश्चरकी राशि लग्न वा चन्द्रमा हो और मं
लका त्रिंशांश हो तो वह कन्या दासी होती है और बुधके त्रिंशांशमें हो तो
कन्या दुष्टा होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो पतिको ही देवता माननेवा
होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो वांझ होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें
तो नीचमें रति करनेवाली स्त्री होती है ॥ ९ ॥

अथ रविभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

लग्ने वा विधुरर्कमंदिरगतो भौमस्य खाग्न्यंशके
स्वेच्छासंचरणोद्यता शशिसुतस्यातीव दुष्टाशया ।
देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः
पौंश्चल्याभिरता शनेरतितरां पुंवत्प्रगल्भाङ्गना ॥ १० ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा सूर्यकी राशिमें हो और मंगल
त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या अपनी इच्छानुसार विचरनेवाली होती है और बुध
त्रिंशांशमें हो तो दुष्टचित्तवाली होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्य
राजाकी रानी होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो व्यभिचारिणी होत
है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें हो तो वह कन्या पुरुषके समान प्रगल्भ
होती है ॥ १० ॥

अथ चंद्रभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

चंद्रागारे खाग्निभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्यस्य शिल्पप्रवीणा ।
वाचांपत्युः सद्गुणा भार्गवस्य साध्वी मंदस्यप्रियप्राणदात्री ११॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चन्द्रमा कर्कराशिके हों और मंगलके त्रिंशांशमें बैठे हों तो वह कन्या अपने इच्छानुसार चलनेवाली होती है और बुधके त्रिंशांशमें बैठे हों तो शिल्पकलामें प्रवीण होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें बैठे हों तो श्रेष्ठ गुणवाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें हों तो पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें बैठे हों तो पतिके प्राण लेनेवाली होती है ॥ ११ ॥

अथ स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगमाह–

अन्योन्यभागेक्षणगौ सितार्की यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे।
कंदर्पशांति कुरुते नितांतं नारी नराकारकरांगनाभिः ॥ १२ ॥

अब शुभाशुभयोग कहते हैं–जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्रके नवांशमें शनैश्चर और शनैश्चरके नवांशमें शुक्र बैठा हो और आपसमें देखते हों (एकोयोगः) अथवा लग्न तुला हो, उसमें कुंभके नवांशका उदय हो तो वह कन्या नराकार स्त्रियों करके अर्थात् किसी प्रकारका लिंग उनकी कमरमें बँधाकर उनसे अपनी कामाग्निकी शांति कराती है ॥ १२ ॥

अथ कापुरुषयोगः।

शून्ये मन्मथमंदिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले।
बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापुरुषः कीर्तितः।

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें स्थानमें कोई ग्रह नहीं हों और शुभग्रह नहीं देखते हों और सप्तमभाव निर्बल हो तो उस कन्याका पति बेवकूफ आलसी होता है अर्थात् निरुद्यमी होता है ॥

अथ क्लीबपतियोगः।

तामित्रं बुधमंदयोर्यदि गृहं षण्ढो भवेन्निश्चितम्।

जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तमभावमें ३। ६। १०। ११ ये राशियें हों इस कन्याका पति नपुंसक होता है ॥

अथ प्रवासशीलभर्तृयोगः।

राशौ तत्र चरे विदेशनिरतो ह्यंगे च मिश्रस्थितिः ॥ १३ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तमभावमें १। ४। ७। १० ये राशि हों तो उसका पति परदेशमें रहता है और जो द्विस्वभावराशि ३। ६। ९। १२ सप्तमें हों तो उस कन्याका पति कभी परदेश, कभी घर रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें मंगल शुक्रके नवांशमें बैठा हो और शुक्र मंगलके नवांशमें बैठा हो तो वह कन्या परपुरुषगामिनी होती है ॥

अथ पत्याज्ञया दुश्चरीयोगः ।

चंद्रोपेतौ शुक्रवक्रौ स्मरस्थावाज्ञैव स्यात्स्वामिनश्चामनंति ॥१६॥

जिस कन्याके जन्मकालमें चन्द्रमा शुक्र मंगल सातवें बैठे हों वह कन्या पतिकी आज्ञासे परपुरुषसे रमण करती है ॥ १६ ॥

परपुरुषरतायोगः ।

परपुरुषरतायोगः १७

लग्ने सितेन्दू कुजमंदभेस्थौ क्रूरेक्षितौ मान्यरता जघन्या ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्नमें शुक्र चन्द्रमा और मंगल शनैश्चरकी राशिमें बैठे हों और पापग्रहोंकरके दृष्ट हों तो वह कन्या परपुरुषगामिनी होती है ॥

परपुरुषरतायोगः ।

परपुरुषरतायोगः ।

परपुरुषरतायोगः ।

विनष्टयोनियोगः ।

स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभाशुभांशे ॥ १७ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठा हो और शनैश्चरकरके दृष्ट हो और शुभ ग्रह पापग्रहोंके नवांशमें बैठे हों तो उस कन्याकी योनि नष्ट होती है ॥ १७ ॥

अथ [illegible]

भानोर्भे यदि वा लग्नः स्मरगृहे संभोगमंदः पतिश्चन्द्रस्यानिमदो मृदुः क्षितिसुतस्याप्तिमिरक्रोधयुक् । [illegible]

वेशी गुणयुतः शुक्रस्य भाग्यान्वितो मंदस्य प्रवयास्तु गूढमतिरित्युक्तो बुधैर्हारिकैः॥ १८॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें सूर्यकी राशि नवांश हो उस कन्याका पति संभोगमें मंद होता है और चन्द्रमाकी राशि और नवांश हों तो उसका पति मदयुक्त कोमल होता है और मंगलकी राशि नवांश हो तो उसका पति स्त्रीका प्यारा क्रोधसहित होता है, जो सातवें बुधकी राशि नवांश हो तो उसका पति पंडित होता है और बृहस्पतिकी राशि नवांशमें पति वशी, गुणोंसहित होता है और शुक्रकी राशि नवांश सातवें हो तो उसका पति भाग्यवान् होता है और शनैश्चरकी राशि और नवांश सातवें हो तो उस कन्याका पति बूढा, गूढमति, होराशास्त्रके जाननेवालोंने कहा है॥ १८॥

अथ ईर्ष्यान्वितयोगः।

ईर्ष्यान्वितयोगः।

शुक्रेन्दू स्मरगौ स्त्रियं प्रकुरुतः सेर्ष्यां सुखेनान्विताम्

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र चंद्रमा बैठे हों तो वह कन्या ईर्ष्यासहित और सुखकरके सहित होती है॥

अथ कलावतीयोगः।

कलावतीयोगः।

सौम्येंदू च कलासुखोत्तमगुणाम्–

और जिस कन्याके सातवें भावमें चंद्रमा बुध बैठे हों तो वह कन्या कलावती, सुखसहित, उत्तम गुणोंवाली होती है॥

अथ भाग्यवतीयोगः।

शुक्रेंदुपुत्रावथ। यंचद्भाग्यकलान्वि(ता)भि-
रुचिराम्–

और जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक-
चन्द्रमा बैठे हों तो वह कन्या बड़े भाग्यकरके सहित कला-
ओंकी जाननेवाली शोभायमान होती है ॥

अथ भूषणाढ्यायोगः।

सौम्यग्रहैर्लग्नस्तनौ नानाभूषणसद्गुणांबर-
सुखा पापग्रहैस्त्वन्यथा ॥ १९ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें शुभग्रह लग्नमें बैठे हों
तो वह कन्या अनेक आभूषणोंसहित, श्रेष्ठ गुणवती, वस्त्रोंके
सुख पानेवाली होती है और जो पापग्रह सातवें बैठे हों
तो दुर्भगा, दुःशीला, नेष्टा-दुष्टा होती है ॥ १९ ॥

अथ वैधव्ययोगः।

वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थं रंध्रस्वामी संस्थितो यस्य
चांशे। मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैः
स्यात्स्वयं हि ॥ २० ॥

जिस कन्याके अष्टमभावमें पापग्रह बैठे हों तो वह विधवा होती है और अष्टम-
भावका स्वामी जिसके नवांशमें बैठा हो उस ग्रहकी दशामें मृत्यु कहना चाहिये
और जिसके दूसरे भावमें शुभग्रह बैठे हों वह कन्या अपने ही दोषसे मरती
है ॥ २० ॥

अथ शैलाग्रपातान्मृत्युयोगः।

शैलाग्रपातान्मृत्युयोगः।

सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपा-
तान्मृतिः–

जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य, मङ्गल दशम, अथवा
चतुर्थ बैठे हों तो वह कन्या हिमालयपर्वतसे गिरकर
मरती है ॥

अथ पुरुषस्वभावप्रगल्भयोगः।

शुक्रेंदुसौम्या विबला भवेयुः शनैश्वरो मध्यबलो यदि स्यात्।
शेषाः सवीर्या विषमे च लग्ने योषा विशेषात्पुरुषप्रगल्भा॥२५॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्र, चंद्र, बुध निर्बल हों और शनैश्वर मध्यबली हो, बाकीके ग्रह सब बलवान् हों और लग्न विषमराशिकी हो वह पुरुषोंके स्वभाववाली प्रगल्भा होती है ॥ २५ ॥

अथ ब्रह्मवादिनीयोगः।

समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः।
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चा परागमज्ञानविराजमाना ॥ २६ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें समलग्न हो उसमें बलकरके सहित शुक्र, बुध, चन्द्रमा, बृहस्पति बैठे हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचार करनेवाली और ब्रह्मज्ञानमें तत्पर होती है ॥ २६ ॥

पूर्वैर्यन्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्तितं
सम्यग्वाप्यशुभं च यन्मतिमता वाच्यं विदित्वा बलम्।
योगानां च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा
पाणिग्रहणे तथा च वरणे संभूतिकालेऽपि च ॥ २७ ॥

जो पहिले मुनीश्वरोंने स्त्रीजातकमें विस्तारपूर्वक अच्छा बुरा फल कहा है सो बुद्धिमानोंने सबोंका बलाबल विचार करके कहना चाहिये। पहिले कहे हुए स्त्रियोंके योग उनका विचार प्रश्न कालमें विवाहके समयमें अथवा लडाईके समय अथवा जन्म समयमें विचार करना चाहिये ॥ २७ ॥

अथ नाडीचक्रमाह-

नाडीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम्।
स्कन्धेकं स्युर्दृशोर्नाग [illegible] निवन्नाग हस्तदेशे निरंशाः ॥ २८ ॥
नाभौ देयं सप्तकं त्रीणि गुह्ये भानीत्येव्यं [illegible] ।
[illegible] शीर्षे चक्रमध्ये नित्यं मिश्राणि सौम्यैः [illegible] २९

अब नारीचक्र कहते हैं:-स्त्रियोंके आकारस्वरूप बनाकर मस्तकमें तीन नक्षत्र दे और मुखमें सात नक्षत्र दे और चूंचियोंमें चार चार नक्षत्र दे और हृदयपर तीन नक्षत्र दे ॥ २८ ॥ और तीन नक्षत्र टूडीमें दे और तीन नक्षत्र गुह्यस्थानपर दे, यह सूर्यके नक्षत्रसे लेकर क्रमसे दे। चद्रनक्षत्रतक विचार करे, जो चंद्रनक्षत्र शिरमें पड़े तो सन्ताप करे और मुखके नक्षत्रमें पड़े तो हमेशा मिष्टान्न खाया करे और सुखको प्राप्त हो ॥ २९ ॥

कामं स्वामिप्रेमवृद्धिः स्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यंतहर्षः ।
पत्युश्चिन्तानन्तवृद्धिश्चनाभौगुह्यस्थेस्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः ६०

और चूंचियोंके नक्षत्रमें चंद्रनक्षत्र पड़े तो स्वामीमें यथेच्छ प्रेमकी वृद्धि करे और छातीके स्थानम चंद्रनक्षत्र पड़े तो अत्यंत हर्षको देता है और टूडीके नक्षत्रोंमें पड़े तो पतिको चिंता अधिक करावे और गुह्यस्थानमें चन्द्रनक्षत्र पड़े तो वह स्त्री अत्यंत कामवती होती है ॥ ३० ॥

अथ ग्रन्थकारस्य देशवर्णनम् ।

गोदावरीतीरविराजमानं पार्थाभिधानं पुटभेदनं यत् ।
सद्गोलविद्यामलकीर्तिभाजां मत्पूर्वजानां वसतिस्थलं तत्॥३१॥

गोदावरीनदीके किनारे शोभायमान पार्थनामक नगरमें श्रेष्ठ गोलगणितमें निर्मल है यश जिनका ऐसे मेरे पूर्वजोंके रहनेकी जगह है॥ ३१ ॥

तत्रत्यदैवज्ञनृसिंहसूनुर्गजाननाराधनजाभिमानः ।
श्रीढुण्ढिराजो रचयांबभूव होरागमेऽनुक्रममादरेण ॥ ३९ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
स्त्रीजातकाध्यायः ॥ २६ ॥

वहां नृसिंह दैवज्ञका पुत्र श्रीगणेशजीका आराधन करनेवाला ढुण्ढिराज इस जातकाभरणनामक ग्रन्थको रचते हुए। जिसमें जन्मपत्रिका क्रम आदरसे लिखा है ॥ ३२ ॥

अथ भाषाकारकृतग्रन्थसमाप्तिः ।

नंदवाणनिधीन्द्वब्दे फाल्गुनस्य सिते दले ।
पंचम्यां चंद्रवारे च भाषापूर्तिमगाच्छुभम् ॥
वंशवरेलीत्यभिधे नगरे गौडान्वये सुजनिः ।
व्यतनोदिममनुवादं दैवज्ञः श्यामलालाख्यः ॥ २ ॥

श्रीविक्रमादित्यसंवत् १९५९ फाल्गुन मास शुक्लपक्षमें पंचमी तिथि चन्द्रवारको यह श्रेष्ठ भाषा पूर्ण हुई ॥ १ ॥ बांसबरेलीनामकनगरके विषे गौडवंशमें प्राप्त किया है जन्म जिसने सो श्यामलाल ज्योतिषीने यह भाषा विस्तार की ॥ २ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीराजज्यौतिषिक–पंडितश्यामलाल-कृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां स्त्रीजातकनिरूपणं नाम षड्विंशोऽध्यायः॥ २६ ॥

इति जातकाभरण समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–प्रेस, बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" प्रेस, कल्याण–बम्बई.